JAIN INSCRIPTIONS.

जैन लेख संग्रह।

भारतके प्राचीन इतिहासके प्रमाणोंके प्रधान साधन लेख ही है। विशेषतः जैनियोंके सिलसिले वार इतिहासके अभाव में इन्हीं के लेखों का संग्रह बहुत ही आवश्यक है। इतिहास का बहुतसा भाग शिलालेख पर निर्भर है। जो बात शिलालेखसे जानी जा सकती है वह इतिहाससे नहीं, क्योंकि इतिहास में समय परिवर्तनसे फेरफार पड़ जाता है किन्तु पत्थर पर जो कुछ लिखा गया वह पत्थर के अन्त तक बना रहता है। अतएव लेखों से इतिहास को बहुत सी सहायता मिल जाती है। यह आनन्दकी बात है कि आज कल बहुतसे सज्जनोंकी इस पर दृष्टी भी आकर्षित हुइ है। मैं इस विषय पर अधिक लिखकर पाठकोंका समय नष्ट करना नहीं चाहता, किन्तु संक्षेपमे कुछ सूचना देता हूं ताकि इस ओर और भी लोग ध्यान देकर ऐसे संग्रहसे लाभ उठावें और मेरा परिश्रम सफल करें। मुझे लेखों का बहुत दिनों से प्रेम था, खास करके हमारे जैन लेख देखतेही मेरा जी हराभरा हो जाता था, परन्तु अङ्गरेजी जर्नल, पत्रिका, रिपोर्ट और स्वदेशी भाषाके पत्र या पुस्तकों मे लेख देखने के सिवाय स्वयं कोई लेख देखनेका अवसर न मिला था। कुछ दिनोंसे यह जैन लेखों की उपयोगिता मेरे मस्तिष्क मे ऐसी घुस पड़ी कि जहां कहीं किसीके पास लेखका हाल सुना या किसी मन्दिरादि स्थानो मे गया तो वहां के लेख देखे विना चित्त को शांति नहीं होती थी। इस कारण मैंने स्वयं जो लेख पढ़े है इतने इकट्ठे हो गये कि इनका एक संग्रह हो सकता है। इसी विचारसे यह कार्यमें मैं प्रवृत्त हुआ हूं। मेरा संस्कृत आदि भाषाओंमे अधिक प्रवेश नहीं है या में कोई बड़ा विद्वान नहीं हूं, विशेष कर जैन शास्त्र मे मेरा स्वल्प प्रवेश है, इस कारण बहुतसे लेख पढ़नेमें भ्रम हो गया होगा सो, आशा है, कृपया सुधी जन सुधार कर पढ़ेंगे।

लेख खास करके पत्थर और धातु पर ही होते है। पत्थरका लेख धातुसे शीघ्र ध्वंस हो जाता है। इस कारण प्रायः पत्थर परका लेख कुछ काल मे अस्पष्ट हो जाता है। अतएव मैंने विशेष करके धातु परके लेखों को अधिक पढ़ने का प्रयास किया है। लेखो पर प्रायः निम्नलिखित बातें लिखी रहती हैं:—

१ । वर्ष, मास, तिथि, वार आदि । २ । वंश, गोत्र, कुलों के नाम ।
३ । कुशिनामा । ४ । गच्छ, शाखा, गण आदिके नाम ।
५ । आचार्य्योंके नाम, शिष्यों के नाम, पट्टावली ।
६ । देश, नगर, ग्रामों के नाम । ७ । कारिगरों के, खोदनेवालों के नाम ।
८ । राजाओं के, मंत्रियों के नाम । ९ । समसामयिक वृत्तान्त इत्यादि ।

ऊपरोक्त विवरणो मे जैन श्रावकोंकी ज्ञाति, वंश, गोत्रादि और जैन आचार्योंके गच्छ शाखादिकी दो सूची पाठकोंकी सेवामें उपस्थित की जायगी, जिसमे सुगमता के लिये (१) जाति, वंश, गोत्र (२) संवत्, आचार्योंके नाम और गच्छ रहेगा। सुज्ञ पाठकगणको ज्ञात होगा कि बहुतसे लेखोमे वंश, गोत्रादिका उल्लेख पूर्णरीतिसे पाया नहीं जाता है:—जैसे कि कोई २ लेखमें केवल गोत्र ही लिखा है, जाति, वंशका नाम या पता नही है। ज्ञाति वंशादिके नाम भी कई प्रकारसे लिखे हुए मिलते हैं, जैसे कि "ओसवाल" ज्ञातिके नाम लेखोमें आठ प्रकार से लिखे हुए मिलते हैं [१] उपकेश [२] उकेश [३] उवएश [४] ऊएश [५] उयसवाल [६] ओसलवाल [७] ओश [८] ओसवाल। लिखना निष्प्रयोजन है कि यहां सूचीमें ऐसे आठ प्रकारके नामोंको एक 'ओसवाल' हेडिङ्ग में दिया गया है। इसी प्रकार कोई २ लेखोंमे आचार्यों के नाम, उनके शिष्योंके नाम, गच्छादि का विवरण पूर्णतया नही है। प्रतिष्ठास्थानोंके नाम भी बहुतसे लेखोंमे बिल्कुल नहीं है। पुरातत्त्वप्रेमी सज्जनगण अच्छी तरह जानते हैं कि प्राचीन विषय में ऐसी बहुतसी कठिनाइयां मिलती हैं, स्थान २ मे प्राचीन लेख घिस गये हैं, इस कारण बहुत सी जगह प्रयत्न करने पर भी खुलासा पढ़ा नही गया है।

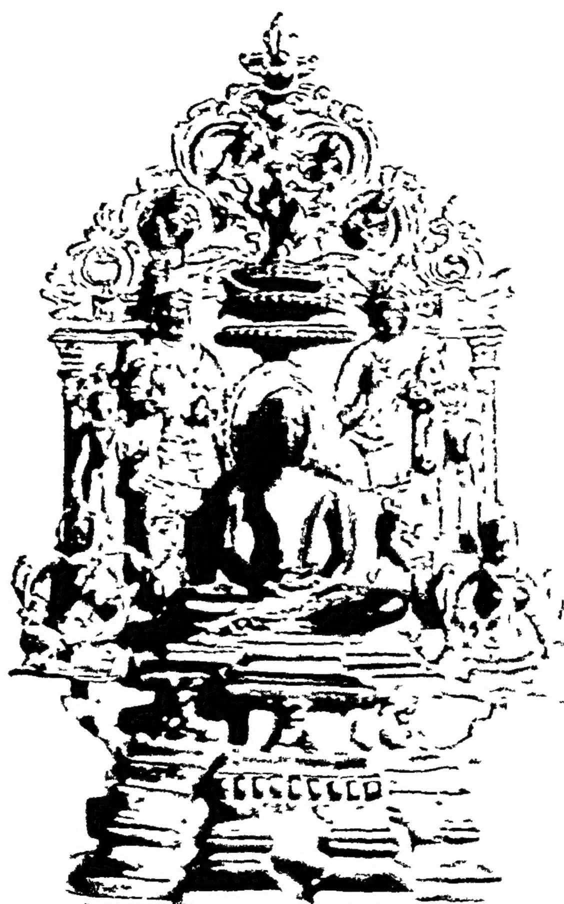
यह "लेख संग्रह" संग्रह करनेमे हमें कहां तक परिश्रम और व्यय उठाना पडा है सो सुज्ञ पाठक समझ सक्ते हैं; "नहि वन्ध्या विजानाति गर्भप्रसववेदनाम्।" अधिक लिखना व्यर्थ है। यह संग्रह किसी भी विषयमे उपयोगी हुआ तो मैं अपना समस्त परिश्रम सफल समझूंगा।

आशा है कि और २ आचार्य, मुनि, विद्वान् और सज्जन लोग भी जैन लेख संग्रह करनेमें सहायता पहुंचावें और उनके पास के, या जिस स्थानमें वे विराजते हों वहांके जैन लेखों को प्रकाशित करें तो बहुत लाभ होगा और शीघ्र ही एक अत्युत्तम संग्रह बन जायगा। किं बहुना।

कलकत्ता
इ० स० १९१५

निवेदक—
पूरणचन्द नाहर।

प्रतिष्ठा स्थान ।



Metal Image [illegible]

JAIN INSCRIPTIONS

जैन लेख संग्रह।

प्रान्त – पूर्व।

जिला मुर्शिदाबाद। स्थान अजिमगञ्ज।

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर १।

धातुओं के मूर्ति पर।

[1]

ॐ ॥ श्री सरवाल गछे स्वतानुकेन कारित ॥ संवत् १११० ×।

नाहारों के पूर्वजों के प्रतिष्ठित जिनालयों में यह एक मन्दिर ग्रामके मध्य भागमें विद्यमान है। [illegible] श्रीलक्ष्मीपत सपत्नीक के पुत्र स्वर्गीय बाबू गुलाबचन्दजी [illegible] परम पूज्य पिता [illegible] बाहादुर है। पूर्व मन्दिर [illegible] जानेसे आज यह नवीन चैत्य संवत [illegible] निर्मित [illegible] है। [illegible] सुदि ५ [illegible] [illegible] मूर्ति [illegible] [illegible] प्रतिष्ठाप्य श्री [illegible] जं। दु। प्र। श्री जिन [illegible] विजय राज्ये ॥ श्री रस्तु ॥ [illegible]

यह लेख श्री [illegible] है। [illegible] मूर्ति [illegible] है।

[12]

संवत १९०० मिति आषाढ़ सित ९ गुरौ श्री आदिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं । बृहत खरतर भट्टारक गच्छेश भ० । श्री जिन हर्ष पट्टे दिनकर भ० श्री जिन सौभाग्य सूरिभिः कारितं च श्रीमाल वंशे टाक गोत्रे मोहया दास पुत्र हनुतसिंहस्य भार्या फूलकुमार्या स्वश्रेयोर्थं ।

॥ श्री नेमिनाथजी का पंचायति मन्दिर ॥

[13]

संवत [illegible] व० माघ सु० ५ सोमे ऊसवाल ज्ञाती लिगा गोत्रे समदडीया ऊकेश० [illegible] भा० [illegible] पु० कम्माकेन भा० कस्मीरदे पु० हेमा संसारचंद देवराज युतेन [illegible] श्री नमिनाथ बिंबं कारितं श्री उपकेश गच्छे श्री कुकुदाचार्य संताने प्र० श्री कक्क सूरिभिः ।

[14]

[illegible] वर्षे बैशाख वदि ४ गुरौ ऊसवाल ज्ञातौ कटारीया गोत्रे सा० संरवण [illegible] भा० सोमसिरि सु० सा० आडु नाम्ना भार्या विरणि सुत सा० [illegible] प्रमुख कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं [illegible] श्री [illegible] सूरिभिः ॥ श्री ॥

[15]

[illegible] वर्षे वैशाख [illegible] प्राग्वाट ज्ञा० व्यव० पेना भार्या मदी सुत [illegible] देवा सहितेन स्वपूर्वज श्रेयोर्थ श्री शांतिनाथ [illegible] श्री [illegible] सूरि श्री कमल कलश सूरिभिः सिरुत्रा वास्तव्य ।

[16]

[illegible] वर्षे वैशाख वदि [illegible] [illegible] वास्तव्य [illegible] ज्ञातीय मंत्री [illegible]

दो० स० क्षेमाकेन भा० राणी स० श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० श्री तेजरत्न सूरिभिः ॥

॥ श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर ॥

[17]

संवत १५०५ वर्षे माघ वदि ४ रवौ उशवाल ज्ञातीय भणशाली गोत्रे सा० गेल्हा पु० सो॰पी भा० पोलश्री पु० हराकेन आत्म पुण्यार्थ श्री अभिनंदन बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गच्छे भ० श्री विजयचंद्र सूरि पट्टे श्री साधुरत्न सूरिभिः।

[18]

संवत १५२५ वर्षे वै० व० ११ बुधे लांवडी वास्तव्य उकेश ज्ञातीय व्य० षीमसी भा० वानू पुत्र व्य० गणमा भा० वाबू पुत्र व्य० केल्हाकेन भा० मानू वृद्ध भा० घूघा पुत्र मेघादि कुटुंब युतेन श्री मुनिसुव्रत स्वामी चतुर्विंशति पट्ट कारितः प्रतिष्ठितः ॥ ॰ वस्त्रगत चांइसगीया श्री मर्त सूरि श्री उकेश विंवदणीक गच्छे ॰ प्रतिष्ठा कारिता। ॰ (अक्षर अस्पष्ट है)।

[19]

संवत १५२७ वर्षे माघ वदि ५ शुक्रे मंत्रि दली० वंश डुल्लह गोत्रे ठ० पाल्हणसीकेन पु० ठ० कर्णसी ठ० उजयचंद ठ० हेमा पुत्री अजाइव सहितेन परिवार युतेन श्री शीतल नाथ बिंबं कारितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरि पट्टे श्री जिनसुंदर सूरयस्तत्पट्टे श्री जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं।

[20]

संवत १५६३ वर्षे माह सुदि ५ गुरौ श्रेष्टि गोत्रे सा० दसा भा० वाल्हदे सु० कुंदा भा० पल्ह सु० हिरा खिरा आंबा सहसपा युतेन श्री पद्मप्रभु बिंबं कारितं उपकेश गच्छे कक्कुदा- चार्य संताने भ० श्री देवगुप्त सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[12]

संवत १९०० मिति आषाढ़ सित ए गुरौ श्री आदिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं । बृहत् खरतर भट्टारक गच्छेश भ० । श्री जिन हर्ष पट्टे दिनकर भ० श्री जिन सौभाग्य सूरिभिः कारितंच श्रीमाल वंशे टाक गोत्रे मोहया दास पुत्र हनुतसिंहस्य भार्या फूलकुमार्या स्वश्रेयोर्थं ।

॥ श्री नेमिनाथजी का पंचायति मन्दिर ॥

[13]

संवत १५११ व० माघ सु० ५ सोमे ऊसवाल ज्ञाती लिगा गोत्रे समदडीया उडकेण० सुहडा भा० सुहागदे पु० कम्माकेन भा० कस्मीरदे पु० हेमा संसारचंद देवराज युतेन स्वश्रेयसे श्री नमिनाथ बिंबं कारितं श्री उपकेश गच्छे श्री कुकुदाचार्य संताने प्र० श्री कक्क सूरिभिः ।

[14]

संवत १५२३ वर्षे वैशाख वदि ४ गुरौ ऊसवाल ज्ञातौ कटारीया गोत्रे सा० सरवण भा० राणी सुत सा० सिंघा भा० सोमसिरि सु० सा० आडु नाम्ना भार्या विरणि सुत सा० पुनपाल सा० सोनपाल सुरपति प्रमुख कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च । श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

[15]

संवत १५५३ वर्षे वैशाख सुदि * प्राग्वाट ज्ञा० व्यव० पेता भार्या मदी सुत व्य० भोजाकेन भा० राजू भ्रातृ राजा रत्ना देवा सहितेन स्वपुर्विज श्रेयोर्थ श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० तपागच्छे श्री हेमविमल सूरि श्री कमल कलस सूरिभिः सिरुत्रा वास्तव्य ।

[16]

संवत १६१५ वर्षे वैशाख वदि १० भौमे जवाठ वास्तव्य हुवड ज्ञातीय मंत्रीश्वर गोत्रे

दो० स० क्षेमाकेन भा० राणी स० श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० श्री तेजरत्न सूरिभिः ॥

॥ श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर ॥

[17]

संवत १५०५ वर्षे माघ वदि ९ रवौ उशवाल ज्ञातीय भणशाली गोत्रे सा० गेल्हा पु० नोडपी भा० पोलश्री पु० हराकेन आत्म पुण्यार्थं श्री अभिनंदन बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गच्छे भ० श्री विजयचंद्र सूरि पट्टे श्री साधुरत्न सूरिभिः ।

[18]

संवत १५२५ वर्षे वै० व० ११ बुधे सांवडी ग्रामवास्य उकेश ज्ञातीय व्य० पीमसी भा० वानू पुत्र व्य० गणमा भा० वानू पुत्र व्य० पोल्हाकेन भा० मानू पुत्र भा० धना पुत्र मेघादि कुटुंब युतेन श्री मुनिसुव्रत स्वामी चतुर्विंशति पट्ट कारितः प्रतिष्ठितः ॥ * ब्रह्मगत चांड सगीया श्री मर्त सूरि श्री उकेश विवदणीक गच्छे * प्रतिष्ठा कारिता । * (अक्षर अस्पष्ट है) ।

[19]

संवत १५२७ वर्षे माघ वदि ५ शुक्रे मंत्रि दलीय वंश छाजहड़ गोत्रे ठ० पाल्हणसीकेन पु० ठ० कर्णसी ठ० उजयचंद ठ० हेमा पुत्री [illegible] सहितेन परिवार युतेन श्री शीतल नाथ बिंबं कारितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरि पट्टे श्री जिनसुंदर सूरि पट्टालंकार श्री जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

[20]

संवत १५६३ वर्षे [illegible] सुदि ५ गुरौ श्रेष्ठि गोत्रे सा० [illegible] भा० [illegible] पु० [illegible] भा० [illegible] पु० [illegible] श्री [illegible] बिंबं कारितं [illegible] पार्श्व संताने भ० श्री [illegible] सूरिभिः प्रतिष्ठितं

[21]

संवत १६३० वर्षे माघ सुदि १३ दिने पत्तन वास्तव्य सा० सांडा भार्या लषमाइ सुत वीर पालेन भार्या रंगाइ प्रमुख कुटुंब युतेन श्री संभवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छाधिराज श्री हीरविजय सूरिभिश्चिरं नंदतात्।

[22]

॥ रौप्य के मूर्त्ति पर ॥

संवत १९३३ का जैष्ठ शुक्ले १३ शनिवासरे श्री शांतिजिन पंचतिर्थीका उस वंशे दुधेड़िया गोत्रे बाबु हर्षचंद तत्पुत्र बाबु बिसनचंद्रेन कारितं पुनमिया विजय गछे श्री शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं।

॥ श्री संभवनाथजी का मंदिर ॥

[23]

संवत १५११ वर्षे ज्ये० सु० ३ गुरौ दिने ऊ० ज्ञातीय श्री वरलच्छ गोत्रे नाथु संताने राजा भार्या राजलदे सुत सह सावलू राणा हुदा श्री मल्लयुतौ पितृ मातृ श्रेयसे श्री चंद्र प्रभ स्वामी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री बृहद्गच्छे श्री मुनिशेखर सूरि संताने श्री महेंद्र सूरि पट्टे श्री श्री श्री रत्नाकर सूरिभिः शुभं॥

[24]

संवत १५४६ वर्षे माघ सु० १० रवौ श्री श्रीमाल ज्ञा० सं० भूभच भार्या सं० भरमादे सुत सं० समरसी भार्या धनाइ सु० रा० अर्जन केन भार्या अहिवदे पु० सं० राणा शाणा प्र० कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं कारि० प्रति० श्री बृहत्तपा श्री ज्ञानसागर सूरि पट्टे श्री उदय सागर सूरिभिः। वुयुज ग्राम॥

[25]

संवत १५६३ वर्षे माह वदि ११ दिने रवौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय लघु शाषायां । व्य० केसव भा० भरमी सुत व्य० वीका भा० संपू । भ्रा० व्य० आसाकेन भार्या अमरादे भ्रातृ व्य० लाडण प्रमुख कुटुंब युतेन श्री वासुपूज्य चतुर्विंशति पट्ट कारितः प्र० श्री सूरिभिः श्री स्तम्भ तीर्थे । कुतबपुर वास्तव्यः ॥ शुभं भवतु ।

[26]

संवत १५७७ वर्षे वैशाख सुदि ७ सोमे ओस्वाल ज्ञातीय सूराणा गोत्रे साह शिवदास जिनदासकेन गृहे भार्या भाई नारिग सुत भ्रातृ राजपाल सहितेन मातृ नारिग श्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं श्री चतुर्विंशति जिन सहित कारापित प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गच्छे नंदिवर्द्धन सुरि पदे नयचंद सुरिभिः ॥

[27]

संवत १७०० वर्षे फागुण सु० १२ — — — — — — — — गच्छे भट्टारक गुणकीर्ति उपदे- शात् अग्रवाल ज्ञाती गोयल गोत्रे सं । पोरराज भार्या सेदल पुत्र सं० चेमा मल भार्या जीर्ग। पुत्र खालूमणी नित्यं प्रणमंति ॥

[28]

॥ श्री शांतिनाथजी का मंदिर ॥

संवत १५२० वर्षे पौ० सु० १५ शुक्रे उपकेश ज्ञातीय प० सिवा भा० प्रीमलदे सुत प० रानाकेन भा० रमाई प्रमुख कुटुंब युतेन निज श्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री तपा गच्छ नायक श्री श्री श्री रत्नशेखर सूरिभिः ॥

[29]

॥ [illegible] ॥

संवत [illegible] वर्षे [illegible]

घिरी सुलूणी पु० थावरसिंह। जटादि युतेन स्वश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० श्री खर तर गच्छे श्री जिनभद्र सुरि पदे श्री जिनचंद्र सुरिभिः।

॥ श्री सांवलियाजी का मंदिर — रामबाग ॥

[30]

संवत १५४६ माघ वदि ४ सुचिंतित गोत्रे सा० सोनपाल सु० सा० दासू भा० लाडो नाम्न्या पु० सिवराज भार्या सिंगारदे पु० चूहड़धन्ना आसकरणादि सहितया स्वपुण्यार्थं श्री अजितनाथ बिंबं का० प्र० उपकेश गच्छे कुकुदाचार्य सं० श्री देवगुप्त सुरिभिः॥

जिला — मुर्शिदाबाद। स्थान — बालूचर।

॥ श्री आदिनाथजी का मंदिर ॥

[31]

पत्थरों परका लेख।

॥ श्री जिनाय नमः॥ श्री मद्विक्रमादित्य राज्यात् संवत १८४५ मिते। श्री शालिवाहन शकाब्दाङ्के १७१० प्रवत्तमाने। मासोत्तम माघ मासे शुक्ल पक्षे ३ तृतीयायां तिथौ गुरुवासरे श्री तपगच्छाधिराज भट्टारक श्री विजय जैनेंद्र सुरीश्वर विजय राज्ये। मक्षिमापुर वास्तव्य दूगड़ानी गोत्रे। साहजी श्री जीवणदासजी तत्पुत्र धर्म्मभार धुरंधर साहजी श्री केशरी सिंहजी तस्यभार्या धर्म कर्मणि रता बीबी सरूपोजी पं। श्री भाव विजय गणिरुपदेशात्। स्वपुद्य जिन बिंबं स्थापनार्थं॥ बालोचर नगरे श्री जिन प्रासाद कारितं। प्रतिष्ठितं पं० भाव विजय पं० गंभीर विजय गणिभिः। यावत्वरासुमेरोद्रि। यावत्त्रैलोक्य भास्वरं। तावत्तिष्टतु प्रासादं निर्विघ्नन्तु सुनिश्चलं॥ १॥ लिखितं पं० रूपविजयेन।

[32]

श्री जिन शासनो जयति ॥ श्री मत्तपागण शुभांबर धर्मरश्मिः । श्री सूरि हीर विजयोर्ज्जित ज्ञान लक्ष्मी ॥ यस्योपदेश वचनाय्ययवनेश मुख्यो । हिंसानिराकृत परो प्रगुणो बभूव १ ॥ तत्पट्टे क्रमतोरवीव विजय जैनेंद्र सूरीश्वर । स्तद्राज्ये प्रगुणो जिनालय वरो वालोचरे डूंगके ॥ श्री संवेश सहायता शुभरुचिः श्री केशरी सिंहक । स्तत्पत्न्या जिन राज भक्ति वशतः कारापितोयं मुदा ॥ २ ॥ श्री वीर हीर सूरीश संघाटक गुणाकरः । वाचकोत्तम भूमान्यः श्री ऋद्धि विजयोभवत् ॥ ३ ॥ तच्छिष्य भाव विजयोपदेश वाक्येन कारितं रम्यं प्रतिष्ठितं च सदनं जिन देव निवेशनं । शुभतः ॥ ४ ॥ भद्रं भवतु संघस्य भद्रं प्रासाद कारके तथा भद्रं तपा गच्छे भद्रं भवतु धर्मिणां ॥

[33]

॥ धातुयोंपरका लेख ॥

सवत १४९० वैशाख सुदि ५ भार भडिया गोत्रे । सा० भोंदा सुत । सा० पदाकेन पु० फासु रजनादि सहितेन स्वभार्या पदम श्री पुण्यार्थ श्री विमलनाथ बिंबं श्रीहेमहंस सुरिभिः

[34]

संवत १५१३ वै० सुदि ५ गुरौ श्री हुंवड ज्ञातीय फडी० शिवराज सुत मडीया श्रेयसे भ्रातृ हीराकेन भ्रातृज कुरूया सुतेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रति० वृद्ध तपा पक्षे श्री रत्नसिंह सूरिभिः ॥

[35]

संवत १५२० वर्षे माघ वदि ५ गुरौ उपकेश ज्ञातीय श्रे० तेजा भा० तेजलदे पुत्र जूठा भा० पतलमादे पुत्र देवदास गणपति पोपट जैसिंग पोचा युतेन करणा श्रेयोर्थं संभवनाथ बिंबं का० श्री साधु पुर्णिमा पक्षे श्री पुण्यचंद्र सूरीणामुपदेशेन प्र० श्री विजयभद्र सूरिणा कडी वास्तव्यः ॥

[36]

संवत १५३४ वर्षे -- शु० ३ दिने सा० अरसी भार्या रानूं पुत्र सा० लूणाकेन भार्या टीसू प्रमुख कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं तपा गछे श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः पान विहार नगरे ॥

[37]

संवत १५५३ वर्षे माह सुदि ६ दिने वारडेचा गोत्रे सा० कोहा भा० सोनी पु० साह सीहा सहजा सीहा भा० हीरू श्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री कारंट गछे श्री -- सूरिभिः।

[38]

संवत १५७० वर्षे आषाढ़ सुदि २ रवौ श्री श्रीमालान्वये डउडा गोत्रे साह श्री चंद पुत्र चौताल्हण अजय राजा रायमल्ल आसधीर आजा भार्या केली पुत्र सा० योगा इल्हा शकतन पासा नरपाल साह सहसमल्ल पुत्र चिः कीर्त्तिसिंह साह रायमल्ल पुत्र हेमा गजपति ठकुरसी । सा योगा पुत्र महिपाल ठा० इल्हा भार्या इल्हणदे पुत्र सहसमल्ल सीहमल्ल साह आसधर भार्या हासी सिंगारदे पुत्र राया शकतन भा० शकतादे पुत्र षेता जइतमल । षेता पुत्र भैरोदास जइतमलेन राया शकतन पुण्यार्थं; श्री शांतिनाथ चउवीस पट्ट कारित प्र० श्री धर्मघोष गछे श्री साधुरत्न सूरि पट्टे श्री कमलप्रभ सूरि तत्पट्टे श्री उदयप्रभ सूरिभिः।

॥ श्री विमलनाथजी का मंदिर ॥

[39]

संवत १४०२ वर्षे ज्येष्ट वदि ५ शनि० डुगड़ गोत्रे सा० धीदा पु० डाड़ा पुत्र साटा द्वारा रग सुकनाख्या डाडा पितृव्य सा० रूल्हा पु० रेडा श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० बृहद्गच्छीय श्री अमरप्रभ सूरिभिः ॥ शुभं भवतुः ।

[40]

संवत १५१५ चैत्र व० ५ अतरी ग्रामे प्राग्वाट सा० आसा भा० संसारी पुत्र सा०

कर्म सीहेन भा० सारू सुत गोइंद गोपा हापादि कुटुंब युतेन भ्रातृज माहराज श्रेयसे श्री मुनि सुव्रत बिंब का० प्र० तपा श्री सोम सुंदर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिभिः ॥

[41]

सं० १५५१ वर्षे वैशाख सुदि १३ दिने श्री ऊकेश वंशे सखवाल गोत्र सा० लाला भा० ललनादे पुत्र सा० जावडेन भा० जवणादे पुत्र रायपाल तेजा वेला खीला रामपाल भार्या आंदू पुत्र लोहट प्रमुख सपरिवार युतेन श्री मुनि सुव्रत बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री ३ जिनसमुद्र सूरिभिः ॥

[42]

ॐ संवत १५७६ वर्षे श्री खरतर गच्छ भाडीया गोत्रे सा० नाथू पुत्र सा० पाल्हू सा० लकू भा० नीम्बा रा—लटकया मपसीदू प्रमुख कुटुंबि युतया श्री आदिनाथ बिं० का० प्र० श्री जिनहंस सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[43]

सं १६५७ वर्षे वै० शु० ५ भौमे श्रीमाल ज्ञातीय ढोर गोत्रे सा० धरमराज भार्या धीरू सुत सा० सतीदास भार्या बा० ईद्राणी ताभ्यां पुण्यार्थं श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० खर-तर गच्छे श्री जिनचंद्र सूरिभिः । श्री जिनभानु सूरीणामुपदेशेन । अलाई: ४२ वर्षे श्री अकबर राज्ये ।

[44]

॥ रौप्यके सूर्निवर ॥

॥ सं १९२८ मि । आसोज सुदि ९ तिथौ बुधवारे तू । बाबु श्री प्रताप सिंघजी तत्पुत्र लछमीपत्त सि । धनपत्त सिंघ श्री आदिजिन बिंबं कारापितं [illegible] प्रतिष्ठितं ॥ शांति जिनं. नेम जिनं. पार्श्व जिनं. वीर जिनं पञ्चतिर्थी । नि: सिगमर सुद २ ॥ श्रीः ॥

[36]

संवत १५३४ वर्षे — — शु० ३ दिने सा० अरसी भार्या रानूं पुत्र सा० लूणाकेन भार्या टीसु प्रमुख कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं तपा गछे श्री लक्ष्मी सागर सुरिभिः पान विहार नगरे ॥

[37]

संवत १५५३ वर्षे माह सुदि ६ दिने वारडेचा गोत्रे सा० कोहा भा० सोनी पु० साह सीहा संहजा सीहा भा० हीरू श्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री कारंट गछे श्री — — सूरिभिः।

[38]

संवत १५७० वर्षे आषाढ़ सुदि २ रवौ श्री श्रीमालान्वये डगडा गोत्रे साह श्री चंड पुत्र चौताल्हण अजय राजा रायमल्ल आसधीर आजा भार्या केली पुत्र सा० योगा इल्हा शकतन पासा नरपाल साह सहसमल्ल पुत्र चिः कीर्त्तिसिंह साह रायमल्ल पुत्र हेमा गजपति ठकुरसी। सा योगा पुत्र महिपाल ठा० इल्हा भार्या इल्हणदे पुत्र सहसमल्ल सीहमल्ल साह आसधर भार्या हासी सिंगारदे पुत्र राया शकतन भा० शकतादे पुत्र षेता जइतमल। षेता पुत्र भैरोदास जइतमलेन राया शकतन पुण्यार्थं श्री शांतिनाथ चउवीस पट्ट कारित प्र० श्री धर्मघोप गछे श्री साधुरत्न सूरि पट्टे श्री कमलप्रभ सूरि तत्पट्टे श्री उदयप्रभ सुरिभिः।

॥ श्री विमलनाथजी का मंदिर ॥

[39]

संवत १४०२ वर्षे ज्येष्ट वदि ५ शनि० डुगड़ गोत्रे सा० धीहा पु० डाड़ा पुत्र साटा तारा रग मुकनाभ्या डाडा पितृव्य सा० रूल्हा पु० रेडा श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० वृहद्गछीय श्री अमरप्रभ सूरिभिः ॥ शुभं भवतुः।

[40]

संवत १५१५ चैत्र व० ५ अतरी ग्रामे प्राग्वाट सा० आसा भा० संसारी पुत्र सा०

कर्म सीहेन भा० सारू सुत गोइंद गोपा हापादि कुटुंब युतेन भातृज माहराज श्रेयसे श्री मुनि सुव्रत विंबं का० प्र० तपा श्री सोम सुंदर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिभिः ॥

[41]

सं० १५५१ वर्षे वैशाख सुदि १३ दिने श्री ऊकेश वंशे सखवाल गोत्र सा० लाला भा० ललतादे पुत्र सा० जावडेन भा० जवणादे पुत्र रायपाल तेजा वेला खीला रामपाल भार्या आंबू पुत्र सोइंट प्रमुख सपरिवार युतेन श्री मुनि सुव्रत विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गछे श्री ३ जिनसमुद्र सूरिभिः ॥

[42]

ॐ संवत १५७६ वर्षे श्री खरतर गछ भाड़ीया गोत्रे सा० नाधू पुत्र सा० पाल्हू सा० सकू भा० नीष्या रा—सटकया मपलीरू प्रमुख कुटुंबिकया श्री आदिनाथ बि० का० भ० श्री जिनहंस सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[43]

सं १६५७ वर्षे वै० शु० ५ जैसे श्रीमाल ज्ञातीय ढोर गोत्रे सा० धरमराज भार्या वीरू सुत सा० सतीदास भार्या बा० ईन्द्राणी ताभ्यां पुण्यार्थं श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० खर-तर गछे श्री जिनचंद्र सूरिभिः । श्री जिनभानु सूरीणामुपदेशेन । अलाई: ४२ वर्षे श्री अकबर राज्ये ।

[44]

॥ राम्यके मूर्तिपर ॥

॥ सं १९२० मि । आसोज सुदि ९ तिथौ बुधवारे तु । बाबु श्री प्रताप सिंघजी तत्पुत्र लछमीपत सि । धनपत सिंघाभ्यां श्री आदिजिन बिंबं कारापितं सा० महाराज प्रतिष्ठितं ॥ शांति जिनं. नेम जिनं. पार्श्व जिनं. वीर जिनं दश निर्थौं । लि: जिनदत्त सूर २ ॥ श्रीः ॥

॥ श्री सम्भव नाथजी का मन्दिर ॥

॥ पत्थरोंपरका लेख ॥

[45]

संवत १८४४ मिते बैशाख सुदि ५ रवौ । श्री बालूचर पुरे । भ० श्री जिनचंद्र सूरि जी विजय राज्ये वाचनाचार्य श्री अमृतधर्म गणिनां० पं० क्षमाकल्याण गणिः । तच्च कुमारादि युतानामुपदेशतः श्री मक्सूदाबाद वास्तव्य समस्त श्री सङ्घेन श्री सम्भव जिन प्रासादः कारितः प्रतिष्ठापितश्च विधिना । सतां कल्याण वृध्यर्थम् ॥

[46]

अथ चैत्य वर्णनं । निधान कल्पैर्नवनिर्मनोरमै । विशुद्ध हेमः कलशैर्विराजितं ॥ सुचारु घंटावलि कारणाकृति । ध्वनि प्रसन्नी कृत शिष्टमानसम् ॥ १ ॥ चलत्पताका प्रकरैः प्रकाम । माकारयन्नूनमनिन्द्यसत्त्वान् ॥ निषेधयन्निश्चित दुष्टबुद्धीन् । पापात्मनश्चापततः कथंचित् ॥ २ ॥ संसेव्यमानं सुतरां सुधीभि । र्भव्यात्मनिर्भरितर प्रमोदात् ॥ बालूचराख्य प्रवरे पुरेदो । जीयाच्चिरं सम्भवनाथ चैत्यम् ॥ ३ ॥

धातुओंके मूर्त्तिपर ।

[47]

ॐ संवत १५२५ वर्षे आषाढ़ वदि १ उकेश वंशे ढींक गोत्रे म० सिवा भा० हर्षु पु० म० हीराकेण भा० रह्नादे पुत्री सेनाइ प्रमुख परिवार युतेन श्री चंद्रप्रभ बिंबं कारितं श्री खरतर गछे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीः ॥

[48]

सं १५२९ वर्षे आषाढ़ वदि १ श्री मंत्रिदलीय ठ० लाखू भार्या धर्मिणि पुत्र सं० अचल भार्येन पुत्र अमरसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेन देवपाल धीरसेन पद्मराजादि युतेन स्वश्रे

यसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरि पट्टे श्री जिन सुन्दर सूरि पट्टालङ्कार श्री जिनहर्ष सूरिवरैः ॥ श्री ॥

[49]

सं० १५२३ वर्षे वैशाख वदि ४ गुरौ श्री उपकेश वंशे स० देल्हा भार्या हूल्हादे पुत्र वकूआ सुश्रावकेण भार्या मेघू पुत्र जयजइता पौत्र पूना सहितेन स्वश्रयसे श्री अञ्चल गच्छेश्वर श्री जय केशरि सूरीणामुपदेशेन श्री सम्भवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ।

[50]

सं १५२४ वर्षे मार्गशीर्ष सुदि १० शुक्रे उपकेश ज्ञातौ । आदित्यनाग गोत्रे सं० गुणधर पुत्र स० कालण भा० कपूरी पुत्र स० क्षेमपाल भा० जिणदेवाइ पुत्र सा० सोहिलेन भातृ पारस दत्त देवदत्त भार्या नानू युतेन पित्रोः पुण्यार्थं श्री चंद्रप्रभ चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्री उपकेश गच्छे कक्कुदाचार्य सन्ताने श्री कक्क सूरिभिः श्री भट्टनगरे ॥

[51]

सं १५२५ वर्षे ज्येष्ठ व० १ शुक्रे उपके० पत्तन वास्तव्य सा० देवा भा० कपूरी पु० सा० श्याता भा० नाऊं पु० हर्षा भा० मनी भा० साइआ रत्नसी सा० आसकेन रत्नसी निमित्त श्री वासुपूज्य बिंबं उपज्ञा० श्री सिद्धाचार्य सन्ताने प्र० भ० श्री सिद्ध सूरिभिः ॥

[52]

ॐ संवत १५२७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ७ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय वु० नांगा वु० मुजा पुत्र वु० सहिराज भा० रमाइ श्राविकया श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरी श्री जिनसुन्दर सूरि पट्टराज श्री ३ जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीरस्तु कल्याणं भूयात् ।

[53]

सं १५३४ वर्षे उकेश ज्ञातीय [illegible] गोत्रे सहजी भाटा भा० जयतलदे पु० माणिक

भगिन्या वीरिणी नाम्न्या श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री रत्नशेखर सूरि पदे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

[54]

सं १५९१ वर्षे बैशाख वदि ६ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय म० पाल्हा पुत्र म० पांचा भार्या बाइ देऊ पुत्र म० नाथा भार्या श्रा० नाथी पुत्र म० विद्याधरेण पु० म० हंसराज हेमराज भीमा पुत्री इंद्राणी इत्यादि कुटुंब युतेन श्रेयोर्थ श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं कुतब पुरा गच्छे श्री इंद्रनन्दि सूरिपट्टे श्री सौभाग्य नन्दि सूरिभिः श्री पत्तन वास्तव्यः ॥

[55]

सं० १६०० बर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ शनौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय सा० जेठा भा० मल्हाई पुत्र सोनाकर भा० बाइ कमलादे पु० सोना वीराकेन श्री पूर्णिमा पक्षे श्री मुनि रत्न सूरिणा-मुपदेशेन श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥ शुभं भवतु कल्याणमस्तु ।

॥ रौप्यके मूर्त्तिपर ॥

[56]

संवत १९०३ शाके १७६८ प्र । माघ मासे कृष्ण पञ्चम्यां भृगौ वासरे श्री मक्सुदावाद वास्तव्य ओसवाल ज्ञाती वृद्धशाखायां साह निहालचन्द इंद्रासिंघ स्वश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ जिन बिंबं कारापितं । खरतर गच्छे श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं । तप्पा सागर गच्छे ।

राय धनपत सिंहजी का घरदेरासर ।

[57]

सं० १९२० फा० कृ० २ बुधे प्रताप सिंहजी डुगड़ भार्या महताब कुंवर चंद्रप्रभ पञ्च-तीर्थीका । ७ । सदा लाभेन प्र० श्री अमृत चंद्र सूरि राज्ये सं १९४७ आषाढ़ शुक्ल १० आत्मनः कल्याणार्थं ।

किरतचन्दजी सेठिया का मरदेरासर—चावलगोला।

[58]

सं० १५३२ वैशाख वदि ४ प्राग्वाट व्य० अपा भा० आल्ही पुत्र व्य० नरसीइन भा० पद्म पु—माल्हादि कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्र० तपा रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

श्री सांवलियाजी का मन्दिर—कीरतबाग।

[59]

पाषाण के मूर्त्तियोंपर।

॥ श्री सं० १८२० माघ शुक्ल ५ चंद्रे श्री पार्श्वचंद्र गच्छे उ० श्री हर्षचंदजी नित्यचंद्र-जीत्कानामुपदेशेन। ओस वंशे गांधी गोत्रे साहजी श्री कनक नयनजी तत्पुत्र सा० उदय चंद्रजी तत्धर्मपत्नी तथा ओस वं० गइलड़ा गोत्रे जगत्सेठजी श्री फतेचंद्रजी तत्पुत्र सेठ आनन्द चंद्रजी तत्पुत्री बाइ अजबोजी श्री सत्यार्श्वनाथ बिंबं कारापितं। प्रतिष्ठितश्च वि० सूरिभिः श्री भानुचंद्रेणति आचंद्रार्कचिरं नन्दत्वनन्द भूयाछ्रियं।

[60]

॥ श्री सं० १८२० माघ शुक्ल ५ चंद्रे श्री पार्श्वचंद्र गच्छे उ० श्री हर्षचंदजी नित्यचंद्र जीत्कानामुपदेशेन ओस वं० गांधी गोत्रे सा० श्री कनक नयन तत्पुत्र सा० उदय चंद्रजी तत्धर्मपत्नी तथा ओस वंशे गइलड़ा गोत्रे, जगत्सेठ श्री फतेचंद श्री तत्पुत्र सेठ आनन्द चंद्र तत्पुत्री बाइ अजबोजी श्री वासुपूज्य बिंबं कारापितं। प्र० सूरि श्री भानुचंद्रेणेति नन्द भूयाछ्रियं सदा॥

[61]

पाषाण के चरणोंपर।

सं० १८२० वर्षे माघ शुक्ल ५ चंद्रवासरे ओस वंशे गांधी गोत्रे सा० श्री कनक नयन

जी तत्पुत्र सा० उदयचन्द जी तद्भार्या बाइ अजबोजीकेन श्री पार्श्व प्रथम आर्यदिन्न गण-
धर पादुका कारापितं ।

[62]

सं० १८३० वर्षे माघ शुक्ल ५ सोमे गांधी गोत्रे सा० श्री कमल नयन जी तत्पुत्र सा०
श्री उदयचंद्र जी तद्धर्मपत्नी बाइ अजबोजीकेन श्री वासुपूज्य प्रथम सुभूम गणधर
पादुका कारापितं ।

[63]

सं० १८६१ चैत्र शुक्ल पञ्चम्यां शनिवासरे चंद्र कुलाधिप श्री जिनदत्त सूरीणां चरण
न्यासनं श्री सङ्घाग्रहेण श्री जिनहर्ष सूरीणामुपदेशात्प्रतिष्ठितं ॥

[64]

धातुके मूर्त्तियोंपर ।

सं० १५१४ वर्षे वै० व० ४ उके० व्य० गोइन्द भा० राजू पुत्र नाथू भार्या रूपिणि
मातृ—नाल्हा केन भार्या लीलू प्रमुख कुटुंब युतेन श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं
श्री सोमसुन्दर सूरिपट्टे श्री रत्नशेखर सूरि राज्येः ठ ॥ कालधरी ॥

[65]

सं० १५३० वर्षे चैत्र वदि ५ गुरू रजीआण गोत्रे हुंबड़ ज्ञातीय दोसी ठाकुर सी भा०
भा० कुसी सुत दोसी [illegible] रूपाख दासा पोगा युतेन मातृ श्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं
कारितं हुंबड़ गछे श्री सिंघदत्त सूरि प्रतिष्ठितं । उपाध्याय श्री शीलकुञ्जर गणि ।

[66]

सं० १५३१ वर्षे वैशाख वदि ११ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञा० सा० [illegible] भा० [illegible] सु०
सा० [illegible] भा० [illegible] सु० सा० [illegible] भा० [illegible] सु० सा० सोम भा० पाती

सहस्राख्यैः पितृ मातृ श्रेयसे श्री अजितनाथादि चतुर्विंशति पट्टः पूर्णिमा पक्षे श्री पुण्यरत्न सूरीणामुपदेशेन कारितः प्रतिष्ठितश्च विधिना श्री अहमदावाद नगरे।

श्री दादास्थान का मन्दिर।

पाषाण के चरणोंपर।

[67]

॥ श्री ॐ नमः ॥ संवत १७२१ मिति माघ सुदि १५ दिने महोपाध्याय [illegible] श्री समयसुन्दर जी गणि गजेंद्राणां शिष्य मुख्योत्तम श्री १०५ श्री हर्षनन्दन [illegible] आर्या पंडितोत्तम प्रवर श्री ३ श्री भीमजी श्री सारङ्गजी तत्शिष्य पं० बोधाजी तत्शिष्य पं० हजारी नन्दस्य उपदेशेन सुश्रावक पुण्य प्रभावक कातेला गोत्रे साहजी श्री सोनाचन्द जी तत् भ्रातृ मोतीचन्द जी श्री मत् बृहत खरतर गच्छे जङ्गम युगप्रधान चारित्र चूड़ामणि भट्टारक प्रभु श्री १०८ श्री दादाजी श्री जिनदत्त सूरिजी दादाजी श्री १०३ श्री जिनकुशल सूरि सूरीश्व-राणां पादुका कारापिता मकशूदाबाद मध्ये प्रतिष्ठितं महेंद्र सागर सूरिभिः ॥ शुभमस्तु।

[68]

सं० १८३६ रा वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्लपक्षे १० तिथौ शुक्रवारे बृहत श्री खरतर गच्छे सं० । यु० । भ० । श्री १०८ श्री जिनचंद्र सूरि सन्तानीय सकल शास्त्रार्थ पाठन प्रधान बुद्धि निधान । श्री महोपाध्याय जी श्री १०८ श्री रत्नसुन्दर गणिजिठराणां चरण स्थापन म साहजी दूगड़ गोत्रीय श्री बाबु श्री बुधसिंह जी तत्पुत्र बाबु श्री प्रतापसिंह जी आग्रहे प्रतिष्ठितं श्री रस्तुः कल्याणमस्तुः।

श्री आदिनाथजी का मन्दिर — कठगोला।

[69]

ॐ संवत १४८९ वर्षे पोष वदि १० बुधे श्री नीमा ज्ञातीय मं० महुणा भार्या [illegible]

सुतेन सह स्वश्रेयसे श्री जीवतस्वामि श्री सुपार्श्वनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री बृहत्तपा पक्षे श्री रत्नसिंह सूरिभिः शुभंभवतु ।

[70]

सं० १५३० बर्षे माघ सुदि ४ शुक्रे सांबोसण वासि प्राग्वाट ज्ञा० व्य० सोना भा० माऊ पु० व्य० नारद बंधु व्य० सिरूआकेन भा० वीह्वणदे पु० देपर मेघा राइयादि कुटुंब युतेन निज श्रेयसे श्री सम्भवनाथ बिंबं का० प्र० श्री तपा गछे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

[71]

सं० १५०३ शाके १३६८ प्रवर्त्तमाने माघ कृष्ण ५ भृगु अहमदाबाद वास्तव्य ओसवाल ज्ञाती बृद्ध शाखायां सा० केसरीसिंह तत्पुत्र साह बिसंघजि तद्भार्या रुपमणी स्वश्रर्थे श्री आदिश्वर जिन बिंबं करापितं श्री शांतिसागर सूरिभिः प्र० ॥

श्री जगत्सेठजी का मन्दिर — महिमापुर ।

[72]

सं० १५२२ वर्षे माघ वदि १ गुरो प्रा० ज्ञा० म० जेसा भा० सूरी पुत्र सर्वखेन भा० रूपाइ मातृ पितृ श्रेयसे स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्र० श्री साधु पूर्णिमा पक्षे श्री पुण्यचंद्र सुरीणामुपदेशेन विधिना श्री विजयचंद्र सूरिभिः ॥ श्री रस्तु ।

[73]

सं० १५३६ व० फा० सु० १२ प्राग्वाट व्य० हीरा भा० रूपादे पुत्र व्य० देपा भा० गीमति पु० गांगाकेन भा० नाथी पुत्र मेरा भ्रातृ गोगादि कुटुंब युतेन श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० तपा गछे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः । पींडरवाड़ा ग्रामे सुंठलिया वंशे श्रीः ।

[74]

सं १५७७ वैशाख सुदि ६ सोमे उपकेश ज्ञातौ बलहि गोत्रे राका शाखायां सा० पासड भा० हापू पु० पेथाकेन भा० जीका पु० २ देपा द्धदादि परिवार युतेन स्वपुण्यार्थं श्री पद्मप्रभ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपकेश गच्छे ककुदाचार्य सन्ताने भ० श्री सिद्ध सूरिभिः दन्तराइ वास्तव्यः ।

[75]

स्फटिक के बिंब पर ।

सं १७१० व० ज्ये० सु० १ श्री स्तम्भ तीर्थ वा० उकेश ज्ञा० गांधि गोत्रे प—सी सीपति भा० शिवा श्री कुन्थुनाथ बिंबं प्र० श्री विजयानन्द सूरिभिः । तप (नय) करण ।

[76]

रौप्यके मूर्त्ति पर ।

सं० १७७६ वर्षे वैशाख शुक्ल ५ तिथौ । ओसवाल वंशीय श्रेष्ट श्री माणिक चन्दजी स्वधर्म पत्नी माणिक देवी प्रतिष्ठितं श्रीमत् चतुर्विंशति जिन बिंबं चिरं जयतात् ॥ श्रेयोस्तुः ॥ भद्र भवतुः ॥ १४

॥ श्री नमिनाथजी का मन्दिर — कासिमबजार ॥

[77]

धातुयोंके मूर्तिपर ।

सं० १४०० वर्षे ज्येष्ट वदि ५ उपकेश ज्ञातीय आयचणाग गोत्रे सा० आगा भा० वाल्हि पु० साजू नाहू भा० रूपी पु० खेमा ताल्हा तावड़ श्री नमीनाथ बिंबं का० पूर्वंतलि० पु० आत्मा श्रे० उपकेश कुक० प्र० श्री सिद्ध सूरिभिः ।

[78]

सं० १५२० बर्षे फागुण वदि १ दिने शुक्रे श्रीमाल वंशे साहू गोत्रे श्री सा० पद्मा पुत्र सा० पासा भा० पूनादे पुत्र साना पाइनादि परिवार परिवृतेन श्री श्रेयांसनाथ बिंबं स्वपुण्यार्थं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सुरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[79]

पाषाणोंके मूर्त्ति और चरणपर।

सम्बत १५४८ बर्षे बैशाख सुदि ३ श्री मुलसंघ भट्टारक जी श्री जिनचंद्र देव साह जीवराज पापड़ीवाल ---।

[80]

॥ सं० १७५८ बर्षे मिती फागुण सुदि ५ गुरौ श्री गौतम स्वामि पादुका कारापितं काकरेचा गोत्रे सा० बीरदास पुत्र लषमीपतिकेन।

[81]

सम्बत् १७७० बर्षे मिती माह बदि २ बार गुरु दिने कारितमिदं पंडित मुनिभद्र गणिबरेण प्रतिष्ठितश्च बिधिना उ० श्री कर्पूरप्रिय गणिभिः --- कास्माबाजार --।

[82]

सं० १७८१ मिति आषाढ़ शुक्ल १० तिथौ शनिवारे पूज्य श्री हीरागरिजीना पादुका कारापिता सेठिया गुलाबचन्द ॥

[83]

सं० १८२१ माघ शुक्ल १२ रवौ महोपाध्याय श्री नित्यचंद्रजी स्वर्गगतः। श्री पार्श्वचंद्र सुरि गच्छे।

[84]

॥ सम्वत १९६७ वर्षे मिति आषाढ़ सुदि ९ शुभदिन बुधवारे श्री जिनकुशल सुरिजी सद्गुरूणा चरणन्यासः कारितः श्री संघेन । कास्माबाजार वास्तव्य श्रावकैः सुगुणोज्वलैः । पूजनीयाः प्रतिदिनं गुरुपादाः — — — त्रिः १ ॥

॥ श्री सम्भवनाथजी का मन्दिर — अजिमगञ्ज ॥

[85]

पाषाणकी विशाल मूल बिंब पर ।

॥ श्री वीर गताब्दा २४०३ विक्रमादित्य सम्वत १९३३ शालिवाहन १७९८ माघ शुक्ल एकादश्यां गुरुवासरे रोहिणी नक्षत्रे मीन लग्ने वङ्गदेशे मक्षुदाबादांतर्गताजिमगञ्ज नाम्नी बृहत् ओस वंशे लुंपक गच्छे बुधसिंह पुत्र प्रतापसिंह तद्भार्या महताबकुमर्या तत् पुत्र ज्येष्ठ राय लक्ष्मीपतिसिंह बहादुर तत् लघु भ्राता राय धनपतसिंह बहादुर स्वयं एवं गनपतसिंह नरपतसिंह सपरिवारेन श्री सम्भवजिन बिंबं शांतिनाथ जी नेमनाथ जी पार्श्वनाथ जी महावीर जी परिकर सहित कारापितं विक्टोरिया सम्राट विद्यमाने प्रतिष्ठितं सर्व सूरिभिः ॥

[86]

जीर्ण मन्दिर — [illegible] ।

ॐ भगवते नमः ॥ सम्वत अट्ठारह सै ग्यारह १८११ [illegible] । ओसवाल कुल गोत्र [illegible] श्री [illegible] धर्मजी [illegible] सुत [illegible] सिंह [illegible] । तिनके [illegible] मन्दिर [illegible] ।

[78]

सं० १५२९ वर्षे फागुण वदि १ दिने शुक्रे श्रीमाल वंशे साहू गोत्रे श्री सा० पद्मा पुत्र सा० पासा ना० पूनादे पुत्र साना पाइनादि परिवार परिवृतेन श्री श्रेयांसनाथ विंवं स्वपु ण्यार्थं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सुरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[79]

पाषाणोंके मूर्त्ति और चरणपर।

सम्वत १५४९ वर्षे वैशाख सुदि ७ श्री मुलसंङ्घ भट्टारक जी श्री जिनचंद्र देव साह जीवराज पापड़ीवाल ---।

[80]

॥ सं० १७५९ वर्षे मिती फागुण सुदि ५ गुरौ श्री गौतम स्वामि पादुका कारापितं काकरेचा गोत्रे सा० वीरदास पुत्र लषमीपतिकेन।

[81]

सम्वत् १७७० वर्षे मिती माह वदि ३ वार गुरु दिने कारितमिदं पंक्ति मुनिभद्र गणि वरेण प्रतिष्ठितश्च विधिना ज० श्री कर्पूरप्रिय गणिभिः --- कास्माबाजार --।

[82]

सं० १७८१ मिति आषाढ़ शुक्र १० तिथौ शनिवारे पूज्य श्री हीरागरिजीना पादुका कारापिता सेठिया गुलाबचन्द ॥

[83]

सं० १८२१ माघ शुक्र १३ रवौ महोपाध्याय श्री नित्यचंद्रजी स्वर्गगतः। श्री पार्श्वचंद्र सुरि गच्छे।

॥ सम्वत १९६७ वर्षे मिति आषाढ़ सुदि ९ शुभदिन बुधवारे श्री जिनकुशल सुरिजी सद्गुरूणां चरणन्यासः कारितः श्री सङ्घेन । कास्माबाजार वास्तव्य श्रावकैः सुगुणोज्वलैः । पूजनीयाः प्रतिदिनं गुरुपादाः --- भिः १ ॥

॥ श्री सम्भवनाथजी का मन्दिर — अजिमगञ्ज ॥

[85]

पाषाणकी विशाल मूल बिंब पर ।

॥ श्री वीर गताब्दा २४०३ विक्रमादित्य सम्वत १९३३ शालिवाहन १७९८ माघ शुक्ल एकादश्यां गुरुवासरे रोहिणी नक्षत्रे मीन लग्ने बङ्गदेशे मक्षुदाबादांतर्गताजिमगञ्ज वासी वृहत ओस वंशे लुंपक गच्छे बुधसिंह पुत्र प्रतापसिंह तद्भार्या महतावं कुमर्य तत् वृहत् पुत्र राय लक्ष्मीपतिसिंह बहादुर तत् लघु भ्राता राय धनपतसिंह बहादुर स्वयं एवं गनपतसिंह नरपतसिंह सपरिवारेन श्री सम्भवजिन बिंबं शांतिनाथ जी नेमनाथ जी पार्श्वनाथ जी महावीर जी परिकर सहित कारापितं भिक्टुरिया सम्राट विद्यामाने प्रतिष्ठितं सर्व सूरिभिः ॥

[86]

जीर्ण मन्दिर — दस्तुरहाट ।

ॐ भगवते नमः ॥ सम्वत अठारह से ग्यारह (१८११) कृष्ण द्वादशी भृगु वैशाख । ओसवाल कुल गोत्र गोलछा श्री मक्खोन धर्मकी साख ॥ सत्ताचन्द के अमरचन्द सुत तिन सुत मुहकमसिंह सुनाम । तिनके धाम राय मन्दिर यह नागीन्द्री नीर विश्राम ॥

[78]

सं० १५२९ वर्षे फागुण वदि १ दिने शुक्रे श्रीमाल वंशे साहू गोत्रे श्री सा० पद्मा पुत्र सा० पासा भा० पूनादे पुत्र साना पाइनादि परिवार परिवृतेन श्री श्रेयांसनाथ विंबं स्वपु ण्यार्थं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः॥

[79]

पाषाणोंके मूर्त्ति और चरणपर।

सम्वत १५४९ वर्षे वैशाख सुदि ७ श्री मुलसंघे भट्टारक जी श्री जिनचंद्र देव साह जीवराज पापड़ीवाल ---।

[80]

॥ सं० १७५९ वर्षे मिती फागुण सुदि ५ गुरौ श्री गौतम स्वामि पादुका कारापितं काकरेचा गोत्रे सा० वीरदास पुत्र लषमीपतिकेन।

[81]

सम्वत् १७७० वर्षे मिती माह वदि ३ वार गुरु दिने कारितमिदं पंडित मुनिभद्र गणि वरेण प्रतिष्ठितश्च विधिना उ० श्री कर्पूरप्रिय गणिभिः --- कासमावाजार --।

[82]

सं० १९०१ मिति आषाढ़ शुक्ल १० तिथौ शनिवारे पूज्य श्री हीरागरिजीना पादुका कारापिता सेठिया गुलाबचन्द ॥

[83]

सं० १८२१ माघ शुक्ल १३ रवौ महोपाध्याय श्री नित्यचंद्रजी स्वर्गगतः। श्री पार्श्वचंद्र सूरि गच्छे।

॥ सम्वत १७६७ वर्षे मिति आषाढ़ सुदि ए शुभदिन बुधवारे श्री जिनकुशल सुरिजी सद्गुरूणा चरणन्यासः कारितः श्री सङ्घेन । कासमावाजार वास्तव्य श्रावकैः सुगुणोज्वलैः । पूजनीयाः प्रतिदिनं गुरुपादाः ——— भिः १ ॥

॥ श्री सम्भवनाथजी का मन्दिर — अजिमगञ्ज ॥

[85]

पाषाणकी विशाल मूल बिंब पर ।

॥ श्री वीर गताब्दा २४०३ विक्रमादित्य सम्वत १९३३ शालिवाहन १७९८ माघ शुक्ल एकादश्यां गुरुवासरे रोहिणी नक्षत्रे मीन लग्ने वङ्गदेशे मखुदावादांतर्गताजिमगञ्ज वासी वृहत ओस वंशे लुंपक गच्छे बुधसिंह पुत्र प्रतापसिंह तद्भार्या महताव कुमर्य तत् वृहत पुत्र राय लक्ष्मीपतिसिंह बहादुर तत् लघु भ्राता राय धनपतसिंह बहादुर स्वयं एवं गनपतसिंह नरपतसिंह सपरिवारेन श्री सम्भवजिन बिंबं शांतिनाथ जी नेमनाथ जी पार्श्वनाथ जी महावीर जी परिकर सहित कारापितं भिक्टुरिया सम्राट विद्यामाने प्रतिष्टितं सर्व सूरिभिः ॥

[86]

जीर्ण मन्दिर — दस्तुरहाट ।

ॐ भगवते नमः ॥ सम्वत अठारह से ग्यारह (१८११) कृष्ण द्वादसी भृगु बैसाख । ओसवाल कुल गोत्र गोखरु श्री मर्जीन धर्मकी साख ॥ सभाचन्द के अमरचन्द सुत तिन सुत सुहकमसिंह सुनाम । तिनके धाम राय मन्दिर यह नागीन्धी नीर विश्राम ॥

कलकत्ता — बड़ाबजार ।

॥ श्री धर्मनाथ स्वामी का पञ्चायति मन्दिर ॥

पत्थर परका लेख ।

[87]

श्री ॥ सम्वत चंद्रमुनि सिद्धि मेदिनी । १८७१ । प्रतिष्ठितं शाके रसवह्नि मुनि शशी १७३९ । संख्ये प्रवर्त्तमाने माघ मासे धवलषष्ठि तिथौ बुधवासरे श्री शांतिनाथ जिनेंद्राणां प्रासादोयम् । श्री कलकत्ता नगर वास्तव्यः श्री समस्त सङ्घेन कारितः प्रतिष्ठितः श्री खरतर गच्छेश भट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिभिः । श्रीरस्तु ॥

[८८]

धातुओं के मूर्त्तिपर ।

सम्वत ११७४ माघ सु० १४ पद्मप्रभ सुत स्थिरदेव पत्नी रैवसिया श्रेयो ----।

[८९]

सं० १२५९ वैशाख सु० ३ बुधे सो० जेहड़ सुत सा० बहुदेव हीर भद्राभ्यां मातृ राज श्री श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता मलधारी श्री देवानन्द सूरिभिः ।

[९०]

सम्वत १३४९ वर्षे ज्येष्ट सुदि १४ वर्षे प्राग्वाट जाति० मह० सादा सुत मह० राजा श्रेयसे सुत मह० मालहिवि श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्टापितं ।

[९१]

सं० १३७५ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० आमचंद्र भार्या रत्नादेवी पुत्र सहजा श्री शान्ति-नाथ का० श्री हेमचन्द्र सूरिभिः प्र० मड़ाहड़ीय ।

संं० १४३४ वर्षे ज्येष्ठ वदि १ गुरौ बरहुड़िया गोत्रे सा० भोजदेव पुत्र मु० सरसति श्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्र० देवाचार्य सं० -- सुरिभिः।

[93]

सम्वत १४४९ आषाढ़ सुदि १ गुरौ श्री अञ्चल गच्छे उकेश वंशे गोखरु गोत्रे सा० नाल्हण भार्या तिहुणसिरि पुत्र सा० नाग राजेन स्वपितुः श्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितञ्च श्री सूरिभिः।

[94]

सं० १४५९ वर्षे ज्येष्ठ वदि १३ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० रतना भार्या लक्ष्मादे पुत्र सोगाकेन पित्रो श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं का० प्र० श्री --।

[95]

सं० १४५९ वर्षे मासि चैत वदि १ उवएस ज्ञातीय व्य० देवराज भार्या जसमादे पुत्र भूपा भा० धन्नूणादे सहितेन पित्रो भ्रातृ रामसी श्रेयसे श्री पद्मप्रभ बिंबं कारितं प्र० ब्रह्मा-णीय गच्छे श्री उदयानन्द सुरिभिः।

[96]

स्वस्ति ॥ सम्वत १४७१ वर्षे फागुण सु० १२ बुधे श्रीमाल महरोल गोत्रे सा० ईदा सुत सा० खेमराजे स० महादेवेन श्री आदिनाथ बिंबं प्र० श्री विजयप्रभ सुरिभिः ॥

[97]

सं० १५०३ वर्षे माघ सुदि ५ ओस वंशे काकरिया गोत्रे सा० साजण पुत्र सा० सालिग भार्य्या पद्माईना शान्तिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं कृर्पपीय श्री नयचंद्र सुरिभिः।

[98]

सं० १५०६ वर्षे पोष सुदि ५ ऊस वंशे चत्तकरीया गोत्रे सा० पाल्हेव भा० करणू पुत्र सामल भार्या नयणादे पु० श्रीवठ सहिता आत्म पुण्यार्थं श्री श्रेयांस बिंबं का० प्र० --- गच्छे श्री नयचंद्र सूरिभिः।

[99]

सं० १५०६ वर्षे पोष सुदि १५ सोमे उपकेश वंशे श्री काकरिया गोत्रे सं० सुरजन भा० चंभी पुत्र श्रीरङ्गेन आत्म श्रेयसे निज मातृ पितृ श्रेयसे श्री चंद्रप्रभ बिंबं का० प्र० श्री . गच्छे श्री नयचंद्र सूरिभिः॥

[100]

सं० १५१० वर्षे फागुण वदि ३ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय ठकुर धरणी भार्या बाई गाङ्गी सुत ठकुर मांकण भार्या बाई अरघू तेन स्वकुटुम्ब श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं आगम गच्छे श्री जिन रत्न सूरिनामुपदेशेन॥ श्रीरस्तु कल्याण॥

[101]

सम्बत १५१३ वर्षे मा० सु० ६ रवौ ऊसवाल ज्ञातीय बहुरा गोत्रे सा० खीमा पुत्र बरषा भा० वालहदे स० भातृ रल्हा श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चित्रवाल गच्छे श्री दाणाकर सूरिभिः।

[102]

सं० १५१४ वर्षे आषा० वदि १३ दिने बपुड़ाणा गोत्रे तुंभिआ गोत्रे सुत देवराजेन पु० पद्दराज युने बिंबं का० प्र० श्री सर्वानन्द सूरिभिः।

[103]

सं० १५१९ वर्षे भाद्रव सुदि १० नंद्रिवहीय श्री काणा गोत्रे ठ० लाधू भा० धार्मिणि

पु० अचल दासेन पु० उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेन देवपाल वीरसेन महिराजादि युतेन श्री शान्तिनाथ का० श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[104]

सम्वत १५१९ वर्षे कार्त्तिक वदि ४ गुरू श्रीमाली ज्ञातीय मंत्रि देपा भार्या सहिजू सुत धरजांगकेन भ्रातृ जेसा नरवद हापा सहितेन पितृ मातृ श्रेयोर्थं श्री अजितनाथादि चतुर्विंशति पट्ट कारित प्रतिष्ठित श्री ब्रह्माण गच्छे श्री मुनिचंद्र सूरि पट्टे श्री वीर सूरिभिः ॥ भैया वास्तव्यः श्री शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥

[105]

सं० १५२४ वै० शु० १० ऊकेश पेदर वासि स० महिराज भार्या चपाई सुत पद्मसिंहेन भगिनी पघाई प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्री शीतलनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्री सोमसुन्दर सुरि सन्ताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्रीरस्तु ॥

[106]

सं० १५२४ वै० शु० प्रा० श्रे० पाता भा० वाहू पुत्र जोगाकेन भा० जावड़ि पु० रामदास भ्रातृ अर्जुन भा० सोनाइ प्र० कु० युतेन श्री शीतलनाथ बिंबं का० प्र० श्री सोमसुन्दर सूरि सन्ताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

[107]

सं० १५३२ वर्षे वै० सु० ६ सोमे श्री ऊकेश वंशे आसू सन्ताने स० सोजा पुत्र नरपाना भूना स० जोल्हा नारदाभ्यां श्री अभिनन्दन जिन बिंबं कारितं प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[108]

सं० १५३२ वर्षे वैशाख सु० १० बुधे श्री ऊकेश वंशे [illegible] गोत्रे सा० [illegible] भा०

[117]

सं० १५११ वर्षे पोष बदि ५ बुधे श्री ब्रह्माण गच्छे श्री श्रीमाल ज्ञातीयः श्रे० मांझा भा० राणा सु० बस्ता भा० अलवेसरि नाम्न्या स्वभर्तृ श्रे० श्री कुन्थुनाथ बिं० प्र० श्री विमल सूरिभिः। बगुड्डा वास्तव्यः॥

[118]

सं० १५३२ वर्षे वैशाख बदि ५ रवौ श्री भावडार गच्छे उपकेश ज्ञातीय वांठीया गोत्रे व्य० भीमण भा० हलू पु० सादा भा० सूहगदे पु० नेमीचन्द --- भ्रातृ नेमा पुण्यार्थं समस्त कुटुम्ब श्रेयसे श्री सुबिधिनाथ प्रमुख चतुर्विंशति पट्ट का० प्र० श्री कालकाचार्य सन्ताने भ० श्री भावदेव सूरिभिः॥ सीरोही वास्तव्यः शुभम्भवतु॥

[119]

सम्वत १५५१ वर्षे पोष सुदि १३ शुक्रे श्री श्रीवंशे सा० अदा भा० धर्मिणि पुत्र सा० वस्ता सा० तेजा सा० पीमा सा० तेजा भार्या लीलादे सुश्राविकया स्वपुण्यार्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं श्री अंचल गच्छेश श्रीमत् श्री सिद्धान्त सागर सूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं श्री पत्तन नगरे श्री सङ्घेन॥ श्रीः॥

[120]

सं० १६६७ व० उ० ज्ञा० जड़िया गो० स० होला पुत्र स० पूरणमल्ल पुत्र सं० भूपतिना श्री विमलनाथ बिंबं महोपाध्याय श्री विवेकहर्ष गण्युपदेशात्का० प्र० तपा गच्छेन्द्र भ० श्री विजयसेन सूरिभिः॥

॥ श्री चंद्रप्रभु स्वामीका मन्दिर—माणिकतला॥

[121]

सं० १५११ वर्षे आषाढ़ बदि ९ भौमे उकेश ज्ञातीय सा० जैसिंग भा० चम्पो पुत्रेण

सा० वीदाकेन भा० नयी सहितेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥ श्री झूंझणू वास्तव्य ।

[122]

सं० १५१६ कार्त्तिक वदि २ रवौ श्री ऊएस वंशे लोढ़ा गोत्रे सा० ठाजू भा० पीमिणि पु० सा० गजसी भा० भूराइ पु० सा० धना भा० धर्मादे पु० सा० समधरेण भा० सूहवदे सहितेन वृद्ध भ्रातृ नरपति संसारचंद्र पुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं रुद्र पल्लीय गच्छे श्री सोमसुन्दर सूरिभिः ॥

[123]

सम्वत १५२२ वर्षे कार्त्तिक वदि ५ गुरौ श्री ऊएस वंशे । स० घड़ीया भार्या कपूरी पुत्र स० गोवल भा० लखमादे पुत्र खेताकेन भ्रातृ पितृ पितृव्य मातृ श्रेयसे श्री अंचलगच्छाधिराज श्री श्री जयकेशरि सूरीणामुपदेशेन श्री चंद्रप्रभ स्वामी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥ कच्छदेशे धसड्का ग्रामे ॥ श्री ॥

[124]

सं० १६२४ वर्षे फा० शु० — शः पत्तने सं० माइया ना समस्त कुटुम्ब युतेन श्री श्रेयांस नाथ बिं० का० प्र० श्री वृद्धतपा गच्छाधिराज श्री हीरविजय सूरिभिः ॥

॥ श्री शीतलनाथ स्वामीका मन्दिर — मानिकतला ॥

[125]

सं० १५८६ वर्षे वैशाख वदि १ रवौ श्री [illegible] श्रे० [illegible] भा० [illegible] सुत पितृ [illegible] मातृ [illegible] श्रेयोर्थं सुत [illegible] श्री नेमिनाथ बिंबं कारितं श्री — पु — ग — [illegible] पट्टे श्री [illegible]सुन्दर सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं [illegible] ।

श्री जिनचंद्र सूरिभिः बृहत् खरतर गच्छे अजिमगञ्ज वास्तव्य कारितं गोलेछा गोत्र---
--- श्राविकया कारि ॥

(२। शान्तिनाथ ३। चंद्रप्रभु ४। विमलनाथ --- अभयराजेन श्रेयोर्थं।)

[143]

॥ सं। १८५६ फाल्गुण कृष्ण प्रतिपत्तथौ श्री वासुपूज्य जिन चरण न्यासः प्र। सर्व सूरिभिः। कारितं। सर्व संघेन। चंपानगर मध्ये ॥

[144]

॥ संवत। १८५६ वैशाख शुक्ल पक्षे तृतीयायां तिथौ श्री जिनकुशल सूरि पादुकं। प्रतिष्ठितं भः श्री जिनचंद्र सूरिभिः बृहत् खरतर गच्छे कारितं। समस्त श्री संघेन श्रेयार्थं।

[145]

संवत १८८१ मिति माग शुक्ल षष्ठ्यां शुक्रवार काष्ठासंघ माथुर गच्छे पुष्कर गणे लोहा चार्याम्नाय भट्टारक श्री जगत्कीर्ति सदाम्नाय अग्रोत कान्वये पिपल गोत्रे प्रयाग नगर वास्तव्य सा० क श्री हीरालाल पुत्र ऋषभदास पुत्र सन्नूलाल --- अगरवाल प्रभा सा --- श्री पद्मप्रभ --- प्रतिष्ठा कारिता।

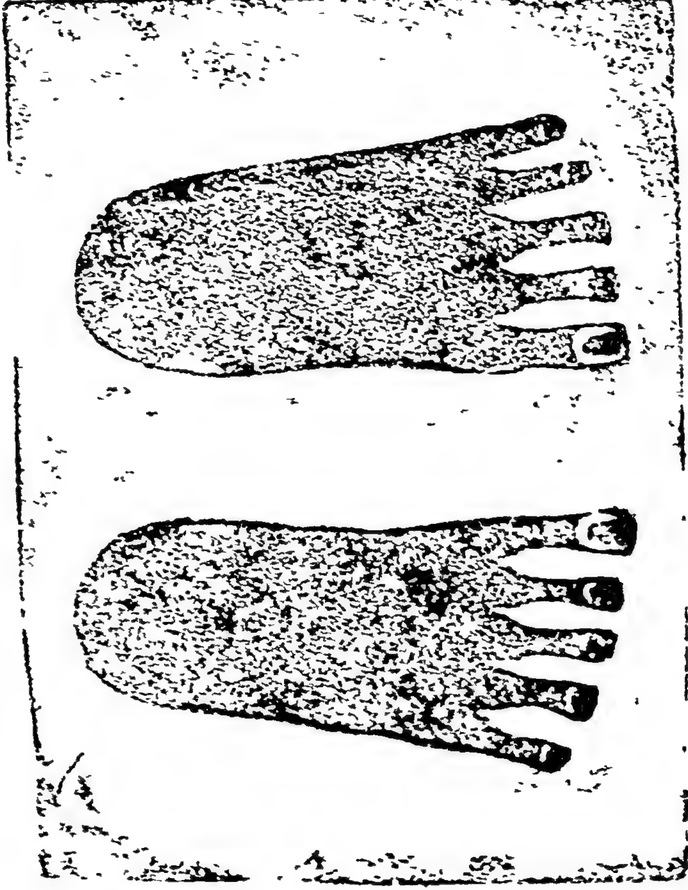
[146]

सं १९०० आषाढ शित ९ गुरौ श्री संभवनाथ बिंवं प्रतिष्ठितं बृहत --- सूरिभिः कारितं च डूगड़ सरूपचंद भ्रातृ करमचंद दुलासचंद जननी प्राण बीबी श्रेयोर्थं।

[147]

संवत १९०७ वर्षे मिः फागुण सुदि ३ दिने। श्री शान्तिनाथ बिंवं कारितं मकसुदावाद वास्तव्य श्री संघेन श्रेयसे प्रतिष्ठितं च भ। श्री जिनहर्ष सूरि पट्टालङ्कार भ। श्री जिन सौभाग्य सूरिभिः बृहत् खरतर गच्छे।

श्री वासुपूज्यजिनचरणन्यासः ॥



[148]

सं १९२० मि । फा० कृष्ण २ बुध — — दूगड़ प्रताप — — —

[149]

॥ संवत् १९२८ मिति जेठ शुक्ल त्रयोदशी तिथौ रवौवारे दूगड़ गोत्रे श्री प्रतापसिंहजी तद्भार्या महताब कुंवर तत्पुत्र राय लछमीपत्तसिंघ बाहादुर तत् लघुभ्राता राय धनपत्तसिंघ बहादुर तत्पत्नी प्राणकुंवर जन्म सफली करणार्थं । जं । यु० प्र० श्री जिनहंस सूरिजी विजैराज्ये ॥ उ० श्री आनन्दवल्लभ गणि तत् शिष्य उ० श्री सदालाभ गणि प्रतिष्ठिता ॥ पूज्याचार्य श्री रतनचन्द सूरि लुंपक गछे ॥ श्रीः ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्री नवपदजी श्री चरो पूरोजी स्थापितः ॥ श्रीः ॥

[150]

श्री वासुपूज्यजी जन्म कल्याणक । सं० १९२५ मि: फाल्गुन कृष्ण ५ तिथौ । दूगड़ श्री प्रतापसिंघजी तत्पुत्र राय लछमीपत्तसिंघ बहादुर तद्भ्रात श्री धनपत्तसिंघ बहादुर कारापितं जं० । यु० । प्र० । भ० । श्री जिनहंस सूरिजी विजैराज्ये ॥ उ० श्री सागरचन्द गणि प्रतिष्ठितं ॥ शुभंभूयात् ।

[151]

धातुओंके मूर्त्तिपर ।

सं १५०९ वर्षे ज्येष्ठ० सु० — रवौ गंघू ज्ञा० रमाई — — हेमा हापा लाषा पु० साडस ज्ञा० लक्ष्मीरूपिणि पुण्यार्थं श्री चतुर्विंशति जिन प्रतिमा श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री शांति सूरिभिः ॥ श्रीः

[152]

संवत १५२७ वर्षे माघ व० १ सोमे प्रा० सं० धारा भा० सहजू पुत्रेन सा० वेला बंधुना

सं० वनाकेन भा० सीत्रू प्रमुख कुटुम्ब युतेन निज श्रेयसे श्री सम्भवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥ माल्यबन ग्रामे ॥

[153]

सं १५३० श्री मूलसंघे श्री मानिकचन्द देवराज प्रतिष्ठापितं – – – ।

[154]

सं० १५५१ वर्षे मा० सु० १३ गुरू ऊकेश वंशे सिंघाड़िया गोत्रे सा० चांपा भा० राजं पु० सा० जोला भा० लहिकू पु० सा० पूजा० सा० काजा सा० राजा पु० धना सा० कालू सा० काजा भा० कुनिगदे इत्यादि परिवृतेन सा० काजाकेन श्री आदिनाथ चतुर्विंशति पट्टे का० प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरि पट्टे श्री जिनसुन्दर सूरि पट्टे श्री पूज्य श्री जिन हर्ष सूरिभिः ॥

[155]

संवत १५७१ वर्षे माघ वदि १० शुक्रे श्री प्राग्वाट ज्ञा० वृद्धशाखायां व्य० सहिसा सु० व्य० समधर भा० वड़धू सुत व्य० लेसा भार्या हिमाई सुत व्य० तेजा जीवा वर्द्धमान एते प्रतिष्ठापितं श्री निगम प्रभावक श्री आणंदसागर सूरिभिः ॥ श्री शान्तिनाथ बिंबं श्री रस्तु श्री पतन नगरे ॥

[156]

संवत १५७५ वर्षे आषाढ़ सुदि ५ सोमे श्री ऊसवाल ज्ञातीय आइचणी गोत्रे चोर वेड़ीया शाखायं सं० जइता भार्या जइतलदे पु० सं० चूहड़ा भार्या भूरी सुत ऊधरण चंड पाल आत्म श्रेयोर्थ श्री आदिनाथ बिंबं कारितं श्री ऊपकेश गच्छे कुकदाचार्य सन्ताने प्रति ष्ठितं श्री श्री श्री सिद्धि सूरिभिः । – – – –

[157]

संवत १६०२ वर्षे मार्गशिर सुद ३ शुक्रे प्रा० ज्ञा – – वास्तव्य – – भा० रङ्गादे सा०

Choubisi (Metal) Champâpur Temple, dated S 1551 (1494 A D.)



मृग ना० सूरमाई सा० श्री रङ्ग सदारङ्ग असीपगादि कुटुम्ब युतेन साह स० चवीरेण श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गच्छे श्री विशालसोम सूरि शिष्य श्री श्री ५ — — सूरिभिः ।

[158]

ह्रींकार यंत्रपर ।

सम्वत १६६९ वर्षे शुक्लेपक्षे त्रयोदशी दिने शुक्रवारे श्री मूलसंघे सरस्वति गच्छे बला-त्कार गणे चंपापुरी नगर शुभस्थाने — — —

[159]

सम्वत १६७३ वर्षे मूलसंघे भ० श्री रत्नचंद्र उपदेशेन उपा० श्री जयकीर्त्ति प्रतिष्ठितं — — ग्रामे समस्त श्री संघेन कारापितं ।

बाबु सुखराज रायजी का घरदेरासर — नाथनगर

पाषाणके मूर्त्तिपर ।

[160]

सं० १७७७ माघ सुदि १३ बुधे ओस वंशे कठारा गोत्रीय लाला जमनादास तद्भार्या आसकुवर तया श्री वासुपूज्य जिन बिंबं कारितं मुनि हेमचंद्रोपदेशात्प्रतिष्ठितं श्री बृहत् खरतर गच्छीय श्री जिन — — — — ।

पञ्चतीर्थीयों पर ।

[161]

सं० १५२९ — — — नंदिदवीप श्री दाएागोत्र द० डाघु ना० धर्मिनलि पु० नद

अचल दासेन पु० अग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेनादि युतेन श्री शान्तिनाथ बिंबं का० प्रति० श्री जिनसुन्दर सूरि पट्टे श्री जिनहर्ष सूरिभिः ।

[162]

सम्वत १५११ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे श्रीमल्यरा ॥ ते ॥ मिघूज गोत्रे । स० इन ग ——— सुश्रावकेण सा० जीवादे पु० आनन्द सा० सोहिल प्रमुख सहितेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे ॥ श्री जिनरत्न सूरिभिः ॥

ह्रींकारके यंत्रपर ।

[163]

सम्वत १८५६ वर्षे वैशाख मासे शुक्लपक्षे तिथौ ३ बुधे श्री सिद्धचक्र यंत्र प्रतिष्ठितं श्री जिन अक्षय सूरि पट्टालङ्कार श्री जिनचंद्र सूरिभिः जयनगर वास्तव्य श्री मालान्वये सरगड़ गोत्रीय सुश्रावक खुबचन्द तत्पुत्र रोसनराय वृद्धिचन्द खुस्यालचन्द सरूपचन्द मोतीचन्द रूपचन्द सपरिकरण कारित स्वश्रेयोर्थं ॥

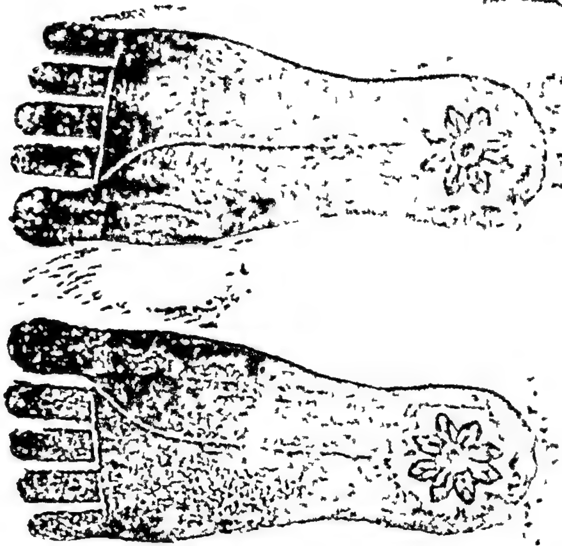
स्थान — भागलपुर ।

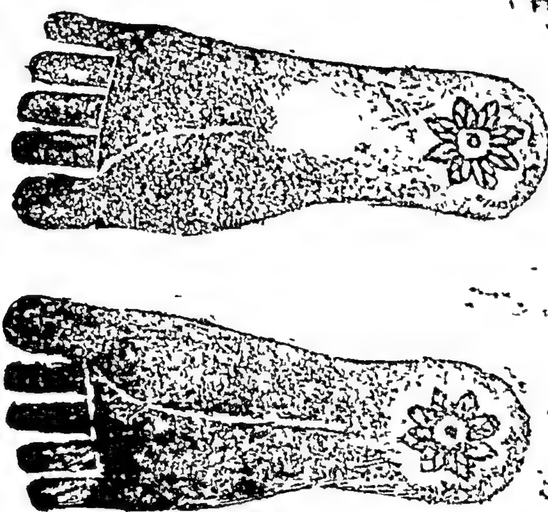
श्री वासुपूज्यजी का मन्दिर (धर्मशालामे)

पाषाणपर ।

[164]

॥ शुभ सं० वीर गताब्दा २४०५ बिक्रम नृपात् १९३६ रा जेष्टमासे वरे शुक्लपक्षे त्रयोदस्यां तिथौ — चम्पा नगर्यां श्री वासुपूज्यजी पञ्चकल्याणक भूम्युपरि ओश वंशे दूगड़ गोत्रे वृ । शा । वा । श्री बुधसिंघजी तत्पुत्र श्री प्रतापसिंघस्य चतुर्थ वधूः महताबकुमरी स्वजन्म सफल करणार्थं इच्छा कृतासिच कालवशात् सं० १९३२ श्रावण कृ० ६ दिने कालधर्मं प्राप्तस्य मनोरथाय तत्पुत्र राय श्री लक्ष्मीपत सिंघजी बहादुर राय श्री धनपत सिंघजी बहादुर





तेन द्रव्येण धर्मशाला जिनालय कारापितं प्रतिष्ठितं सर्व सूरिभिः श्रीसंघ च संचालसी श्री संघ मांगलिक श्री रस्तु श्री कल्याण मस्तु श्री नीकटरीया इसप्रेश राज्ये षृष्टाब्द १८७९।

पाषाणके चरणों पर।

[165]

(१) च्यवन (२) जन्म (३) दीक्षा (४) केवल (५) निर्वाण कल्याणक पादुका॥ साधु ७२००० । साध्वी १०५००० । श्रावक २१५००० । श्राविका ४३६००० ॥ — — — श्री वासु पूज्य पञ्चकल्याणक चरण कारापितं चंपा नगरे ओशवाल वृ। शा। दूगड़ गोत्रे वा। श्री बुधसिंघजी तत्पुत्र श्री प्रतापसिंघजी तत्भार्या महताबकुमर बीबी तत्पुत्र राय श्री लक्ष्मी पतसिंघ श्री धनपतसिंघ बहादुर कारापितं प्रतिष्ठितं सर्वसूरिभि श्री संघस्य शुभंभवतु॥

[166]

॥ ए ए ० ॥ सम्वद्बाणर्षि नागेन्दौ माघ शुक्लादशी भृगौ मल्लि नम्योः पदं जीर्णमुद्धृत खरतरेण श्री जिनहर्ष निदेशी वा मान्यधीर गणि किल माल्हू गोत्रस्य प्रणेन्द्रोर्वित्तमुद्दिश्य काप्यकृत् २ युग्मम्॥ सं० १८७५ मिती वैशाख सुदि १० शुक्रे मिथिला नगर्यां * श्री मल्लि जिन चरणन्यासः॥

[167]

सं० १८२१ माघ शुक्लपक्षे १२ बुधे श्री वासुपूज्य (अजितनाथ, सम्भवनाथ) जिन

---

* यह चरण दरभङ्गा लैन में सीतामढी टेसनके पास मिथिला नगरी से उठाकर लाया गया है। यहां इस समय कोई जैन मन्दिर नहीं है। १९ वां तीर्थङ्कर श्री मल्लिनाथ स्वामीके चार कल्याणक और २१ वां श्री नमि नाथ स्वामीके चार कल्याणक यहां भये थे। श्री मल्लिनाथ मिथिलाके कुंभ राजा और प्रभावती रानीकी पुत्री थी। जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान मार्गशीर्ष सुदि ११ के दिन भया था। इसी नगरके विजय राजा और विप्रा रानीके पुत्र श्री नमिनाथ स्वामीका जन्म श्रावण वदी ८, दीक्षा आषाढ वदि ९, केवल ज्ञान मार्गशीर्ष सुदि ११ के दिन भयाथा [illegible] "मिथिला" [illegible] "[illegible]" नगरी [illegible] है। [illegible] है। [illegible] ६ वें [illegible]।

बिंबं ओस वंशे दूगड़ गोत्रे बाबु प्रतापसिंह पुत्र राय धनपतसिंहेन कारितं
मलधार पूर्णिमा श्री मह्विजय गछे भट्टारक श्री जिन शांतिसागर सूरिभिः ॥

[168]

॥ सं० १९३३ मा । शु । ११ श्री मल्लिजिन बिंबमिदं मकसुदाबाद वास्तव्य ओश
बंशीय लुंपक गणोपाशक दूगड़ गोत्रीय बाबु प्रतापसिंहस्य भार्या महताब कुंवरिकस्य
पुत्र राय धनपतसिंहेन कारापितं प्रतिष्ठितं चाचार्य्येण अमृतचंद्र सूरिणा लुंकागछीयेन
श्री मिथिलापुरवरे ।

[169]

सं० १९३३ सि । मा । सु । १२ श्री नमिजिन बिंबमिदं मकसुदाबाद वास्तव्य ओश
बंशीय लुंपकगणोपाशक दूगड़ गोत्रीय बाबु प्रतापसिंहस्य भार्या महताब कुंवरिकस्य
पुत्र राय धनपतसिंहेन कारापितं प्रतिष्ठितं चाचार्य्येण अमृतचंद्र सूरिणा लुंकागछीयेन
सीतामढ़ी मिथिलायां ।

पंचतीर्थी पर ।

[170]

॥ सं० १५ आषाढादि ९६ वर्षे आषाढ़ शु० ११ दिनेः रा० भण्डारी गोत्रे भं० सिवा
भा० रत्नादे पु० भ० हेमराज वेला भा० वालहदे पु० पता — — बिंबं कारापितं पुण्यार्थं श्री
संडेर गछे भ० श्री साल सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ सू० तानाकेन कृतं ।

॥ॐ नमः॥ संवत् १८ [illegible] वर्षे वैशाखमासे शुक्ल १
[illegible] तिथौ श्री सुविधिनाथ जिनवर चरणक
मलस्था
श्री का
नगरी
कल्या
स्थाने
पेना॥
प्रत्र
तं॥१
काकंदीनामकोवर

तीर्थ काकंदी और क्षत्रियकुण्ड ।

लखीसराय स्टेशन से ६ कोस पर काकंदी है। नवमा तीर्थंकर श्री सुविधिनाथ जी का चवन-जन्म-दीक्षा और केवल ज्ञान यह चार कल्याणक यहां भये हैं। सुग्रीव राजा रामा रानी के पुत्र थे। मृगशीर वदि ५ जन्म, मृगशीर वदि ६ दीक्षा और कार्तिक सुदी ३ के दिन केवल ज्ञान भया। जैन मुनि धन्ना काकन्दी भी यहीं भये हैं।

यहां से नव कोस पर खत्रिय कुण्ड आज कल लछवाड़ गांव के नामसे प्रसिद्ध है। चौविशमां तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी का चवन, जन्म और दीक्षा यह ३ कल्याणक यहां भये हैं।

मूर्त्तियों पर।

[171]

संवत १५०४ वर्ष फागुण सुदि ए महतियाण वंशे मुंरतोड़ गोत्रे। सं० महणसी पुत्र स० देपाल भार्या मू० महिणि स्वकुटुंबेन भ्राता व० मित्र लखमी पुत्र व्य० हंसराज पुत्र --- श्री महावीर बिंबं कारितं प्रतिष्टितं श्री खरतर वा० शुभशील गणिभिः ---।

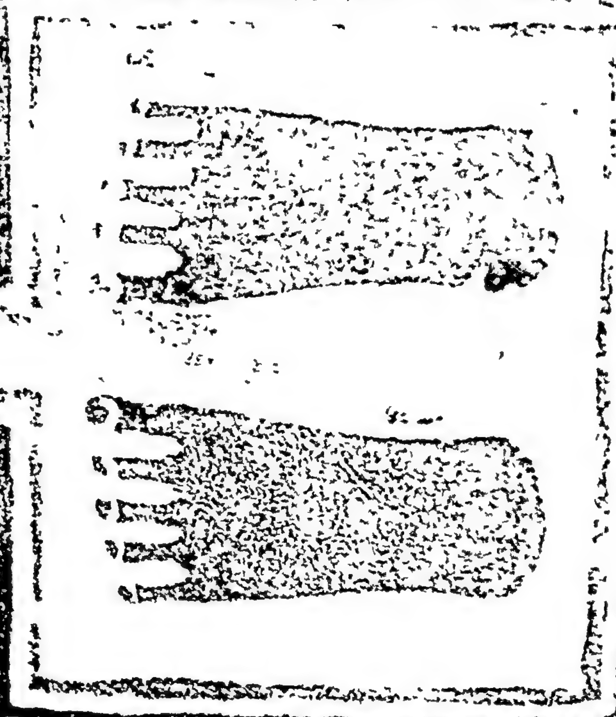
[172]

संवत १५०४ फागुण सुदि ए दिने महतियाण वंशे मुंरतोड़ गोत्रे। सं० -- राजपुत्र सं० महादेपाल भ० माहिणि पुत्र सं० सिवाइ।

चरण पर।

[173]

ओं नमः। संवत १०२२ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे षष्ठी तिथौ श्री सुविधिनाथ जिनवर चरण कमले शुभे स्थापिते॥ श्री काकंदी नगरी जन्म कल्याणक स्थाने श्री संघेन जीर्णोद्धारं कारापितं॥ १ चिरं नन्दतु तीर्थोयं काकंदी नामको वरः।



तीर्थ काकंदी और क्षत्रियकुण्ड ।

लखीसराय स्टेशन से ६ कोस पर काकंदी है। नवमा तीर्थंकर श्री सुविधिनाथ जी का चवन-जन्म-दीक्षा और केवल ज्ञान यह चार कल्याणक यहां भये हैं। सुग्रीव राजा रामा रानी के पुत्र थे। मृगशीर वदि ५ जन्म, मृगशीर वदि ६ दीक्षा और कार्तिक सुदी ३ के दिन केवल ज्ञान भया। जैन मुनि धन्ना काकन्दी भी यहीं भये हैं।

यहां से नव कोस पर खत्रिय कुण्ड आज कल लछवाड़ गांव के नामसे प्रसिद्ध है। चौविशमां तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी का चवन, जन्म और दीक्षा यह ३ कल्याणक यहां भये हैं।

मूर्त्तियों पर।

[171]

संवत १५०४ वर्ष फागुण सुदि ए नहतियाण वंशे मुंरुतोड़ गोत्रे। सं० महणसी पुत्र स० देपाल भार्या सू० महिणि स्वकुटुंबेन भ्राता व० मित्र लखमी पुत्र व्य० हंसराज पुत्र -- -- श्री महावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर वा० शुभशील गणिभिः ---।

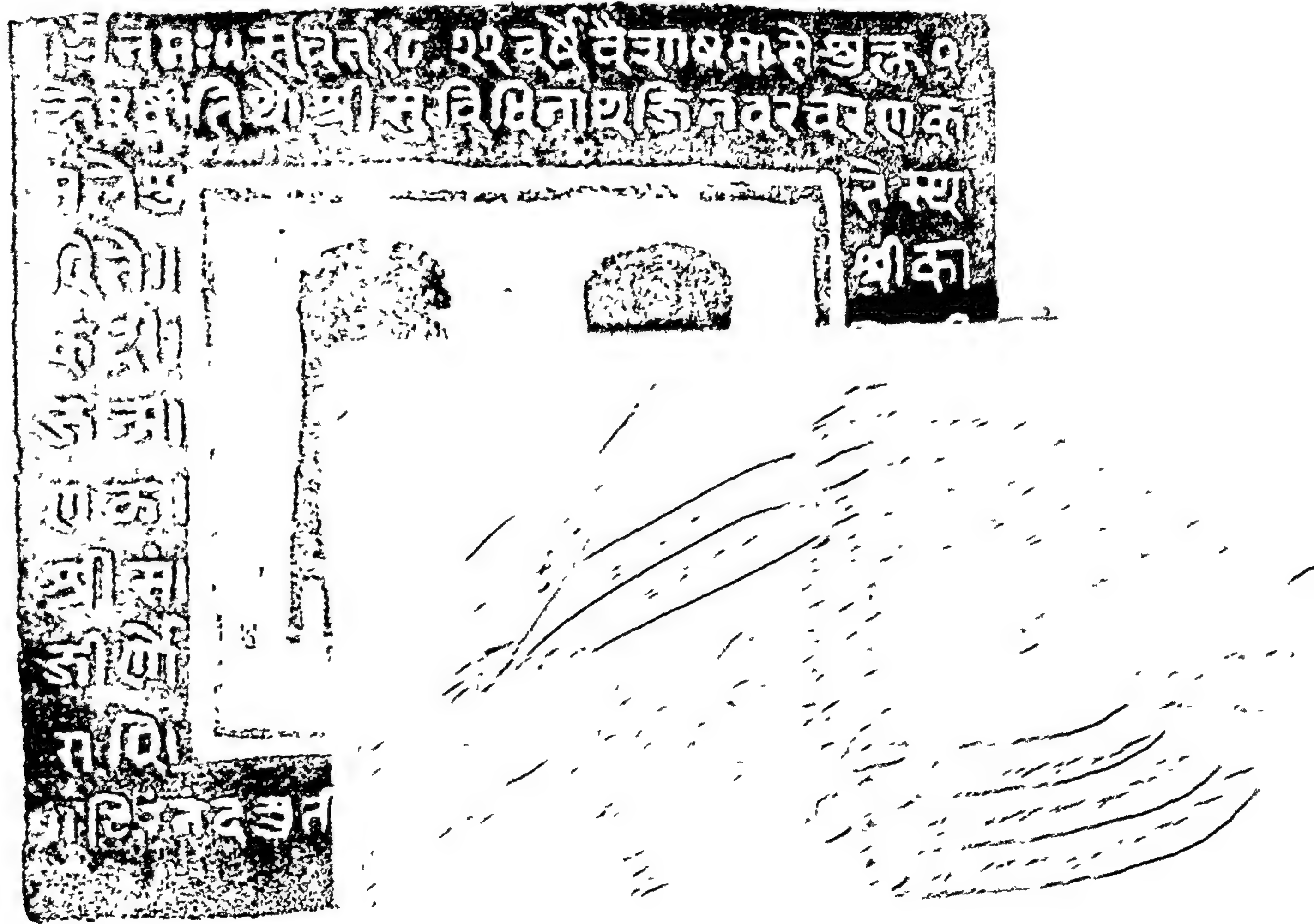
[172]

संवत १५०४ फागुण सुदि ए दिने महतियाण वंशे मुंरुतोड़ गोत्रे। सं० -- राजपुत्र सं० महादेपाल भ० माहिणि पुत्र सं० सिवाई।

चरण पर।

[173]

ओं नमः। संवत १०२२ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे षष्ठी तिथौ श्री सुविधिनाथ जिनवर चरण कमले शुभे स्थापिते ॥ श्री काकंदी नगरी जन्म कल्याणक स्थाने श्री संघेन -- द्वारं कारापितं ॥ १ चिरं नन्दतु तीर्थोयं काकंदी नामको वरः।



Footprints Kakandi Temple, dated S 1822 (1765 A D)



पाषाण पर।

[174]

मकसूदाबाद अजीमगञ्ज वास्तव्य दूगड़ गोत्रे बाबु प्रतापसिंहजी तद्भार्या महता
तत्पुत्र राय लक्ष्मीपत तत्लघु सहोदर राय धनपतसिंह बहादुरेण न्याग उच्चाग व
प्रभू का जिनालय करापितः लछवाड़ मध्ये उ० श्री सागरचंद्र गणि प्रतिष्ठितं। सं०
मिती बैशाख वदी २ चन्द्रे — —।

श्री गुणायाजी।

नवादा (गया लाईन) ष्टेसनसे १॥ माईल पर यह स्थान है। इसका नाम
"गुणशील चैत्य" से प्रसिद्ध है। यहां २४ मां तीर्थंकर श्री महावीर स्वामीका १७
आयाथा। स्थान मनोहर और श्री पावापुरी तीर्थके जलमन्दिर की तरह तालाव बी
मन्दिर है।

धातुके मूर्त्तिपर।

[175]

संबत् १५१० बर्षे फागुण वदि १२ उसवालान्वये सूधाला गोत्रे स० — मीला भा०
पुत्र सा० तोल्हा भा० पई नाम्न्या स्वपुण्यार्थं पद्मप्रभ बिंबं कारितं प्र० श्री पद्मानंद सू

पाषाणके चरणोंपर।

[176]

संबत १६०० बर्षे बैशाख सुदि १५ तिथौ मंत्रीदल बंसे चोपरा गोत्रे ठा० बिमलदास
तत्पुत्र ठा० तुलसीदास तत्पुत्र श्री ठा० संग्राम गोवर्द्धनदास तस्य माता ठकुरी श्री निहालो
तत्पु० भार्या ठकुरेटी प्रमु० भ० श्री जिनकुसल सूरिका कारापिता पूज्य श्रीश्री ५ श्री श्रीराज
सुरि विद्यमाने उपाध्याय अभय धर्म्मेन प्रतिष्ठा कृता स्थिर लग्ने खरतर गछे।



S 1088 (1631 A D)

[177]

संवत १९३४ मिति माघ कृष्ण ५ सोमे श्री गुणशिलाख्ये चैत्ये श्री दूगड़ प्रतापसिंह जीत्कानां भार्या महताब कुंवर तत्कुक्षिसंभूत कनिष्ठ पुत्र श्री राय धनपतसिंह बहादुर नाम्ना स्वपत्नी प्राणकुंवर जन्म सफली करणार्थं श्री अष्टापद तीर्थे श्री शत्रुंजय निर्वाण श्यातया श्री आदि जिन चरण पादुका कारापिता श्री जिनभक्ति सूरि शाखायां उ० सदा लाभ गणिना प्रतिष्ठितं शुभम्

[178]

सं० १९३७ माघ शु० ५ सकल संघेन श्री वीर पादुका कारापित्वा स्थापितं श्री गुण-शील चैत्ये आत्महिताय ॥

पापाय पर ।

[179]

सं० १९३४ मिती माघ कृष्ण ५ सोमे गुणशील चैत्ये दूगड़ गोत्रे श्री प्रतापसिंहजी तत्भार्या महताब कुंवर तत्पुत्र चिरू राय बहादुर तत् प्रथम पत्नी प्राणकुंवर जन्म साफल्य करापिता जीर्णोद्धारं । उ० श्री आणंद वल्लभ गणि तत्शिष्य उ० श्री सागरचंद गणि उप-देशात् ॥ श्रीः ॥ शुभंभूयात् ।

पापाय पर ।

[180]

— — । श्री जिनेंद्र जयती । स्वस्ती श्री मद वीरजिनेंद्र सं० २४७८ वि० सं० १९०८ वर्षे वै० वद० ७ बुधवारे श्री तपा गच्छाम्नाय भावक शुभ्रावक दस्सा श्रीमाल ज्ञातीय साह खरचन्द रंगीलदास देवचन्द पाटनवाळा हाल मुकाम देवला मुंबई वे वनता स्वार्थं सम बन्धु चतुर चन्द सुत देव चन्द बाळ चन्द भाण चन्द सह = ३ थे । श्री गुणशील चै

भा० करणिणि पुत्रेण स० शुजकरण भा० पद्मिन्याः पु० लक्ष्मीसेन हालू जनन्याः श्रेयो
श्री संजवनाथ बिंबं का० श्री खरतर श्री जिनचन्द्र सूरि पट्ट श्री जिनचंद्र सूरिजिः
ष्ठितं श्रेयोस्तुः ॥

[187]

सं० १५६२ वर्षे बैशाख सु० १० दिने श्रीमाल ज्ञातीय गोत्रे सोठिप्पा सा० रणमल
सा० दीपचंद जार्या जीवादे कारितं । श्री खरतर गच्छ जहारिक श्री जिनहंस सूरि
नमः ॥ प्रतिष्ठा श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं ॥

धातुमयके चरण पर।

[188]

सं० १६४५ वर्षे बैशाख सुदि ३ गुरौ – – – रूपचंद पुत्र जसराज ज्येष्ठ जार्या
श्री वर्द्धमान जिनस्येयं पादुका कारा – – ।

[189]

॥ संवत १७७२ वर्षे माह सुदि १३ दिने सोमवारे श्री पुण्डरक चरण कमल
– – – ।

मध्यके चरणपर।

[190]

॥ ॐ ॥ स्वस्ति श्री जयोमंगलान्युदयश्च ॥ श्री गौतमस्वामिनोलब्धिः ॥ संवत १६–
बैशाख सुदि ५ सोमवासरे ॥ श्री विहार नगर बास्तव्य श्री ऋषभ जिनेश्वर प्रथम पुत्र श्री
जरत चक्रवर्त्ति राजान मुख्य संन्निदल संतानीय महतीयाण ज्ञाती मुख्य चोपड़ा गोत्रा
संघनायक मं० संग्राम । राहदिया गोत्रीय संघ० परमाणन्द प्रमुख श्री बृहत खरतर गच्छी
नरमणि मण्डित जालस्थल श्री जिनचंद्र सूरि प्रतिबोधित महतीयाण श्री संघ कारित
वीर जिन निर्वाण जूमि श्री पावापुरी समीपवर्त्ति वरविमानानुकार श्री वीर जिन प्रासा

॥ [illegible] स्वस्ति श्री [illegible]

[illegible]

नमु दि [illegible]
श्री विहार [illegible]
[illegible]
नाम [illegible]
[illegible]

[illegible] श्री [illegible]

[illegible] श्री [illegible]

[illegible] श्री[illegible] सकल[illegible]

[illegible] राज श्री वीर वर्द्धमान स्वामि

[illegible] श्री वीर जिन [illegible]

[illegible]

[illegible] महाराज सकल [illegible]

[illegible]

भूमौ धाम प्रतिष्ठित श्री महावीर वर्द्धमान जिनराज पादुके महतियाण श्री संघेन कारिते। प्रतिष्ठिते च श्री बृहत्खरतर गच्छाधीश्वर श्री शत्रुंजयाष्टमोद्धार प्रतिष्ठाकर युगप्रधान श्री जिनसिंह सूरि पट्टोदयगिर दिनकर युगप्रधान श्री जिनराज सुरिभिः ॥ श्रीर्जयतु। श्री कनक सागरोपाध्यायः पं० लब्धकीर्त्ति राजहंसादि शिष्य सहिताः प्रणमंति।

११ गणधरोंके चरणों पर।

[101]

१। संवति १६९७ प्रमिते। वैशाख सुदि ५ सोमवारे। श्री विहार नगर वास्तव्य श्री भरत चक्रवर्त्ति महाराजान सकल मंत्रि मुख्य मंत्रिश्वर दलान्वीय नरमणि मंडित श्री जिन चंद्र सूरि प्रबोधित महतियाण ज्ञाति मण्डन चोपड़ा गोत्रीय संघवी संग्राम सारविरेण।

श्री गौतम स्वामि ॥ १ श्री अग्निभूति ॥ २ श्री वायुभूति ॥ ३ श्री व्यक्त स्वामि ॥ ४ श्री सुधर्म्मा स्वामि ॥ ५ श्री मण्डितपुत्र स्वामि ॥ ६ श्री मौर्यपुत्र स्वामि ॥ ७ श्री अकंपिक स्वामि ॥ ८ श्री अचलभ्राता स्वामि ॥ ९ श्री मेतार्य स्वामि ॥ १० श्री प्रभास स्वामि ॥ ११

मंदिर प्रशस्ति*।

[102]

। ऐं० ॥ स्वस्ति श्री संवति १६९८ वैशाख सुदि ५ सोमवासरे। पातिसाह श्री साहि-जां हसकळ नूर मण्डलाधीश्वर विजयिराज्ये ॥ श्री चतुर्विंशतितम जिनाधिराज श्री वीर वर्द्धमान स्वामि निर्वाण कल्याणक पवित्रित पावापुरी परिसरे श्री वीर जिन चैत्य निवेशः ॥ श्री ऋषभ जिनराज प्रथम पुत्र चक्रवर्त्ति श्री भरत महाराज सकल मंत्रि मण्डल श्रेष्ट मंत्रि श्री दल संतानीय महतिआण ज्ञाति श्रृंगार चोपड़ा गोत्रीय संघनायक संघवी तुलसी नार्या निहालो पुत्र सं० संग्राम लघुभ्राता गोवर्द्धन तेजपाल भोजराज। रोहदिय गोत्रीय सं० पर-

* यह वेदीके अन्दर दबा गया है इस कारण कुछ पढ़ा नहीं गया।

दाहिने श्री स्थूलभद्र कोठरी के चरणों पर ।

[200]

श्री ॥ नगनिधि गज गोत्रा सम्मितायां समायां (१८९७) नयन रस मराल
शुकेषु शाके (१७६२) ॥ सित पटधर पाटो फाल्गुने शुक्र पक्षे भुजगपति तिथौ (५)
भार्गवे वासरेहे ॥ १ ॥ श्री मद्ब्रह्मचर्य्य धर्म्म धुरन्धर्या श्री स्थूलभद्राचार्य पादपद्म प्रति
बृहत खरतर गणेश श्री जिनहर्ष सूरि पट्ट प्रभाकर श्री जिन महेन्द्र सूरिणा कारिता
श्री हीरधर्म्म गणि विनय विद्रुत्कुमकज प्रभाकर श्री कुशलचंद्र गण्युपदेशा ः । कारि
श्री संघेः ॥ बदलिया गोत्रीयोत्तम चंद्रात्मज मुन्निलालाभिधेन ॥

[201]

(१) ॥ स० श्री ५ श्री जिन विमल सूरि पादुका । (२) ॥ श्री जिन ललित सू
पादुका ।

[202]

सं० १९०७ वर्षे कार्तिक मासि शुक्र पक्षे पूर्णिमा तिथौ १५ गुरुवासरे० बृहत्
गच्छे० यु० भ० श्री जिनरंग ---।

[203]

सं० १९०७ बर्षे कार्त्तिक शुक्ल पक्षे राका तिथौ १५ गुरु वासरे बृहत् खरतर गच्छे
भ० श्री जिनरंग सूरि शाखायां आचार्य श्री जिनचंद्र सूरिणां शिष्य वा० श्री सुमति
गणिनां पादपद्म स्थाप्यते० वा० भुवनचंद्रेण । वा० सुमतनन्दन गणिनां चरण कमले
आ० श्री जिन चन्द सूरीणां चरण कमले इमे भवतः ।

श्री चंदनबाला कोठरी के चरणों पर ।

[204]

॥ प्र० श्री सुजाण विजयाजी पादुका ।

[205]

सं० १९०० मा वर्षे सिते १२ ॥ वृहत् खरतर गच्छे युः भ० श्री जिनरङ्ग सूरि शाखायां० शि० चरण रेणुना दीप विजयाया: स्थापिते । श्री कीर्त्ति विजयायां — — चरण सरसी रुहे प्रतिष्ठितं ॥ साध्वी ॥ श्री सौभाग्य विजयाया । पादपद्मे प्रतिष्ठितं ।

[206]

सम्वत १८४८ शाके १७१३ वर्षे मिति वैशाख शुक्ल ३ तिथौ भृगु वासरे श्री मत् खरतर गच्छे भट्टारक श्री जिनरङ्ग सूरि शाखायां साध्वीमहत्तरा मति विजयाकस्य पादुका शिष्यनी रूपविजिया पावापूरी मध्ये प्रतिष्ठापितः

[207]

॥ श्री संवत १९३१ का मिति माघ शुक्ल दशमी तिथौ चन्द्र वारे श्री मद्वृहल्लोंका गुर्ज्जराधिपति ॥ श्री पूज्याचार्य जी श्रीश्री १००८ श्रीश्री अक्षयराज सूरिजी चरण कमलो स्थापितो श्री अजयराज सूरिजिः प्रतिष्ठितं च श्री शुभंभवतु =

[208]

॥ ॐ नमः ॥ संवत १८१९ वर्षे माघ मासे शुक्लपक्षे षष्ठी तिथौ गुरुवासरे श्री महावीर जिनवर चरण कमले शुभे स्थापिते । हुगली वास्तव्य ओस वंशे गांधि गोत्रे वृन्दावन दास त्सुत्र साह माणिक चंदेन श्री क्षत्रीकुंड नगर जन्मस्थाने जन्मकल्याणक तीर्थे जीर्णोद्धारं करापितं ॥ स्वपरयोः शुभाय ॥ १ यावल्लवणसमुद्रे सूर्य चंद्रमसौ स्थितौ वरौ तावन्नंदतु तीर्थोयं स — — — — — — — — ।

[209]

॥ ॐ नमः ॥ संवत १८१९ वर्षे श्री महावीर जिन चरण कमले स्थापिते श्री क्षत्रीकुंडे संघाटे साह माणिकचंदेन जीर्णोद्धार करापितं ॥ श्री रस्तु ॥

[227]

संवत १६७४ वर्षे – – माघ सुदि ए दिने सोम वासरे श्रवण नक्षत्रे – – – – ठाकुर – – – ठाकुर जाडेन तत्पुत्र ठाकुर डुखीचंद श्री जिन कुशल सूरीणं पादुके कारितं।

[228]

सं० १६७४ शाके १५५९ ईश्वर बर्षे सम्बतसरं चैत्र वदि १३ शुक्रे शुभे मुहुर्त्ते द – देशे भ० श्री कुमुदचंद्र दिनंद पट्टे भ० श्री मूल श्रृंगार हा – – – – बघेरवाल ज्ञातौ – श्री तोला भा० सं – – – पुत्र स० श्री कृष्ण ॥ – – – – देव भार्या सोहि – – – – – – श्री महावीर पादुका स्थापितं ।

[229]

सं० १८३० माघ शुदि ५ – श्री सकल संघे श्री पार्श्व ना० पा० कारापि – ।

[230]

सं० १८३० माघ शु० ५ सकल संघेन शांतिनाथ पादु० कारापिता – ।

[231]

पन्नरहिये गुणवीस सय वरसे वइसाह – सुद्ध – – – वइ पियामह सिरि कुशल सूरि पाय ठवणा कारिया सिरिमाल वंसे वदलीया गुत्ते साह कमला वइणा जिणद सुगुरु जिन सयल सूरीहिं ॥ श्री ॥ :

[232]

श्री दादाजी श्री कुशल सुरजी सहायः
सं० १८८६ मीती वैशाख सुदी १३ – – – ।

[233]

सं०। १७३७ फाल्गुन कृष्ण ७ गुरौ श्री जिन कुशल सुरी पादन्यास। जं०। यु। प्र त। श्री जिन मुक्ति सूरिश्वराणामादेशात् श्री दालचंद गणिभिः प्रतिष्ठितं॥ सेठ गोत्रीय ताराचंदात्मज रामचंद्रेण कारितः स्वश्रेयोर्थं मिरजापुर वरो

[234]

॥ ॐ नमः सिद्धम्। संवत् १७५० सि० फागुण सुदि ३ श्री मूलसंघे सरस्वति गछे बलात्कार गण कुंद कुंदाचार्य आम्नाय सकल कीर्त्ति भट्टारक तत्पट्टे। भट्टारक कनक कीर्त्ति उपदेशात् शा० कुबेरचंद हरीचंद तद्भार्या केशरबाई खुरदेवाले प्रति०

[235]

संवत् १७५५ पोस सुद १५ गुरु॥ श्री लुंपक गछे श्री पूज्य अजयराज सूरिः प्रतिष्ठितम्॥ बाबू लछमीपत गोविंदचंद की माजी करापितं श्री दादाजी चतुः चरण पादुकेभ्योः॥ श्री स्थूलभद्र सूरिः॥ श्री जिनदत्त सूरिः॥ श्री जिनकुशल सूरिः॥ श्री जिन चंद्र सूरिः॥

राज गृह।

मगध देशकी राजधानी यह राजगृह (राजगिरि) बहुत प्राचीन नगर है। २० मां तीर्थंकर श्री मुनि सुव्रत स्वामीका ३ कल्याणक ज्येष्ट वदि–८ जन्म फाल्गुन सुदि–१२ दीक्षा फाल्गुन वदि–१२ केवल ज्ञान यहां होनेके कारण यह स्थान पवित्र है। २२ मां तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के समय में जरासंधकी भी यही राजधानी थी। २४ मां तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के समयमें प्रसिद्ध नगर था। गौतम बुद्ध की भी यही लीला भूमि थी। प्रसेन जित उनके पुत्र श्रेणिक, उनके पुत्र कोणिक यहांके राजा थे। श्री महावीर स्वामी भी १४ चौमासे यहां किये। जंबुस्वामी, धन्ना, शालिभद्रजी आदि बड़े २ लोग यहांके रहने वाले थे। यहां

पर पहाड़के निचे ब्रह्मकुण्ड, सूर्यकुण्ड आदि उष्ण कुण्ड वहुतसे है और स्थान देखने है। पांच पाहाड़ जो सामने दिखाई देते हैं (१) विपुलगिरि (२) रत्नगिरि (३) गिरि (४) स्वर्णगिरि (५) वैभारगिरि। पहाड़ पर वहुतसे जैन मंदिर बने हुये हैं। से चरण वा मूर्त्ति इधरसे उधर विराजमान है इस कारण यहांके सब लेख एक साथ दिया गया है।

पार्श्वनाथ मंदिर प्रशस्ति। *

[236]

(१) प० ॥ ॐ नमः श्री पार्श्वनाथाय ॥ श्रेयः श्री विपुलाचलामरगिरि स्थेयः स्थि स्वीकृतिः यत्र श्रेणि रमाभिराम भुजगाधीशस्फटासंस्थितिः। पादासीन दिवस्पतिः फल श्री कीर्त्ति पुष्पोद्गमः श्री संघाय ददातु वांछित फ

(२) लं श्री पार्श्वकल्पद्रुमः ॥ १ यत्र श्री मुनि सुव्रतस्य सुविभोर्जन्म व्रतं के साम्राजां जय राम लक्ष्मण जरासंधादि भूमीभुजां। जज्ञे चक्रि वलाच्युत प्रतिहरि शालिनां संभवः प्रापुः श्रेणिक भूधवादि

*"जैन तीर्थ गाईड" के तवारिख सुवे विहार में उसके ग्रंथकर्त्ता लिखते है कि मर्थीयान महल्लाके " में एक शिला लेख जो अलग रखा हुवा है --- संवत तिथि वगेरा की जगह टुटी हुई है पंक्ति (१६) उमदा मगर घीस जानेकी वजह से कम पढ़नेमें आता है अखीर की पंक्तिमें जहां गच्छ का नाम है वहां किसी तोड़ दिया है वज्र शाखा वगेरह नाम वेशक मौजूद है" यह पढ़ कर मुझे देखने की वहुत अभिलाषा हुई। लगाने पर १७ पंक्तिका एक लेख दिवार पर लगा भया पाया। किसी २ जगह टूट गया है संवत वगेरह साफ और दुसरा टुकड़ा मालूम भया। पहिले टुकड़ेके लिये वहुत परिश्रम करने पर पता लगा और अब वहां रईस बाबु धन्नुलालजी सुचंति के यहां रखा गया है। यह प्रशस्ति पूर्व देशकी अपूर्व वस्तु है आज तक अ शित था। इसमें श्री खरतर गच्छकी पट्टावली है जिस्से वहुत पक्षपातीयों का भ्रम दूर हो जावेगा। यह पांच सौ साठ वर्ष प्राचीन है और उस समयके मुसलमान सम्राट और प्रादेशिक शासन कर्त्ताका भी नाम विद्यमान पांडित्य और पद लालित्य भी पुरा है।

(३) त्नविनो वीराच्च जैनीं रमां ॥ २ यत्राज्ञय कुमार श्री शालिधन्यादि साधनाः । सर्वार्थ सिद्धि संज्ञोग त्नुजो जाता द्विधापिहि ॥ ३ यत्र श्री विपुलाज्ञिधोवनि धरो वैज्ञार नामापिच श्री जैनेंद्र विहार ज्ञूषण धरौ पूर्वाप

(४) राशास्थितौ । श्रेयो लोक युगेपि निश्चित मितो लज्यं ब्रुवाते नृणां तीर्थं राज-गृहाज्ञिधानमिह तत्कैः कैर्न संस्तुयते ॥ ४ तत्रच संसारापार पारावार परपार प्रापण प्रवण महत्तम तीर्थे । श्री राजगृहम

(५) हातीर्थे । गजेंद्राकार महापोत प्रकार श्री विपुलगिरि विपुल चूला पीठे सकल महीपाल चक्रचूला माणिक्य मरीचि मंजरी पिंजरित चरण संरोने । सुरत्राण श्री साहि ोजे महीमनुशासति । तदीय

(६) नियोगान्मगधेषु मलिक वयोनाम मण्मलेश्वर समये । तदीय सेवक सह णास रदीन साहाय्येन । यादाय निर्गुण खनिर्गुणि रंग त्नाजं ॥ पुंमौक्तिकावलि रत्नं कुरुते सुराज्यं ः श्रुती अपि शिरः

(७) सुतरां सुताराः सोयं विज्ञाति त्नुवि मंत्रि दलीय वंशः ॥ ५ वंशेमुत्र पवित्र धीः हज पालाख्यः सुमुख्यः सतां जज्ञे नन्यसमान सद्गुणमणी श्रृंगारितांगः पुरा । तत्सूनुस्तु नस्तुत सितद्गुण पालेति प्रतीतो त्नव

(८) ज्ञातस्तस्य कुले सुधांशु धवले राहाज्ञिधानो धनी ॥ ६ तस्यात्मजोजनिच ठकुर रूनाख्यः सद्धर्म कर्म विधि शिष्ट जनेषु मुख्यः । निःसीम शील कमलादि गुणालिधाम जज्ञे हेस्यः गृहिणी घिर देवि नाम

(९) ॥ ७ पुत्रास्तयोः समत्नवन् त्नुवने विचित्राः पंचात्र संतति भृतः सुगुणैः पवित्राः । त्रादिमाख्य इमे सहदेव कामदेवाज्ञिधान महराज इति प्रतीताः ॥ तुर्यः पुनर्जयति तंप्रति वछराजः श्री मा

(१०) न् सुबुद्धि लघु बांधव देवराजः । यात्र्यां जनाधिकतया घनपंक पूर्वे देशेपि धर्म-ण्य धुर्य पदं प्रपेदे ॥ ८ प्रथम मनव माया वछराजस्य जाया समजनि रत नीति स्फीति ज्ञीति रीतिः । प्रज्ञवति पहराजः सद्गु

(२७) वशतः प्रभु पार्श्वनाथ प्रासाद मुत्तम मची करत – – – । श्रीमद्धिहार्गु
वस्थिति वच्छराजः श्रीसिद्धये सुमति सोदर देवराजः ॥ ३१ महेन गुरुणा चात्र वच्छराजः ।
न्धवः । प्रतिष्ठां कारयामास मंरूनान्वय

(२८) मंरूनः ॥ ३२ श्रीजिनचंद्र सूरीन्द्रा येषां संयम दायकाः ।शास्त्रेष्व ।
श्रीजिनलब्धि यतीश्वराः ॥ ३३ कर्त्तारोश्च प्रतिष्ठाया स्ते उपाध्याय पुङ्गवाः । श्री मंतो
हिताभिधाना गुरु शासनात् ॥ ३४ न

(२९) यनचंद्र पयोनिधि भूमिते व्रजति विक्रम भूभृदनेहसि । वहुल षष्ठि दिने शु
मागगे मही मचीकर देव मयं सुधीः ॥ ३५ श्रीपार्श्वनाथ जिन नाथ सनाथ मध्यः ।
[illegible] कलसध्वज मणिभो

(३०) [illegible] । निर्माप कोस्य गुरवोत्र कृत प्रतिष्ठा नंदंतु संघ सहिता भुवि सुप्र
३६ श्रीमत्त्रिभुवन हिताभिधेक वर्यै प्रशस्ति रेषाच । कृत्वा विचित्र वृत्ता लिखिता श्रीजि
[illegible] सूरी ॥ ३७ उत्कीर्णाच सुवर्णा ठकुर मा

(३१) [illegible] पुण्यार्थं । वैज्ञानिक सुश्रावक वरेण वीधाभिधानेन ॥ ३८ श्री
विक्रम संवत १४१२ आषाढ़ वदि ६ दिने।श्रीखरतर गछ शृङ्गार सुगुरु श्रीजिनलब्धि सू
[illegible] श्रीजिनेंद्र सूरिणामुपदे

(३२) [illegible] । श्रीमंत्रि वंश मंरून ठं० मंरून नंदनाभ्यां । श्रीभुवन [illegible]
[illegible] गणि । मोद मूर्त्ति गणि । हर्ष मूर्त्ति गणि । पुण्य प्रधान गणि सहितानां
[illegible] विहार श्रीमहातीर्थ यात्रा संमूत्र

(३३) [illegible] महा प्रभावनया सकल श्रीविधि संघ समान नंदनाभ्यां । ठं० वच्छरा
[illegible] कारि – – – – – स्य । श्रीपार्श्वनाथ प्रसादस्य प्रशस्तिः ॥ शुभं
[illegible] ॥

गांव मन्दिर—धातुओंके मूर्त्ति पर।

(237)

सम्वत १११० चैत मास सुदि १३ संतनाथ प्रतिमा कारित--।

(238)

सं० १४९७ वर्षे आषाढ़ वदि ८ रवौ ऊ० ज्ञा० सा० सपुरा भा० सीसादे पु० कर्मसिंहेन
ो नमिनाथ विंव पितृ मातृ श्रेयसे कारितं उकेश गच्छे श्रीसिद्धाचार्य संताने प्र० श्रीदेव
प्र सूरिभिः।

पाषाण पर।

(239)

सम्वत् १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ दिने महतिआण वंशे जाटड़गोत्रे सा० देवराज पुत्र
० पीमराज पुत्र सं० सिवराज तेन पुत्र सं० रणमल धर्मदास। श्रीशांतिनाथ विंवं
ारितं प्रतिष्ठिते खरतर गच्छे श्री जिनवर्द्धन सूरिपट्टे श्रीजिन चन्द सूरिपट्टे श्री जिन
ागर सूरीणां निदेसेन वाचनाचार्य शुभशील गणिभिः।

(240)

ॐ नमः सिद्धं॥ सम्वत १८१९ वर्षे माघ मासे शुक्लपक्षे ६ तिथौ गुरुवासरे श्री मुनि
ुव्रत स्वामि जन्म कल्याणक चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओसवंशे गंधी गोत्रे
ुलाकीदास पुत्र साह माणिक चंदेन राजगृहे जीर्णोंद्धारं करापितं।

(241)

सं० १८२५ माघ सु० ३ गुरु पेतासाह पुत्र्या उमरबाई केन शांतनाथ विंवं कारापितं।

(242)

श्री शुभ सम्वत १९०० वर्षे मार्गशीर्षमासे शुक्ल पक्षे दशम्यां तिथौ शुभवासरे वर्द्धमान तीर्थंकरस्य चरण पादुका प्र० श्री वृहत्खरतर गच्छे जंगम युग प्रधान श्री जिनरंग सूरीश्वर शाषायां य० यु० भट्टारक श्रीजिन नंदीवर्द्धन सूरी राज्ये श्री नाचार्य श्री मुनि विनय विजयजी तत् शिष्य पं० कीर्त्योंदयोपदेशात् ओसवाल द्वव बाबू खुस्यालचन्दस्य पत्नी बीबी पराण कवरी तेन प्र० का० श्री संघस्य कारिणो भवतु शुभमस्तु।

(243)

शु० स० १९०० व० मार्गशीर्षमासे शु० वा० श्रीचन्द्रप्रभकस्य च० क० प्र० श्री बृ० ग० श्री जिन नन्दी वर्द्धन सू० व० मुनिकीर्त्युदयोपदेशात् महतावचन्द संघीतोकस्य चीरोंजी बीबी प्र० का० शुभमस्तु।

(244)

सं० १९११ व। शा० १७७६ प्र। शुचि शु। १० ति। श्रीचन्द्र प्रभ विंवं प्र०। भ। जिन महेंद्र सूरिभिः का। सा श्री हकु-----खरतर गच्छे।

विपुलगिरि।

(245)

संवत १७०७ शाके १५७२ प्रवर्त्तमाने आश्विन शुक्ल पक्षे त्रयोदश्यां शुक्र वासरे। श्री विहार वास्तव्येन महतीयाण ज्ञातीय चोपड़ा गोत्रेण म० तुलसीदास तत्भार्या निहालो तत्तनयेन मं० संग्रामेण यथीसारपुत्र गोवर्द्धनेन सह श्रीराजगृह विपुल गिरी--- अमै जीर्णा उद्धारिता संघवी संग्रामेण प्र० कल्याण कीर्त्युपदेशात् श्रीखरतर गच्छे लिपतं रतनसी खंडेलवाल गोत्रे पाटनी गुमानसिंही रासिंग ग्राम मुकाम राजग्रिही।

(246)

सं० १८४८ मिती कातिक सुदि ७ तिथौ । श्रीसंघेन । श्रीविपुलाचले मुक्तिंगतस्याति
कक्रमुने मूर्त्तिः कारिता । प्रतिष्ठिता च श्रीअमृतधर्म वाचकैः ।

(247)

सम्वत १९३८ ज्येष्ठमासे शुक्ल पक्षे द्वादशी गुरु वासरे श्रीचन्द्रप्रभ जिन चरण न्यासः
तिष्ठितं वृद्ध विजय गणि प्रथम जीर्णोद्धार माणिकचन्द गंधी करापितं विपुलाचल
तिय जीर्णोद्धार राय लछमीपति सिंह धनपति सिंह करापितं । श्रीरस्तु ॥

(248)

संवत १९३८ ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे द्वादश्यां श्री मुनि सुव्रत जिन चरण न्यासः वृद्ध
विजय प्रतिष्टितं राय लछमीपति सिंह धनपति सिंह जीर्णोद्धार करापितं श्रीरस्तु शुभं
भूयात् विपुलाचल ।

रत्नगिरि ।

(249)

॥ ॐनमः ॥ सम्वत १८१९ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्री नेमिनाथ जिन चरणकमले
स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे वुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक चन्देन
श्री राजगृहे रतनगिरौ जीर्णोद्धार करापिते ॥ श्रियोस्तु ॥

(250)

॥ ॐनमः ॥ सम्वत १८१९ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे ६ तिथौ श्री शांतिनाथ जिनचरण
कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओशवंशे गांधी गोत्रे वुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक
चन्देन श्रीराजगृहे रतनगिरौ जीर्णोद्धारं क० ।

(251)

॥ ॐनमः ॥ संवत १८१९ वर्षे माघमासे शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्री पार्श्वनाथ चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओशवंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र माणिक चन्देन श्रीराजगृहे रतनगिरौ जीर्णोद्धारं करापितं ॥ श्रीः ॥ १ ॥

(252)

ॐनमः ॥ संवत १८१९ वर्षे माघमासे ६ तिथौ श्री वासु पुज्य जिन चरण स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र माणिकचंदेन राजगृहे रतनगिरि पर्वते जीर्णोद्धारं करापितं । स्वपरयोः शुभम् ॥ श्रीः ॥

उदयगिरि ।

(253)

॥ ॐ नमः ॥ संवत १८२३ वर्षे वैशाष शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्री अभिनन्दन जिन कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह चन्देन उदयगिरौ जीर्णोद्धारं करापितं ॥

(254)

॥ ॐनमः ॥ संवत १८२३ वर्षे वैशाष शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्री सुमति जिन चरण स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र माणिकचन्देन गिरौ जीर्णोद्धारं करापितं ॥

(255)

ॐनमः ॥ संवत १८२३ वर्षे वैशाष मासे शुक्ल पक्षे षष्टी तिथौ श्री पार्श्वनाथ चरण कमल स्थापिते ॥ हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधीगोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र माणिकचन्देन श्री राजगृहे उदयगिरि राजे जीर्णोद्धारं करापितं ॥ स्वपरयो हितवे ॥ श्रीः ॥

स्वर्ण गिरि ।

(256)

सं० १५०४ फागुन सुदि ९ दिने महातियाण वंशे जाटड गोत्रे सं० देवराज सं० पीमराज
। सं० सिवराजेन। भार्या सं० माणिकदे पुत्र सं० रणमल धर्मदास सकुटुम्बेन श्री
ादिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिन वर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिन चन्द्र सूरि पट्टे श्रीजिन
गर सूरीणां निदेसेन वाचकाचार्य शुभ शील गणिभिः श्रीखरतर गच्छे।

वैभार गिरि ।

(257)

सं० १५२४ आषाढ़ सुदि १३ खरतर गणेश श्री जिन चन्द्रसूरि विजय राज्ये तदादेशे
ावैभार गिरौ मुनि मेरूणा भि० ॥ ---श्री कमल संयमोपाध्यायैः स्वगुरु श्री जिन भद्र
रि पादुके प्र० का० श्री माल वं० भीषू पुत्र ठ० छीतमल श्रावकेण।

(258)

सं० १५२७ आषाड सुदि १३ श्रीजिन चंद सूरिणा मादेशेन श्री कमल संयमोपाध्यायैः
लाशालि भद्र मूर्त्ति -- का० प्र० पीमसिंह (?) श्रावकेण ।

(259)

ॐनमः ॥ सम्वत १८२६ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे १३ तिथौ श्री आदिनाथ जिन चरण
ामले स्थापितं हुगली वास्तव्य ओसवंशे गांधि गोत्रे दुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक
ादेन राजगृहे वैभार गिरे जीर्णोद्धार करापितं ॥ स्वपरयोः शुभाय ॥ श्री ॥

(260)

॥ श्री सम्वत १८३० माघ शुक्ल ५ चन्द्रे ओसवंशे गहलडा गोत्रे जगत्सेठजी श्री चन्दजी तत्पुत्र सेठ आणंदचन्दजी तत्पुत्र जगत्सेठजी श्री महताब रायजी तद्धर्मं जगत्सेठाणीजी श्रीशृंगारदेजी श्रीमदेकादश गणधर पादुका कारापितं। स्था० नगरोपरि वैभार गिरौ ॥

(261)

सम्वत १८७४ वर्षे शाके १७३९ मिति जेष्ठ वदि ५ सोमदिने श्री व्यवहार गिरि श्री पार्श्वनाथ चरणन्यासः प्रतिष्ठितं भ० श्री जिन हर्ष सूरिभिः ।

(262)

सम्वत १८७४ वर्षे शाके १७३९ मिति ज्येष्ठ वदि ५ सोम दिने । श्री व्यवहार शिपरे । श्रीयुगादि देव चरण न्यासः प्रतिष्ठितं । भट्टारक श्री जिन हर्ष सूरिभिः ॥

(263)

शुभ सं० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्लपक्षे १० दशम्यां तिथौ शुभवासरे शांतिनाथ चरण कमल प्र० श्रीमत् वृहत्खरतर ग० श्री जिन रंग सूरीश्वर साखायां यु० चं० यु० श्री जिन नन्दी वर्द्धन सूरि राज्ये वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् शिष्य पं० कीर्त्युदयोपदेशात् ओसवाल वं० बाबू मोहन लाल कस्यात्मज बाबू हकुमत रायेन का० शुभमस्तु ॥

(264)

ॐ नमः शु० सं० १९०० वर्षे मार्गशीर्षे मासे शु० पक्षे १० द० श्री पद्म प्रभुकस्य च० प्र० श्री वृ० ख० ग० भ० श्री जिन नन्दी वर्द्धन सूरी वा० श्री मुनि विनय विजयजि शि० मु० कीर्त्युदयोपदेशात् बाबू पुरुयाल चन्द पीपाडा गोत्रीयास्य पत्नी पराण प्र० का० श्री वैभार गिरे शुभमस्तु ॥

(265)

॥ सु० स० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्ल पक्षे १० दशम्यां शुभवासरे श्रीमरपार्श्व-
रस्य चरण कमल प्र० श्रीमत् वृहत खरतर ग० श्री जिन रंग सूरीश्वर सापार्यां श्री जिन
दी वर्द्धन सूरि राज्ये वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् शि० मु० कीर्त्युदयोपदेशात्
० वं० पुस्यालचन्द पीपाडा गोत्रस्य पत्नी पराण कुंवर श्राविका प्र० का० वैभार गिरे।

(266)

॥ ॐनमः सिद्धं सं० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्ल पक्ष १० दशम्यां तिथौ शुभ वा०
कुंथनाथस्य चरण क० प्र० श्री मत्वृ० ख० ग० श्री जिन रंग सूरीश्वर सापा० श्री जिन
दी वर्द्धन सूरि य० वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् शिष्य मुनि कीर्त्युदयोपदेशात्
सवाल वंसोद्भव वावु मोहनलालजी त्कस्यात्मज वावु हकुमत राय- -कस्य गोत्रीय
कारापित शुभमस्तु। वैभार गिरी।

(267)

ॐ नमःसिद्धं ॥ शु० सं १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्ल पक्षे १० दशम्यां तिथौ शुभ
० श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथस्य च० प्र० श्री मत्वृ० खरतर ग० श्री जिन रंग सूरिश्वर
खा० म० यं० यु० प्र० श्री जिन नंदी वर्द्धन सूरि वर्त्तमान वा० श्री विनय विजयजि तत्
० मुनि कीर्त्युदयोपदेशात् वावु महताव चन्दस्य सचिती गोत्रीयो तत्पत्नी चिरंजी
बी प्र० का० शुभ मस्तु वैभार गिरे।

(268)

सं० १९११ व। शाके १७७६ प्र०। सुदि: सुदि। तिथौ श्रीनेमिनाथ पादन्यासो कारा०
० प्र० श्री जिन महेन्द्र सूरिभिः [illegible]। हे०। गो०। श्री उदयचन्द्र [illegible] —[illegible]
[illegible] मस्तु: ।

कुण्डलपुर ।

आज कल यह स्थान वडगांव नामसे प्रसिद्ध है परन्तु शास्त्र में इसका गुव्वर नाम है । यहां श्री महावीर स्वामीजीके प्रथम गणधर श्री गोतमस्वामो (इन्द्रभूति का जन्म स्थान है। बौद्धोंके समयमें निकटमें नालंदा नामका प्रसिद्ध और छात्रावास था। चारों तर्फ प्राचीन कीर्त्तियोंके चिन्ह विद्यमान हैं। के तर्फसे इस वर्ष यहां खुदाई आरम्भ भई है आशा है कि प्राचीन इतिहासके बहुतसे साधने यहां मिलेगी ।

पाषाणपर ।

(269)

॥ ५ ॥ संवत १४७७ वर्षे ज्यैष्ट वदि ६ शुक्रे श्री आदिनाथ ऋषभ विंवं का० ।

(270)

॥ सं० १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ दिने महतियाण वंशे काणा गोत्रे स० कउरसी म० भीषण कारित श्री महावीर विंवं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर निदेशेन वाचकाचार्य सुभ शील गणिभिः ।

(271)

सं० १६८६ वर्षे वैशाष सुदि १५ दिने मंत्रिदल वंशे चोपरा गोत्रे ठा० विमलदास ठा० तुलसीदास तत्पुत्र ठा० संग्राम गोवर्द्धनदास तस्य माता ठ० नीहालो तत्पुत्र भार्या देहुरा गोतमस्वामीका चरण गुब्बर ग्राम --कारा पिता वृहत्खरतर गच्छे श्री श्री जिनराज सूरि विद्यमाने उ० अभय धर्मेन प्रतिष्ठा कृता ॥

(272)

सम्वत १६८६ वर्षे शाके १५५१ प्रवर्त्तमाने---- मासि शुक्ल पक्षे सप्तमी गुरु वासरे
ृत श्री खरतर गच्छे युग प्रधान श्री जिन चन्द्रसूरि पादुका ठाकुर देवा तस्यात्मज मांडन
य भार्या न्हालो श्राविका पुण्य प्रभाविका तस्य पुत्र दुलि चन्द्रेण प्रतिमा कारापिता
· माहतीयाल (महतियाण) श्रावकेन गुरु भक्ति दुलिचन्द्र प्रतिष्ठा क० श्री उपाध्याय श्री
ातिलक गणि पादुके प्रतिष्ठितं वा० लब्धिसेन गणि प्रतिष्ठा० ।

पटना (पाटलिपुत्र)

मगधके राजाओंकी राजधानी राजगृहीसे राजा श्रेणिकके पुत्र कोणिक चंपा नगरी
राजधानी बनाया । उनके पुत्र उदाई राजा वहांसे यह पाटलिपुत्र नवीन नगर बसा
ः राजधानी कायम किया । पश्चात् यहां पर नवनन्द मौर्य्य वंशी चन्द्रगुप्त अशोक
ादि बड़े २ राजा राज्य कर गये । पं० चाणक्य, आचार्य उमास्वाति, भद्रबाहू-आर्य
ागिरि, सुहस्थि, वज्र स्वामि महान् लोग यहां रह गये हैं । आचार्य श्री स्थूल भद्र जी
ार सेठ सुदर्शन जी का भी यहीं स्थान है । दादा जी की छत्री भी यहां प्राचीन है
हरका मंदिर जीर्ण होगया है—आज कल विहार उड़ीसाके शासन कर्त्ता यहां रहनेके
ारण और प्रधान विचारालय स्थापित होनेसे यह स्थान उन्नति पर है ।

सहर मन्दिर—पाषाण पर ।

(273)

संवत १८५२ वर्षे पोष शुक्ल ५ भृगुवासरे श्री पडलीपुर वास्तव्य । श्री उकेश संघ समु-
ायेन श्री विशाउ स्वामी । श्री पार्श्वनाथ स्वामी प्रासादस्य जीर्णोद्धारं कारापितं ।
ार्य्यस्यायेश्वरो तपा गच्छीय श्राद्धैः । कुहाड श्री ज्ञानचन्द्रजी प्रतिष्ठितं च श्री सकल
ारिभिः शुभं भूयात् ।

धातुओं के मूर्त्तिपर ।

(274)

सं० १४८६ वर्षे वैशाख सुदि ७ सोमे श्री श्री दूगड गोत्रे सा० अर्जुन पुत्रेण सा० सिंहेन भार्या जयताही पु० सा० मूला सा० नगराज सा० श्री पालादि युतेन श्री चंद प्रभं कारितं प्रतिष्ठितं वृहद्गच्छीय श्री मुनीश्वर सूरि पट्टे प्रभ सूरिभिः ॥

(275)

सं० १४९२ वर्षे श्री आदिनाथ विंवं प्रति० श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि कारितं कांकरिया सा० सोहड़ भार्य्या हीरादेवो श्री--कया ।

(276)

सं० १५०३ वर्षे माघ सुदि ९ बुधौ वासरे चौरपट श्री देवां कीर्त्ति भटकी घौरेय सहिजै पतिभर्जर्षिः भ्यमिरि पुत्र उदत्य-षिम्वराजामन । शुभं ॥

(277)

सं० १५०८ वर्षे वैशाप सु० ५ चन्द्रे उप० सा० पेता भा० पेतलदे पुत्र चाचा देपा पेताकेन डूंगर निमित श्री धर्मनाथ वि० का० प्र० चैत्र गच्छे भ० श्री मुनि सूरिभिः ॥

(278)

सं० १५०९ माह सुदि १० के० सा० ला गो० दो० साल्हा भा० माल्ही पु० ऊदा भा० ऊमादे पु० राणा थिरदे कुंपा पांचा स० ऊदाकेन पीकालमि० (?) श्रीवासुपुज्य बिं० का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री शांति सूरिभिः ॥

(279)

सं० १५१४ जलवाह ग्राम वासि ओसवाल सा० लीला भा० अमरी पुत्र सा० नाथू
ना भा० चनू पुत्र डूंगरादि युतेन भ्रातृ उगम श्रेयसे श्री मुनि सुव्रत विंवं का० प्र०
तपा गच्छेश श्री रत्नशेषर सूरि पुरंदरैः ॥

(280)

सं० १५१७ वर्षे फा० शु० ११ सीणुरा वासि प्रा० वा० मांई (?) आम्र वाकुंसुत सम-
ण भा० राजू पुत्र वानर पर्वतादि युतेन स्व श्रेयसे श्री कुंथु विंवं का० प्र० तपागच्छे
रत्नशेषर सूरिपदे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः आचंद्रार्कं जयतत् ॥ श्री ॥

(281)

सं० १५१९ वर्षे आषाढ़ वदि १ श्री मंत्रि द० श्री काणा गोत्रे सा० लाधू भार्या धर्मिणि
त्र सं० अचल दासेन पुत्र उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेन देवपाल महिराजादि युतेन
श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन सुन्दर सूरिपदे
। जिन हर्ष सूरिभिः ।

(282)

सं० १५२३ वर्षे फा० व० ८ छाव गोत्रे उकेश स० सान्हा भा० कल्ह पुत्र सं-नरसिंह
ा० नामलदे पुत्र सं० साधूकेन श्री यमना भ्रातृ साहलमधर प्रमुख कुटुम्ब युतेन स्व
यसे श्री धर्मनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री –रिभिः : ॥ देप । तप-–श्री ॥

(283)

सं० १५२१ वै० शु० १३ प्राग्वाट सं० आस० भा० रातू सुन सा० जान्हा भा० चोनी
त्र हासादि कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री वासु पूज्य विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री लक्ष्मी
ागर सूरिभिः ॥ जाणांधारा (?) वास्तव्य वासियाः ॥

(284)

सं० १५३१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय घेवरीया गोत्रे सा० केल्हण
भूणी पुत्र साहसू जगपतिकेन भा० साफू पुत्र सहसू युतेन श्री विमल नाथ विंब का०
प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन हर्ष सूरिभिः ॥

(285)

सं० १५३४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० सोमे लींवडी वास्तव्य सं० खेमा भा० गोरी
पुत्र घेडसीम हितया निज श्रेयसे श्री अंचल गच्छे श्री कुंथ केसरि सूरीणामुपदेशेन
कुंथनाथ विंबं का० प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥

(286)

सं० १५३५ श्री मूलसंघ श्री विद्यानंदि गुरु रोहिणी व्रतोद्यापन वासु पूज्य स्वा
प्रतिष्ठितं सदा प्रणमंति गुरवः ।

(287)

सं० १५३६ फा० सु० ८ ओसवाल ज्ञा० सा० देल्हाणधा सुः सरठवणेन (?) सु० सरवण
श्री शांतिनाथ विंबं का० ॥ प्र० ॥ उके । – कव ।

(288)

सं० १५३८ वर्षे आषाढ़ वदि ५ स – – र मूलसंघ श्री मानिक चंद ल – – – श्री॥

(289)

सं० १५६३ वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने श्रीमाल ज्ञातीय भांडिया गोत्रीय सा० आसा
पुत्री सा० टाषा भार्या आढो सुश्राविकया श्री चन्द्र प्रभविंबं कारितं स्व पुण्यार्थं प्र

ा खरतर गच्छे श्री जिन समुद्र सूरि पट्टालंकार श्री जिन हंस सूरिभिः कल्याणं भूयात्
ाह सुदि १ ॥ दिने ॥

(290)

सं० १५६६ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल नवम्यां श्रीमाल वंशे महता गोत्रे सा० हाल्हा तस्य पुत्र
ा० तकतनेनेदं पार्श्वनाथ विंवं कारितं खरतर गच्छे श्री जिनदत्त (?) सूरि अनुक्रमे श्री
नराज सूरिपट्टे श्री जिन चन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(291)

सं० १५६६ वर्षे माघ व० ५ गुरौ लघु शाखायां सा० वीरम भा० कलापुत्र सा० आसा
ा० कुंआरि नाम्न्या मुनि सुव्रत विंवं का० स्वश्रेयसे प्र० तपागच्छे श्री हेम विमल सूरिभिः
नलकच्छे ॥ (?) ॥

(292)

सं० १५७१ वर्षे वैशाष सु० ३ शुक्रे श्री श्री (?) वंशे। सा० माला भा० खाकू नाम्ना
ण्यो (?) जावड़ श्री० अदा समस्त कुटुम्ब युतया श्री अंचलगच्छे श्री भावसागर सूरीणा-
पदेशेन श्री आदिनाथ विंवं कारितं श्री संघेन ॥ श्रेयोऽयं ॥

(293)

सं० १५७६ वर्षे वैशाख सु० ६ सोमे पं० अभयसार गणि पुण्याय शिष्याः पं० अभय
दिर गणि अभय रत्न मुनि युताभ्यां श्री शांतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं विध्र तपा
हे श्री सौभाग्य सागर सूरिभिः।

(294)

सं० १५७६ वर्षे माह सुदि ५ दिने उसवाल ज्ञातीय नवलषा गोत्रे साह्धान भा०-
ासिरि पु० पदमा-पापदमा-पांचा हेमादि युतेन सा० पद्माकेन पूर्वज पुण्यार्थं श्री

(306)

सं० १९०० मिः आषाढ़ सिः ९ गुरौ श्री महावीर जिन विंबं प्रति० खरतर गच्छे भट्टारक श्री जिन हर्ष सूरिपट्टे दिनकर भ० श्री जिन सौभाग्य सूरिभिः तेन ओसवंशे दूगड़ गोत्रे भोलानाथ पुत्र दोलतरामेन स्वश्रेय सोर्थम्।

पाषाण के मूर्त्तियों और चरणों पर।

(307)

(चन्द्रप्रभ विंबपर)

सम्वत १६७१ श्री आगरा वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय लोढ़ा गोत्रे गाणी वंशे ऋषभदास भार्या सुः रेष श्री तत्पुत्र संघराज सं० रूपचन्द चतुर्भुज सं० ध युते श्रीमदंचल गच्छे पूज्य श्री ५ धर्ममूर्त्ति सूरि तत् पट्टे पूज्य श्रीकल्याण सागर मुपदेशेन विद्यमान श्री विसाल जिन विंव प्रति --

(308)

संवत १६७१ वर्षे ओसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे गाणी वंसे साह कुंर पाल सं० सोनपा प्रति० अंचल गच्छे श्री कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन वासु पूज्य बिवं प्रतिष्ठापितं।

(309)

॥ श्री मत्संवत १६७१वर्षे वैशाष सुदि ३ शनौ आगरा वास्तव्योसवाल लोढा गोत्रे गावंसे संघपति ऋषभ दास भा० रेष श्री पुत्र सं० कुरपाल सं० सोनपाल प्रवरौ स्वपितृ ऋष दास पुन्यार्थं श्रीमदंचल गच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरीणा मुपदेशेन श्री पदम प्रभु जिन बिंबं प्रतिष्ठापितं स० चागाकृतं।

(310)

श्री मत्संवत १६७१ वर्षे वैशाष सुदि ३ शनौ श्री आगरा वास्तव्य उपकेश ज्ञातीय लोढा गोत्रे सा० प्रेमन भार्या शक्तादे पुत्र सा० षेतसी लघुभ्राता सा० नेतसी

तेन श्री मदंचल गच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन श्री वास पूज्य
ां प्रतिष्ठापितं सं० कुंरपाल सं० सोनपाल प्रतिष्ठितं ।

(311)

श्री मत्संवत् १६७१ वर्षे वैशाष सुदि ३ शनौ श्री आगरा नगरे ओसवाल ज्ञाती
ोढा गोत्रे — गा वंसे सा० पेमन भार्या श्री सक्कादे पुत्र सा० षेतसी भा० भक्कादे
ुत्र सा० - सांग — श्री अंचल गच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन
ी विमलनाथ विंवं प्रतिष्ठितं सा० कुंरपाल-- ।

(312)

(सं० १६७१) ॥ संघपति श्री कुंरपाल स० सोनपालै : स्वमातृ पुण्यार्थं श्री अंचलगच्छे
ज्य श्री ५ श्रीधर्म्ममूर्ति सूरि पट्टाम्बुजहंस श्री ५ श्री कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन
ीपार्श्वनाथ विंवं प्रतिष्ठापित पुज्यमानं चिरं नंदतु ।

(313)

॥ सं० १७६२ वर्षे कार्त्तिक शु० ९ सा वेणीदास पुत्र भीमसेन पुत्र मयाचन्द प्रतिष्ठा
ारापितं वीराणी गोत्रे पाडली पुरे ।

(314)

सं० १७६२ वर्षे कार्त्तिक शुक्र ९ सा० वेणीदास पुत्र भीमसेन पुत्र मयाचन्द वीराणी
गोत्रे - - - प्रतिष्ठा करापितं पाटली पुरवरे ।

(315)

॥ सं० १७६२ व० का० सु० ९ सा० वेणीदास पुत्र भीमसेन पुत्र मयाचन्द प्र०
वीराणी गोत्र पटना नगर श्री नेमनाथ ॥ श्री शांतिनाथ ॥

(316)

॥ सं० १७८९ वर्षे आसोज सुदि ८ श्रीपासचन्द गच्छे ॥ श्री उपाध्याय जीना पादुका ॥

(317)

॥ संवत १८१९ वर्षे श्री संभवनाथ जिनचरण कमल स्थापिते साह माणिक जीर्णोद्वार करापितं ॥

(318)

सं० १८२५ वर्षे माघ शु० ३ गुरौ गोवर्द्धन सुत सरुपचंदेन प्रति महि - - नाथ कारापितं ।

(319)

॥ संवत् १८२९ श्री ५ पं० लालचन्दजी पादुकं ॥ मनसारामेन स्थापितं ॥ सवंत् श्री ५ पं० रूपचन्दजी पादुका ॥ संवत् १८२९ श्री ५ श्री वा० भारमल्लजी ॥

(320)

॥ शुभ संवत् १८७७ वर्षे ॥ वैशाख शुक्ल पंचम्यां चंद्रवासरे श्री जिन कुशल सूरि सद्गुरूणां चरण पादुका प्रतिष्ठिता श्री मद्बृहत्खरतर गच्छे भट्टारक श्री जिन हर्ष सूरि पट्टालंकृत श्री जिनचन्द्र सूरिभिः श्री मत्पाटलिपुर वास्तव्य। समस्त श्री संघेन प्रतिष्ठा कारापिता। पं। गणि श्री कीर्त्युदयोपदेशात् ॥ श्री रस्तु।

(321)

॥ सम्वत् १८७७ ॥ वर्षे वैशाख शुक्ल पंचम्यां चन्द्रवासरे श्री जिन कुशल सूरि सद्गुरूणां चरण पादुका प्रतिष्ठिता भट्टारक श्री जिन अजय सूरि पट्टालंकृत श्री जि-

Footprints, Pataliputra (Patna) Temple dated S. 1877 (1820 A.D.)



न्द्र सूरिभिः मनेर वास्तव्य श्रीमालान्वये--वदलिया गोत्रे सुश्रावक श्री कल्याणचन्द
त्पुत्र श्री भग्गुलाल कीर्त्तचन्द्र तत्पौत्र किसनप्रसाद अभय चंद्रादि सपरिवारेण स्वश्रे-
ाऽर्थं प्रतिष्ठा कारापिता पं। ग। कीर्त्युदयोपदेशात्।

(322)

श्री आगरा नगर वास्तव्य सं० पति श्री श्री चन्दपालेन प्रतिष्ठा कारिता।

(323)

॥ संवत २४९ वर्षे वेशाष सुदि ३ श्री मुलसंघे भट्टारक जी श्री जिन चन्द्रदेव साह
ोवराज पापडीवाल नित्य प्रणमति सर मम श्री राजाजी स संघे---

(324)

संवत १५४८ वर्षे वैसाष सुदि ३ मुलसंघे भट्टारक श्री जिन चन्द्र सा० जिवराज
ापडिवाल सहैरन-सा श्री राजसी संघ रावल ॥

(325)

॥ संवत १६०४ ज्येष्ठ वदि ३ सोमवारे कुरुवंशे महाराजधिराजजी श्री मत स्याहजा
ज्य भ० ॥ चंद्रकीर्तिजी तत्पदे भ० श्री देवेन्द्र कीर्त्तिजी सदाम्नाये सरस्वती गच्छे
लात्कारगण कुंदाचार्यान्वये शुभं।

(326)

संवत १७३२ वर्षे मार्गशिर्ष वदि पंचमो गुरौ ढाकामध्ये ---- काष्ठा संघ माथुर
च्छे पुष्कल गण लोहाचार्या न्वये दिगम्बर धर्म भट्टारक रूपचन्द्र प्रतिष्ठितं अग्रवाल
ंगिलु गोत्रे सा० गुलाल दास भा० मुलादे पुत्र०। सावलसिंघवी भमरसिंघवी केसर
ंह वि---प्रतिष्ठा कारापितानि सेरपुरेन्तिके ---- ढाकायां प्रतिष्ठा। ---
ादुकानां ॥ श्रेयोस्तुः ॥ पादुका आदिनाथकी। गुरुपादुका ॥

श्री समेत शिखर तीर्थ ।

यह प्रसिद्ध जैन तीर्थ पूर्व देश जिला हजारिबागमें है । १ । १२ । २२ । २४ तीर्थंकरोंके सिवाय और २० तीर्थंकरोंका निर्वाण कल्याणक यहां हुवे हैं । यह पहाड़के २० टोंकमेंसे १९ टोंक पर छत्रिमें चरण पादुका विराजमान हैं और श्री नाथ स्वामीके टोंक पर मंदिर है । तलहटी मधुवनमें मंदिर और धर्मशाला बने हुवे यहांसे ४ कोस पर ऋजुवालुका नदी वहती है जिसके समीपमें श्री वीर भगवानका ज्ञान भया था । यहां पर चरण पादुका है । यहांका और मधुवनका लेख जैन तीर्थ इसे लिया गया है ।

ऋजुवालुका नदीके किनारे छत्रिमें

चरण पर ।

(336)

ऋजुवालुका नदी तटे श्यामाक कुटुम्बी क्षेत्रे वैशाख शुक्ल १० तृतीय प्रहरे ज्ञान कल्याणिक समवसरणमभूत् मुर्शिदावाद वास्तव्य प्रतापसिंह तद्भार्या कुवर तत्पुत्र लक्ष्मीपतसिंह वहादुर तत्कनिष्ट भ्राता धनपतसिंह वहादुरेण सं० १९३० जीर्णोधारं कारापितं ।

मधुवनके मन्दिरके मूर्त्तियों पर ।

(337)

संवत् १८५४ माघ कृष्ण पंचम्यां चंद्रवासरे श्रीपार्श्व जिन विंवं प्रतिष्ठितं --।

(338)

संवत १८५५ फाल्गुण शुक्ल तृतीयायां रवौ श्रीपार्श्वनाथस्य शुभ स्वामी गणधर प्रतिष्ठितं जिन हर्ष सूरिभिः कारितं च वालुचर वास्तव्य श्रीसंघेन ।

(339)

त्रत १८७७ - - श्रीपार्श्व विंवं प्रतिष्ठितं श्री जिन हर्ष सूरिणा कारितं - - सांवत
हज पदार्थ मल्लेन --- ।

(340)

संवत् १८७७ वैशाख शुक्ल १५ श्रीपार्श्वविवं प्रतिष्ठितं श्रीजिनहर्ष सूरिणा गोलेछा
ड़्तावो - - मूलचन्द्र धर्मचन्द्रेण कारितं ।

(341)

संवत १८८७ वर्षे फाल्गुन शुक्ल १३ श्रीपार्श्वनाथ जिन विंवं दुगड़ ज्येष्ठमल्ल भार्या
ती नाम्न्या वाचक चारित्रनंदि गणि उपदेशात् कारितं प्रतिष्ठितं च ।

(342)

संवत १८८८ माघ शुक्ल पंचम्यां सोमवासरे श्री शितलनाथ विंवं कारितं ओशवंश
गड़ गोत्र प्रतापसिंहेन प्रतिष्ठितं च श्री जिन चंद्र सूरिभिः ।

(343)

संवत १८८८ माघ शुक्ल पंचम्यां चंद्रवासरे श्रीचंद्रप्रभ जिनविंवं कारितं ओशवंशे
ावलखा गोत्रे मेटामल पुत्र जसरूपेन प्रतिष्ठितं च वृहद भट्टारक खरतर गच्छ श्री जिना-
ायसूरी चंचरीक श्रीजिनचंद्र सूरिभिः ।

(344)

सं० १८९७ वर्षे ---श्री ऋषभ जिनविंवं कारितं प्रतिष्ठितं ---।

(345)

सागरांकवसुचंद्र वर्षे (१८९७) नेत्रषण गणधरायुते शके (१७६२)
सुनागके (५) मार्गवे सितपटौघपालके वाणारस्यां श्रीमद्रुम।
पार्श्वनाथ जिनमूर्त्तिः कारापितं श्रे० उदय चन्द्र धर्म पत्नी महाकुवराख्यया
युतया बृहत्खरतर गणेश श्री जिन हर्ष गणि पदालंकृत श्री जिन महेंद्र

(346)

सं० १९०० वर्षे-- श्री गोडी पार्श्वनाथ विंबं का० ---।

(347)

सं० १९१० शाके १७७५ माघ शुक्ल द्वितीयायां श्री पार्श्वविंबं प्रतिष्ठितं

टौंकपरके चरणों पर।

(348)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय सा० खुसाल
अजितनाथ पादुका कारापिता श्री मत्तपा गच्छे।

(349)

॥ संवत् १९३१। माघे। शु। १० चंद्रे। श्री अजितनाथ जिनेन्द्रस्य चरण
जीर्णोद्वार रूपा श्री संघेन कारापिता। मलधार पूर्णिमा श्री मद्विजय गच्छे।
श्री जिन शांतिसागर सूरिभि प्रतिष्ठितं च॥

(350)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय सा० खुसालचंदेन श्री
पादुका कारापिता श्री मत्तपा गच्छे॥

(351)

संवत् १९३० । माघे । । शु० १० । चंद्रे । श्री संभव जिनेंद्रस्य चरण पादुका श्री संघेन
ारापितां । मलधार पूर्णिमा ॥ विजय गच्छे । श्री भट्टारकोत्तम श्री पूज्य श्री जिन
ांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(352)

॥ सं० १९३३ का जेष्ट शुक्ले द्वादश्यां शनिवासरे श्री अभिनन्दन जिनेंद्रस्य चरण
दुका जीर्णोद्धार रूपा श्री संघेन कारिता मलधार पूनमीया विजय गच्छे श्री जिन
: सागर सूरि पट्टोदय प्रभाकर भट्टारक श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितां ।
ापितांच । शुभं श्रेयसे भवतु ।

(353)

॥ सं० । १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय सा० खुसाल चंद्रेण श्री सुमति
थ पादुका कारापिता च । सर्व सूरिभिः श्री तपा गच्छे ।

(354)

॥ सं । १९३१ । माघे । शु । १० श्री सुमतिनाथ जिनेंद्रस्य चरण । पादुका । जीर्णो-
ार रूपा । गुज्जर देसे श्री संघेन स्थापिता । कारापिता । विजय गच्छे । भ । श्री जिन
ांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥

(355)

॥ सं १९४९ माघ सु० १० सुक्रवा । श्री समेत शैल पर्वते श्री पद्म प्रभु जिन चरण
थापितं प्रति । भ । श्री विजय राज सूरि तपा गच्छे ।

(356)

॥ संवत् १८२५ मह सुदि ३ गुरो विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री सुपार्श्व पादुका कारापिता प्र० ।

(357)

संवत् १९३१ । माघे । शु । १० । सुपार्श्वनाथ जिनेंद्रस्य । चरण पादुका रूपा । सेठ उमा भाई हठी सिंहेन तया स्थापना कारापित पूर्णिमा विजय गच्छे भट्टारक । श्री जिन शांति सुरिभि । प्रतिष्ठितं च ।

(358)

॥ संवत् १८४९ माघ मासे शुक्ल पक्षे पंचमी तिथौ बुद्धवारे । श्री चंद्र प्रभु चरण न्यासः श्री संघाग्रहेण । श्री वृहत् खरतर गच्छीय । जंगम । युग प्रधान भट्टारक श्री जिन चंद्र सूरिभिः । प्रतिष्ठितः ॥ श्री ॥

(359)

॥ संवत् १९३१ वा वर्षे । माघ सुदि १० तिथौ श्री सुविधि जिनेंद्रस्य चरण पादुका अहमदावाद वास्तव्य सेठ उमा भाई हठी सिंहेन कारापिता । मलधार पूर्णिमा गच्छे । भट्टारक । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥

(360)

॥ संवत १९३१ । माघे । शु । १० तिथौ । चंद्रे । श्री सुवधि जिनेंद्रस्य चरण जीर्णोद्धार रूपा । अहमदावाद वास्तव्य । सेठ उमा भाई हठी सिंहेन स्थापिता च । मलधार पूर्णिमा । श्री मद्विजय गच्छे । श्री भट्टारकोत्तम । श्री श्री जिन सूरिभिः ॥ प्रतिष्ठितं । स्थापितं च शुभ श्रेय ।

(361)

॥ सं० । १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरे विरानी गोत्रीय सा० श्री खुसाल चंद्रेण । श्री
तल जिन पादुका कारापिता श्री तपा गच्छे ॥

(362)

॥ संवत् १९३१ वर्षे माघे । शु । १० । चंद्रे श्री सीतल नाथ जिनेंद्रस्य चरण पादुका
र्णोंधार रूपा गुजराती श्री संघे कारापिता ॥ मलधार पूर्णिमा विजय गच्छे । भट्टा-
क । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं । स्थापितं च ।

(363)

॥ संवत १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री श्रेयांस
नु पादुका कारापता प्रतिष्ठिता च श्रीमत्तपा गच्छे ।

(364)

॥ संवत् १९३१ माघे शु । १० तिथौ । श्री श्रेयांस नाथ जिनेंद्रस्य चरण पादुका
र्णोद्धार रूपा । गुजरातका श्री संघेन तया स्थापना कारापितं पूर्णिमा श्रीमद्विजय
च्छे । भ । श्री पूज्य । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्र ।

(365)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसालचंदेन श्री विमल
ाथ पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता च श्रीमत्तपा गच्छे ॥ श्री ॥

(366)

॥ संवत् १९३१ माघ शुक्ले १० चंद्रो श्री विमलनाथ जिनेंद्रस्य पादुका जीर्णोद्धार रुपि ।
जरात का श्री संघेन । तया स्थापना कारापिता । मलधार श्री विजय गच्छे । जं । यु
। । भट्टारक । श्री पूज्य । श्री जिन शांति सागर सूरि प्रतिष्टितं च ।

(367)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री प्रभु पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता च सर्व्व सूरिभिः श्रीमत्तपा गच्छे ॥ श्री रस्तु।

(368)

॥ संवत् १९३१ वर्षे माघ शु० १० चंद्रे श्री अनंत नाथ जिनेन्द्रस्य चरण जीर्णोद्धार रूपा। श्री संघेन स्थापना कारापिता। मलधार पूर्णिमा श्री मद्विजय भट्टारक। श्री शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं। स्थापितं।

(369)

॥ सं १९१२ वर्षे शाके १७७७ मिते माषोत्तम मासे मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे सोमवासरे विजय योगे कुंभ लग्ने श्री सम्मेत शैले श्री धर्मनाथ चरण पादुका वृहत् खरतर भट्टारकोत्तम भट्टारक श्री जिन हर्ष सूरीणां। पद प्रभाकर श्री जिन सूरिभिः स साधुभिः कारिताश्च वाराणसीस्य श्री संघेन कालिपुरस्य संघेनया।

(370)

॥ संवत् १९३१ माघे। शु। १० तिथौ श्री धर्मनाथ जिनेंद्रस्य चरण पादुका रूपा। मम्बई वास्तव्य। सेठ नरसिंह भाई। केसवजी केन स्थापना पूर्णिमा विजय गच्छे। जं। यु। प्र। भट्टारक जिन शांति सागर सूरिभिः। स्थापितं च। शुभं भवतु॥

(371)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री नाथ पादुका कारापिता प्रतिष्ठितं च सर्व्वे सूरिभिः श्री मत्तपा गच्छे॥

(३७२)

॥ संवत् १८३१ । माघे । सु । १० । चंद्रे । श्री शांतिनाथ जिनेंद्रस्य । चरण पादुका र्णोद्धार रूपा । अहमदावाद वास्तव्य । सेठ मगु भाइ प्रेम चंद्रेन स्थापना कारा- पा । पूर्णिमा विजय गच्छे । जं । युग प्रधान । भ । श्री पूज्य श्री जिन शांति सागर रिभिः प्रतिष्ठितं स्थापितं च ॥

([illegible]

॥ संवत १८२९ वर्षे माघ सुदि ३ [illegible] श्री कुंथुनाथ दुका कारापिता प्र० श्री तपा गच्छे ।

[illegible]

॥ संवत १८[illegible] [illegible] श्री जिनचन्द्र सागर सूरि [illegible] रिभिः । प्रतिष्ठिता स्थापिता च ।

॥ सं० १८२९ वर्षे माघ सुदि ३ [illegible] दुका कारापिता प्र० [illegible] गच्छे ।

[illegible]

(377)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे ३ गुरौ विरानि गोत्रीय साह खुसाल श्री मल्ली नाथ पादुका कारापिता प्र० श्री तपा गच्छे ।

(378)

॥ संवत् १९३१ माघे । शु । १० चंद्रे । श्री मल्लि नाथ जिनेंद्रस्य । चरण जीर्णोद्धार रूपा अहमंदाबाद वास्तव्य । सेठ भगु भाई पेम चंद स्थापना मलधार पूर्णिमा। श्री मद्विजय गच्छे। भट्टारक । श्री पूज्य। श्री जिन शांति सागर प्रतिष्ठितं । स्थापितं च ॥

(379)

॥ सं० । १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंद्रेण श्री जिन पादुका कारिता श्रीमत्तपा गच्छे ॥

(380)

॥ संवत् १९३१ माघे । शु । १० । श्री मुनि सुब्रत जिनेंद्रस्य । चरण पादुका । रूपा । गुजरातका । श्री संघेन स्थापना कारापिता । मल । पूर्णिमा । श्री गच्छे श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥ स्थापितं च ॥

(381)

॥ संवत १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री न नाथ पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता सर्व सूरिभिः श्री तपा गच्छे।

(382)

॥ संवत १९३१ माघ शुक्ले दशम्यां चंद्रवासरे श्री नमिनाथ जिनेंद्रस्य चरण पादुका। र्णोद्धार रूपा। अहमंदावाद वास्तव्य। सेठ उमा भाई हठी सिंहेन स्थापना कारा- ा। पूर्णिमा विजय गच्छे भट्टारक। श्री जिन शांति सागर सूरिभिः। प्रतिष्ठितं॥

तेजपूर (आसाम)

राय मेघराजजीका मंदिर।

(383)

संवत १५१३ वर्षे वैशाष शुदि ७ शनौ श्रीश्रीमाल ज्ञातीय श्रे० सानंद भार्या हीसू पूनसीकेन मातृपितृ श्रेयोर्थं श्रीशीतलनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः।

(384)

सं० १९४३ का मिति वैशाष शुक्ल सप्तम्यां ----

(385)

सं० १९५७ वर्षे ज्ये० शु० १२ तिथौ शुक्रवासरे॥ श्री जिन कीर्त्ति सूरि प्रतिष्ठितं श्री नदत्त सूरि नाम पादुका का०।

कलकत्ता

श्री कुमरसिंह हल – नं० ९६ इंडियन मिरर स्ट्रीट।

धातुयोंके मूर्त्ति पर।

(386)

श्रीपार्श्वनाथ विंव।

प्रल्हाप सत्व संयकः धियावे सुनः सुपुण्यक श्री द्वः (?) सोलगप नृरि भत्तन्न (?) हुले कारयामास संवत १०३२

(387)

सं० ११५० ज्येष्ठ सुदि १० श्री महेशराचार्य श्रावक पूना सुताभ्यां पाल्हण स्वमातृ सोमा श्रेयसे चतुर्विंशतिः कारिता ॥

(388)

ॐ श्री मूलसंघे गुणभद्र सूरेः संडिल्ल (खडिल्ल = खंडेल ?) वालान्वय सारभूतः
यो विस्नु (श्रु) लोसौ सिवदेवि पुत्रः सच्छ्रावकोऽभून्मुनिचंद्र नामा ॥ १
तस्माच्छीतेति विख्याता भार्या शील विभूषणा ।
कारिता कर्मनाशाय चतुर्विंशतिका शुभा ॥ २ संवतु १२३९ फा सु० २ गुरौ ॥

(389)

संवत १४८५ वर्षे जेठ सुदि १३ चंद्रवारे उपकेश गच्छे कक्क० उ०केश ज्ञातीय सा० छाहड त्रजीदा (?) भा० जईतलदे पु० साचा माय — सिवराजकेन श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंवं कारा० प्रतिष्ठितं श्री सिद्ध सूरिभिः ।

बडाबजार-पंचायाति मंदिर ।

(390)

रीषभनाथ वीतनाग पत्तीलं मुलसत्क ॥ सं० १०८३ वै० सु० १५

[पृ० २२ के लेख नं० (८८) का संशोधित पाठ]

संवतु ११५४ माघ सुदि १४ पद्मप्रभ सुत स्थिरदेव पत्न्या देवसिया श्रेयो र्थं कारिता ।

यति पन्नालालजी मोहनलालजीका घर देरासर।

(391)

॥ संवत १५०६ वर्षे श्री श्रीमाल ज्ञातीय दोसी डूंगर भार्या म्यापुरि सुत पूजाकेन
ार्या सोही सुत बीका युतेन आत्मश्रेयसे श्री सुविधिनाथादि चतुर्विंशति पट्ट कारितः।
ागम गच्छे श्री अमरसिंह सूरि पट्टे श्री हेमरत्न सूरि गुरूपदेशेन प्रतिष्ठितः ॥ गंधार
ास्तव्य ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥

(392)

सं० १५१६ वर्षे फा० शु० ८ प्राग्वाट सा० जोगा भा० मरगदे सुत सा० हदाकेन भा०
रमी पु० पाल्हादे कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री विमलनाथ विंवं का० प्रतिष्ठितं तपागच्छे
ी सोमसुंदर सूरि पट्टे श्री रत्नशेषर सूरिभिः।

(393)

सं० १७७१ वै० वदि ५ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय वृद्धशापायां सा० प्रेमचंद ग्रामीदास
श्रेयसे श्री शांतिनाथ प्रतिष्ठितं श्री विजय ऋद्धि सूरिभिः।

कलकत्ता अजायब घर (म्युजियम) के पाषाणके मूर्तियों पर ।

(394)

--संवत १-८९ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १५ गुरौ श्रीश्रीमाली ज्ञातीय जंयहरा सं० केशय
ुत सं० मंडलिक सुत० सं० चांपा भार्या चापलदे सुत सं० ---- भार्या श्री गांगी सुत-
ाघाकेन भार्या राजु पुत्र सा० नाकर सा० मागादि तथा (?) पुत्री जीवणि प्रमुख
ामसु (?) कुटुम्ब युतेन निज श्रेयोऽवाप्ताय श्री श्रेयांसनाथ विंबं कारितं ॥ वृद्ध तपागच्छ
ायक भ० श्री रत्नसिंह सूरि पट्टालंकरण भ० श्री उदय वल्लभ सूरिभि श्री ज्ञान सागर
ूरि युतो प्रतिष्ठितं।

❁ वनारस ❁

काशीदेशका यह वाराणसी वा वनारस सहर जैनियोंका वहुत पवित्र स्थान है हिन्दुओंका भी प्रसिद्ध तीर्थ है। यहां प्रतिष्ठ राजा और पृथ्वी राणीके पुत्र ७ तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथजी का च्यवन और जेठ सुदि १२ जन्म, जेठ सुदि १३ फागुन वदि ६ केवल ज्ञान और अश्वसेन राजा वामा राणी के पुत्र २३ मां श्री पार्श्वनाथजी का भी च्यवन, पोष वदि १० जन्म, पौष वदि ११ दीक्षा और वदि ४ केवल ज्ञान यह ८ कल्याणक भये हैं। महल्ले भेलुपुरा और भदेनीमें वने हुए हैं सहरमें कई एक मंदिर हैं। यहां से ४ कोस पर सिंहपूरी है यहां ११ मां श्री श्रेयांसनाथजी का च्यवन, फागुन वदि १२ जन्म, फागुन वदि १३ दीक्षा और वदि ३ केवल ज्ञान भया है। निकटमें वौद्धोंका सारनाथ नामक प्राचीन स्थान है।

सुत टोलेका मंदिर।

पंच तीर्थी पर।

(403)

सं० १५१५ वर्षे माह शुक्ल १३ दिने श्री ओसवाल ज्ञातीय श्रे० मूंधा भार्या : सु० धनदत्तेन पितृ श्रेयोर्थं श्री शितलनाथ विंवं पूर्णिमा पक्षे भ० श्री सागर तिलक पट्टे श्री महितिलक सूरि कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः॥

(404)

सं० १५५९ वर्षे आषाढ़ सुदि ८ दिने चंपकनर वासि श्रे० जावड़ भार्या पूरी सुत णाकेन भार्या हर्षाई सुत नाकर प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्रीशांतिनाथ विंवं श्री निगमागम भार्या कारितं प्रतिष्ठितं श्री निगमा विज्ञावक श्री इन्द्रनंदि सूरिभिः॥ श्रीः॥ श्रीः॥

बट्टूजीका मंदिर ।

(405)

सं० १५१९ वैशाष शु० ५ प्राग्वाट सा० सिघा भा० लादां सु० साह हीराकेन भ्रा० जित्री प्रमुख सुरत श्री–जिनावति का० प्र० तपा रत्न शेखर सूरिभिः ॥

पटनी टोलेका मन्दिर ।

(406)

सं० १४८५ वर्षे आ० सुदि १० रवौ माल्हू ––ऊ० ज्ञा० साह वीजड पु० साह हरपाल ा० हेमादे पुत्र साह साडाकेन श्रीपार्श्वनाथ विंवं राजावर्त्तक रत्नमयं सपरिकरं का० ातिष्ठितं श्रीमल धारि गच्छे श्रीविद्यासागर सूरिभिः ।

(407)

सं १५८६ वर्षे वैशाप सुदि ३ भोमे श्री श्रीमाल ज्ञातीय परी० नरसिंघ भ्रातृपरी नपा भार्या हीरूपुत्र कुरपालेन श्री श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सुविहित सूरिभिः ॥

चुन्निजी यतिका मन्दिर गणेशघाट ।

(408)

संवत १२५७ ज्येष्ट सु० १० महेष्टीराचार्य –––स्वमातृ सोमा श्रेयसे चतुर्विंशतिः कारिताः ॥

रामचन्द्रजी का मंदिर।

(409)

सं० १४०६ वर्षे फागुन सु० ११ गुरौ सूराणा गोत्रे सा० जतरा पु० सा० अमद जयत श्री पु० नरपाल रणमीरभ्यां मातृ श्रे० महावीर बि० का० प्र० श्री धर्म घोष श्री ज्ञान चंद्र सूरि शिष्ये श्री सागरचंद्र सूरिभिः ॥

(410)

सं० १४५९ ज्येष्ठ वदि १२ शनौ सूराणा गो० सा० अमर भा० अड्हव दे सुत सा० साल्हा श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ वि० का० प्र० श्रीधर्म घोष ग० भ० श्रीमलय चन्द्र सूरिभि

(411)

सं० १४८१ वर्षे वैशाष वदि ८ शुक्रे श्री उकेश वंशे मणी सा० पासड भार्या देवी सुत सा० सिवाकेन सा० सिघा मुख्य ४ जिनोनुजैः सहितेन स्वश्रेयसे श्री विंवं श्री अंचल गच्छेश श्री जय कीर्त्ति सूरीन्द्राणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन शुभं भवतु सर्वदा सर्वकुटुम्ब ॥ श्रीः ॥

(412)

सं० १५०७ वर्षे मार्गशिर सुदि २ शुक्रे श्रीमाल ज्ञातीय गोवलिया गोत्रे सा० हेमा-- पु० --वाल्हा उपा ---- उपदेशेन विमलनाथ विंवं का० प्रति० पवीर्य गच्छे श्री यशो सूरिभिः ॥

(413)

सं० १५४९ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १२ घेवरिया गोत्रे श्री माल बीलीजदेवी गोवेद पु० भीमा पु० सा० सिंघण सुमेरू आत्म पुण्यार्थं कुंथुनाथ विंवं श्रीमल धार गच्छे भ० गुण कीर्त्ति सूरि प्रतिष्ठितं आ० हर्ष सुन्दर शिष्य उपदेशेन।

(414)

सं १५६२ वर्षे वैशाष सु० १० रवौ श्रीमाल मडवीया गोत्रे सा० परसंताने सा०
राज पुत्र सा० ईसरेण भा० तिलकू पु० त्रिपुर दास युतेन पार्श्वनाथ विंवं स्वपुण्यार्थं
रितं। प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन तिलक सूरि प० श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री भिः॥

श्रीकुशलाजी का मन्दिर—रामघाट।

(415)

सं० १३७९ ज्येष्ठ वदि ७ शुभ दिने श्रीपंडेरकीय गच्छे श्रीवाहड़ भार्य धीरु पु० धरा
मयणल्ल---णिग भार्या केल्हंण सहितेन विंवं कारितं प्र० श्री सुमति सूरिभिः।

(416)

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० गुरौ उकेश० व० सा० रेडा भार्या रण श्री पुत्र पद्म सादा
केन श्री अंचल गच्छेश श्री जय केसरि सूरीणामुपदेशेन श्री संभवनाथ विंवं का०
ष्ठितं च॥ श्री॥

(417)

सं० १५०९ वै० वदि० ११ शुक्रे श्री कोरंट गच्छे श्री नन्नाचार्य संताने उयएश वंशे
लिक गोत्रे साह धना पु० स० पाउवीर भार्या संपूरदे नाम्न्या निज श्रेयोर्थं श्रीकुंथनाथ
कारापितं प्र० श्रीकक्क सूरिपट्टे सद् गुरु चक्रवर्त्ति भट्टारक श्री सावदेव सूरिभिः।

(418)

सं० १५१९ वर्षे आषाढ़ वदि १ नंदि दूणीय शाखा ... ठ० नाग राज सु० गुट्टू भार्या
वेलि सु० सं० श्री सिवह दास भार्या वीर सिंघि पु० स० मूर्दरैन आत्मनेन श्री कुंथनाथ
कारितं० प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन सागर सूरि पट्टे श्रीजिन सुन्दर सूरि पट्टे श्री
न हर्ष सूरिभिः॥

(419)

सं० १५१९ आषाढ़ वदि–मंत्रि दलीय श्री काणा गोत्रे ठा० लाघू भा० धर्मिणि, अचल दासेन पु० उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेनादि युतेन श्री आदि विंबं का० श्रीजिन भद्र सूरि पट्टे श्रीजिन चंद्र सूरिभिः श्री खरतर गच्छे ॥ श्रीः॥

(420)

सं० १५३६ वर्षे वै० वदि ११ ओसवंशे साह शिवराज भा० माणिकि सुत देवदत्त रूपाई सुत साह कर्म सिहन भार्या हंसाई स्वकुटुम्व युतेन स्वश्रेयसे श्री संभवनाथ काo प्र० वृद्धतपापक्षे श्रीउदय सागर सूरिभिः श्री मंहुपे।

(421)

सं० १५७० वर्षे माह सुदि ११ रवौ उपकेश वंशे छजलाणी गोत्रे साह श्री पाल सुहवदे पु० सा० ऊधा सा० जोधा ऊधा भार्या उमादे प्रमुख कुटुम्ब सहितेन श्री स्वामि विंबं कारितं नागुहरी तपागच्छे श्री सोम रतन सूरि प्रतिष्ठितं तिजारा नगरे

प्रतापसिंहजी का मंदिर।

(422)

सं० १५२० वर्षे पोष सुदि १३ शुक्रे श्री ब्रह्माण गच्छे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० मं० सुत कामा भार्या कामीदे सुत झाझण नगराज रत्ना सहितेन आत्म श्रेयोर्थं श्री विंबं का० प्र० श्रीशील गुण सूरिभिः पाटरी वास्तव्यः।

(423)

सं० १५२८ वर्षे वैशाष शुदि ३ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० वीरम सु० वेला भार्या सोही सु० महिराज जिणदास महिपति लहूआ कुटुम्ब युतेन आत्म श्रेयो श्रेयांस विंबं आगम गच्छे श्रीसोम रत्न सूरि गुरूपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च धांदू वास्तव्यः॥

सिंहपुरी ।

(424)

सं० १५३४ वर्षे माघ सुदि १० शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय सा० राज भार्या वारू पु० सा० 'रूपसि भा० झमकू द्वितीया माई सुत गुणराज नगादि कुटुम्ब युतेन श्री मुनि सुव्रत विंबं ारितं प्रतिष्ठितं श्री बृहत्तपागच्छे श्री उदयसागर सूरिभिः।

(425)

चरण पर।

सं० १८५० मिति चैत्रक मासे कृष्ण पक्षे पञ्चम्यां कर्म्मवा-पूज्य भट्टारक श्रीजिन हर्ष रि विजयराज्ये श्रीसिंहपूर ग्रामे तेषां केवलोत्पत्ति स्थाने गांधि गोत्रीय मयाचंद प्रमुख मस्त श्रीसंघेन श्री श्रेयांसाख्या नामेकादशानां लोक नाथानां पादन्यासः कारितः प्र० ।जिन लाभ सूरिणां शिष्यैः उपाध्याय श्रीहीरधर्म गणिभिः खरतर गच्छे।

मिर्जापुर ।

पञ्चायती मन्दिर ।

(426)

श्रीपार्श्वनाथ विंब पर।

सं० १३७९ वर्षे उएसज्ञातीय वावेला गोत्रे देवात्मज सा० धीका पुत्र संघपति झाझा त सा०— जूकेन पितृ श्रेयसे का० प्रति० श्री कृष्णर्षिगच्छे श्री प्रसन्न चंद्र सूरिभिः ॥

(427)

सं० १४२० वर्षे वैशाष सुदि १० शुक्रे श्री श्री मालज्ञातीय ठ० वीजा भार्या मोहनदेवि यसे सुत जोलाकेन श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं त्रिभवीया श्रीधर्मदेवसूरि ताने श्रीधर्मरत्न सूरिभिः ॥

(428)

सं० १४८२ व० वैशाष वदि १ प्र० फूलर गोत्र सा० लाहड भा० वाहिणदे पु० भो
जिनपितृव्य सोमसिंह आत्म श्रे० श्री वासुपूज्य विंवं कारितं प्र० श्री धर्मघोष गच्छे
मलयचंद्र सूरिपट्टे श्रीपद्मशेखर सूरिभिः ॥ छः। श्री ॥

(429)

सं० १४९० व० वैशाष वदि ९ कंठउतिया गोत्रे सा० कमसिंह पुत्र डालण तत्सु
स्तपूर्वज पूण्यार्थं श्रीकुंथु विंवं कारितं प्रति० श्रीहेम हंस सूरिभिः ॥

(430)

सं० १४९१ वर्षे फागुण सुदि २ सोमे श्री श्री माल ज्ञा० श्रे० देवस सुतवाछा भा० व
मादे सुत राणा भीमा पीमाभिः भ्रातृषेता तथा पित्रोः श्रेयसे श्रीवासुपूज्य विंवं का०
श्री पीपलगच्छे श्री सोमचन्द्र सूरिपट्टे श्री उदयदेव सूरिभिः।

(431)

सं० १५१९ वर्षे माघ सु० ४ रवौ उपकेश ज्ञा० व्यव० गोष्टि सा० माडण भा० मोहं
पु० कालहा भा० मालूरूपो सहितेन ॥ पित्रो श्रेयसे श्री नेमिनाथ विंवं कारितं प्रति
पूर्णिमापक्षे जयचंन्द्र सूरिपट्टे श्रीजयभद्र सूरिभिः ॥ : ॥

(432)

सं० १५२९ वर्षे माह व० ६ रवौ उप० ज्ञातीय कठउड़ गोत्रे सा० वरसा भा० ॥
पु० रामा भ्राता राजा चांदा भा० मरघू पु० जीवा समस्त कुटुंवेन पितृ श्रेयर्थं श्रीअ
भयस्वामि विंवं कारा० प्रति० श्री चैत्रावाल गच्छे भ० श्री सोमकीर्त्ति सूरिभिः वडं
लिया नगरे।

(433)

श्री मत्संवत १६७१ वर्षे वैशाष सुदि ३ शनौ श्री आगरा वास्तव्योसवाल ज्ञातीय ोढा गोत्रे गावं-त्रा सं० ऋषभदास भार्या रेषश्री तत्पुत्र श्री कुरपाल सोनपाल संघाधिपे ानुवर दुनीचंदस्य पुण्यार्थं उपकाराय श्री अंचलगच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर ूरिणामुपदेशेन श्री आदिनाथ बिंबं प्रतिष्ठापितं ॥

(434)

सं० १८७७ मि० फा० सु० १३ श्री कुंथुनाथ जिन बिंबं दू० त्रिभुवनचंद्रेन कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनहर्ष सूरिभिः ॥

([illegible])

सं० १९०७ फा० सु० ५ श्रीपार्श्वनाथ बिं० प्र० श्री पार्श्वनाथ जि० प्र० श्री जिन महेन्द्र सूरिणुपदेशेन कारिता। सेठ उदयचन्द धर्म पत्नी [illegible]। [illegible] श्री चारित्र नन्दन गणिनिर्देश---

([illegible])

सं० १९०७ फा० सु० ५ श्री आदिनाथ बिंब प्र० श्री जिनमहेन्द्र सूरिभिः [illegible] नाथूराम पत्नी [illegible] चारित्र नन्दन [illegible]।

सेठ धनसुखदासजी का मंदिर ।

([illegible])

सं० १९०३ वर्षे माघ वदि [illegible] [illegible] ज्ञातीय [illegible] भार्या [illegible] सुत [illegible] बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं [illegible] --- गच्छे [illegible] सूरिभिः।

(438)

सं० १५३३ वर्षे माह सुदि १३ सोमदिने बघेरवाल ज्ञाती राय भंडारी गोत्रे सा
सीहा भा० पूरी पुत्र ठाकुरसी भा० महू पुत्र आका आत्मपूजार्थं श्री आदिनाथ बिं
करापितं श्रीसर्व सूरिभिः शुभं भवतु ॥

(439)

सं० १८७७ वै० सु० १५ श्रीपार्श्वबिंबं प्र० जिन हर्ष सूरिना कारितं। छजलानी
चतुर्भुज पुत्र्या दोपो नाम्न्या चोरड़िया मनुलाल वधू - -

(440)

सं० १८९७ का० सु० ५ श्रीपार्श्वबिंबं प्र० श्रीजिन महेन्द्र सूरिणा का०। सकल श्रीसंघे।

देहलि वा दिल्ली सहर।

यह भारतवर्षका एक प्राचीन स्थान है। कुरु पांडवके समयमें यही 'इंद्रप्रस्थ' था। हिन्दुराजा पृथ्वीराजकी राजधानी थी। मुसल्मानोंके समयमें बहुत काल तक यह राजधानी रही। कुछ दिनसे अपने सरकार बहादुरने भी दिल्लीमें भारतकी राजधानी स्थापनकी है और आज कल उन्नतिपर है, यहां से ४ कोस पर आचार्य महाराज श्रीजिन कुशल सूरिजीका स्थान है जिसको छोटे दादाजी कहते हैं और ७ कोसपर प्रसिद्ध कुतुब मिनारके पास बड़े दादाजीका स्थान है वहां कोई लेख नहीं है।

चेलपुरी का मंदिर।

धातुयोंके मूर्त्तिपर

(441)

सं० ११६३ मार्गशिर सुदि १ श्रीं गागसादेव धर्म्मीयम्- -(आगे अक्षर अस्पष्ट पढ़ा नहीं जाता)

(442)

सं० १५११ वर्षे ज्ये० व० ११ शुक्रे सोमसर ग्रामे उकेश सा० नेहा भा० माल्हणदे पुत्र धाकेन भा० सल्ही प्रमुख कुटुम्बयुतेन श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं-- श्री चक्र सूरिभिः ॥ सचिंती गोत्रे ॥

(443)

सं० १५२१ वर्षे माघ सुदि १२ बुधे छोड़ा गोत्रे सा० हरिचन्द गोगा गोरा संताने राघु आदपाल पुत्रेण सं० तेजपालेन पुत्र परबत लांबादि युतेन भ्रातृ पूनपाल पुण्यार्थं श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री हेमहंस सूरि पट्टे श्री० । श्री हेम समुद्र सूरिभिः ॥

(444)

संवत १५२१ व० माघ सु० १२ [illegible] दि० [illegible] भा० [illegible] सुत [illegible] भा० [illegible] सुत चांपाकेन भा० धर्मिणि नामाभिरादि [illegible] श्री नेमिनाथ बिंब कारित प्रतिष्ठितं० तपागच्छे श्री लक्ष्मी सागर सूरि [illegible] सूरिभिः अहमदावादे ।

([illegible])

सं० १५२४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० दिने [illegible] ज्ञातीय सा० [illegible] भा० [illegible]-बदे तोल्ही सा० देपा भा० जयती पुत्र सा० [illegible] पुत्र [illegible] चांपा धरमा युतेन सा० पोपा पुण्यार्थं श्री सुमति [illegible] [illegible] श्री [illegible] चंद्र सूरिभिः ।

([illegible])

सं० १५२१ माघ सुदि ५ दिने [illegible] सा० [illegible] भा० [illegible] पुत्र [illegible] केन भा० [illegible] प्रमुख कुटुंबयुतेन [illegible] बिंब कारित प्रतिष्ठित [illegible] तपागच्छे श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ।

(447)

संवत १५६० वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ दिने श्रीमाल वंशे सिंधुर गोत्रे व० अभय राज. आमलदे पुत्र चउ० ठकुरसीहेन भा० ठकुरादे पुत्र व० आसमल्ल प्रमुख परिवृत्तेन आदि जिन बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतर गच्छे श्री पूज्य श्री जिनहंस सूरिभिः।

(448)

सं० १५६६ वर्षे फागुण सुदि ३ सोमे ब्रह्माणीया गच्छे बहुरा हीरा भा० हीरादे जीदा सोमा रूपा पुण्यार्थं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री गुणसुन्दर अहिलाणी।

(449)

॥ श्री पार्श्वनाथ स० १६०५ फागुन सुदी दसमी घरवाडिया गोत्रे गागपती मिनी पुत्र पेतु लघु प्रनमल गुरु श्री जिन भद्र सूरि रुद्रपली गच्छे भ० श्री भा सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री समेत सिपर।

(450)

सं० १६१२ वर्षे ज्येष्ठ सु० ११ शनौ उकेशवंसे-----।

(451)

सं० १६६० वर्षे फागुण वदि ५ गुरुवासरे महाराजाधिराज महाराजा मानसिंह जी राजे श्री मूलसंघे आम्नाये बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यन्वये भ० श्री विई कीर्त्ति स्तदाम्नाय षंडेलवालान्वये पोस ॥ सं श्री होला भा० कोसिगदे पु० भ० श्री कचराज भा० उमदे कोउमदे गुर्जरि पु० २ थातु दानु स० श्रीरायस भा० रयणदे---पु० हरदास ---भा० महिमादे लाड़मदे --।

(452)

सं० १६७७ मार्ग शु०-रवौ श्रीमाल ज्ञातीय सा० तेजसी नाम्ना श्रीपार्श्व बिंबं का०
तपा गच्छे श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

(453)

सं० १६८१ व० फा० शु० १० भ० चंद्रकीर्त्ति प्र० अग्रवाल ज्ञाती गोयल गोत्रे सा०
ोमा भा० सरूपादे ।

(454)

नवपदजी पर ।

सं० १८५१ वर्षे कार्त्तिक मासे कृष्णपक्षे प्रतिपदा तिथौ गुरुवासरे- -सुश्रावक
न्य प्रभावक देव गुरुभक्ति कारक फतेचन्द भार्या विदामो तत्पुत्र वस्तिरामजी ॥
ोमाल ज्ञाती ।

नवघरेका मन्दिर ।

मूलनायक श्रीसुमतिनाथजीके बिंब पर।

(455)

संवत १६८७ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ला १३ गुरौ मेरता नगर वास्तव्य हुहाड गोत्रे सं० जय-
ाव भा० सोभागदे पु० सं० सोहपकेन श्रीसुमतिनाथ बिंब का० प्र० तपागच्छे भ० श्री
वेजयदेव सूरिभिः आचार्य श्री विजयसिंह सूरि परिवृत्तैः ।

सर्व धातुयोंके मूर्त्तियों पर।

(456)

ओं। संवत ११ ६७ वैशाष सुदि ५ श्री चंद्रप्रभाचार्य गच्छे सतु श्री वि---।

(457)

संवत १२८० वर्षे -----सांडा प्रणमंति ।

(458)

सं० १३२१ श्रा० व० २ हुल --- ।

459)

सं० १४२३ आषाढ शु०---प्रा० लघु व्य० आसा भा० ललतदे---श्री पार्श्वनाथ का० श्री गुणभद्र सूरीणामुपदेशेन।

(460)

सं० १४२५ पोष शुदि १२ बुधे ऊ० श्रे० जोला भा० हीरी पुत्र लालाकेन श्री शांतिनाथ विंवं कारापितं प्र० ऊ० गच्छे श्री सिद्ध सूरिभिः।

(461)

सं० १४५४ वर्षे भोढा गोत्रे उ० ज्ञा० सा० पोपा भा० पापी पुत्र लापाकेन स्वपुत्र श्रीसल श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंवं का० श्रीरुद्रपल्लीय गच्छ सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीदेव सुन्दर सूरिभिः।

(462)

सं० १४६३ वै० शु० १०-सा---

(463)

सं० १४७१ माघ शुदि १० रवी प्राग्वाट ज्ञातीय सा: रामा भा०---ठाकुर पित्
ियोर्थं श्री आदि नाथ लक्ष्मी ---।

(464)

सं० १४७२ वर्षे फागुण सु० ९ शुक्रे ऊ० ज्ञा० सा० तिहुणा भा० तिहुणांसोर पु० चाहड़
सा० केल्हु पु० हापा भा० तेजू पु० करमोकेन पितृ--श्री पद्मप्रभ बिं० का० प्र० श्री
षंडेर गच्छे श्री श्री यशोभद्र सूरि सं० श्री शांति सूरिभिः॥

(465)

सं० १४७९ वर्षे माघ सु० ४ दिने सा० धरणा पुत्र संग्राम समरासिंघ श्रावकः श्री
महावीर बिंबं पुण्यार्थं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरिभिः॥

(466)

सं० १४८२ वर्षे माह सुदि ५ सोमे नाहर गोत्रे सा० छाजा पु० जयता भार्या सल्ही
पुत्र सोपाकेन पित्रो श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिं० का० प्र० श्री धर्म घोष ग० श्री धर्म घोष
ठा० श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे श्री--देव सूरिभिः।

(467)

सं० १४८२ वर्षे माघ सु० ५ सोमे ऊ० ज्ञा० पाल्हेचा गोत्रे सा० [illegible] भा० तेजलदे
पु० [illegible]केन भा० सहितेन पित्रो स्वश्रेय० श्री वासुपूज्य बिं० का० प्र० श्री सुविप्रभ
सूरिभिः [illegible] वीरभद्र सूरि सहितेन॥

(468)

सं० १४८३ फा० व० ११ ऊ० ज्ञा० टपगोत्रे व्यव० रूपा भा० रूपाई पु० पाचाभ्यां भ्रा० अदा भा० आल्हणदेवि: श्री पद्मप्रभ बिं० का० प्र० श्री संडेर । शांति सूरिभि: ॥

(469)

सं० १४८६ वै० शु०—प्राग्वाट सा० साजण भा० लापू पुत्र केल्हाकेन भा० भ्रातृ भीम पदमदि कु० यु० श्री धर्मनाथ विंवं कारितं प्रति० तपा श्री सूरिभि: श्री–५ ।

(470)

सं० १४८६ वर्षे जेष्ठ सु० १३ सोमे श्री दूगड़ गोत्रे सं० सिवराज भार्या सीघरही, सा० मोहिल धण राजाभ्यां पितु: श्रेयसे श्रीअजितनाथ वि० का० प्र० वृहडा० मु श्वर सूरि पट्टे श्रीरत्नप्रभसूरिभि: ।

(471)

सं० १४९९ व० फा० व० २ उपकेश ज्ञातौ आदित्य नाग गोत्रे सा० देसल भा० देसलदे पु० धमी भा० सुहगदे युतेन स्व श्रे० श्री आदिनाथ विंवं का० उपकेश ग० ककुदाचार्य सं० प्रति० श्री कक्क सूरिभि: ।

(472)

सं० ५०४ वर्षे आ० सु० ६ श्री मूलसंघे भ० श्री जिनचंद्र देवा: जैसवालान्वये सा० ल भार्या सिरि तत्पुत्र सोनिग भार्या षेमा प्रणमति ।

(473)

संं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सु० २ दिने उकेश वंशे नाहटा गोत्रे सा० जयता भार्या जयतलदे [illegible]पुत्र सा० संगरेण पुत्र सलपा अजादि परिवार युतेन श्री सुमतिनाथ विं० का० प्र० [illegible] जिन भद्र सूरिभिः खरतर गच्छे।

(474)

सं० १५०७ वर्षे माघ सु० १३ शुक्रे श्रवाणागोत्रे उदा भार्या लावि पु० देवराजेन स्व[illegible]ण्यार्थं श्री वासुपूज्य विं० का० प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री पद्मसिंह सूरिभिः।

(475)

सं० १५०७ वर्षे वै० व० ५ दिने ऊकेश ज्ञातीय सा० नापा भा० नापलदे सुत नूं[illegible] [illegible]न सा० वापू सु० पांईयादि कुटुम्बयुतेन श्री पार्श्वनाथ विं० का० प्र० तपगच्छेश श्री [illegible]यचन्द्र सूरि शिष्य श्री उदयनंदि सूरिभिः। कायपा ग्राम।

(476)

सं० १५०७ वर्ष वैशाष वदि ६ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० घोटा भा० [illegible] [illegible]योः सुताः श्रे० भार्या समरानायक पांचा एतेषां मध्ये श्रे० भादा भा० [illegible] [illegible]श्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रत स्वामि विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री आगम गच्छे श्री [illegible] [illegible]सूरिभिः गोलोपा वास्तव्यः।

(477)

सं० १५०७ वर्षे फा० सु० — सं० हला [illegible] सा० [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]भादि कुटुम्ब युतेन श्री सुपार्श्व का० तपा श्री सोम सुन्दर [illegible] [illegible] सूरिभिः।

(478)

संवत १५१२ वर्षे फा० शु० १२ दिने लोढा गोत्रे स० पासदत्त भार्या अपूदे [illegible]
सा० कमलाकेन पुत्र जावा गोरादि परियुतेन श्रेयसे पुण्यार्थं श्री अभिनन्दन का[illegible]
श्री खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनभद्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

(479)

सं० १५१३ वर्षे फा० वदि १२ ऊ० ज्ञा० सोघिल गो० रणसी पु० गहणा पु० वील्हा [illegible]
जसमी पु० सादाकेन भा० चांदा सहितेन पितृ पुण्यार्थं श्री कुंथुनाथ बिं० का० प्र० श्री [illegible]
गच्छे श्री यशोभद्र सूरि संताने श्री श्री ५ शांति सूरीणां पट्टे श्री ईश्वर सूरिभिः शुभं भूया[illegible]

(480)

[illegible] १५१५ वर्षे माघ सु० १४ दिने ऊ० वं० जांगड़ा गोत्रे सा० काल्हा भार्या [illegible]
[illegible] सा० [illegible]केन सपरिवारेण श्री सम्भवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री प० ग० [illegible]
[illegible] जिन [illegible] सूरि पट्टे श्री जिन सुन्दर सूरिभिः ॥

(481)

[illegible] १५[illegible] व० मा० सु० १ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० गूंगा भार्या लालू पुत्र
[illegible]केन [illegible] [illegible] [illegible] आत्मश्रेयोर्थं श्री धर्मनाथ बिं० प्र० श्री नागेंद्र गच्छे श्री [illegible]
[illegible] सूरिभिः [illegible] ।

(482)

[illegible] १५१६ वर्षे वैशा० सु० १३ [illegible] दिने [illegible] सा० [illegible] भा० [illegible]
[illegible] [illegible] भार्या नारंगदेव्या श्री अजित बिंबं का० [illegible]
[illegible] गच्छे श्री जिन [illegible] सूरि पट्टे श्री जिनसुन्दर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(483)

सं० १५१७ वै० शु० ८ प्रा० सा० देपाल सु० हउसी करणा भा० चन्हडा धर्मा कर्मा
सा काला भ्रातृ हीराकेन भा० हीरादे सुत अदा वरा लाजादि कुटुंवयुतेन श्री शांति-
थ विंवं का० प्र० तपा श्री सोमदेव सूरि शिष्य श्री रत्न शेषर सूरि शिष्य श्री लक्ष्मी
गर सूरिभिः ॥ कमल मेरू ।

(484)

सं० १५२५ वर्षे मा० शु० ९ सीणुरा वासि प्रा० सा० राजा भा० स्या पूरि पु० तोपा-
न भा० रानू पुत्र सधारण हीरायुतेन श्री पद्म प्रभ विंवं स्वश्रेयसे का० प्र० तपा श्री सोम
न्दर सूरि शिष्य श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

(485)

सं० १५३० फा० शु० २ गोखरू गोत्रे सा० पासवीर भा० कुडी नाम्न्या पुत्र साधारण
त्र देवा सब–युत श्री मुनि सुव्रत स्वामि विंवं का० प्र० तपा गच्छनायक श्री लक्ष्मी
ागर सूरिभिः ॥ वहादुर पुरे ॥

(486)

सं० १५३४ वैशाष सुदि ५ गुरौ ---सिवो पुत्र काला खिरिपुत्र--

(487)

सं० १५३५ श्री मूलसंघे भ० श्री भुवन कीर्त्ति स्व० भ० श्री ज्ञान भूषण गुरूपदेशात् ॥
ा० पेतसी भा० झबूः ।

(488)

सं० १५३६ वर्षे फा० सुदि ३ दिने उकेश वंशे श्रेष्ठि गोत्रे श्री कीहट भार्या देवण मांडण धर्म्मा श्रावकैः श्रे० देवण भार्या दाडिमदे सुत समरादि परिवार युते धर्मनाथ विंबं प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्रसूरि पट्टालंकार श्री जिनचंद्र

(489)

सं० १५३७ वर्षे वै० शु० १० सोमे उमापुरवासि उ० व्य० महिराज भा० श्रीपाल सहिजाभ्यां भा० सुहवदे। अदादि कुटुंवयुताभ्यां श्री वासुपूज्य विं० का० श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः।

(490)

सं० १५४५ वर्षे वैशाष वदि ९ जडिया गोत्रे स० नासण पु० स० पिमधर पागा पहिराज आढू लाल्ला लेषसी पितरनिमित्त श्री शांतिनाथ विंबं कारापितं ष्ठितं तपागच्छे भट्टारक श्री सोमरतन सूरिभिः॥

(491)

सं० १५४८ ज्ये० वदि ६ बुधे भ० श्री हेमचन्द्राम्नाये स० नगराज पु० दामू भा० हंसराज हापु---।

(492)

संवत १५५१ वर्षे वै० सुदि ९ रवौ उपकेश ज्ञातीय नाहर गोत्रे सा० लापा भा० सोहिणी पु० चांपा भाय पौत्र पुत्र पौत्रादि सहितेन आत्मपुण्यार्थं श्री धर्मनाथ का० श्री धर्मनाथ विंबं का० श्री धर्मघोप गच्छे प्र० श्री पुण्यवर्द्धन सूरिभिः।

(503)

सं० १६१९ सिंघुड़ सा० गोपी भार्या विमला सुत घणराजेन कारितं।

(504)

सं० १६४३ वर्षे फाल्गुन सु० ११ गुरु प्रा० ज्ञा० से विघोगा भार्या वाई पूराई सुत
वचन्द भार्या वाई हासी सुत रायचन्द भीमा श्री शीतलनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं
हत्तपा गच्छे श्री विजयदान सूरि तत्पट्टे श्री हीर विजय सूरि आचार्य श्री विजयसेन सूरि
गी पत्तन वास्तव्यः।

(505)

सं० १७०० फा० सु० १२ श्री मूल स० स्वर० गच्छे व० ग० श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये सं०
सांवल। साकार-साहमल अ-जा। गा---।

(506)

सं० १७०१ व० मार्ग व० ११ दिने श्रीमाल ज्ञाती वाई गूजरदे सुत स० हीराणंद भा०
सबरंगदे श्री पद्मप्रभ वि: का० प्रति० तपागच्छे श्री विजयसिंह सूरिभिः आगरा वा०

चीरेखानेका मन्दिर।

(507)

सं० १४८९ वर्षे पौस वदि १० गुरौ श्री हुंबड़ ज्ञातीय श्रे० उदवसीह भार्या वईराऊ तयोः
पुत्र तथा दौहीदा सुत दोगा--पत्नी वई चमक नाम्न्या आत्म श्रेयसे अजितनाथ --
विंवं कारापितं श्रीवृहत्तपा पक्षे श्री रत्न सिंह--।

(498)

सं० १५६२ वर्षे वैशाष शु० १३ बुधे श्री श्री मालीज्ञातीय सा० पूजा भात्र मूजा. विमलाई श्री मुनि सुव्रत स्वामि विंवं कारापितं–श्री साधुसुन्दर सूरि प्रतिष्ठितं। लषराज श्री अभयराज ॥

(499)

सं० १५६८ वर्षे माह सुदि ४ दिने उकेशवंशे नाहटा गोत्रे सा० राजा भा० अपू सा० षीम भार्या रत्तू पु० श्रीपाल नाथूभ्यां मातृ पुण्यार्थं श्री चंद्रप्रभ विंवं का० प्र० खरतर गच्छे श्री जिन हंस सूरिभिः ॥

(500)

सं० १५७४ वर्षे माह सु० १३ शनौ उ४ वं० पमार गोत्रे स० वकाभा० वुल्दे पु० पतोला श्री अंचल गच्छेश भाव सागर सूरीणामुपदेशेन।

(501)

सं० १५९९ वर्षे वै० सु० ५ गुरौ श्री रुद्र पल्लीय गच्छे भ० श्री गुण सुन्दर सूरि शिष उ० श्री गुणप्रभ –– श्री आदि नाथ विंवं का० प्रतिष्ठितं ।

(502)

सं० १६०८ वर्षे वैशाख सु० ३ सोम श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे भ० श्री ज्ञान भूषण देवा स्तत्पदे भ० श्री विजय कीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचंद्रोपदेशात् हूंबड़ ज्ञातीय गंगागोत्रे। सं। घारा। भार्या सं॥ घारु सुत सं० डाईआ भार्या सिरिक्षमदि सुतसा० श्री पाल श्री शांतिनाथ विंवं कारापितं नित्यं प्रणमंति ॥

(503)

सं० १६१९ सिंघुड़ सा० गोपी भार्या विमला सुत घणराजेन कारितं।

(504)

सं० १६४३ वर्षे फाल्गुन सु० ११ गुरु प्रा० ज्ञा० से विघोगा भार्या वाई पूराई सुत देवचन्द भार्या वाई हासी सुत रायचन्द भीमा श्री शीतलनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं वृहत्तपा गच्छे श्री विजयदान सूरि तत्पट्टे श्री हीर विजय सूरि आचार्य श्री विजयसेन सूरि श्री पत्तन वास्तव्यः।

(505)

सं० १७०० फा० सु० १२ श्री मूल स० स्वर० गच्छे व० ग० श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये सं० सांवल। साकार–साहमल अ–जा। गा– – –।

(506)

सं० १७०१ व० मार्ग व० ११ दिने श्रीमाल ज्ञातौ वाई गूजरदे सुत स० हीराणंद भा० सबरंगदे श्री पद्मप्रभ विः का० प्रति० तपागच्छे श्री विजयसिंह सूरिभिः आगरा वा०

चीरेखानेका मन्दिर।

(507)

सं० १४८९ वर्षे पौस वदि १० गुरौ श्री हुंवड़ ज्ञातीय श्रे० उदयसीह भार्या वहँराऊ तयोः पुत्र तथा दौहीदा सुत दोगा– –पत्नी वई षमक नाम्न्या आत्म श्रेयसे अजितनाथ – – बिंवं कारापितं श्रीवृहत्तपा पक्षे श्री रत्न सिंह– –।

(508)

सं० १४९२ वैशाख सुदि २--ओसवाल ज्ञातिय भूरि गोत्रे --श्रीश्रेयांस विंबं का०
प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री श्री महेन्द्र सूरि प्र० --।

(509)

सं० १५०९ माघ सुदि ५ श्री ऊकेश वंशे चोपड़ा गोत्रे सा० ठाकुरसी सुत सा०
केन पुत्र मेघा माला नाल्हा पौत्र सुरजन प्र० परिवारेण स्वश्रेयोर्थं श्री विमल विंबं का०
श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

(510)

सम्वत् १५१७ वर्षे फाल्गुण सुदि ९ गुरौ श्री श्री माल ज्ञातीय मंत्रि पोपा
पाल्हणदे सुत मणयाकेन भार्या सोहासिणि सुत उधरण प्रमुख कुटुंव सहितेन
पितृ श्रेयोर्थं आत्म श्रेयोर्थं च श्री संभव नाथ चतुर्विंशति पट्ट जीवत स्वामी
गच्छे श्री गुण समुद्र सूरेरुपदेशेन आचार्य श्री गुणदेव सूरिभिः प्रतिष्ठितं च
वास्तव्यः । श्री ।

(511)

सं० १५-५ फा० वदि ९ सोमे प्रा० ज्ञा० --सा० घेरा भा० पूजी पुत्र पूना भा०
पुत्र तोला पु० कर्मसिंह श्री संभव नाथ विंवं कारितं प्र० श्रीसर्व सूरिभिः ॥

(512)

सं० १६०५ फागुण सुदि दशमि समेत सिखरे प्रतिष्ठितं मागपती त्वरमिनी पुत्र
लघु छनमल गुरु श्रीजिन भद्र सूरि --

(513)

सं० १६६३ वर्षे ज्ये० व० ८ श्री-धर्मनाथ बिंबं प्रति०-।

(514)

सं० १७०३ वर्षे ज्ये० व० ७ शुक्रे श्री आसबाई नाम्न्या श्री पार्श्व वि० का० प्र० तप० गा० श्री विजय देव सूरिभिः।

(515)

सं० १७२५ वर्षे मार्गसिर सुदि ५ रवौ श्री मालदास भार्या --पार्श्व वि० कारापित।

(516)

सं० १८५२ पोस सु० ६ दिने वृहस्पति वासरे श्री सि० च० यं० मिदं प्र० लालचन्द गणिना कारितं जैनगर वास्तव्य श्री माल रत्नचंद टोडरमल्लेन श्रेयोर्थं।

लाला हजारीमलजी का घर देरासर।

(517)

सं० १२१६ आषाढ़ सुदि २ श्री देवसेन संघे स० रामचन्द्र भार्या मना—।

(518)

सं० १३०७ वर्षे ज्येष्ट वदि ११ गुरौ -- नुहव भा० ---।

(519)

ॐ संवत १३५० वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ श्रीषंडेरगच्छे श्री यशोभद्रसूरि संताने। श्र० जगसा भार्या जमति पुत्र झांझण अरि सिंह लघुभ्राता अरिसिंहेन ज्येष्ठ भ्रातृ झांझण श्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं कारितं। प्र० श्री सुमति सूरिभिः॥

(520)

सं० १४६९ माघ सु० ६ सागरदास भार्या नालू --।

(521)

संवत १४८३ वर्षे श्री श्रीमाल ज्ञातीय वहरा धड़ला भार्या ललता देवि सांवलीदा हीराकेन भार्या हीरा देवि स० संघ श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठितं। नागें गच्छे श्री रत्नप्रभ सूरि पट्टे श्री सह दत सूरिभिः शुभं भवतु।

(522)

सं० १४८९ वर्षे माघ वदि ११ बुध श्री देवीसिंग संघवी श्रे० कावा भार्या विजी परनागढ प्रणमंति।

(523)

सं १६६१ व० चै० वदि ११ शु० सा० वदी या कारितं श्रीपार्श्व बिंबं प्रतिष्ठित श्री खरतर गच्छे। श्री जिनचंद्र सूरिभिः॥

(524)

संवत १५६६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ७ श्री माल ज्ञातीय सिंधुड गोत्रे सा० घोल्हरण पु० सा० छेयतन श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीजिनचंद्र सूरिभिः।

(526)

सं० १९३५ वर्षे माघ कृष्णा पंचमी भृगौ अहमदाबाद वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय वृद्ध शाषायां सा० हठी संघ केशरी संघ भार्या बाई रुकमिणि स्वश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंब कारापितं भट्टारक श्रीशांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं सागर गच्छे तपा बोरुटे।

छोटे दादाजी का मन्दिर।

(527)

संवत १८७१ वर्षे वैशाष शुक्ल पक्षे तिथौ ८ बुधे भट्टारक श्री जिन कुशल सूरि पादुका कारिता श्री स्याहजानाबाद नगर वास्तव्य श्री संघेन प्रतिष्ठितं च बृहद्भट्टारक खरतर गच्छीय श्रीजिनचंद्र सूरिभिः स्वश्रेयोर्थं श्री मद्बादस्याह अकबर स्याह विजय राज्ये शुभं भूयात्॥ संवत् १९०८ मिती चैत्र सुदि १२ सूर्य्यवारे श्रीजिन नंदि वर्द्धन सूरिभिः विजय सधर्म राज्ये श्री दिल्लि नगर वास्तव्य सकल श्रीसंघेन जीर्णोधार पूर्वकं कारापितं पूज्या राधकानां मङ्गलमाला वृद्धितरां यायात्॥ श्रीमान्मानिक्य सूरि शाखायां पाठक मति कुमार तच्छिष्य हर्ष चंद्रोपदेशात्॥

॥ संवत [illegible] वर्षे वैसाष मास शुक्ल पक्षे ३ श्रीमाल ज्ञातीय [illegible] गोत्रे [illegible] सिंघस्य भार्या [illegible] श्री शांतिनाथ बिं० प्र० करापितं प्रतिष्ठितं बृहत् खरतर गच्छे श्रीजिन [illegible] सू०।

(529)

श्री सं० १९७२ मिः माघ शुक्ल ९ शनिवासरे रंग विजय खरतर गच्छीय जं० यु० प्र० भ० श्रीजिन कल्याण सूरि चरण पादुका कारापितं। इंद्रप्रस्थ नगर वास्तव्य समस्त श्री संघेन प्रतिष्ठितं जं यु० प्र० वृ० भ० रंग विजय खरतर गच्छीय श्री जिनचंद्र सूरि पट्टाश्रिते भ० श्री जिनरत्न सूरिभिः पूज्याराधकानां मंगल मासा वृद्धितरां यायात् श्री संघस्य शुभं भूयात् ॥ श्री ॥

अजमेर।

यह भी प्राचीन नगर है। मुसल्मानोंके पूर्वमें यहां श्री खरतर गच्छनायक प्रभाविक श्री जिनदत्त सूरि संवत् १२११ आषाड़ ११ देवलोक हुऐ।

श्री गौडी पार्श्वनाथका मंदिर।

पंचतीर्थीयों पर।

(530)

संवत् १२४२ आषाढ़ वदि—गुरौ श्री यश सूरि गच्छे श्रे० नागड सुत आसिग त० राल्हण थिरदेव मातृ सूहपादि पुत्रैः आसग श्रेयोर्थं पार्श्वनाथ विंबं कारापिता।

(531)

संवत् १४९५ वर्षे ज्येष्ठ सु० १३ उप० ज्ञातीय तातहड़ गोत्रे सा० वीकम भा० देवलदे पुत्र रेडा भा० हीमादे पुत्र सुहड़ा भा० सुहडादे पु० ससारचंद। सामंत सोभा स० श्री सुमतिनाथ विं० श्री उपकेश गच्छे ककुदाचार्य स० श्री सिंह सूरिभिः।

(532)

सं० १५०७ वर्षे वैशाप वदि ३ गुरौ श्री श्री माल ज्ञातीय श्रे० चांपा भा० चापलदे तयो सुता श्रे० व्यघा वीघा विरा भार्या पीमा पूना भगिनी हरपू एतेषां मध्ये पूनाकेन स्वमातृ पितृ श्रेयसे श्री संभवनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः अष्टार वास्तव्यः ।

(533)

सं० १५१३ वैं० सु० २ सोमे उसवाल ज्ञातीय छाजहड गोत्रे माघाहरू पु० रानपाल भा० कपूरी पुत्र – हारलण भा० सारतादे माता ढासाढा सहितेन श्री शीतलनाथ विं० प्र० श्री पल्लि गच्छे श्री यश सूरि ।

(534)

सं० १५१५ वर्षे फागुन सु० ९ रवौ ऊ० आईचणा गोत्रे सा० समदा भा० सवाही पुत्र दसूरकेन आत्मश्रेयसे सितलनाथ वि० का०—प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ॥

(535)

सं० १५२१ वर्षे ज्ये० शु० ४ प्राग्वाट सा० जयपाल भा० वासू पुत्र्या सा० हीरा भा० हीरादे पुत्र सा० माउण भार्या रंगू नामा श्रेयसे श्री सुमतिनाथ विंवं का० प्र० तपापक्षे श्री रत्न शेषर पट्टे श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ।

(536)

सं० १५२१ वर्षे ज्येष्ठ सु० १३ गुरौ श्री राजपुर वास्तव्य श्री श्री मालज्ञातीय श्रे० सारंग भार्या मवकू सुत लाईयाकेन भा० हीरू सुत गाईया गुदा प्रमुख कुटुम्वयुतेन भार्या श्रेयसे श्री संभवनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं वृहत्तपा श्री उदय वल्लभ सूरिभिः ॥

(537)

संवत १५२५ वर्ष चैत्र वदि ८ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० सोमा भा० [illegible] सिधा भार्या सोभागिणि सुत पद्मा भार्या [illegible] श्री सुविधिनाथ बिंबं का० [illegible] देशेन विधिना प्र० बिंबं----श्च ॥

(538)

सं० १५२७ वर्षे पोष वदि १ श्री० प्राग्वाट ज्ञा० म० हेमादे सु० [illegible] नाम्न्या श्री नेमिनाथ बिंबं कारितं प्र० वृद्ध तपापक्षे भ० श्री जिन रत्न सूरिभिः ।

(539)

सं० १५२८ माह व० ५ बुधे श्री ओस वंशे धनेरीया गोत्रे साह भाहड़ पुत्र वीसा भार्या वील्हणदे पुत्रैः साह कोहा केल्हा मोकलाग्रधैः स्वश्रे यसे श्रीधर्मनाथ बिंबं का० श्री पल्लिवाल गच्छे श्री नन्न सूरिभिः प्र० ।

(540)

सं० १५७० वर्षे माघ वदि १३ बुधे श्री पत्तन वास्तव्य मोढ़ ज्ञातीय ठ० भोजा भार्या वाली सुत ० ठ० रत्नाकेन भार्या रूपाई सुत ठ० जसायुतेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं स्व श्रेयोर्थं श्रीवृद्धतपा पक्षे श्री रत्न सूरि संताने श्री उदय सूरिः ॥ श्रीलक्ष्मी सागर सूरीणां पट्टे प्रतिष्ठितं श्री धन रत्न सूरिभिः श्री रस्तु ।

(541)

सं० १६०३ वष आपाड वदि ४ गुरौ भिन्नमाल वास्तव्य म० देवसी भा० दाडिमदे पुत्र मानसिंघ भा० षेतसी युतेन स्वश्र यसे श्री वासुपूज्य विं० का० प्र० तपगच्छे भ० श्री ५ श्री विजयदेव सूरिभिः ।

(542)

सं० १६८३ वर्षे आषाढ़ वदि ४ गु० उसवाल ज्ञातीय वेद महता गोत्रे म० भयरव भा० भरमादे पुत्र मे० सुरताणाख्येन श्री सुविधिनाथ विंबं का० प्र० तपा गच्छे भ० श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

(543)

संवत १६८७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ गुरौ मेडता नागर वास्तव्य उसभ गोत्र को० जयता भार्या जसदे पुत्र को० दीपा धनाकेन श्रीपार्श्व वि० का० प्र० तपा गच्छे भ० श्री विजय देव सूरिभिः स्वपद स्थापित श्री विजयधर्म-सू--।

श्री संभवनाथजी का मन्दिर।

(544)

सं० १२९० माह सुदि १० श्रे० धवल सुत जैमल श्रेयोर्थं--कारितः ॥

(545)

सं० १३७९ वर्षे वै० वदि ५ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय महं कंधा भार्या--- पुत्र माल्ह श्री शांतिनाथ वि० का० प्र० श्री महेंद्र सूरिभिः।

(546)

सं० १४८९ माघ सु० १० प्राग्वाट --- स्व श्रेयसे पद्मप्रभ विंबं का० श्री सोम सुंदर सूरिभिः।

(547)

सं० १४८१ वर्षे वैशाष सु० ३ रवौ रहूराली (?) गोत्रे सा० वीजल भार्या विजय श्री पु० रावा----श्रेयोर्थं श्री अजितनाथ बि० प्र० श्री धम---श्रीपद्म शेषर सूरिभिः।

(548)

सं० १४८५ वर्षे माघ सुदि १४ वुधे लिगा गोत्रे सा० माला सागू युतेन सा० जील्हा केन निज पित्रोः श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री हेम हंस सूरिभिः।

(549)

॥ॐ॥ सं० १४८६ वर्षे माघ सु० ११ शनौ श्री षंडेरकीय गच्छे उपकेश ज्ञा० गूगलीया गोत्रे सा० महूण पु० षोना पु० नेमा पु० नूनाकेन भा० लपी पु० करमा नाल्हा सहितेन स्वश्रेयसे श्रीमुनि सुव्रत विंबं का० प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरिभिः शुभं भूयात् ॥श्री॥

(550)

सं० १४८८ वर्षे पोष सु० ३ शनौ उकेश ज्ञातौ तीवट गोत्रे वेसटान्वये सा० दादू भा० अणुपदे पु० सचवीर भा० सेत्त पु० देवा श्री वंताभ्यां पित्रो श्रेयसे श्री विमलनाथ विंबं का० प्र० श्री उकेश गच्छे ककुदाचार्य संताने श्री सिद्ध सूरिभिः।

(551)

सं० १४९० वै० सु० शनौ श्री मूलसंघे नंदिसंघे वलात्कार गणे सरस्वती गच्छे श्री कुंद कुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि देवाः तत्पट्टे श्री सकल कीर्त्ति देवाः। उत्तरे

श्रख्योभि (?) हं० ज्ञातीय व० आसपाल भा० जाणी सु० आजाकेन भा० मघूसुत विरुआ भ्रातृ वीजा भा० वानू सुत समधरादि कुटुंव युतेन श्रीपद्म प्रभ चतुर्विंशति पट्टः कारितः तंच सदा प्रणमति सुकुटुंवः ।

(552)

सं० १४९२ वर्षे मार्गशिर वदी ४ गुरुवारे श्री उपकेश वंशे लूसड गोत्रे सा० देव राज भार्या हेमश्रिया पुत्र सा० वाहडेन आत्मा कुटुंव श्रेयोर्थं श्री विमलनाथ विंवं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीधर्म्म घोष गच्छे भ० श्रीपद्मशेखर सूरिभिः ।

(553)

सं० १४९९ माघ सु० ५ प्राग्वाट व्य० धीरा धीरलदे पुत्र्या व्य० भीमा भावल दे सुतव्य० वेला पत्नया वीरणि नाम्न्या श्रीसंभव विंवं का० प्र० तपा श्री सोम सुंदर सूरिभिः ॥श्री॥

(554)

सं० १५१६ वर्षे वैशाष वदि १२ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय पितृ सं० रामा मातृ शाणी श्रेयोर्थं सुत सागाकेन श्रीश्री अभिनंदन नाथ विंवं कारितं श्री पूर्णिमा पक्षे श्री साधुरत्न सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना श्री संघेन गोरडुंया ग्रामस्य ॥

([illegible])

॥ १५१६ आषाढ़ सु० ५ लोढ़ा गोत्रे नीवा भार्या रूपा पु० सोमा नेत्रा ---- पद्मावति प्रणमति ।

(556)

सं० १५१७ वर्षे फागुन सुदि २ उकेश वंशे वुहरा गोत्रे सा० सोढा भा० शाणी नगाकेन भा० नायक दे पुत्र नापा गोपा प्र० परिवार सहितेन स्वपितृ सा० पुण्यार्थं श्री श्रेयांस विंवं का० श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरि पट्टे श्री सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

(557)

सं० १५१७ वर्षे माघ सु० ५ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० डउढा भा० हरपू सु० श्रे० नागा भा आजी सुत श्रे० जिनदासेन स्वश्रेयसे श्रीधर्मनाथ विंवं आगम गच्छे श्रीदेवरत्न गुरूपदेशेन कारितं प्रतिष्ठित ।

(558)

सं० १५१९ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ शुक्रे उपकेश ज्ञातीय चोरवेडिया गोत्रे उएस सा० सोभा भा० धनाई पु० साधू सुहागदे सुत ईसा सहितेन स्वश्रेयसे श्री सुमति नाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीकक्क सूरिभिः ॥ सीणोरा वास्तव्यः ॥

(559)

सं १५२० वर्षे वै० शुदि ५ भौमे श्री ज्ञातीय श्री पल्हयउ गोत्रे सा० भीषात्मज सा० घेल्हा तत्पुत्र सा० सांगा---प्रभृतिभिः स्वपितृ पुण्यार्थं श्री आदिनाथ विंवं कारितं। वृहद्गच्छे श्रीरत्नप्रभ सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं श्री महेंद्र सूरिभिः।

(560)

सं० १५२४ आषाढ़ सु० १० शुक्रे उकेश वंशे--भा० सपूरा पु० जेसाकेन भा० धर्मि-णि पु० माईआ पौत्र इसा वीसालादि कुटुंब युतेन पु० माइया श्रेयसे श्री नमि विंव का० प्र० तपा श्रीसोमसुंदर सूरि संतान श्रीलक्ष्मी सागर सूरिभिः ।

(561)

सं० १५३२ वर्षे चैत्र वदि २ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञा० सं० जोगा भा० जीवागि स०गो-ला भा० कर्मी पु० नरवदेन श्री श्रेयांसनाथ विंवं कारितं श्री पूर्णिमा पक्षीय श्री साधु सुंदर सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना वलहरा ।

(562)

स० १५३५ वर्षे फागुण सुदि ३ दिने श्री उकेशवंश भ० गोत्रे सा० नीवा भार्या पूर्जी सा० पूना श्रावकेण भ्रातृ सजेहण मा० अंवा परिवार युतेन श्री संभवनाथ विंव कारितं प्रतिष्ठित श्री खरतर गच्छे श्रीजिन भद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

(563)

संवत १५४७ वर्षे मा० वदि ८ दिने प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० रूपा भा० देपू पु: मेगा भा० हीरू श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य विंवं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ।

(564)

॥ संवत १५५७ वर्षे वेशाप सुदि ३ दिने मंगलवासरे उ० ज्ञातीय वेंछाच गोत्र सा० पीमा पु० जालू नारिगदे अगस---श्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथ विंबं का० प्र० श्रीसंडेर गच्छे श्रीशांति सूरिभिः तत्प-श्रीर-सूरिभिः।

(565)

सं० १५५९ (?) वर्षे आषाड सु० १० सूराणा गोत्रे स० शिवराज भा० सीतादे पुत्र सा० हेमराज भार्या हेमसिरी पु० पूजा काजा नरदेव श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं प्र० श्रीधर्म घोष गच्छे भ० श्रीपद्मानंद सूरि पट्टे नंदिवर्द्धन सूरिभिः।

(566)

सं० १५५९ वर्षे आषाढ सुदि १० आईचणाग गोत्रे तेजाणी शाषायां सा० सुरजन भा० सूहवदे पु० सहस मल्लेन भा० शीतादे पु० पाडा ठाकुर भा० द्रोपदी पौ० कसा पीथा श्रीवंत युतेनात्मपुण्यार्थं श्रीसुमतिनाथ विंबं कारितं प्र० श्रीउपकेशगच्छे भ० श्रीदेव गुप्त सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

(567)

सं० १५६७ वर्षे श्री माह सुदि ५ बुधे गोठि गोत्रे सा० ---तत्पु० पहराज तत्पुत्र राठा---त्यादि परिवार युतेन सुविधि नाथ विंबं का० प्र० खरतरगच्छे श्रीजिन चन्द्र सूरिभिः।

(568)

संवत १५७९ वर्षे आषाढ़ सुदि १३ दिने रविवारे श्री फसला गोत्रे मं० सधारण पुत्र
रतन मं० माणिक भार्या माणिकदे पुत्र मूलाकेन पुत्रपौत्रादि परिवृतेन श्री पार्श्वनाथ
बिंबं कारितं प्र० श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनहंस सूरिभिः श्रीपत्तन महानगरे।

(569)

सं० १९०४ वर्षे पौष मासे शुक्ल पक्षे पूर्णिमायां तिथौ श्रीअजमेर पूर्यां श्री चतुर्विंशति
जिनमातृका पट्ट लुनिया गोत्रेन सा० पृथिराजेन का० प्र० श्रीवृहत् खरतरगच्छाधीश्वर
जंगमयुगप्रधान भ० श्रीजिन सौभाग्य सूरिभिः विजयराज्ये।

श्रीदादाजीके छतरिके पास मन्दिरमें।

(570)

सं० १५३५ वर्षे आषाढ़ सुदि ६ शुक्रे वड़नगर वास्तव्य उकेशज्ञातीय सा० साजण
भार्या तारू पुत्र सा० रूपाकेन भार्या लीलादे प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्रीशांतिनाथ
बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छनायक श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः॥ पं० पुण्यनन्दन
गणीनामुपदेशेन।

जयपूर।

यति श्यामलालजी के पासकी मूर्त्तियों पर

(571)

सं० १३-- वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्रीकाष्ठासंघ श्रीलाड वागड (?) गण श्रीमन्-- मुरूपदेसेन हुंवड ज्ञातीय व्य० वाहड भार्या लाछि सुत पीमा भार्या राजलदेवि श्रेयोर्थं सुत दिवा भार्या संभव देवि नित्यं प्रणमति।

(572)

सं० १४३९ वर्षे पौष ९ सोमे श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमा० --- मायलदे पु० सामलेन श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीबुद्धिसागर सूरिभिः॥ श्री॥

(573)

सं० १५१५ वर्षे फागुण शुदि ४ शुक्रवारे। ओसवाल ज्ञातीय बच्छस गोत्रे सा० धीना भार्या फाई पु० देवा पद्मा मना वाला हरपाल धर्मसी आत्मपुण्यार्थं श्रीधर्मनाथ बिंबं कारितं श्रीम० तपागच्छे ---- ।

(574)

सं० १५२१ वर्षे ज्येष्ट सुदि १३ गुरौ रणसण वासि श्रीश्रीमाल ज्ञातीय श्रे० धर्मा भा० धर्मादे सुत भोजाकेन भा० भली प्रमुख कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्रीशांतिनाथ चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्री सुविहत सूरिभिः॥ श्रीरस्तु॥

यति किसनचन्दजी के पासकी मूर्त्तियों पर।

(575)

सं० १३१८ फागुन--- गेहलडा गोत्रे वटदेव पुत्र विसल पुत्र लषमणेन मातृ वीरी श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्र० श्री भावदेव सूरिभिः।

(576)

सं० १५०५ वर्षे माह वदि ९ शनौ श्री---गच्छे--- जलहर गोत्रे सा० लुणा भा० लुणादे पुत्र पवित्र पाल्हा सानाभ्रि पितृमातृ श्रेयोर्थं श्री संभवनाथ विंवं कारि० प्र० ---।

(577)

सं० १५०८ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० श्रीमाल ज्ञाती भांडावत गोत्रे सा० भोजा भार्या सासु पुत्र नेना भार्या फुला श्री धर्मनाथ विंवं कारितं श्री पल्लि गच्छे -----।

(578)

संवत १५०९ वर्षे जएस वंरे सा० हऊदा भार्या आल्णादे पुत्र केन्हाकेन श्री अंचल गच्छेश श्री जय केशरि सूरिणां उपदेशेन पितृ श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ विंवं कारितं।

(579)

सं० १५३२ वर्षे ज्ये० व० ३ रवौ वणागीआ गोत्रे सा० वादी भ० पोमाइ सु० तिउण श्रेयोर्थं सा० सावउन श्रीवंत साजण प्र० कुटुंव युतेन श्री पद्मप्रभ विंवं कारितं रोद्रपल्लिय गच्छे श्रीदेव सुंदर सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं श्री गुण सुंदर सूरिभिः।

(580)

संवत १५५९ वर्षे माघ सुदि १५ गुरौ ओसवाल ज्ञातीय सा० हासा पुत्र हरिचंद्रेन भा० हीरादे पुत्र पुना घूनादि कुटुंब युतेन गहिलडा गोत्रे श्री सुविधिनाथ विंबं का० प्र० तपागच्छे श्री हेम विमल सूरिभिः नागपुरे।

(581)

संवत १६७४ वर्षे माघ वदि २ दिने गुरु पुष्ययोगे ओसवाल ज्ञातीय चोरडिया गोत्रे स० सिघा भार्या नवलादे तत्पुत्र स० भैरवदास भार्या भर्मादे नाम्न्या श्री नमिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे भट्टारक श्री विजयदेव सूरिभिः।

(582)

सं० १६८८ व० माघ व० १ गुरौ ----हस गोत्रिय सा० वंजाकेन --- सुविधिनाथ विं० गृहीत घ० ट० श्रीतपा गच्छे श्री विजयदेव आचार्य श्री विजयसिंह सूरि प्रति०।

जोधपुर।

यह मारवाड़की राजधानी एक प्रसिद्ध स्थान है।

श्रीमहावीर स्वामीका मन्दिर (जुनी मंडि)

धातुओंके मूर्त्ति पर।

(583)

सं० १२५९ वर्षे माह सुदि ११ स० हाप-सीह पुत्री सपदे-केन पुत्र पूजा काजा युतेन पितृ श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरिभिः।

(584)

सं० १४६० वर्षे वैशाष सु० ३ घांघगोत्रे सा० सोल्हा पुत्रेण सा० सांचडेन स्वपुत्रेण भार्या सिरियादे श्रेयसे श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्र० श्री विद्यासागर सूरिभिः ॥ श्री॥

(585)

सं० १५०१ प्रा० ज्ञा० डोडा भा० राणी सुत सुपाकेन भा० सरसू पुत्र साजणादि युतेन श्री अजितनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ।

(586)

सं० १५०३ आषा० सु० ९ शु० राउ खावरही गोत्रे सा० महिराज भा० सीता पु० पीद भा० लोली पु० कीडा देताभ्यां युतेन श्री धर्मनाथ विंवं कारापित श्री - - र्पि गच्छे श्री जयसिंह सूरि पट्टे श्रीजय शेषर सूरिभिः तपा पक्ष ।

(587)

सं० १५०३ वर्षे मार्ग वदि २ खुचंती भंडारी गोत्रे सा० सांना भा० सोम श्री पुत्र हीरा केन आत्म० श्री श्रेयांस विवं का० प्र० श्री धर्म घोष गच्छे श्री पद्म शेषर सूरि पट्टे श्री विजय नरेन्द्र सूरिभिः ॥

(588)

सं० १५१७ वर्षे चैत्र सु० १३ गुरौ उप० ज्ञा० म० नूणा भा० मानिकदे पु० नांदा भा० वाल्हणदे पुत्र पेतसि वास० प्रा० ना० श्र० श्री सुमतिनाथ विंवं का० प्र० ब्रह्माणीय ग० श्री उदय प्रभ सूरिभिः ।

(589)

सं० १५२२ वर्षे वैशाष सु० ३ नना ज्ञा०श्रे० जइता भा० परि पुत्र गेला भा० वाली नाम्न्या पुत्र अमरसी भा० तिलू सजन कवेला मातृ दूसी ज्येष्टमाला प्रमुख कुटुंब युतया स्व श्रेयोर्थं श्री विमलनाथ विंवं का० प्र० तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(590)

सं० १५२४ वै० शु० ३ श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्य भ० पद्मनंदि तत्प० भ० श्रीसकल कीर्त्ति तत्प० भ० श्री विमल कीर्त्या श्री शांतिनाथ विंवं प्रतिष्ठितं। श्री जे संग भा० मरगादे सु० तेजा टमकू सु० सिवदाय।

(591)

सं० १५२७ वर्षे माह सु० ९ बुधे श्री --- गोत्रे सा० भादा भा० सावलदे पु० भा० मालूणदे पुत्र बींझा कान्हा रूपादि युतेन स्व श्रेयसे श्री आदिनाथ विंवं कारित प्रतिष्ठितं जिनदेव सूरि पट्टे श्रीमत् श्री भावदेव सूरिः।

(592)

सं० १५३२ वर्षे वैशाष वदि ५ रवौ उप० ज्ञा० गो० उरजण भा० राउं सु० भीदा भा० भावलदे सु० गारगा वरजा युतेन आत्म० श्री सुमतिनाथ विंवं का० प्र० श्री जीरापलीय गच्छे श्री उदयचन्द्र सूरि पट्टे श्रीसागर नंद सूरिभिः शुभं भवतु

(593)

सं० १५३५ श्री मूलसंघे भ० श्री भुवन कीर्त्ति स्व० भ० श्री ज्ञान भूषण गुरूपदेशे--

(594)

सं० १५५४ वर्षे फागुण मासे शुक्लपक्षे ३ वुध वासरे साह चांपा भार्या मेघू डुंगर भार्या चांदू पु० डाहा भा० मालू श्री नमिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं पूर्णिमा पक्षिक छोली वाल गच्छे भट्टारिक श्री विजय राज सूरिभिः ॥ श्री ॥

(595)

सं० १५६३ वर्षे माह सुदि १५ गुरौ प्रग्वाट ज्ञा० सा० कला भा० भमणादे पु० सदो --- पु० घना --- सहितेन आत्म पुण्यार्थे श्रीसुमति विंवं का० प्र० पूणिमाक गच्छे ---सागर सूरि---।

(596)

सं० १५६५ वर्षे चैत्र सु० १५ गुरौ उप० भंडारी गोत्रे सा० नरा भा० नारिंगदे पु० तोली भा० लाछलदे पु० चिजा रूपा कूणा विजा भा० वीभ्रलदे पु० नाम्ना डामर द्वि० भा० वालादे पु० खेतसी जीवा स्वकुटुंवेन पितृ निमित्तं श्री सुमतिनाथ विंवं कारितं प्र० श्री संडेर गच्छे भ० श्री शांति सूरिभिः।

(597)

सं० १५६५ वर्षे माह सुदि ८ रवौ श्री उपकेश वंशे वि० सांडा भार्या धम्माई सुत वीसा सूरा भार्या जाली द्वि० भार्या अरघाई धर्म्म श्रेयसे श्री शीतलनाथ विंवं प्रति० सिद्धांती गच्छे श्रीदेव सुंदर सूरिभिः प्र०।

(598)

॥ ॐ संवत १५६५ वर्षे वैशाष वदि १३ रवौ ढेढीया ग्रामे श्री उएसवंशे सं० पीदा भार्या घरणू पुत्र सं० तोला सुश्रावकेण भा० नीनू पुत्र सा० राणा सा० लषमण भ्रातृ

सा० आसा प्रमुख कुटुंब सहितेन स्वश्रेयोर्थं श्री अंचल गच्छेश श्री भाव सागर सूरीणा मुपदेशेन श्री अजितनाथ मूलनायके चतुर्विंशति जिन पट्ट कारितः प्रतिष्ठितः श्रीसंघेन।

(599)

सं० १५७० वर्षे आ० सु० ३ सोमे ओसवाल ज्ञातीय चंडलिआ गोत्रे सा० सारिंग पुत्र कालू भा० हामी पु० हासा देवा गणाया भार्या दमाई पु० साह विमलदास सा० हरवलदास सा० विमलदास भा० सोनाई पु० सुन्दर वच्छ रिषभदास भार्या अमरादे सुत अमरदत्त पूर्वत भु० श्री सुविधिनाथ विंवं कारितं प्र० श्रीमलधार गच्छे भ० श्री गुण सागर सूरिपट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरि प्रतिष्ठितः ॥

(600)

सं० १८२१ मि० वै० सुदी ३ श्री पार्श्वजिन–भ० श्री जिन लाभ सू० यति हीरानंद करापितं ।

देविजीके मूर्त्तिपर ।

(४ भूजा+सर्प छत्र)

(601)

सं० १४७२ वर्षे ज्येष्ठ वदि १२ सोमे वीजापूर वास्तव्य नागर ज्ञातीय ठा० भवासुत घरणाकेन कुटुंब सम-- श्रेयोर्थं देवी वेहरुठा० रूपं प्रतिष्ठापितं।

(602)

सं० १५५४ माह सुदि ५ दिने उ० ज्ञातीय मंडोवरा गोत्रे सा० पासवीर पु० सा० सूरा भा० सूहवदे पु० सा० श्रीकरण सा० शिवकरण सा० विजपाल श्रा० सूहवदे आत्मपुण्यार्थं श्री शांतिनाथ विंवं का० प्र० श्रीधर्म्म घोष गच्छे भ० श्रीपुण्यवर्द्धन सूरिभिः ।

(603)

संवत १५७९ वर्षे वैशाख सुदि ७ वुधे उशवाल ज्ञातीय वृद्धशाषीय पोसालेवा गोत्रे सा० पीमा भा० अधी-पु० सा० श्रीवंत भा० सोनाई पु० सकल युतेन स्वश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ विंवं का० श्री कीरट गच्छे श्री कक्क सूरिभिः॥ श्री॥

(604)

स्वस्ति श्रीः॥ सं० १५९८ वर्षात्पौष वदि ११ सोमे उकेश वंशे व्य० परवत भा० फदकु तत्पुत्र व्य० जयता भा० अहिवदे पु० व्य० श्री ५ सपरिवारेण सोक्तं विहान कर्मा निज --- परिवार श्रेयोर्थं आदिनाथ विंवं कारितं प्र० श्री पूर्णिमा पक्षे भीमपल्लीय भ० श्री मुनिचन्द्र सूरिपट्टे श्री विनयचंद्र सूरिणामुपदेशेनेति भद्रं।

(605)

ॐ संवत १६३८ वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्री स्तंभ तीर्थ वास्तव्य सोनी मनजी भार्या मोहणदे सुत सोनी मंगलदास नाम्ना श्री श्री माल ज्ञातीय श्री अजितनाथ विंवं कारापितं तपागच्छे श्री हीर विजय सूरीश्वरै प्रतिष्ठितं।

श्री केसरियानाथजी का मंदिर—मोती चौक।

(606)

ॐ॥ संवत १२३९ द्वि: वैशाख सुदि ६ शुक्रे पलयपद्र वास्तव्य श्री ति-नि गच्छे भ० श्री देवाचार्य सरक श्री नवतसार सुत-ष्टे-गुण स्वपत्नी सुलखणायाः श्रेयार्थं श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्री वुद्धि सागराचार्य्यैः॥

(607)

सं० १४५८ वर्षे माह सुदि ५ लोढा गोत्रे सा० देवसींह भार्या देलूणदे पुत्र रेडा भ्रा० रूपादे पुत्र सा० सालू सायराभ्यां पितृ मातृ पुण्यार्थं श्री आदिनाथ विंवं का० प्रति० श्री धर्मघोष गच्छे श्री मलयचन्द्र सूरिभिः।

(608)

सं० १५१३ वर्षे पोष वदि ४ शुक्रे श्रीमाल ज्ञा० श्रे० संग भा० श्रेयादे सु० महिराजेन पितृ मातृ भ्रातृ समधर सारंगा भ्रो मान मित्रं स्वात्म श्रेयसे श्रीश्री सुमतिनाथ विंबं पंचतीर्थी कारापिता प्रतिष्ठितं पिप्पल गच्छे भ० श्री गुण रत्न सूरिभिः गंधारवास्तव्य।

(609)

सं० १५२४ चैत्रवदि ५ -- ड माणिक भा० वारूदे-श्री विमल कीर्त्ति —धर्मनाथ विंबं प्र० वाई तपदे जा० काल्हा --।

(610)

सं० १५२८ वर्षे वैशाख वदि ६ दिने सोमे उकेश वंश कुर्कट शाखायां व्यै० तोला भा० षेतलदे पुत्र सदस मल्लेन तील्हादि पुत्र पौत्रादि युतेन स्व श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनचंद्र सूरिभिः।

(611)

सं० १५७२ वर्षे फागुण सु० ९ मं० भंडारी गोत्रे सा० तोला भा० पलाछदे पुत्र सा० विद्रा सा० परूपा सा० कूपा भा० करमादे पु० माता - पुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संडेर गच्छे भ० श्री शांति सूरिभिः।

(612)

सं० १८९३ ना मा। सु० १० वु०। श्री जोधपूर वास्तव्य श्री ओसवाल ज्ञातीय वृद्ध शाखायां संघ माणक चंद तेउ स्वश्रेयार्थं श्री चतुर्विंशति जिन विंवस्य भरापोतं।

(613)

सिद्ध चक्रके पट्ट पर।

श्री सिद्धचक्रो लिखतो मया वै। भट्टारकीयेन सुयंत्रराजः॥ श्री सुन्दराणां किल शिष्यकेन। स्वरूपचंद्रेण सदऽर्य सिद्धैयः॥ १॥ श्री मन्नागपुरे रम्ये चंद्रवेदाऽष्ट भूमिते। अव्दे वैशाखमासस्य तृतियायां सिते दले॥ २॥

श्री मुनिसुव्रतस्वामीजी का मन्दिर।

(614)

सं० १४२३ वर्षे फागुन सु० १ श्री श्री० ज्ञा० व्य० काला भा० काल्हणदे सु०--पद्म प्रभु वि० श्री पू० श्री उदयाणंद सू० प्र०।

(615)

सं० १४४१ वर्षे वैशाख वदि १२ दिने नाहर वंशालंकारेण सा० पद्मसिंह पुत्रेण भ्रातृ सा० सल्केन सरवणादि युतेन श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरिभिः श्री खरतर गच्छेशः॥

(616)

सं० १४९९ वर्षे फागुण वदि २ गुरौ श्री तावडार गच्छे पांढरा गोत्रे जेसा भा० जस
मादे पु० तोजा भा० वापू पुठीयलमेदा सह० श्री शांतिनाथ बिं० प्र० का० श्री कीर्तिआ
चार्य स० श्री वीर सूरिभिः ।

(617)

सं० १५३६ वर्षे फा० सुदि ३ रवौ उकें० पदे दोसी गोत्रे० सा० सीरंग -- पुत्र सा०
डूडकेन भा० दाडिमदे पुत्र कीता तेजादि परिवारयुत श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं श्री पूर्व
प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंन्द्र सूरि श्री जिन समुद्र सूरिभिः
श्री पद्म प्रभ बिंबं ।

(618)

सं० १५८२ वर्षे जे० सुदि १० शुक्रे वडतप श्री वन रतन सूरि --- ।

श्री धर्मनाथजी का मन्दिर ।

(619)

सं० १४९३ जेठ वदि ३ मंगले उप० ज्ञा० पावेचा गोत्रे सा० वीरा भा० वील्हणदे पुत्र
कुंभाकेन भा० कामलदे युतेन स्वश्रे० विमल बिंबं का० प्र० वृहत गच्छे देवाचार्यान्वये
श्री हेमचन्द्र सूरिभिः ॥ छ ॥

(620)

सं० १५०३ वर्षे डोसी-धर्माकस्य पुण्यार्थं दो० वूछा पुत्र संग्राम श्रावकेण कारितः
श्री श्रेयांस बिंबं प्रतिष्टितं श्री जिनभद्र सूरिभिः श्री खरतर गच्छे ।

(621)

सं० १५०४ वर्षे वै० शु० ३ प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० भंडारी शाणी सुत श्रे० पीमसी सा-पाभ्यां भा० मदीखतजता मालादि कुटुंवयुताभ्यां स्वश्रेयसे श्री मुनि सुव्रत स्वामि बिंबं का० प्र० तपा श्री सोम सुन्दर सूरि शिष्य श्री जयचंद्र सूरिभिः धार वास्तव्यः शुभं भवतु ॥

(622)

सं० १५०७ वर्षे मार्गसिर वदि २ गुरौ उपकेश वंशे जारंउडा गोत्रे सा० पिमपालात्मज सा० गिरराज पुत्र सहदेवो भ० लोला समदा सहितेन मातृ गवरदे पूजार्थं श्री नमि बि० का० प्र० तपा भट्टारक श्रीं हेमहंस सूरिभिः ॥

(623)

सं० १५१२ वर्षे फागुन सु० १२ आहतणा (आईपणा ?) गोत्रे सा० धना भा० रूपी पु० मोकल भा० माहणदे पु० हासादि युतेन स्वमाकस श्रेयसे श्री संभवनाथ बिंबं का० उकेश गच्छे श्री सिद्धाचार्य संताने प्र० भ० श्री कक्क सूरिभिः ।

(624)

सं० १५२५ वर्षे दिवसा वासे श्रीमाल ज्ञातीय सा० दशरथ भा० नामिनी पुत्र माना केन भा० राना भ्रातृ साल्हू भा० सोढो कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः नखुरीया गोत्रः ॥

(625)

सं० १५२८ वर्षे वैशाख वदि ६ चंद्रे उपकेश ज्ञातौ आदित्यनाग गोत्रे सा० नेना पु० जार्हा-भा० जयसिरि पु० लादर भा० मेहिणि नाम्न्या पु० गुणा पूना, [illegible] सहितया

श्री केसरियानाथजी (मेवाड़)

यह स्थान जो मेवाड़की राजधानी उदयपुरसे २० कोस पर है रखभदेओ नामसे भी प्रसिद्ध है। मूलनायक श्री ऋषभदेवकी मूर्त्ति स्यामवर्ण बहुत प्राचीन और इनका अतिशय बहुत विलक्षण हैं। मन्दिरके बाहर महाराणा साहबोंके अघाट बहुतसे हैं।

पंचतीर्थी पर।

(635)

सं० १५१९ वर्षे माघ सु० १३ दिने उप० ज्ञा० श्रे० पोमा भा० पोमी सु० जावलकेन भा० गोराद सु० जसा धना वना मना ठाकुर परवतादि कुटुंबयुतेन स्वपितृ श्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंबं का० प्र० तपा गच्छे श्री सोम सुंदर सूरि संताने श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः।

पाषाण पर।

(636)

श्री कायाम्याम वामीना केवलापदाग नमो क्षमाग्रत (?) आदिनाथ प्रणमामि---
विक्रमादित्य संवत १४३१ वर्षे वैशाख सुदि अक्षय तिथौ बुध दिने चाढी नाथुराल---।

(637)

श्री आदिनाथ प्रणमामि नित्यं विक्रमादित्य संवत १५७२ वैशाष सुदि ५ वार सोम-
वार श्री उग्रसेनराज श्री कन्हा भार्या सोवनबाई चीजीराज यहां धुलेवा ग्राम श्री ऋषभ-
नाथ प्रणम्य कडीआ पोईआ भार्या भरमी नम्या परहेट सा० भार्या हासलदे तस्य पु-
त्र काराइन वागराय मात वेर्मादाम भार्या लाम्टी चाचा भार्या सीसा सकलनाथ नागर
श्री काष्ठा संघ ----श्री ऋषभनाथजी श्री नाभिराज कुल श्री ता-री कुल ---।

(638)

संवत १४४३ वै० शु० १५ पूर्णिमा तिथौ रविवासरे वृहत्खरतर गच्छे श्री जिन भक्ति सूरि पट्टालंकार भट्टारक श्री १०५ श्री जिनलाभ सूरिभिः।-- श्री राम विजयादी प्रमुखे सहूक -- आदेशात् सनीपुर - श्री ऋषभदेवजी --।

सरस्वतीजी महादेवजी के चरण चौकी पर।

(639)

संवत १६७६ वर्षे मा० सुद० १३ --।

मरुदेवी माताजीके हस्ति पर।

(640)

संवत १७११ वर्षे वैशाष सुदि ३ सोमे श्री मूलसंघे सरस्वति गच्छे वलात्कारगणे श्री कुं--।

(641)

संवत १७३४ व० माघ मासे शुक्लपक्षे - तिथौ भृगुवासरे श्री मूलसंघ काष्ठासंघ भट्टारक श्री रामसेनीन्वये तदाम्नाये भ० श्री विश्व भूषण भ० यशः कीर्त्ति भ० श्री त्रिभुवन कीर्त्ति --।

(642)

संवत १७४६ वर्षे फागुण सु० ५ सोमे श्री मूलसंघ सरस्वति गच्छे वलात्कार गणे श्री श्री कुंदकुदाचार्यन्वये भट्टारक श्री सकल कीर्त्ति स्तदन्तर भट्टारक श्री दामकीर्त्ति --।

(643)

संवत १७६५ वर्षे माघ मासे कृष्णपक्षे पंचमी तिथौ सोमवासरे भट्टारक श्री विजय रत्न केश्वर तपागच्छे काष्ठासंघे श्रा० पु० दे० वृ० शा० मुहता गोत्रे मुहताजी श्रीरामचंद्र जी तस्यभार्या बाई सूर्यदेवि तस्यात्मज मुहताजी श्री सोभाग चंद्रजी मुहताजी श्री वातु जी भाई मुहताजी श्री हरजीजी श्रीपार्श्वनाथ जिन विंवं स्थापितं।

श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ प्रशस्ति ।

(644)

॥ ॐ ॥ प्रणम्य परया भक्तया पद्मावत्याः पदाम्बुजं। प्रशस्तिर्लिख्यते पुण्या कवि-केशर कीर्त्तिना ॥ १ ॥ श्री अश्वसेन कुल पुष्पक रथब्रु भानुः । वामांग मानस विकासन राजहसः ॥ श्रीपार्श्वनाथ पुरुषोत्तम एष भाति। धुलेव मंडनकरा करूणा समुद्रः ॥ २ ॥ श्री मज्जगत्सिंह महीश राज्ये। प्राज्यो गुणै र्जात ईहालयोयं ॥ आपुष्पदन्त स्थिर-तामुपैतु। संपश्यतां सर्व सुख प्रदाता ॥ ३ ॥

दोहा। सुर मन्दिर कारक सुखद सुमतिचंद महा साधः। तपे गच्छमें तप जप तणो उयत उदधी अगाधः ॥ ४ ॥ पुन्यथाने श्रीपार्श्वनो पुहवो परगट कीधः। खेमतणो मन था तिसु लाहो भवनो लीध ॥ ५ ॥ राजमान मुहता रतन चातुर लषमी चंद। उच्छव क्रिया अति घणा आणिमन आनन्द ॥ ६ ॥ दिल सुध गोकल दासरे कीध प्रतिष्ठा पास। सारे ही प्रगटयो सही जगतिमें जसवास ॥ ७ ॥ सकल संघ हरषित हूओ निरमल रविजिन नाम राषो मुनि महंत सरस करता पुण्य सकाम ॥ ८ ॥

कवित्त। सांतिदास सचितसंत दावडा लषमी चंदहः। संघ मनुष्य सिरदार सहस्र किरण सुषके कंदहः ॥ वल्लभ दोसी वीर धीर जिन धर्म धुरंधरः। मुलचंद गुण मूलहीर धोया उर गुणहरः ॥ सकलसंघ सानिधकरः सुमतिचंद महासाधः। पास सदन कियो प्रगट

निश्चल रहो निरबाधः ॥ ९ ॥

श्लोक ॥ तद्वारेक पूज्यकृद कृपाख्यो देवेरप्रविलग्न विचित्रः पूजावतेस्मै प्रविलं लितावैं संघेन सत्सौम्य गुणान्वितेन ॥ १० ॥ गजधर सकल सुज्ञान धराहरी कीधो गुणहेर। रच्योविंव जिनराजको करुणा वंत कुवेरः ॥ ११ ॥ आर्या। शशीव सुख राज वर्षे। माधव मासे वलक्ष पक्षे च। पंचम्यां भृगुवारे हि कृता प्रतिष्ठा जिनेशस्य ॥ १२ ॥ महा-गिरि महा सूर्य्य शशिशेष शिवादयः। जगवल्लभ पार्श्वस्य तावतिच्छतु विंवकं ॥ १३ ॥

श्रीसंवत १८०१ शाके १६६६ प्रमिति वैशाख सुदि ५ शुक्र वासरे श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ विंवं प्रतिष्टितं वृहत्तपा गच्छीय सुमतिचन्द्रगणिना कारापितं ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभं भवतु ॥

पगलीयाजी पर।

(645)

स्वस्ति श्री संवत १८७३ वर्षे शाके १७३९ वर्त्तमाने मासोत्तम मासे शुभकारी ज्येष्ठ-मासे शुभे शुक्लपक्षे चतुर्दशि तिथौ गुरुवासरे उपकेश ज्ञातीय वृद्धिशाखायां कोष्ठागार गोत्रे सुश्रावक पुण्य प्रभावक श्री देव गुरु भक्तिकारक श्री जिनाज्ञा प्रतिपालक साह श्री शंभुदास तत्पुत्र कुलोद्धारक कुल दीपक सिवलाल अंवाविदास तत्पुत्र दोलतराम ऋषभदास श्री उदेपूर वास्तव्य श्री तपागच्छे सकल भट्ट रक शिरोमणि भट्टारक श्री श्री विजय जिनेंद्र सूरिभिः उपदेशात् पं० मोहन विजयेन श्री धुलेवानगरे ॥ भंडारी दुलिचंद सागुंछइं ॥

दादाजी के चरण पर।

(646)

संवत १९१२ का मिति फागुन वदि ७ तिथौ गुरु वासरे श्री धुलेवानगरे श्री क्षेम कीर्त्ति शाख्योद्भव महोपाध्याय श्री राम विजयजी गणि शिष्य महोपाध्याय शिवचंद्र

गणि शिष्य-----चंद्र मुनिना शिष्य मोहनचन्द्र युतेन श्री सद्गुरुचरण कमलानि कारि-
तानि महोत्सवं कृत्वा प्रतिष्ठापितानि स्थापितानिच वर्त्तमान श्री वृहत्खरतर गच्छ भट्टा-
रकाज्ञयाच श्री अभयदेव सूरि जिनदत्तसूरि जिनचंद्र सूरि जिन कुशल सूरिणां चरणन्यास।

पालिताना।

श्वेताम्बरियोंका विख्यात तीर्थ श्री शत्रुंजय (सिद्धाचल) पहाड़के नीचे यह काठिया-
वाड़का एक प्रसिद्ध स्थान अवस्थित है।

मोती सुखियाजीका मन्दिर।

(647)

संवत १५०३ वर्षे ज्येष्ट सु० १० प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० आमा भा० सेगू सुत परवतेन
भा० मांई कुटुंवयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री श्रेयांस नाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री जय-
चंद्र सूरिभिः ॥ गणवाडा वास्तव्यः।

(648)

संवत १५५८ वर्षे फागुण सुदि १२ शुक्रे श्री उकेश वंशे गांधी गोत्रे अंविका प्रक्त।
सा० छाजू सुत सेंघा पुत्र सूरा भा० मेथाई सु० साऊंया भा० मकू नाम्न्या स्व श्रेयोर्थं
श्री सुमतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्टितं मलधार गच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

(649)

संवत १५७१ वर्षे माघ वदि १ सोमे वीसल नगर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय व्य०
वहिता भा० लाछी पु० व्य० नारद भार्या नारिंग पु० जयवंतकेन भार्या हर्षमदे प्रमुख

परिवार युतेन स्वश्रेयोर्थं । श्री नमिनाथ चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रतिष्ठित तपागच्छे श्री सुमतिसाधु सूरि पट्टे परम गुरुगच्छ नायक श्री हेम विमल सूरिभिः ॥ श्री ॥

सिद्धचक्र पट्ट पर।

(650)

संवत १५५६ वर्षे आश्विन सुदि ८ बुधे श्री स्तंभ तीर्थ वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय म० वछाकेन श्री सिद्ध चक्र यंत्र कारितः।

सेठ नरसी केशवजीका मन्दिर।

(651)

संवत १६१४ वर्षे वैशाष सुदि २ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय दोसी देवा भार्या देमति सुत दो० वना भार्या वनादे सु० दो० कुधजी नाम्न्या पितु श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारापितं तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री विजयसेन सूरि शिष्य पं० धर्मविजय गणिना प्रतिष्ठितमिदं मंगलं भूयात् ॥

(652)

संवत १९२१ वर्षे शाके १७८६ प्रवर्त्तमाने माघ शुदि ७ तिथौ गुरुवासरे श्रीमदंचल गच्छे पूज भट्टारक श्री रतन सागर सूरिश्वराणामुपदेशात् श्री कच्छदेसे कोठारा नगरे ओशवंशे लघुशाषायां गांधिमोती गोत्रे सा० नायकमणजी सा० नाकनणसी तस भार्या हीरबाई तत्सुत सेठ केशवजी तस भार्या पावो बाई (तत्पुत्र नरसी भाई नाना मना) पंचतीर्थी जिनबिंबं भरापितं (अंजन शलाका करापितं) अठास गण।

सेठ नरसीनाथाका मन्दिर ।

(653)

सं० १५३० वर्षे वैशाख शुदि १० सोमे श्री गंधारवास्तव्य श्री श्री माल ज्ञातीय व्य० साहसा भा० वाल्हो ठ० सालिग भा० आसी ठ० श्रीराज भा० हंसाई । व्य० सहिसा सुत धनदत्त भा० हर्षाई पतै सात्म श्रेयोर्थं आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री वृहत्तपा पक्षे श्री विजयरत्न सूरिभिः ॥ श्री ॥

(654)

सं० १९२१ वर्षे माघ सुदि ७ गुरौ श्रीमदंचलगच्छे पूज भट्टारक श्री रत्न सागर सूरीश्वराणां सदुपदेशात् श्री कच्छदेशे श्री नलिसपुर वास्तव्य । ओश वंशे लघुशाखायां नागडा गोत्रे सेठ होरजी नरसी तद्भार्या पूरबाईना पुण्यार्थे श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं सकल संघेन प्रतिष्ठितं ।

(655)

सं० १९२१ वर्षेमाघ सुदि७गुरौ श्री मदंचल गच्छे पूज भट्टारक श्री रत्न सागर सूरीणां सदुपदेशात् श्री कच्छदेशे श्री नलित पुर वास्तव्य । ओशवंशे लघुशाखायां नागडा गोत्रे सा० श्री राघव लषमण तद्भार्या देमतबाई तत्पुत्र सा० अभयचंदेन पुन्यार्थं शांतिनाथ विंवं कारितं सकल संघेन प्रतिष्ठितं ॥

सेठ कस्तुरचन्दजी का मन्दिर

(656)

संवत १६९२ वर्षे वईशाष सुदि ६ गिरौ वास्तव्य श्रीपत्तन नगरे ओसवाल ज्ञातीय वृद्ध शापायां सोनी तेजपाल सुत सोनी विद्याधर सुत सोनी रामजी भार्या बाई अजाई

सुत सोनी वमलदास सोनी धर्मदास सोनी रूपचन्द पुत्री वाई शीत्ति एतेन श्री विजयनाथस्य विंवं कारापितं श्री तपगच्छाधिराज श्री विजयदेव सूरि राज्ये प्रतिष्ठितं आचार्य श्री विजयसिंह सूरिभिः।

श्री गौडी पार्श्वनाथजी का मन्दिर।

(657)

सं० १३८३ वैसाख वदि ७ सोमे पल्लिवाल पदम भा० कील्हण देवि श्रेयसे सुत ीकमेन श्री महावीर विंवं कारित प्रति०

(658)

सं० १४८६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ नाहर गोत्रे सं। आसो सुतेन देवाकेन स्वबांधव ाहजा हरिचन्द पति षेता-श्रेयो निमित्तं श्री विमलनाथ विंवं कारापितं प्र० श्री हेम ंस सूरिभिः।

(659)

सं० १५०५ वर्षे माघ सुदि १० रवौ उकेश वंशे मीठडीआ सा० साईआ भार्या सिरी-आदे पुत्र सा० भोला सा सुश्रावकेण भार्या कन्हाई लघु भ्रातृ सा० महिराज हरराज पच ाज भ्रातृव्य सा० सिरिपति प्रमुख समस्त कुटुंब सहितेन श्री विधिपक्ष गच्छपति श्री ायकेशर सूरिणापमुदेशेन स्व श्रेयोर्थं श्री सुविधिनाथ विंवं प्रतिष्ठितं श्री संघेन॥ आ-चन्द्रार्कं विजयतां॥

(660)

सं० १५१५ वर्षे माह सुदि ५ शनौ प्राग्वाट ज्ञा० म० राउल भा० राउलदे द्वितीया हांसलदे सु० मूलू भा० लरपू सु० भोजा हासा राजा भा० रंकू सु० हीरामाणिक हरराम

[illegible]तेन स्वपूर्वज पितृ श्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं आगमगच्छे श्री
श्री पाद प्रभ सूरिभिः सहयाला वास्तव्यः ।

(661)

[illegible] वर्षे ज्येष्ठ वदि ८ शनौ प्रा० सा० काला भा० माल्हणदे पुत्र सं० अर्जुन
[illegible] भार्या [illegible] भीम भा० देमति सुत हरपाल भा० टमकू युतेन स्व श्रेयसे श्री [illegible]
[illegible] श्री रत्नसिंह सूरिपट्टे श्री उदय वल्लभ सूरिभिः ।

(662)

[illegible] वर्षे वैशाख वदि ११ बुधौ श्री उकेश वंशे सा० घाघा भा० मायरि पु०
[illegible] भार्या [illegible] श्री सुविधिनाथ बिंब कारापितं प्रतिष्ठितं श्री जिन
[illegible] ।

([illegible])

[illegible] वर्षे [illegible] वदि ३ सोमे म० याछा भा० राजू सु० महीपालेन भा० अहवं
[illegible] सदुया श्रेयार्थं श्री मुनि सुव्रतनाथ बिंबं कारितं प्र० तपा
[illegible] सूरिभिः ॥ श्री ॥

([illegible])

[illegible] वर्षे [illegible] वदि [illegible] श्रीश्री [illegible] भा० पातू पु० [illegible]
[illegible] भा० [illegible] पितृ श्रेयसे श्री [illegible]
[illegible] श्री सुमतिनाथ बिंब कारितं प्र० श्री [illegible] ।

(665)

सं० १५३१ वर्षे माघ सुदि ३ सोमे श्री अंचल गच्छेश श्रीजय केशर सूरिणामुपदेशेन उएशवंशे स० जहता भार्या जहतादे पुत्र माईया सुश्रावकेण रजाई भार्यायुतेन स्वश्रेयसे श्री अजितनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं सु---।

(666)

संवत १५३९ वर्षे वैशाख सुदि १० गुरौ श्रीश्री वंशे ॥ श्रे० गुणीया भार्या तेजू पुत्र अमरा सुश्रावकेन भार्या अमरादे भ्रातृ रता सहितेन पितुः पुण्यार्थं श्री अंचल गच्छेश श्रीजय केसरि सूरिणामुपदेशेन वासु पूज्य विंवं का० प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

(667)

सं० १५६६ वर्षे माह वदि ६ दिने प्राग्वाट ६ ज्ञातीय पार विलाईआ भा० हेमाई सुत देवदास भा० देवलदे सहितेन श्री चंद्रप्रभ स्वामि विंवं कारितं प्रतिष्ठितं द्विवंदनीक गच्छे भ० श्री सिद्धि सूरीणां पट्टे श्रीश्री कक्कसूरिभिः कालू-र ग्रामे ॥

(668)

सं० १५८३ वर्षे वैशाप सुदि ३ दिने उसवाल ज्ञाति मं० वानर भा० रही पु० म० नाकर मं० भाजो म० ना० भा० हर्षादे पु० पघु वनु भोजा भार्या भवलादे एवं कुटुंब सहितै स्वश्रेयोर्थं सुविधिनाथ विं० कारितं प्रति० विवदणीक ग० भ० श्रा देव गुप्त सूरिभिः। भारठा ग्रामे।

(669)

सं० १६९४ व० माघ सुदि ६ गुरौ देवक पत्तन वास्तव्य उ० ज्ञा० वृद्ध सा० जसमाल सुत सा० राजपालेन भा० वाह पूराई प्रमुख कुटुंव युतेन श्री सुमतिनाथ विंवं का० प्र० तप गच्छे भ० श्री विजयदेव सूरिभिः।

(670)

सं० १६९४ व० माघ सुदि ६ गुरौ देवक पत्तन वास्तव्य उकेश ज्ञातीय वृद्ध शाखायां सा० राजपाल तद्भार्या वा० पूराई सुत सा० वीरपाल नाम्न्या श्री संभव विंबं प्र० तपा गच्छे श्री विजयदेव सूरिभिः।

यति कर्म्मचन्द हेमचन्दजी का मन्दिर।

(671)

संवत १५५८ वर्षे चैत्र वदि १३ सोमे उपकेश ज्ञा० वर्द्धन गोत्रे श्रे० वना भार्या वनादे सुत श्रे० जिणदास केन भार्या आलणदे पुत्र राजा सांडादि कुटुंब युतेन श्री शीतलनाथ विंबं का० प्र० पल्लीवाल गच्छे श्रीनन्न सूरिपट्टे श्री उजोयण सूरिभिः।

(672)

संवत १५५९ वर्षे वैशाष वदि ११ शुक्रे उपकेश ज्ञातौ पीहरेचा गोत्रे सा-गोवल पु० सा--भा० धारू पु० साह नर्वदेन भा० सो भादे पु० जावड। भा० षड---पितुः श्रे० श्री मुनि सुव्रत वि० का० प्र० श्री उपकेश-श्री कक्क सूरिभिः॥ श्री कुकुदाचार्य संताने॥

गांव मन्दिर बड़ा।

(673)

सं० १५०७ वर्षे माघ सुदि १३ शुक्रे श्रीश्रीमाल वंशे ठय० जीदा १ पुत्र ठय० जेताणंद २ पु० ठय० आसपाल ३ पु० ठय० अभयपाल ४ पु० ठय० वांका ५ पु० ठय० श्री वाउडि ६ पु० ठय० अणंत ७ पु० ठय० सरजा ८ पु० ठय० धींघा ९ पु० ठय० राजा १० पु० ठय० देपाल ११

पु० वसनाना १२ पु० व्य० राम १३ पुत्र व्य० भीना भार्या मांकू पुत्र वसाहर रयणायर सुश्रावकेण भा० गउरी पु० भूंभव पौत्र लाडण वरदे भातृ समधरीसायर भ्रातृ व्यसगरा करणसी- सारंग वोका प्रमुख सर्व कुटुंव सहितेन श्री अंचल गच्छे श्री गच्छेश श्री जय केसरि सूरिणामुपदेशात् स्व श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन श्री भवंतु ॥

(674)

सं० १५३१ वर्षे श्री अंचल गच्छेश श्रीजय केसरि सूरीणामुपदेशेन श्री श्री माल ज्ञातीय दो० भोटा भा० रत्तु पु० वीरा भा० वानू पु० लपा सुश्रावकेन भगिनी चमकू सहितेन श्री शांतिनाथ विंवं स्वश्रेयोर्थं कारितं श्री सघ प्रतिष्ठितं ॥

(675)

सं० १५४८ वर्षे कार्तिक सुदि ११ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय घामी गोवल भा० आपू सु० वाबा भा० पोमी सु० गणपति स्वश्रेयसे श्री चन्द्रप्रभ स्वामि वि० का० प्र० चैत्र गच्छे श्री सोमदेव सूरि प्रतिष्ठितं ।

(676)

सं० १५५९ वर्षे वै० सु० १० शु० श्री उ० ज्ञा० पीहरेवा गोत्र साह भावड भा० भरमादे आत्मश्रेयोर्थं श्री जीवित स्वामी श्री सुविधिनाथ विंवं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री उसवाल गच्छे श्री कक्क सूरि पट्टे श्री देव गुप्त सूरिभिः ॥

(677)

संवत १५७२ वर्षे वैशाष सुदि १३ सोमे श्री श्री प्राग्वाट ज्ञातीय दोसी सहिजा सुत दो० भरणा भार्या कूयदि सुत दोसी वहु भार्या वल्हादे तेन आत्म पितृमातृणां श्रेयसे श्री

(686)

सं० १३१४ वै० सु० ३ ---विंवं का० श्री चन्द्र सूरिभिः ।

(687)

सं० १३७३ ज्ये० सु० १२ श्रे० राणिग भा० लाडी पु० महण सीहेनपिता माता श्रेयोर्थं श्री महावीर विंवं का० प्र०----- श्री सालिभद्र (?) सूरि श्री मणिभद्र सूरिभिः ।

(688)

सं० १३८७ ---श्री आदिनाथ विं० का० प्र० श्री महातिलक सूरिभिः ।

(689)

सं० १४४६ वर्षे वै० व० ३ सोमे प्रा० ज्ञा० पितृ धणसीह मातृ हांसलदे श्रेयसे सुत सादाकेन श्री अजितनाथ विंवं पंचतीर्थी का० प्र० श्री नागेन्द्र गच्छे श्री रत्नप्रभ सूरिभिः ॥ छ ॥

(690)

सं० १४६३ फा० सु० ९-- श्रीमाल -- श्री तेजपाल भा० --- श्रेयसे सुत भादाकेन श्री आदिनाथ विं० प्र० श्री जयप्रभ सूरीणामुपदेशेन ।

(691)

सं० १४८६ वर्षे --श्रीमाल -- आदिनाथ विंवं प्र० श्री नरसिंह सूरीणामुपदेशेन ।

(692)

सं० १५११ व ज्येष्ठ व० ९ रवौ उसवाल ज्ञा० म० पूना भा० मेलादे सु० वीजल भा० डाही तयो श्रेयसे भ्रातृ आलुदत्त हीराभ्यां श्री विमलनाथ विंवं का० पूर्णिमापक्षे भीम पल्लीय भट्टा० श्री जयचंद्र सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥

(693)

सं १५१९ व० फा० वा० ४ गुरु श्रीमाली ज्ञा० म० गोवा भा० नाऊ सुत जूठाकेन पितृमातृ श्रेयोर्थं श्रीधर्मनाथ विंवं का० प्र० श्रीब्रह्माणगच्छे श्री मुनि चंद्र सूरि पट्टे श्री वीर सूरिभिः ॥ वलहारि वास्तव्यः ॥ श्री ।

(694)

सं० १६८५ व० वै० सु० १५ दिने क्षत्रि रा० पुजा का ---- श्री नमिनाथ विंवं श्री विजयदेव सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

([illegible])

सं० १७७८ व० ---- श्री[illegible]नाथ वि० का० प्र० वि० श्रीधर्मप्रभ सूरिभि पिप्पलगच्छे ।

सेठ वाल्हा भाई टोंक ।

([illegible])

संवत १८२५ वर्षे फाल्गुन सुदि ६ [illegible] श्रीमूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनंदि देवा तत्पट्टे भ० श्री [illegible] कीर्ति देवा तत्पट्टे

नस्य। विषम तमाभंग सारंगपुर नागपुर गागरण नराणका अजयमेरु मंडोर मंडलकर
बुंदी खाटू चाट सुजानादि नानादुर्ग लीलामात्र ग्रहण प्रमाणित जित काशित्वाभि
मानस्य। निज भुजोर्जित समुपार्जितानेक भद्र गजेन्द्रस्य। म्लेच्छ महीपाल व्याल
चक्रवाल विदलन विहंगमेंद्रस्य। प्रचंड दोर्दंड खंडिताभिनिवेश नाना देश नरेश
भाल माला लालित पादारावंदस्य। अस्खलित ललित लक्ष्मी विलास गोविंदस्य।
कुनय गहन दहन दवानलायमान प्रताप व्याप पलायमान सकल बलूस प्रतिकूल
क्ष्माप श्वापद वृंदस्य। प्रबल पराक्रमाक्रांत ढिल्लिमंडल गूर्जरत्रा सुरत्राण दत्तातपत्र
प्रथित हिन्दु सुरत्राण विरुदस्य सुवर्ण सत्रागारस्य षड्दर्शन धर्माधारस्य चतुरंगवाहिनी
वाहिनी पारावारस्य कीर्त्तिधर्म प्रजापालन सत्वादि गुण क्रियमान श्रीराम युधिष्ठिरादि
नरेश्वरानुकारस्य राणा श्री कुंभकर्ण सर्वोर्वीपतिसार्वभौमस्य ४१ विजयमान राज्ये
तस्य प्रासाद पात्रेण विनय विवेक धैर्योदार्य शुभ कर्म निर्मल शीलाद्यद्भुत गुणमणिमया
भरण भासुर गात्रेण श्री मदहम्मद सुरत्राण दत्त फुरमाण साधु श्रीगुणराज संघ पति
साहचर्य कृताश्चर्यकारि देवालयाडंबर पुरःसर श्री शत्रुंजयादि तीर्थ यात्रेण। अजा
हरी पिंडर वाटक सालेरादि बहुस्थान नवीन जैन विहार जीर्णोद्धार पद स्थापना
विषम समय सत्रागार नाना प्रकार परोपकार श्री संघ सत्काराद्य गण्य पुण्य महार्घ
क्रयाणक पूर्यमाण भवार्णव तारण क्षम मनुष्य जन्म यान पात्रेण प्राग्वाट वंशावतंस
सं० सागर (मांगण) सुत सं० कुरपाल भा० कामलदे पुत्र परमार्हत धरणाकेन ज्येष्ठ
भ्रातृ सं० रत्ना भा० रत्नादे पुत्र सं० लाषा म(स)जा सोना सालिग स्व भा० सं० धारल
दे पुत्र जाज्ञा जावडादि प्रवर्द्धमान संतान युतेन राणपुर नगरे राणा श्री कुंभकर्ण
नरेंद्रेण स्वनाम्ना निवेशिते तदीय सुप्रसादादेशतस्त्रैलोक्यदीपकाभिधानः श्री
चतुर्मुख युगादीश्वर विहारः कारितः प्रतिष्ठितः श्रीबृहत्तपा गच्छे श्रीजगच्चंद्र सूरि
श्रीदेवेंद्र सूरि संताने श्रीमत् श्रीदेवसुन्दर सूरि पट्ट प्रभाकर परम गुरु सुविहित पुरंदर
गच्छाधिराज श्रीसोमसुन्दर सूरिभिः ॥ कृतमिदंच सूत्रधार देपाकस्य अयं च श्रीचतुर्मुख
विहारः आचंद्रार्कं नंदतात् ॥ शुभं भवतु ॥

पाषाण और धातुओंके मूर्त्ति पर।

(701)

सं० ११८५ चैत्र सुदि १३ श्री ब्रह्माण गच्छे श्री यशोभद्र सूरिभिः ---ल स्थाने देव सरण सुत बीशके ---श्री गुह -- कारिता।

(702)

संवत १२९० वर्षे माघ सुदि ५ सुक्रे श्रे० वढपाल श्रे० जगदेवाभ्यां श्रेयोर्थं पुत्र सामदेवेन भ्रातृ पून सिंह समेतेन चतुर्विंशति पट्ट कारितः प्रतिष्ठितं वृहद्गच्छीयैः श्री शांति प्रभ सूरिभिः।

(703)

संवत १४९९ वर्षे सा० साजण भार्या सिरिआदे पुत्र चांपाकेन भार्या चापल देव्यादि कुटुम्ब युतेन अनागत चतुर्विंशत्यां श्री समाधि बिंबं का० प्र० तपा श्री सोम सुन्दर सूरिभिः।

(704)

संवत १५०१ ज्ये० सुदि १० प्राग्वाट व्य० करणा सुत रामाकेन भार्या सीचणि युतेन श्री क सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपा श्री सोमसुंदर शिष्य श्री मुनि सुंदर सूरिभिः।

(705)

शत्रुंजयके नक्सेके निचे ।

॥ ॐ ॥ सं० १५०७ वर्षे माघ सु० १० ऊकेश वंशे स० भीला भा० देवल सुत सं० धर्मा सं० केल्हा भा० हेमादे पुत्र स० सोल्हा षांगा मोल्हा कोल्हा आल्हा साल्हादिभिः सकुटुंबैः स्वश्रेयसे श्री राणपुर महानगर त्रैलोक्य दीपकाभिधान श्री युगादि देव प्रासादे --- धन्त -- महातीर्थ शत्रुंजय श्री गिरनार तीर्थ द्वय पट्टिका कारिता प्रतिष्ठिता श्री सूरि पुरंदरैः ॥ तीर्थनामुत्तमंतीर्थं नागानामुत्तमा नगः । क्षेत्राणामुत्तमं क्षेत्रं सिद्धाद्रिः श्री जिं ---मं ॥ १ श्री रूसुपूजकस्य --- ।

(J06)

संवत १५३५ वर्षे फाल्गुन सुदि-- दिने श्री उसवंशे मंहोरा गोत्रे सा० लाषा पुत्र सा० वीरपाल भा० नेमलादे पुत्र सा० गयणाकेन भा० सोतादे प्रमुख युतेन माता विमलादे पुण्यार्थं श्रीचतुर्मुख देव कुलिका कारिता ॥

(707)

॥ ॐ ॥ सं० १५५१ वर्षे माघ वदि २ सोमे श्री मंडपाचल वास्तव्य श्री उश वंश शृंगार सा० धर्मसुत सा० नरसिंग भा० मनकू कुक्षि संभूत सा० नरदेव भार्या सोनाई पुत्ररत्न सा० संग्रामेन कायोत्सर्गस्थ श्री आदिनाथ विंबं कारितं । प्र० वृ० तपा श्री उदयसागर सूरिभिः स्थापित श्री चतुर्मुख प्रासादे धरण विहारे ॥ श्री ॥

सहस्रकूट पर।

(708)

सं० १५५१ व० वैशाख वदि ११ सोमे से० जावि भा० जिसमादे पु० गुणराज भा० सुगणादे पु०जगमाल भा० श्री बच्छ करावित (उत्तर तर्फ) श्रा० गांगांदे नागरदास वा० साडापति श्री सूजा कारापिता श्रा० नीत्तवि० रामा० भा० कम---।

(709)

संवत १५५२ व० मिगशर सुदि ९ गुरु दिने श्री पाटण वास्तव्य ओस वंस ज्ञातीय म० धणपति भा० चांपाई भाई मं० हरपा भा० कीकी पु० मं० गुणराज म० मिहपाल ॥ करावत ॥

(710)

सं० १५५६ वर्षे वै० सुदि ६ शनौ श्री स्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री उस वश सा० गणपति भा० गंगादे सु० सा० हराज भा० धरमादे सु० सा० रत्नसीकेन भा० कपूरा प्रमु० कुटुंब युतेन राणपुर मंडन श्री चतुर्मुख प्रासादे देव कुलिका का--- श्री उसवाल गच्छे श्री देव नाथ सूरिभिः।

(711)

सं० १५५६ वर्षे वै० सुदि ६ शनौ श्री स्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री उसवंश सा० जानदे भार्या रुपांई सुत सा० राजा भार्या राजी सुत सा० श्री जोगराजेन भ्रातृ मजागा स्वभार्या प्रथ० सोवती देती० सं० लखा---सहजो सा० भाकर प्रमुख कुटुंब युतेन

स्वश्रेयसे श्री राणपुर मंडन श्री चतुर्मुख प्रासाद देव कुलिका कारिता श्री चतुर्मुख प्रासादे श्री उदय सागर सूरि श्री — ष्टि सागर सूरिणामुपदेशेन ।

(712)

संवत १५९— वर्षे माघ सुदि १० उकेश वंशे छाजहड़ गोत्रे सा० साध पुत्र सा० उमला भ्रातृ पुण्यार्थं श्री धर्म्मनाथ का० प्र० श्री जिन सा - - - सूरिभिः ।

पूर्व सभामण्डपके खंभे पर ।

(713)

॥ॐ॥सं १६११ वर्षे वैशाख शुदि १३ दिने पात साह श्री अकबर प्रदत्त जगद्गुरु विरुद धारक परम गुरु तपा गच्छाधिराज भट्टारक श्री ६ हीर विजय सूरीणामुपदेशेन श्री राणपुर नगरे चतुर्मुख श्री धरण विहार श्री महम्मदावाद नगर निकट वच्छु समापुर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय सा० रायमल भार्या वरजू भार्या सुरूपदे तत्पुत्र खेता सा० नायकाभ्यां भ्रावरधादि कुटुंब युताभ्यां पूर्व दिग् प्रतोल्या मेघनादाभिधो मंडपः कारितः स्व श्रेयोर्थे ॥ सूत्रधार समल मंडप रिवनाद विरचितः ॥

दूसरे आंगनमें ।

(714)

॥ ॐ ॥ संवत १६४७ वर्षे फाल्गुन मासे शुक्लपक्षा पंचम्यां तिथौ गुरुवासरे श्री तपा गच्छाधिराज पातसाह श्री अकबरदत्त जगद्गुरु विरुद धारक भट्टारिक श्री श्री श्री हीर विजय सूरीणामुपदेशेन चतुर्मुख श्री धरण विहारे प्राग्वाट ज्ञातीय सुश्रावक सा०

खेता नायकेन वृद्धा पुत्र यशवंतादि कुटुम्बयुतेन अष्टचत्वारिंशत् (४८) प्रमाणानि सुवर्ण नाणकानि मुक्तानि पूर्व दिक्सत्क प्रतोली निमित्तमिति श्री अहमदाबाद पार्श्वं उसमा पुरतः ॥ श्रीरस्तु ॥

(715)

नमः सिद्ध श्री गणेशाय प्रसादात्। संवत १७२८ वर्षे शाके १५९४ वर्त्तमाने जेठ सुदि ११ सोम जावर नगरे काठुड गोत्रे दोसी श्री सूजा भार्या कथनादे सुत गोकलदास भार्या गम्भीरदे अमोलिकादे सुत रणछोड़ हरीदास प्रतिष्ठित श्री संडेरगच्छे भट्टारक श्री देवसुंदर सूरि प्रतिष्ठित उपाध्याय श्री--न सुंदरजी चेला रतनसी

(716 j

सं० १७२८ मा० संडेरगच्छे उ० श्री जनसुंदर सूरि चेला रतन राणकपूर महानगर त्रैलोक्य दीपकाभिधाने ---।

(717)

संवत् १९०३ वर्षे वैशाख सुदि ११ गुरौ दिने पूज्य परमपूज्य भट्टारक श्री श्री कक्क सूरिभिः गण २१ सहिता यात्रा सफली कृता श्री कवल गच्छे लि० पं० शिवसुंदर मुनिना ॥ श्री रस्तु ॥

(718)

संवत् १९०३ वर्षे वैशाख सुदि ११ श्री जिनेश्वराणां चरणेषु। पं० शिवसुंदरः समागतः।

सादडि ।

यह ग्राम रैनपुरसे ३ कोस पर है।

(719)

स्वस्ति श्री ऋद्धि वृद्धि जया मंगलाभ्युदय श्री- अथ श्रीतृ---विक्रमादित्य समयात्..
१६४८ वर्षे वैशाख मासे कृष्णपक्षे अष्टम्यां तिथौ लामदासार गंगाजल निर्मलायां श्री
उसवाल ज्ञातौ कावेडिया गोत्रे साह श्री भारमल गृहे भार्या बहू श्री मेवाडी --- तत्पुत्र
साह श्री तारा चंदजी स्वर्गारूढो जातः तत्र बहू श्री तारादे १ बहू श्री त्रिभुवणदे २ बहू
श्री असडवदे ३ बहू श्री सोभागदे ४ सहगत ---।

नाकोडा ।

मारवाड़ के मालानी-परगने के नगरके पास पहाड़ोंके बीच यह एक प्राचीन स्थान है।

(720)

संवत १६२१ ---पार्श्वनाथ जिन चैत्ये चतुष्किका कारापित श्रावक संघेन।

(721)

-- संवत १६३८ आषाढ़ सुदि २ गुरुवार ---।

(722)

संवत १६४२ भाद्रपद सुदि १२ सोमवार ---राउल श्री मेघराजजी विजय राज्ये..।

(723)

संवत १६६६ भाद्रपद शुक्ल पक्ष तिथि द्वितीया दिने शुक्रवासरे वीरमपुर श्री शांति-नाथ प्रासाद भूमि गृहे श्री खरतरगच्छे श्री जिन चंद्र सूरि विजयाधिराज आचार्य श्री सिंह सुरि राज्ये श्री संघेन लिखितं।

(724)

उपाध्याय श्री ५ देवशेखर विजय राज्ये ॥

॥ ॐ ॥ सं० १६ असाढ़ आदि ६७ वर्षे भाद्रपद शुक्ल पक्षे श्री नवमि दिने शुक्रवासरे श्री वीरमपुरवरे श्री पार्श्वनाथ श्री महावीर स्वामी श्री पल्लीवाल गच्छे भट्टारिक श्री यशोदेव सूरि विजय राज्ये राउल श्री तेजसीजी विजय राज्ये कारित श्री संघेन पंडित श्री सुमति शेखरेण लिपीकृतं सुत्रधार दामा तत्पुत्र मना धना वरजांगेन कृतं ॥ भत्रीज सामा मेया कला पुत्र कल्याण ॥ भानेज नाथण श्री पार्श्वनाथ श्री महावीरजी रक्षा शुभं भवतु ---

(725)

संवत् १६६८ वर्षे द्वितीय आसाढ़ शुक्ल ६ शुक्रवासरे उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रे श्री तेजसिंहजी द्राज्ये श्रीतपागच्छे भट्टारक श्री विजय सेन सूरि विजय राज्ये आचार्य श्री विजयदेव सूरि विजय राज्ये।

(726)

स्वस्ति श्री तथा मंगलमभ्युदयश्च। संवत १६६८ वर्षे शाके १५३३ प्रवर्त्तमान द्वितीय आसाढ़ सुदि २ दिने रविवारे रावल श्री जगमालजी विजय राज्ये श्री पल्लिकीय

गच्छे भट्टारक श्री यशोदेव सूरिजी विजयमाने श्री महावीर चैत्ये श्री संघेन चतुष्किका कारिता श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ प्रसादात् शुभं भवतु। उपाध्याय श्री कनक शेखर शिष्य पं० सुमति शेखरेण लिखित श्री छाजहड़ दीव सेखाजी संघेन कारापिता सूत्र धारः ऊजल भातृ झाझा घड़िता भवन कंचरा--।

छत्रीमें।

(727)

॥ ॐ ॥ श्रीमत् श्री जिन भद्र सूरि भृत्याणां वुजाम्रोदया। धन्याचार्यपदावदात वदिताः श्री कीर्त्तिरत्नाह्वया ॥ नम्रा नम्र सरोज रस्मणि विभा प्रोच्छासितां हिंद्वया। राजा नन्द करा जयंतु विलसत् श्री शंखवालान्वया ॥ - - - - - -

---

बालोतरा।

श्री शीतलनाथजी का मंदिर

धातु मूर्त्तियों पर।

(728)

सं० १२३४ ज्येष्ठ सुदि ११ सा० जणदेव आर्या जेउत पुत्र वीरा देवेन भात वाहड़ वीरदे श्रेयार्थमकारि प्र० देव सूरिभिः।

(729)

सं० १४०१ वैशाष ४ श्री आदित्य नाग गोत्रे सच० कुलियात्मजा सा० भाम पुत्रेण स -- पुत्र श्रेयसे श्री शांति विंबं कारितं प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ।

(730)

सं० १५०१ वर्षे माघ वदि ६ बुधे उपकेश ज्ञाती आविणाग गोत्रे सा० कालू पु० वील्ला भार्या देवा आत्म श्रेयसे श्री श्रेयांस विंबं कारितं श्री उकेश गच्छे ककुदाचार्य संताने प्रतिष्ठितं श्री कुंकुम सूरिभिः ।

(731)

सं० १५०४ वैशाख सु० ७ दिने श्री उकेश वंशे सा० डीडा पुत्र सा० नाय --- सहितेन स्वपुण्यार्थं श्री पार्श्व जिन विंबं का प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरिभिः ।

(732)

सं० १५०९ वर्षे कार्तिक सु० १३ गुरौ उपकेश वशे वहरा गोत्रे सा० --- पुत्र हरिपाल भार्या राजलदे पुत्र सा० धरमा भार्या धनाई पुत्र सा० सहजाकेन स्वपितृ पुण्यार्थं श्री वासुपूज्य विंबं कारितं । श्री खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिन भद्र सूरि युगे प्रधान गुरुभिः प्रतिष्ठितः ।

(733)

सं० १५०९ वर्षे -- उपकेश वंशे वहरा गोत्रे सा० --- श्री सुमतिनाथ विंबं कारिता श्री खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिन भद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

(734)

सं० १५२५ वर्षे मार्ग शीर्ष वदि ९ शुक्रे श्री उपकेश ज्ञातीय त्री दूगड़ गोत्रे मं० पनरपास पु० वछराज भा० कम्मी पुत्र सारंग सुदय वच्छाभ्यां पितु पुण्यार्थं श्री कुंथु नाथ विंवं कारिता प्र० श्री रुद्र पल्लीय गच्छे श्री देवसुंदर सूरि पट्टे प्र० श्री सोम सुंदर सूरिभिः ।

(735)

सं० १५३७ वर्षे वैषाख सुदि ७ दिने श्री उपकेश वंशे व - रा गोत्रे अभयसिंह संताने सा० कुता भार्या लषमादे सा० डाहत्थ श्रावकेण भा० पूराई पुत्र मरा जीवा देवादियुतेन श्री धर्मनाथ विंवं का० श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टे त्री जिन समुद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितः ॥

भावहर्ष गच्छके उपासरेमें केशरियानाथजी का देरासर ।

(736)

॥ ॐ ॥ सं० १०९—वैशाख वदि ५ ---- प्रतिमा कारितेति ।

(737)

सं० १५३३ श्री माल फोफलिया गोत्रे सा० वूहड़ भा० नापाई पुत्र वुढाकेन भा० -- कुटुंबेन पुतेन श्रीविमलनाथ विंवं का० प्र० श्रीधर्म घोप गच्छे श्री पद्मानन्द सूरि श्री न

(738)

सं० १८१८ सा० रामजी सुत तेजसी श्री आदिनाथ विंवं का० प्र० श्री विजय गच्छे वायणा सुमति सागर सूरिभिः आचार्य श्री ---।

वाड़मेड़ ।

गोपोंका उपासरा ।

धातुके मूर्त्तियों पर ।

(739)

स० १५२७ व० माह शु० १३ उ० सा० साल्हा भा० ह्वोसलदे पुत्र सा० गुण दत्तेन भा० गेलमदे पु० तिहणा गोपादि कु० युतेन श्रीसुमतिनाथ विंवं का० प्र० तपागच्छे श्री सोम सुन्दर सूरि संताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(740)

सं० १५८० वर्षे वैशाप सुदि १३ शुक्रे श्री श्री माल ज्ञा० म० डोरा भा० रुपो सु० सं० हेमा भा० हमीरदे मं० ऋचाकेन भा० वमी सु० अमरा युतेन स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ विंवं श्री पू० श्री पुण्य रत्न सूरि पदे श्री सुमति रत्न सूरिणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितंच विधिना ॥ श्री ॥

यति इंद्रचन्दजीका उपासरा ।

(741)

सं० १५१२ वर्षे वैशाप सुदि ५ श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० सहसा भा० भोली पुत्र जिनदास महाजल युतेन स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ विंवं का० आगम गच्छे श्री हेम रत्न सूरिणा मुपदेशेन प्रतिष्ठितः ॥

(742)

सं० १५१४ मा-शु० – प्राग्वाट ज्ञा० रूल्हाकेन भा० वजू सुत ना० वीरा माणिक

वछादि कुटुंब युतेन पितृव्य सा० चांपा श्रेयोर्थं सुमति नाथ बिंबं कारितं प्र० तपा श्री सोम सुन्दर सूरि श्री मुनि सुन्दर सूरि पट्टे श्री रत्न शेखर सूरिभिः।

वडा मन्दिर श्रीपार्श्वनाथजीका।

सभा मण्डप।

(743)

ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय नमः॥ संवत १८५९ वर्षे माह सुदि ५ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा तिथौ सोम वासरे राठउड़ वंशे राउल श्री उदयसिंह श्री वाकू पत्राका नगर - - - राज्ये कुपा - श्री त्रां -कीय सहिभिः॥ श्री विधि पक्ष मुख्याभिधान मुख प्रधान श्री पता श्री धर्म्म मूर्त्ति सूरि अंचल गच्छीय समस्त श्री संघमें शांति श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ प्रासाद कारितः।

पञ्च तीर्थियों पर।

(744)

सं० १९०३ माह वदि ५ शुक्रे श्री उदयपुर नगर वास्तव्य श्री सहस्त्र फणा पार्श्व नाथजीकी घरिसातांता संघ समस्त मीणक बाई श्री शांतिनाथ पञ्च तीर्थं कारापितं तपा गच्छे पं० रूप विजय गणिभिः प्रतिष्ठितं च।

दुसरा मंदिर।

(775)

संवत १५४० वर्षे जेष्ठ सुदि १० सोमे श्री श्री माल ज्ञातीय पितामह रा० वस्ता पितामही कोल्हणदे सुत पितृ स० पवा मातृ राजूश्रेयोर्थं सुत सं० सहसा सागा सहदे

घरणा एतै श्री आदिनाथ मुख्यश्चतुर्विंशति पट्टः कारितः पुनिम पक्षे साधु रत्न सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठित शंडलि वास्तव्यः ।

(746)

सं० १५२० श्री मूल संघेन भट्टारक श्री विजय कीर्त्ति श्रे०

सभा मंडप ।

(747)

॥ ॐ ॥ संवत् १६७६ वर्षे माघ सुदि १५ रवि वासरे खरतर गच्छ भट्टारक श्री जिन रत्न -- पुण्य नक्षत्रैः राउत श्री उदयसिंहजी विजरि विजय राज्ये जयराज्ये ॥ श्री सुमतिनाथ रउ नवबु कीउ श्री संघ करावउ सूत्रधार पीसा पुत्र नता नवबु कीउ । सूत्रधार नारयण नट संघ धन ।

(748)

सं० १९२८ वर्षे भद्रपद कृष्णपक्ष ७ बुध -- बृहत्खरतर गच्छे भट्टारक श्रीमगत सुर रावतजी श्री कालीदासजी --। जुहारसिंग विजय राजे श्री सुमतनाथजी- श्रिणगार कीधी -- ।

(749)

॥ ॐ ॥ संवत १३५२ वैशाख सुदि २ श्री वाहडमेरी महाराज कुल श्री सामंत सिंह देव कल्याण विजय राज्ये तन्नियुक्त श्री करण मं० वीरासिंह वेलाउल प्रा० मिगन प्रमुख योघं अक्षराणि प्रयच्छति यथा। श्री आदिनाथ मध्ये संतिष्ठमान श्री विग्नमर्दन

क्षेत्रपाल श्रीचउंड राज देवयो उभय मार्गीय समायात सार्थ उष्ट्र १० वृप २० उभयादपि उद्धं सार्थं प्रति द्वयो देवयोः पाइला पदे प्रियदश विशोप का० अर्द्धोद्धंन ग्रहीतव्याः। असौ लागो महाजनेन सांमतः॥ यथोक्तं बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः। यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदाफलं॥ १॥ छ॥

मेडता

यह भी मारवाडका एक प्राचीन नगर है।

श्री आदिनाथजी का मंदिर—डानियोंका मुहल्ला।

(750)

संवत १६७७ वर्षे॥ वैशाख मासे शुक्ल पक्षे तृतीयाया तिथौ शनि रोहिणी योगे श्री मेडता नगर वास्तव्य श्री माल ज्ञातीय पालाणी गोत्रीय सं भोजा भार्या भोजलदे पुत्रेण संघपति चेतसोकेन स्व० भा० चतुरंगदे पुत्र डुंगसी प्रमुख कुटुंब युतेन स्व श्रेयसे स्वकारित रंगदुत्तंग शिखर वद्ध श्री ऋषभदेव विहार मंडन सपरिकरं श्री आदिनाथ विवं कारितं प्रतिष्ठापितंच प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितंच तपागच्छे श्रीमदकव्वर सुरत्राण प्रदत्त - - - क श्री शत्रुंजयादि कर मोचक भट्टारक श्री हीर विजय सूरि राज पट्टोदय पर्वत सहस्र किरण यमान युग प्रधान भट्टारक श्री विजयसेन सूरिश्वर पट्ट प्रभावक श्री श्री भट्ट जांहगीर साहि प्रदत्त श्री महातपा विरुदधारक श्री महावीर तीर्थंकर प्रतिष्ठित श्री सुधर्म्म स्वामि पट्टधर - - सुविहित सूरि सभा शृंगार भट्टारक श्री विजय देव सूरिभिः।

सर्व धातुकी मूर्त्तियों पर।

(751)

सं० १५३४ वर्षे आषाढ़ सुदि २ गुरौ भंडारी गोत्रे सा० वील्हा संताने मं० मायर भार्या सुहदे पुत्र स० अरका भार्या लषमादे भ्रातृ सांपायने श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं श्रेयसे प्रति० संडेरग गच्छे श्रीईश्वर सूरि पट्टे श्री शांति सूरिभिः।

तपगच्छका उपासरा।

(752)

सं० १६५३ वर्षे चै० शु० ४ श्री कुंथनाथ बिंबं गांदि गोत्रे श्री—स० सुरताण भा० सवीरदे पुत्र सादूल – – – श्री तपागच्छे श्री विजयसेन सूरि – – पं० विनय सुंदर गणि प्रतिष्ठितं।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर।

(753)

सं० १५२८ वर्षे फा० वदि १३ श्री माली श्रे० समरा भा० धर्मिणि पु० श्रे० मूलू भा० श्रे० काका भा० काउ पुत्री लापू नाम्न्या पु० सांगा भा० याधी २० कुटुम्ब युतया श्री शांति बिंबं का० तपा श्री क्षेम सुन्दर सूरि – – –।

(754)

सं० १६७७ वर्षे अक्षय तृतीया दिने शनि रोहिणी योगे मेडता नगर वास्तव्य सा०

लाषा भा० सरूपदे नाम्न्या श्री मुनि सुव्रत विंवं कारितं प्रतिष्ठितं भट्टारक श्री विजय-सेन सूरीश्वर पट्ट प्रभाकर जिहांगीर महातपा विरुद विख्यात युग प्रधान समान सकल सुविहित सूरि सभा शृंगार भट्टारक श्री ५ श्री विजय देव सूरि राजेंद्रैः।

श्री वासुपूज्यजी का मंदिर।

(755)

सं० १५३२ वर्षे ज्येष्ठ वदि १३ बुध प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० आसधर भार्या गागी सुत मदन दमा जिनदास गीवा पुत्र पौत्रादि सहितेन आत्म श्रेयार्थं श्री श्री शांतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री वृहत्तपा गच्छे श्री जिनरत्न सूरिभिः।

(755)

सं० १६८७ व० ज्येष्ठ सुदि १३ गुरौ स० जसवंत भा० जसवंत दे पु० अचलदास केन श्री विजय चिन्तामणि पार्श्वनाथ विंवं का० प्र० तपा श्री विजयदेव सूरिभिः॥

श्री धर्मनाथजी का मंदिर।

(757)

सं० १२५० वर्षे फाल्गुन सुदि १० बुधे ऊ० गुगलिया गोत्रे सा० चीरा प० सोहाकेन श्री आदिनाथ विंवं स्व श्रेयसार्थे संडर गच्छे प्रतिष्ठा श्री शांति सूरिभिः।

(758)

सं० १६६९ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ ऊकेश ज्ञा० टप गोत्रे सा० ललना भा० ललनादे पुत्र रुपना भार्या लाखम दे पुत्र दीव्हा भार्या चील्हणदे पुत्र घहची सकुटुम्बेन श्री

वासपूज्य विंवं कारापितं श्री संडेर गच्छे श्री यशोभद्र सूरि संताने प्र० श्री सुमति सूरिभिः।

(759)

सं० १५१५ वर्षे आषाढ़ वदि १ दिने श्री उकेश वंशे घुल्ल गोत्रे सा० सादूंल जाया सुहवादे पुत्र स० पासा श्रावकेण भार्या रूपादे पुत्र पूजा प्रमुख परिवार युतेन श्रीशांतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरिभिः।

(760)

सं० १५१७ वर्षे माह सुदि १० सोमे सोनी गोत्रे सा० धन्ना पुत्र सा० हिमपाल पुत्राभ्यां सा० देवराज खिमराजाभ्यां स्वपितृ पुण्यार्थं श्री श्रेयांस विंवं कारित प्रतिष्ठित तपागच्छ भट्टारक श्री हेम हंस पदे श्री हेम समुद्र सूरिभिः।

(761)

सं० १५२७ वर्षे माघ सु० १३ रवौ श्रीमाल दो० शिवा भार्या हेली सुत दो० धांईया केन भा० सलपू सु० दो० दासा संना कर्णसी गांगा पौत्र कमल सीक भार्या चाडा दाया प्र० कुटुंवयुतेन श्री शितल विंवं कारितं श्री मधूकरा खरतर - - -।

(762)

सं० १५५६ वर्षे चैत्र सु० ७ सोम प्राग्वाठ ज्ञातीय सा० चां (?) दरा भार्या संलपणदे पुत्र लोला सा० पीमा भा० धंतलदे - - - सकुटुम्वयुतेन आत्म पु० श्री चंद्रप्रभ स्वामि विंवं का० अंचल गच्छे श्री सिद्धांत सागर सूरि विद्यमाने रा० भाव वर्द्धन गणीनामुपदेशेन प्रतिष्ठित श्रीसंघेन - - -।

(763)

सं० १५६८ वर्षे माघ सुदि ५ दिन श्री माल वंशे भांडिया गोत्रे सा० साहा पुत्र सा० भरहा सुत सा० नरपाल भा० नामल दे स्वपुण्यार्थं श्री श्री श्री श्रेयांस विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिन हंस सूरिभिः खरतर गच्छे।

(764)

सं० १५७२ वर्षे वैशाष सु० २ सोमवारे षट बड गोत्रे सा० सा - र - - - श्रेयसे श्री आदिनाथ विंवं कारापितं श्री प्रभाकर गच्छे भट० पुण्यकीर्त्ति सूरि पट्टे भट्टा० श्री लक्ष्मीसागर सूरि प्रतिष्ठितं।

(765)

सं० १५८१ वर्षे श्री विक्रम नगरे ऊकेश वंशे वादि-रा गोत्रे सा० तेमंजउ सा० जीवाख श्रावकेण भार्या नीवदे पुत्र जेवा काजी ताल्हण पंचायण भारमल सांदा नरसिंह सहितेन श्री श्रेयांस विंवं कारित - - ।

(766)

सं० १८८३ माघ व सु० ५ - - पार्श्वनाथ विंवं श्री विजय जिनेन्द्र सूरि - - ।

श्री आदिश्वरजी का नया मंदिर।

(767)

सं० १५२६ वर्षे फा० सु० ३ बुधे। ओस वंशे वहरा हीरा भा० हीरादे पु० व० मेता

भा० षेतलदे पु० व० हियति पितृ श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंवं कारितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि श्री जिन सागर सूरिभिः प्रतिष्ठिता ॥

(768)

सं० १५२७ वर्षे वैशाख वदि ६ शुक्र श्री माल ज्ञातीय पितामह वीरा पितामही वीरादे सुत पितृ डाहा मातृ जासू श्रेयोर्थं सुत राजा भोज ठाकुर सी एतै श्री विमलनाथ मुख्य चतुर्विंशति पट्टः कारितः श्री पूर्णिमा पक्षे श्री साधु रत्न सूरि पट्टे श्री साधु सुंदर सूरीणामुपदेशेन प्रति० विधिना श्री संघेन आंवरणि वास्तव्यः ।

(769)

संवत १५७९ वर्षे माघ सुदि १३ दिने बुध वासरे स्तम्भ तीर्थ वासी ऊकेश ज्ञातीय सा० पातल भा० पातलदे पुत्र सा जइता भार्या फते पुत्र सा० सीहा सहिजा भा० गुरी (?) पुत्र सा० पडलिक भा० कमला पुत्र सा०जीराकेन भा० पुनी पितृव्य सा० सीमा पापा विजा कुटुंब युतेन पितृ वचनात् स्वसंतान श्रेयोर्थे श्री सुमतिनाथ विंवं कारितं प्रति० तपागच्छे श्री सोम सुन्दर सूरि संताने श्री सुमति साधु सू० पट्टे श्री हेम विमल सूरिभिः महोपाध्याय श्री अनंत हंस गणि प्र० परिवार परिवृत्तौ ।

(770)

संवत १६११ वर्षे वृहत खरतर गच्छे श्री जिन माणिक्यसूरि विजय राज्ये श्री माल ज्ञातीय पापड़ गोत्रे ठाकुर रावण तत्पुत्र उणगढमल तद्भार्या नयणी तत्पुत्र जीयराजेन श्री पार्श्वनाथ परिग्रह कारापितं -- धर्म सुंदर गणिना प्रतिष्ठितं शुभं भवतु ।

(771)

सं० १६७७ ज्येष्ट वदि ५ गुरौ ओसवाल ज्ञातीय गणधर चोपड़ा गोत्रीय स० नामा भार्या नयणादे पुत्र संग्राम भार्या तोली पु० माला भार्या माल्हणदे पु० देका भा० देवलदे पु० कचरा भार्या कउडमदे चतुरंगदे पुत्र अमरसी भार्या अमरादे पुत्र रत्नसेन श्री अर्वुदाचल श्री विमलाचलादि प्रधान तीर्थ यात्रादि सद्धर्म्म कर्म्म करण सम्प्राप्त संघपति तिलकेन श्री आस करणेन पितृव्य चांपसी भ्रातृ अमीपाल कपूरचंद स्वपुत्र ऋषभदास सूरदास भ्रातृव्य गरीवदास प्रमुख सस्त्रीक परिवारेण संपरूप जी कारित शत्रुंजयाष्टमोद्धारमध्य स्वयं कारित भव्र विहार शृंगार हार श्री आदिश्वर विंवं कारितं पितामह वचनेन प्रपितामह पुत्र मेघा कोभा रत्ताना समुख पूर्वज नाम्ना प्रतिष्ठितं श्री वृहत्खरतर गच्छाधीश्वर साधूपद्रववारक प्रतिवोधित साहि श्रीमदकवर प्रदत्त युगप्रधान पद धारक श्रीजिन चन्द्र सूरि जहांगीर साहि प्रदत्त युगप्रधान पदधारक श्री जिन सिद्ध सूरि पट्ट पूर्वाचल सहस्र करावतार प्रतिष्ठित श्री शत्रुंजयाष्टमोद्धार श्री भाणवट नगर श्री शांतिनाथादि विंवं प्रतिष्ठा समयनि—रत्सुधार श्री पार्श्व प्रतिहार सकल भट्टारक चक्रवर्त्ति श्री जिनराज सूरि शिरः शृंगार सार मुकुटोपमान प्रधानैः।

(772)

सं० १६०० व० द्वि० चै० सित ८ गुरौ गोलकुंडा वा० सा० मेघा भा० मीहणदे सुत सा० नानजी नाम्ना श्री मुनि सुव्रत विंवं का० प्रतिष्ठितं तपाधिपति परम गुरु भट्टारक श्री विजय सेन सूरि पट्टालङ्कार पातिस्याहि श्री जहांगीर प्रदत्त महातप विरुद धारि श्री विजयदेव सूरिभिः।

चिंतामणि पार्श्वनाथजीका मंदिर ।

(773)

सं० १६६९ वर्षे माघ सुदि ५ शुक्रवारे महाराजा धिराज महाराज श्री सूर्य सिंह विजय राज्ये श्री उपकेशि ज्ञातीय लोढा गोत्रे स० टाहा तत्पुत्र स० राय मल्ल भार्या रंगादे तत्पुत्र स० लापाकेन भार्या लाडिमदे पुत्र ॥ वस्तपाल सहितेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठित श्रीमत श्रीवृहत्खरतर गच्छे श्री आद्यपक्षीय श्री जिन सिंह सूरि तत्पट्टोदयाद्रि मार्तंड श्री जिन चंद्र सूरिभिः ॥ शुभंभवतु ॥

पंचतीर्थियों पर ।

(774)

सं० १४७१ वर्षे माघ सु० १३ बुध दिने ऊकेश वंशे बापणा गोत्रे सा० सोहड सु० दाद भा० -- ण पितृ -- निमित्त श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० उपकेशगच्छे श्री देव गुप्त सूरिभिः ।

(775)

सं० १५१० ज्येष्ठ सु० २ दिने प्राग्वाट पीपलिया वाणिया गोत्र सा० धीरा पुत्र सा० डुंगर भ्रातृ सा० सेतसि सहसा कमरदे धारवर्णी भार्या [illegible] प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्री मुनि सुव्रत (?) बिंबं का० प्र० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि श्री मुनिसुन्दर सूरि पट्टे श्री रत्नशेखर सूरिभिः ।

(776)

सं० १५२९ वर्षे माघ वदि ५ रवौ ऊकेश ज्ञातीय श्री दणवट गोत्रे सा० भीम भा० भरमादे पु० – – – दि कुटुंब युतेन श्री कुंथुनाथ विंवं का० प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री प्रज्ञ शेखर सूरि पट्टे श्री पद्मानन्द सूरिभिः ।

(777)

सं० १५३२ जेष्ठ सुदि १३ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० मही श्री भा० राणी सुत हीर भा० भरमी नाम्न्या स्व श्रेयार्थं श्री सुविधिनाथ विंवं का० प्र० तपा श्री रत्न शेखर सूरि पट्टालंकरण श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(778)

सं० १५४७ वर्षे वैशाख सुदि २ सोमे श्री काष्टा – – – भ० श्री सोम कीर्त्ति आ० श्री विमलसेन नारसिंह ज्ञातीय बोरठेच गोत्रे सा० षेईया भा० खेइ पुत्र सा० भीमा जा० प्रटी श्री आदि – – कारापितं नित्यं प्रणमति ।

(779)

सं० १५५२ वर्षे माघ सु० ५ प्रा० ज्ञा० सा० पुंजा भार्या रमक पुत्र – सोमकेन भा० गौरी पुत्र सा० हर्षादि कुटुम्ब युतेन श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री सोमसुन्दर सूरिभिः श्री इन्द्रनन्दि सूरि श्री कमल कलस सूरिभिः ।

(780)

सं० १६५६ वर्षे वैशाष मासे सित ३ दिने रविवारे ऊकेश वंशे लोढा गोत्र संघवी टाहा भार्या तेजलदे पुत्र रा० रायमल्ल भार्या रंगदे पुत्र सं० जयवन्त भीमराज तयो

भगिनी सुश्राविका वीरा नाम्न्या स्वश्रेयसे श्री अजित नाथ विंवं कारित प्रतिष्ठित श्री चतुर्विंशति जिन विंवं प्रतिष्ठित श्री वृहत्खरतर गच्छे श्री जिन देव सूरि तत्पट्टे श्री जिनहंस सूरि तत्पट्टालङ्कार विजयमान श्रीजिनचंद्र सूरिभि सकल संघेन पूज्यमान आचन्द्रार्कं नन्दतात् शुभं भवतु ॥

कडलाजी का मंदिर।

(781)

संवत १६८१ वर्षे माघ शुदि १० सोमे सघ हरषा भा० मीरा दे तत् पु० [illegible] वंत भा० जसवंत दे ततूपुत्र सं० अचलदाससं० शामकरण कारितं प्रतिष्ठित [illegible] भट्टारिक श्री विजय चंद्र सूरिभिः।

महावीरजी का मंदिर।

(782)

सं० १६५३ वर्षे वै० शु० ४ वुधे श्री शांतिनाथ विवं गा[illegible] भा० हर्षमदे पु० स० हांसा भा० लाडमदे पु० पदमसी कारितं [illegible] श्री हीर विजय सूरि पट्टे श्री विजयसेन सूरिभिः ॥ पं० विन[illegible] श्री रस्तु ॥

(783)

॥ ॐ ॥ संवत १६८६ वर्षे वैशाख सु० ८ महाराज [illegible] श्री मेड़ता नगर वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय सुराणा [illegible]

र्मणादि सपरिवार – श्री सुमतिनाथ विंबं कारित प्रतिष्ठित तपा गच्छाधिराज भट्टारक श्री बिजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठिताचार्य श्री श्री श्री श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिकर परिवृतैः ॥

(784)

संवत १६७७ वर्षे वैशाख मासे अक्षय तृतीया दिवसे श्री मेडता वास्तव्य ऊ० ज्ञा० समदडिआ गोत्रीय सा० माना भा० महिमादे पुत्र सा० रामाकेन भ्रातृ राय संगच्छात भा० केसरदे पुत्र जईसी छषमीदास प्रमुख कुटुंब युतेन श्री मुनि सुव्रत विंबं का० प्र० तपा गच्छे भट्टारक श्री पं श्री विजय सेन सूरि पट्टालङ्कार भ० श्री बिजय देव सूरि सिंहैः ।

(715)

सं० १६७७ ज्येष्ट बदि ५ गुरौ श्री ओसलवाल ज्ञातीय गणधर चोपड़ा गोत्रीय स० कचरा भार्या कउडिमदे चतुरगदे पुत्र स० अमरसी भा० अमरादे पुत्ररत्न स० अमीपालेन पितृव्य चांपसी वृद्ध भ्रातृ स० आसकरण लघु भ्रातृ कपूरचन्द स्वभार्या अपूरवदे पु० गरीबदासादि परिवारेण श्री अजितनाथ वि० का० प्र० वृ० खरतर गच्छाधीश्वर श्री जिनराज सूरि सूरिचक्रवर्त्ति ॥

(786)

पट्ट प्रभाकरै श्री अकबर साहि प्रदत्त युग प्रधान पद प्रवरैः प्रति वर्षाषाढीया ष्टाह्निकादि षामोसिका अमारि प्रवर्त्तकैः श्री–तं तीर्थोदधि मीनादि जीव रक्षकैः श्री शत्रुंजयादि तीर्थकर मोचकैः । सर्व्वत्र गोरक्षा कारकैः पंचनदी पीर साधकैः युग प्रधान श्री जिन चन्द्र सूरिभिः आचार्य श्री जिन सिंह सूरि श्री समय राजोपाध्याय ॥ वा० हंस प्रमोद वा० समय सुन्दर वा० पुण्य प्रधानादि साधु युतैः ।

(787)

संवत १६७७ ज्येष्ठ वदि ५ गुरुवारे पातसाहि श्री जिहांगीर विजय राज्ये साहियादा साहिजहां राज्ये ओसवाल ज्ञातीय गणधरचोपड़ा गोत्रीय स० नामा भार्या नयणादे पुत्र संग्राम भा० तोली पु० माला भा० माल्हणदे पु० देका भा० देवलदे पु० कचरा भा० कउडिमदे पु० समरसी--भा० समरादे पुत्ररत्न संप्राप्त श्री अर्बुदाचल विमलाचल संघपति तिलक कारित युग प्रधान श्री जिन सिंह सूरि पट्ट नंदि महोत्सव विविध धर्म्म कर्त्तव्य विधायक स० आस करणेन पितृव्य चांपसी भ्रातृ अमीपाल कपूरचन्द स्वभार्या अजाइबदे पु० ऋषभदास सूरदास भ्रातृव्य गरीबदासादि सार परिवारेण श्रेयोर्थं स्वयं कारित नर्म्माणीमय विहार शृंगारक श्री शांतिनाथ विंवं कारित प्रतिष्ठितं श्री महावीरदेव - - - परपरायत श्री बृहत्खरतर गच्छाधिप श्रीजिन भद्र सूरि संतानीय प्रतिबोधित साहि श्री मदकब्बर प्रदत्त युग प्रधान पदवीधर श्री जिन चंद्र सूरि विहित कवित काश्मीर विहार वार सिंदूर गर्ज्जणा विविध देशामारि प्रवर्त्तक जहांगीर साहि प्रदत्त युग प्रधान पद साधक श्रीजिनसिंह सूरि पट्टोत्तंस लब्ध श्री अम्बिका वर प्रतिष्ठित श्री शत्रुंजयाष्ठमोद्धार प्रदर्शित भाण वहमध्य प्रतिष्ठित श्री पार्श्व प्रतिमा पीयूष वर्षण प्रभाव बोहित्थ वंशमण्डन धर्मसी धारलदे नन्दन भट्टारक चक्रवर्त्ति श्री जिनराज सूरि दिन करैः ॥ आचार्य्य श्री जिन सागर सूरि प्रभृति यति राजैः ॥ सुत्रधार तुजा। प्रतिष्ठितं भट्टारक प्रभु श्री जिन राज सूरि पुरन्दरैः श्री मेड़ता नगर मध्ये।

ओसियां ।

ओसियां एक प्राचीन ऐतिहासिक स्थान है, विशेषकर ओसवालोंके लिये यह तीर्थ रूप है। यहां पर बहुतसे प्राचीन कीर्त्ति चिन्ह विद्यमान है। शासन नायक श्री महावीर स्वामीके मन्दिरका कुछ दिनसे जीर्णोद्धार का कार्य चल रहा है। सचियाय देवी का मन्दिर भी बहुत जीर्ण हो गया है और भी बहुतसे प्राचीन मंदिर इधर उधर टूटे फूटे पड़े हैं और समिपमें एक छोटी डूंगरी पर मुनियोंके अनशनके स्थान पर चरण प्रतिष्ठित है।

मंदिर प्रशस्ति ।

(788)

॥ ॐ ॥ जयति जनन मृत्यु व्याधि सम्बन्ध शून्यः परम पुरुष संज्ञः सर्वविरसर्वदर्शी। ससुर मनुज राजामीश्वरोनीश्वरोपि, प्रणिहित मतिभिर्यः स्मर्यते योगिवर्य्यैः ॥ १ ॥ मिथ्या ज्ञान घनान्धकार निकरावष्टब्ध सद्बोध दृग्दृष्ट्वा विष्टपमुद्वद्ध घनघृणः प्राणभृतां सर्वदा कृत्वा नीति मरीचिभिः कृत युगस्यादौ सहस्रांशुवत्प्रातः प्रास्तलमास्तनोतु भवतां भद्रं स नाभेः सुतः ॥ २ ॥ यो गीर्वाण सर्व-भिद भिहितां शक्ति मश्रद्दधा नः क्रूरः क्रीड़ा चिकीर्ष्या कृत - - - - वृद्ध - - - - मुष्टया यस्याहसो सौ मूर्त्ति मित इयता नामस्त्वं यतो भूत्पुण्यैः सत्पुण्य वृद्धिं वितरतु भगवान्यस्य सिद्धार्थ सूनुः ॥ ३ ॥ स्वामिन्किं स्वर्निर्वाणालय घन समयोस्माक माहं - - - - नस्याम्रशाने - - - उत महती काचिदन्याय दृष्टा इत्युद्भ्रान्तगात्मा हरि मति भयतः सम्म कैलाश्वर नीचैर्दर्नन्यादांगुष्ठकोद्याक्रान्त जगपती प्रेरित्ते व्यांतस्वधीरः ॥ ४ ॥ श्री मानार्ज्जमनुरिह भुवि - - - ऐक वीर स्त्रैलोक्येयं प्रकट महिमा राम नामाख्येन चक्रे

शोके दुर्द्धरसुरी निद्रयालिङ्गनेषु स्वप्रेयस्या दशमुख वधोत्पादित स्वास्थ्य वृत्तिः ॥ ५ ॥ तस्या कार्षत्किल प्रेम्णालक्ष्मणः प्रतिहारताम् ततोऽभवत् प्रतीहार वंशो-राम समुद्भवः ॥ ६ ॥ तद्वंशे सवशी वशी कृत रिपुः श्री वत्स राजोऽभवत्कीर्त्तिर्यस्य तुषार हार विमला ज्योत्स्नास्तिरस्कारिणी नस्मिन्मामि सुखेन विश्व विवरे नत्वेव तस्माद्बहिर्निर्गन्तुं दिगिभेन्द्र दन्त मुसल व्याजाद कार्ष्यान्मनुः ॥ ७॥ समुदा समुदायेन महता चमूः पुरा पराजिता येन---समदा॥८॥ --समदारण तेनावनीशेन कृताभिरक्षैः सद्ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्रैः। समेतमेतत्प्रथितं पृथिव्या मूकेशनामास्ति पुरं गरीयः॥९॥ ---सक्रान्तं परैः----मिव श्री मत्पालितं यन्महोभुजा। तस्यान्तरतपनेश्वरस्य भवनं विभुद्भृशं शुभ्रतामभ्रस्पृमुद्गराज कुंजर युतं सद्वैजयन्ती लतम् किं कूटं हिम---सृत रति---॥ १० ॥ तद कार्य्यं तार्य्य वचसा संसार---या ॥ ११ ॥ क्वचित्--- स्वबुद्धयोधिकस धीयते साधवः क्वचित्पटुपटीयसीं प्रकटयन्ति धर्म्मस्थितिम्। क्वचिन्तु भगवत्स्तुतिं परिपठयन्ति यस्या जिरे- - - - - - - ध्वनिमदेव गारुज्मोर्य्यत ॥ १२ ॥ वीक्षणे क्षणदां स्तस्य वर्णलक्ष्मी विपर्श्पताम्। बुद्धि-र्भवत्यवशास्ते यत्र पश्यन्त्यदः सदा ॥ १३ ॥ आचार्य्यैर्व्वचन घन---न्नि---मुच्चैः सर्व्वांव---पर्यायः प्रतिध्वान दण्डम् सत्यं मन्ये यदु दित मितीवा वाद्रीतस-मन्तात्तोयं भूयः प्रकट महिमा मण्डपः कारितोत्र ॥ १४ ॥ --- किं चान्ह------ यिकार त्रैव------------बधः। तारापितं येन सुवंश भाजा सद्दानस मार्गिण मार्गणेन ॥ १५ ॥ पुत्रस्तस्या भवत्सोमयो वणिग्जिन्दक संज्ञिनः। इन्दुयत्कान्ति---लयः ॥१६॥ ---चद्दुहरा--ह्या प्रसाद युक्ता स्त्रयशोनिरामा। सदानुसर्त्री स्यपतिनदीन मार्गणावास ---- तरगा ॥१७॥ तस्मात्तस्यामभूद्वर्नां त्रिवर्ग -------- ---------॥ १८ ॥ यन्नाकारि सितेतरच्छवि--नहसा दिनं यामिनं स्वर्य्यं स्नातिथ्यं जनैरपि प्रतिगतं यद्गोहसम्भवत्यिनं। कि चान्यद्भुवने दुर्गन तुरनि व्याप--नीर नीर दवित ···· ··········· ··· ॥ १९ ॥ जिनेन्द्र धर्म्मं ···नि ··· ··· ···

........ताये ....कुमतेर्म्मनागपि । मि........ । वंसतोपिहि मण्डलेथवान सन्मणीनां भवतोहकाचता .... ॥२०॥ यदि वादि .... संज्ञिता ....
जाकलावपि ॥ २१ ॥ तत्र ब्रह्म वौ स्वर्गा सम्प्राप्ते तन्महिलया । दुर्गया प्रतिमा कारि स .... त्रधामनि ॥ २२ ॥ आम्रकात्सर्वदे व्यातु .... यत .... देवदत्त .... मिवागमे ॥ .... प्रति दिनमिति ....
या कार्यं प्रति विद्यते यद्वद्धिकं ॥ द्येर्यवन्लो पिये स्यन्तं भीरवः परलोकतः । भोगि .... हिको .... च्च दूरगाः ॥ .... ति .... बला
दतन्त .... भिः पुन्रयं भूमण्डनो मण्डपः । पूर्वस्यां ककुभि त्रिभारा विकलः सन्गोष्ठिकानु .... जिन्दक .... मतदु .... दय ....
कृतोय .... नेन जिनदेव धाम तत्कारितं पुनरमुष्य भूषणं । मत्स दृग्दृश्यते ....
दुजयश्री भूजयन्त .... ॥ संवत्सर दशशरयामधिकायां वत्सरे स्त्रयो दर्शाभिः फाल्गुन शुक्ल तृतीया भाद्र पदाजा .... सं० १०१२ ....
रयांम ॥ प्राज्ञापन्यं दधदपि मना गक्षमालो पयोमी शंखं चक्रं स्फुटमपिव ....
करांश: पाया .... भुवन गुरुर्न्नात .... ॥ भावद्गोगगूढ यन्हिगगुं र भर विन मन्मूर्द्धनिर्द्धन्वैते धोवायन्मेकर्म्मर्क्रमिन्निं .... ति युते .... ।
वयिमसुखस्तेद .... श्री मद्र .... दशा पूच .... नित्यमस्तु ॥ जयतु भवांसमाय .... कीर्त्तिर्न्निं गीभि वपु: सदा ॥ यस्मादस्मिन्निजमनन्यवरि पवि दवि .... ममा .... प्रकद सुभावनो .... सूत्रधारस्य ....
निर्मि .... प्रिय मिद ।

तोरण पर ।

(789)

सं० १०३५ आषाढ़ सुदि १० आदित्य वारे स्वाति नक्षत्रे श्री तोरणं प्रतिष्ठापिमिति

स्तम्भ पर ।

(790)

सं० १२३१ मार्ग सुदि ५ वांधल पुत्र यशोधर वोहित्थ मूला देवि - - - ।

२४ माताके पट्ट पर ।

(791)

सं० १२५९ कार्तिक सु० १२ सुचेत गुत्री खहदिग पुत्रैः धगु दरदी सुखदी सल्ल सर्य प्रसादै चतुर्विंशति जिनः मातृ पट्टिका निज मातृ जन्हव श्रेयोर्थं कारिता श्री कक्क सूरिभिः प्रतिष्ठिता ।

मूर्त्तियों पर ।

(792)

सं० १०८८ फाल्गुन वदि ४ श्री नागेन्द्र गच्छे श्री वासदेव सूरि संघ नानेतिहड़ श्रेयार्थं राखदोव कारिता।

(793)

सं० १२३४ वैशाख सुदि १४ मंगल । नागदेव वर्पा ग्रामपद धनाय गोष्ठ । भार्या यशोदेव्या श्रामर्ध पोध पदे ।

(794)

सं० १२३४ वैशाख शुक्ल १४ मंगलवार सार्व्वदेव सुत नागदेव तत्सुतेन पारो पारेन जिन लुत्रित सादेव मणि कुतेन।

(795)

सं० १४३८ वर्षे आषाढ सुदि ९ शुक्रे मोढ़ वास्तव्य सा० डा–भार्या यससारदे भार्या सूमलदे सुत साहूण सामल पितृ मातृ श्रेयार्थं ठ० महिपालेन श्री पार्श्वनाथ विंव कारितं आगम गच्छे श्री जय तिलक सूरि उपदेशेन।

(796)

सं० १४९२ वर्षे वैशाख वदि ५ श्री कोरंटकीय गच्छे सा० ३० शंष बालेचा गोत्रे सा० वास माल भार्या लक्ष्मीदे पुत्र ३ प्रता भिहा सूरांयाभ्यों पितृ श्रेयसे श्री संभवनाथ विंवं कारितं पुताकेन का० प्र० श्री सावदेव सूरिभिः।

(797)

सं० १५१२ वर्षे फाल्गुन सुदि ८ शनि श्री उसम से० भार्या माणिकदे सुत रणाग्र भार्यायां ४० पिधा भार्या चां सुतयो याते जूखाण श्री कुंथुनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठित श्री वृहद् तपापंकज श्री विजय तिलक सूरि पट्टे श्री विजय धर्म्म सारे श्री भूयात्॥

(798)

सं० १५३४ वर्षे माघ सुदि ५ दिने सीढ ज्ञातीय मंत्रि देव वकु सुत मंत्रि सह साइ-ताभ्यां श्री धर्म्मनाथ विंवं पित्रो श्रेयसे प्रतिष्ठित श्री विद्याधर गच्छे श्री हेम प्रभु सूरि मंडलिराभ्यां कृतः।

(799)

सं० १५४९ वर्षे माघ सु० ५ गुरौ गंधार वास्तव्य श्री श्री माल ज्ञातीय सा० शिवा- भार्या माणिक्यदे नाम्नी तयो सुत सा० लोजकेन भा० भर्म्मादे धर्मादे नाम्नी युतेन स्वमात्री श्रेयसे श्री त्रिमल नाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठा श्री वृहत् तपा पक्षे श्री उदय सागर सूरिभिः ।

(800)

सं० १६१२ वैशाख सुदि ५ दिने श्री लालूण करापितं ।

(801)

सं० १६८३ ज्येष्ठ सु० ३ कडुया मति गच्छे भादेवा पुत्री राजवाई केन श्री सम्भव विंव सा० तेजपालेन प्र० ।

(802)

संवत् १७५८ वर्षे आषाढ़ सुदि १३ । रविवार शुभ दिने श्री वृहत् खरतर गच्छ भट्टारक श्री जिन राज सूरि । गणे शिष्य - - - ।

नींवमें प्राप्त मूर्त्तिके टूटे चरण चौकि पर ।

(803)

ॐ संवत् ११०० मार्गशिर सुदि ६ - - - - - - - - सालीभद्र - - - - - - - - टेय कर्म श्रेयोर्थं कारित जिनेत्रिकम् - - - ।

श्री सचियाय माताका मंदिर ।

(804)

सं० १२३६ कार्तिक सुदि १ बुधवारे अद्येह श्री केल्हण देव महाराज राज्ये तत्पु
श्री कुंमर सिंहे सिंह बिक्रमे श्री माडव्य पुराधिपती – – – दभिकान्वीय कीर्ति पाल
राज्य वाहके सद्भुक्तौ श्री उपकेशीय श्री सच्चिका देवि देव गृहे श्री राजसेवक गुहिलं गो
क्रय विषयी धारा वर्षेण श्री क संच्चिका देवि भक्ति परेण श्री संच्चिका देवि गोष्ठि-
कान् भणित्वा तत्समक्ष तइयं व्यवस्था लिखापिता। यथा। श्री सच्चिका देवि द्वार
भोजकैः प्रहरमेकं यावदुद्घाट्य द्वार स्थितम् स्थातव्यं। भोजक पुरुप प्रमाणं द्वादश
वर्षीयोत्परः। तथा गोण्ठिकैः श्री सच्चिका देवि कोष्ठागारात् मुग मा।०॥ घृत कर्ष १
भोजकेभ्यो दिनं प्रति दातव्यः॥

(805)

संवत् १२३४ चैत्र सुदि १० गुरौ घोर बडांगु गोत्रे साधु बहुदा सुत साधु
जाल्हण तस्य भार्या सूहवं तयोः सुतेन साधु माल्हा दोहित्रेन साधु गयपालेन–
सच्चिको देवि प्रासाद कर्मणि चंडिका शीतला श्री सच्चिका देवि क्षेमं करी श्री क्षेत्र
पाल प्रतिमाभिः सहितं जंघा घरं आत्म श्रेयार्थं कारितं।

(806)

संवत् १२४५ फाल्गुन सुदि ५ अद्येह श्री महावीर रथशाला निमित्तं पाल्हिया धीय
देव चन्द्र वधू यशोधर भार्या सम्पूर्ण श्राविकया आत्म श्रेयार्थं आत्मीय स्वजन वर्गा
समन्तेन स्वगृह दत्तं ।

(807)

सं० १२४५ फाल्गुन सुदि ५ अद्येह श्री महावीर रथशाला निमित्तं ------ पाल्हिया धीत देव चंड वधू यशधर भार्या सम्पूर्ण श्राविकया आत्म श्रेयार्थं समस्त गोष्ठि प्रत्यक्षं च आत्मीया स्वजन वर्ग्ग समतेन आत्मीय गृहं दत्तं ।

डूंगरीके चरण पर ।

(808)

सं० १२४६ माघ वदि १५ शनिवार दिने श्री सज्जिनभद्रोपाध्याय शिष्यैः श्री कनक प्रभ महत्तर मिश्र कायोत्सर्ग्गः कृतः ।

पाली ।

यह भी मारवाड़का एक प्राचीन स्थान है। यहांके लेख पण्डित रामानन्दजीने संग्रह किया है।

नौलखा मंदिर ।

(809)

संवत् ११४४ वैशाख वदि ७ पल्लिका चैत्ये वीर ।

(810)

संवत् ११४४ ज्येष्ठ वदि ४ श्रीपरेव ---।

(811)

संवत् ११४४ माघ सु० ११ वीर उल्लदेव कुलिकायां पुल्लं भाजिताभ्यां सांख्याय कृतः श्री ब्राह्मी गच्छां प्रदेवाचार्येन प्रतिष्ठितः।

(812)

संवत् ११५१ आसाढ सुदि ८ गुरी ---।

(813)

॥ ॐ ॥ संवत् ११७८ फाल्गुन सुदि ११ शनौ श्री पल्लिका श्री वीरनाथ महा चैत्ये श्री मदुद्योतनाचार्य महेश्वराचार्यामनाय देवाचार्य गच्छे साहार सुत धार सघण देवौ तयोर्मस्य धनदेव सुत देवचन्द्र पारस सुत हरिचन्द्राभ्यां देव चन्द्र भार्या वसुन्धरिस्तस्या निमित्तं श्री ऋषभ नाथ प्रथम तीर्थंकर विंवं कारितं गोत्रार्थं च मंगलं महावीरः।

(814)

ॐ। संवत् १२०१ ज्येष्ठ बदि ६ रवौ श्री पल्लिकायां श्री महावीर चैत्ये महामात्य श्री आनन्द सुत महामान्य श्री पृथ्वीपालेनात्मश्रेयोर्थं जिन युगलं प्रदत्तम् श्री अनन्त नाथ देवस्य।

(815)

ॐ। संवत १२०१ ज्येष्ठ बदि ६ रवौ श्री पल्लिकायां श्री महावीर चैत्ये महामान्य श्री आनन्द सुत महामान्य श्री पृथ्वी पालेनात्म श्रेयोर्थं जिन युगलं प्रदत्तम् श्री विमल नाथ देवस्य।

(816)

सं० १५--- सुदि ३ सा------का० सा० मधा---स्व श्रेयसे श्री कुंथनाथ बिंब का० प्र० श्री जिन्नमाल गच्छे।

(817)

संवत् १५०६ वर्षे भाद्र सुदि ५ रवौ---।

(818)

सं० १५१३ माघ सुदि ३ दिने उकेस सा० सदा भा० वालहदे पुत्र सा० क्षेमाकेन भा० सेलखू भ्रातृ हेमा कान्हर मल प्रमुख कुटुंब युतेन श्री अजित नाथ बिंबं का० प्र० तपा श्री रत्न शेखर सूरिभिः।

(819)

सं० १५२९ वर्षे माह सु० ५ रवौ ऊ० भोगर गो० सा० राणा भा० रत्नादे पु० चाहड़ भा० रइणे पु० खरहथ खादा खाल खना धितृ श्री नेमिनाथ बिंबं कारि० श्री नागेन्द्र गच्छे प्रतिष्ठित श्री सोम रत्न सूरिभिः।

(820)

संवत् १५३२ वर्षे चैत्र सुदि ३ गुरु ऊ० गुगलिया गोत्र सा० खीमा पुत्र काजा भा० रतमादे पु० वरसा नरसा धादा भार्या पुत्र सहितेन स्व श्रेयसे श्री संडेर गच्छे श्री जिशो भद्र सूरि संताने श्री चंद्र प्रभ स्वामि बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सालि सू--।

(821)

स० १५३४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० श्री ऊकेश वंशे गणधर गोत्रे साधु पासड़ भार्या एखलादे पुत्र सा० भोजा सुश्रावकेण भ्रातृ सा० पदा तत्पुत्र सा० कोका प्रमुख परिवार

सहितेन स पुण्यार्थं श्री संभवनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरि पट्टे श्री जिन चन्द्र सूरिभिः ॥

(822)

सं० १५३४ वर्षे फागुन शु० २ गुरौ ऊ० चूदालिया गोत्रे च ऊ० सा० सिवा भा० सहागदे पुत्र सा० देवाकेन भार्या दाड़िमदे पुत्र आसा भार्या ऊमादे इत्यादि कुटुंब युतेन स्व श्रेयसे श्री संभवनाथ विंबं का० प्रति० श्री सूरिभिः श्री वीरमपुरे।

(823)

संवत् १५३६ वर्षे फाल्गुन सुदि ३ रवौ फीफलिया गोत्रे सा० मूला पुत्र देवदत्त भार्या साह पुत्र सा० करु श्रावकेण भार्या नामल दे परिवार युतेन श्री आदिनाथ विंबं श्रेयसे कारितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरि श्री जिन समुद्र सूरि प्रतिष्ठितं।

(824)

संवत् १५५५ वर्षे जेष्ठ वदि १ शुक्रे उकेस न्यातीय काकरेचा गोत्रे साह जारमल पुः ऊदा चांपा ऊदा भा० रूपी पु० वाला खेतावाला भा० वहरङ्गदे सकुटुंब श्रे० उद पूर्व पु० श्री चंद्र प्रभ मूलनायक चतुर्विंशति जिनानां विंबं कारितं प्रतिष्ठित श्री संडेर गच्छे श्री जसो भद्र सूरि सन्ताने श्री शांति सूरिभिः।

(825)

सम्वत् १६८६ वर्षे वैशाख सुदि ८ शनौ महाराजाधिराज महाराज श्री गज सिंह विजय मान राज्ये युवराज कुमार श्री अमर सिंह राजिते तत्प्रसाद पात्र चाहमान वंशावतंस श्री जसवन्त सुत श्री जगन्नाथ शासने श्री पाली नगर वास्तव्य श्री श्री श्री

माल ज्ञातीय सा० मोटिल भा० सोभाग्यदे पुत्र रतन सा० डुंगर भाखर नाम भ्रातृ द्वयेन सा० डुंगर भा० नाथदे पुत्र सा० रूपा रायसिंह रतन सा० पौत्र सा० टीला सा० भाखर भा० भावलदे पुत्र ईसर अरोल प्रमुख कुटुंब युतेन स्व द्रव्य कारित नवलखाख्य प्रसादोपरि श्री पार्श्वनाथ बिंबं सपरिकरा स्व श्रेयसे कारितं प्रतिष्ठापितंच स्व प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितंच श्रीमदकब्बर सुरत्राण प्रदत्त जगद्गुरु विरुद धारक तपा गच्छाधिराज भट्टारक श्री हीर विजय सूरि पट्ट प्रभाकर भट्टारक श्री विजयसेन सूरि पट्टालंकार भट्टारक श्री विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठिताचार्य श्री विजय सिंह प्रमुख परिकर परिकरितैः ओं श्री पल्लीकीये द्योतनाचार्य गच्छे व्रद्वौ मादा मादा की तगोः श्रेयार्थ लखमण सुत देशलेन रिखभनाथ प्रतिमा श्री वीरनाथ महाचैत्ये देवकुलिकायां कारित ॥

([illegible])

संवत् १६८६ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे [illegible] पुष्य योगे [illegible] श्री मेड़ता नगर वास्तव्य सूत्र धार कुधरण पुत्र सूत्र० ईसर [illegible] खोखा सुरताण ददा पुत्र नारायण हंसा पुत्र [illegible] परिवार परिवृतेन [illegible] महावीर बिंबं कारित प्रतिष्ठापितं च श्री पाली [illegible] प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं च भट्टारक श्री विजय सेन सूरि [illegible] विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठाचार्य श्री विजय सिंह सूरिभिः ।

([illegible])

सं० १६८६ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे पुष्य योगे [illegible] महाराज श्री गजसिंह विजयमान राज्ये [illegible] [illegible] पार्श्व [illegible] [illegible] नगर वास्तव्य [illegible] भाखर नाम्ना भा० [illegible] पुत्र सा० ईसर [illegible]

सुपार्श्व विंबं कारितं प्रतिष्ठापितं स्व प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं पातशाह श्री मदकबर शाह प्रदत्त जगद्गुरु विरुद धारक तप गच्छाधिपति प्रतिष्ठिताचार्य श्री विजय सेन सूरि।

(828)

सं० १७०० वर्षे माघ सित द्वादश्यां बुधे श्री श्री योधपुर वास्तव्य उसवाल ज्ञातीय मुहंणोत्र गोत्रे जयराज भार्या मनोरथ दे पुत्र सुभा पु० ताराचन्द भाज राजादि युतेन श्री शीतल पार्श्व वीर नेमी मूर्त्ति स्फूर्त्ति मत्कोशं विंशन्ति जिन विंब विराजित दल दशकं चतुर्विंशति जिन कमल कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे भट्टारक श्री विजय देव सूरि आचार्य श्री विजय सिंह निदेशात् उ० सप्तमे चंद्र गणिभिः।

श्री गौड़ी पार्श्वनाथजीका मंदिर।

मूलनायकजी पर।

(829)

संवत् १६८६ वर्षे वैशाख सुदि ९ राजाधिराज महाराज श्री गजसिंह विजय मान राज्ये मेड़ता नगर वास्तव्य ---- हा वंशे कुहाड़ गोत्रे सा० हरषा भार्या मिरादे पुत्र सा० चसवंत केन स्व श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं स्थापितं च। महाराणा श्रीजगतसिंह विजय राज्ये श्री गोड़वाड़ देशे श्री विजयदेव सूरीश्वरोपदेशतः वीघरला। वास्तव्य समस्त संघेन। शिशरिराया उपरि निर्मापितेन विंबेन प्री० श्री प्रतिष्टितंश्च तप गच्छाधिराज भट्टारक श्री मदकबर सुरत्राण प्रदत्त जगद्गुरु विरुद धारक भ० हीर विजय सूरीश्वर पट्ट प्रभाकर भट्टारक श्री विजय सेन सूरीश्वर पट्टालंकार भट्टारक श्री विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठाचार्य्य श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिकर परिकरितैः।

लोढारो बासका मंदिर ।

(830)

ॐ ह्रीं श्रीं नमः ॥ श्री पातिसाह पुण साहजी विजय राज्ये। संवत् १६८६ वर्षे वैशाख सिताष्टमी शनिवासरे महाराजाधिराज महाराजा श्री गजसिंह जी विजय राज्ये श्री पालिका नगरे सोनिगरा श्री जगंनाथ जी राज्ये ऊपकेस ज्ञातीय श्री श्री माल चंडालेचा गोत्रे सा० गोटिल भार्या सोभागदे पुत्र सा० डुंगर भ्रातृ सा-भापर -- नामभर्या - डुंगर भार्या नाथलदे पुत्र रूपसी राई त्यघर भना भाषर भार्या चाचलदे पु० इसर आयेल रूपा - पु० टीला युतेनं स्व श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंवं कारापितं प्रतिष्ठितं ॥ श्री चैत्र गच्छे शार्दूल शाखायां राज गच्छान्वये भ० श्री मानचन्द्र सूरी तत्पट्टे श्री रत्नचन्द्र सूरि वा० तिलक चंद्र सु० पति रूपचंद्र युतेन प्रतिष्ठा कृता स्व श्रेयोर्थे श्री पालिका नगरे श्री नवलषा० प्रासादे जीर्णोद्धार कारापित मूल नायक श्री पार्श्वनाथ प्रमुख चतुर्विंशति जिनानां विंव० प्रतिष्ठापितानि सुवर्णमय कलश डंडे रूप्य सहस्र ५ द्रव्य व्यय कृते नाव बहु पुन्य उपार्जितं अन्य प्रतिष्ठा गुरजर देशे कृता श्री पार्श्व गुरु गोत्र देवी श्री अम्बिका प्रसादात् सर्व कुटुम्ब वृद्धि भूयात् ॥

श्री शांतिनाथजी का मंदिर ।

(831)

संवत् ११४५ आषाढ सुदी ९ ---- ।

श्री सोमनाथका मंदिर ।

(८३२)

संवत् १२०९ द्वि० ज्येष्ठ वदि १ अद्येह श्री पल्लिकायां ग्रामे अणहिल पाटकाधिष्ठित

समस्त राजावली बिराजित परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर उमापति वर लब्ध -------- निज विक्रमे रणांगन विनिर्जित शाकं भरी भूपाल श्री मत्कुमार पाल देव कल्याण विजय राज्ये -----।

नाडोल ।

मारवाड़के देसूरी जिलेके समीप यह स्थान भी बहुत प्राचीन है।

श्री आदिनाथजी का मंदिर ।

(833)

ॐ संवत् १२१५ वैशाख सुदि १० भौमे वीसाडा स्थाने श्री महावीर चैत्ये समुदाय सहितैः देवणाग नागड जोगड सुतैः देम्हाजधरण जसचन्द्र जसदेव जसधवले जसपालैः श्री नेमिनाथ विंवं कारितं ॥ वृहद्गच्छीय श्री मद्देव सूरि शिष्येन पं० पद्मचन्द्र गणिना प्रतिष्ठितं ॥

(834)

ॐ। संवद् १२१५ वैशाख सुदि १० भौमे वीसाडा स्थाने श्री महावीर चैत्ये समुदाय सहितैः देवणाग नागड जोगड सुतैः देम्हाजधरण जसचन्द्र जसदेव जसधवल जसपालैः श्री शांतिनाथ विंवं कारितं ॥ प्रतिष्ठितं वृहद्गछीय श्री मन्मुनिचन्द्र सूरि शिष्य श्री मद्देव सूरि विनेवेन पाणिनीय पं० पद्मचन्द्र गणिना। यावद्व्योम्नि चन्द्र खौस्याताँ धर्मोजिन प्रणीतोस्ति। तावज्जाया देत्त जिन युगलं वीर जिन भुवने।

(835)

संवत् १४३२ वर्षे पोह सुदि-यव्रत जैता भार्या० कहू पुत्र नामसी भार्या कमालदे पितृव्य निमित्तं श्री शांति नाथ विंब कारापित्तं प्रतिष्ठितं श्री नांवदेव सूरिभिः ॥

(836)

सं० १४८५ वै० शु० ३ बुधे प्राग्वाट श्रे० समरसी सुत दो० धारा भा० सूहवदे सुत दो महिपाल भा० माल्हणदे सुत दो० मूलाकेन पितृव्य दो० धर्मा भ्रातृ दो० माईआभ्यां च दो० महिपा श्रेयसे श्री सुविधि विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छेश श्री सोम सुन्दर सूरिभिः ।

(837)

श्री चन्दा प्रभु विंबं । सं० १६८६ प्रथमाषाढ़ वदि ५ शुक्रे राजाधिराज श्री गज सिंह प्रदत्त सकल राज्य व्यापाराधिकारेण मं० जेसा सुत जयमल्ल जी नाम्ना श्री चन्द्र प्रभु बिवं कारितं प्रतिष्ठापितं स्वप्रतिष्ठायां श्री जालोर नगरे प्रतिष्ठितं च तपागच्छा-धिराज भ० । श्री हरि विजय सेन सूरि पट्टालंकार भ । श्री विजय सेन सूरि पट्टालंकार पातशाहि जहांगीर प्रदत्त महातपा विरुद धारक भ० श्री ५ श्री विजयदेव सूरिभिः स्व पद प्रतिष्ठिताचार्य श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिवार परिकरितैः राणा श्री जगत सिंह राज्ये नाडुल नगर राय विहारे श्री पद्म प्रभ विंबं स्थापित ॥

(838)

संवत् १६८६ वर्षे प्रथमाषाढ व० ५ शुक्रे राजाधिराज गजसिंह श्री राज्ये योधपुर नगर वास्तव्य मणोत्र जेसा सुतेन । जयमल जी केन श्री शांतिनाथ बिंब कारित

प्रतिष्ठापित स्व प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठितं च श्री तपा गच्छेश श्री ५ श्री विजय देव सूरिभिः स्व पट्टालंकार आचार्य श्री ५ श्री विजय सिंह सूरि प्रमुखः स परिवारः ॥

ताम्र शासन ।*

(839)

ओं ॥ ओं नमः सर्वज्ञाय । दिसतु जिन कनिष्ठः कर्म बंध क्षयिष्ठः परिहृत मद मार क्रोध लोभादि वारः । दुरित शिखरि सम्बः स्वो वशीयं च सम्ब स्त्रिभुवन कृतसेवा श्री महावीर देवः ॥१॥ अस्ति परम आजल निधि जगति तले चाहुमाण वंशोहि तत्रासोन नडूले भूपः श्री लक्ष्मणादौ ॥२॥ तस्मात् वभूव पुत्रो राजा श्री सोहिया स्तदनु सूनुः । श्री बलि राजो राजा विग्रह पालोनू च पितृव्यं ॥३॥ तस्यात्तनुजो भूपालः श्री महेन्द्र देवाख्यः। तज्जः श्री अणहिल्लो नृपति वरो भूल पृथुल तेजः ॥४॥ तत्सूनुः श्री वाल प्रसाद इत्यजनो पार्थिव श्रेष्ठः । तद्भ्राताऽभूत क्षितिपः सुभटः श्री जेंद्र राजाख्यः ॥५॥ श्री पृथिवी पालोऽभूत् तत्पुत्राः सौर्य वृत्ति शोभाढ्यः । तस्मादभवत्भ्राता श्री जोजल्लो रण रसात्मा॥६॥ तदेव राजो भूच्छ्रीमान् आशा राजः प्रताप वर निलयः। तत्पुत्राः क्षोणिपः श्री अल्हण देव नामाभूत्॥७॥ यस्य प्रताप प्साले सकुल दिक् चक्र पृथुल विस्तारं । सिंचंति सुदिताहित गण ललना नयन सलिलौघैः ॥८॥ सोय महा क्षितिशः सारमिदं बुद्धिमान् चिन्तयत। इह संसार असार सर्व्वं जन्मादि जन्तूनां ॥९॥ यतः । गर्भ स्त्रि कुक्षिः मध्ये पल रुधिर बसा मेदसा बद्ध पिण्डो मातु प्राणांतकारी प्रसवन समये प्राणिनां स्यान्नु जन्मा धर्म्मादानामवेत्ता भवतिहि नियतम् बाल भाव स्ततः स्यात् तारुण्यम् स्वल्प मात्र स्वजन परिभव स्थानता वृद्ध भावः ॥१०॥ खद्योतोद्योत तुल्यः क्षणः मिह सुखदाः सम्पदो दृष्ट नष्टः प्राणित्वं चंचलं स्याद्दलमुपरि यथा तोर बिन्दुर्न्नलिन्याः ज्ञात्वैमं स्व

* यह तामापत्र प्रसिद्ध कर्नेल टड साहब यहांसे लेकर विलायतके रयल एशियाटिक सुसाइटीमें दान किया है।

पित्रो स्पृहयनमरताम् चैहिकम् धर्म्म कोर्त्ति देशान्तो राज पुत्रान् जन पद गणान् बोधयत्स्येव वोस्तु ॥११॥ सं० १२१८ वर्षे श्रावण सुदि १४ रवौ अस्मिन्नेव महा चतुर्दशी पर्व्वणी। स्नात्वा धौत पटे निवेश्य दहने दत्वाहुतीन् पुण्य कृन् मार्त्तण्डस्य तमः प्रपाटन पटोः सम्पूर्य चार्व्वंजलिं। त्रैलोकस्य प्रभु चराचर गुरुं संस्नप्य पंचामृतैः ईशानं कनकान्न वस्त्र नदनैः सम्पूज्य विप्रां गुरुं ॥१२॥ अनुतिल कुशाक्ष-तोदकः प्रगुणो भूता पसव्यकः पाणिः शासनमेनमयच्छत यावत् चंद्राकं भूपालं ॥१३॥ श्री नड्डुल महास्थाने श्री संडेरक गच्छे श्री महावीर देवाय श्री नड्डूल तल पद शुल्क मंडपिकायां मासानुमासं धूप वेलार्थं शासनेन द्र० ५ पंच प्रादात् अस्य देवस्स्यनं भुंजानस्य अस्मद्वंशे जयिभिर्भावि भोक्तृभिरपरैश्च परिपंथाना न कार्या। यतः सामान्योयं धर्म्म सेतु नृपाणां काले काले पालनीयो भवद्भिः सर्व्वान एवं भावीनः पार्थिवेन्द भूयो भूयो याचते रामचन्द्रः ॥१४॥ तस्मात्। अस्मदन्वयजा भूपा भावी भूपतयश्च ये। तेषामहं करे लग्नः पालनीयं इद सदा ॥१५॥ अस्मद्वंशे परीक्षीणे यः कश्चिन् नृपति र्भवेत् तस्याहं करे लग्नोस्मि शासनं न व्यतिक्रमेत् ॥१६॥ वहुभिर्व-सुधा भुक्ता राजकैः सगरादिभिः यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य तदा फलं ॥१७॥ षष्टि वर्ष सहस्त्राणि स्वर्गे तिष्ठति दानदः आच्छेत्ता चानुमंता च तान्येव नरकम् वशेत् ॥१८॥ स्व दत्तं पर दत्तं वा देव दायं हरेत यः स विष्टायां कृमिर्भुत्वा पितृभिः सह मज्जति ॥१९॥ शून्याटवो व्यतोयासु शुष्क कोटर वासिनः। कृष्णा हयाभि जायंते देव दायम् हरंति ये ॥२०॥ मङ्गलं महा श्रोः। प्राग्वाट वंशे धरणिग्ग नाम्नः सुनो महा मात्यवरः सुकर्मा वभूव दूताः पूतिमा निवासो लक्ष्मीधरः श्री करणे नियोगी ॥२१॥ आसीत् स्वच्छ मला मनोरथ इति प्राग् नैगमानां कुले शास्त्र ज्ञान सुधारस प्लवित धिष्टज्जो भवत वासलः। पुत्रस्तस्य वभूव लोक वसनिः श्री श्री धरः श्री धरे सूपासित रचयांचकार लिलिखे चेदं महा शासनं ॥२२॥ स्व हस्तोयं महाराज श्री अल्हण देवस्य।

तामापत्र (महाजनों के पास)

(810)

ॐ स्वस्ति ॥ श्रिये भवंतु वो देवा ब्रह्म श्रीधर शंकराः । सदा विरागवंतो ये जिना जगति विश्रुताः ॥१॥ शाकंभरी नाम पुरे पुरासी च्छ्री चाहमानान्वय लब्ध जन्मा। राजा महाराज नतांह्रि युग्मः ख्यातो वनौ वाक्पति राज नामा ॥२॥ नड्डूले समाभूत्तदीय तनयः श्री लक्ष्मणो भूपति स्तस्मात्सर्व्व गुणान्वितोः नृपवरः श्री शोभिताख्यः सुतः। तस्मा च्छ्री बलिराज नाम नृपतिः पश्चात् तदीयो महो ख्यातो विग्रह पाल इत्यभिधया राज्ये पितृव्योऽभवत् ॥३॥ तस्मित्तीव्र महा प्रताप तरणिः पुत्रो महेंद्रो भवत्तज्जा च्छ्री अणहिल्ल देव नृपतेः श्री जेंद्रराजः सुतः। तस्माद्दुर्द्धर वैरि कुंजर बध प्रोत्ताल सिंहोपमः सत्कीर्त्या धवलाली कृताखिलजग च्छ्री आशराजो नृपः ॥४॥ तत्पुत्रो निज विक्रमार्जित महाराज्य प्रतापोदयो यो जग्राह जयश्रिय रण भरे व्यापाद्य सौराष्ट्रकान्। शौचाचार विचार दानव सति नड्डूल नाथो महा संख्योत्पादित वीर वृत्तिरमलः श्री अल्हणो भूपतिः ॥५॥ अनेन राज्ञा जन विश्रुतेन। राष्ट्रौड वंश जवरा सहुलस्य पुत्री अन्नल्ल देवीरिति शील विवेक युक्ता। रामेण वै जनकजेव विवाहिता सौ ॥६॥ आभ्यां जाताः सुपुत्रा जगाधयो रूप सौंदर्य युक्ताः। शस्त्रैः शास्त्रैः प्रगल्भाः प्रवर गुणः गणास्त्यागवन्तः सुशीलाः ज्येष्ट श्री केल्हणाख्य स्तदनु च गज सिंह स्तथा कीर्ति पालो। यद्वन्नेत्राणि शंभो स्त्रि पुरुष वदथामीजने बंदनीयाः ॥७॥ मध्यादमोसां परिवारानथो ज्येष्ठोगंजः क्षोणि तले प्रसिद्धः। कृतः कुमारो निज ज्य धारी श्री केल्हणः सर्व्व गुणोरूपेतः ॥८॥ आभ्यां राज कुल श्री आल्हण देव र श्री केल्हण देवाभ्यां राजपुत्र श्री कोर्त्ति पालस्य प्रसादे दत्त नडूलाई प्रतिवद्ध दश ग्राम ततोराज पुत्र श्री कीर्त्तिपालः। संवत् १२१८ श्रावण वदि ५ सोमे॥ अद्येह नड्डुले स्नात्वा धौतवाससी परिधाय तिलाक्षत कुश प्रणयिनं दक्षिण करं कृत्वा

देवानुदकेन संतर्प्य । वहलतम तिमिर पटल पाटन पटीयसो निःशेष पातक पंक प्रक्षालनस्य दिवाकरस्य पूजां विधाय । चराचर गुरुं महेश्वरं नमस्कृत्य । हुत भुजि होम द्रव्याहुती र्दृत्वा नलिनी दल गत जल लव तरलं जीवितव्यमाकलय्य । ऐहिकं पारत्रिकं च फलमंगीकृत्य स्व पुण्य यशोभि वृद्धये शासनं प्रयच्छति यथा ॥ श्री नडूलाई ग्रामे श्री महावीर जिनाय नडूलाई द्वादश ग्रामेषु ग्रामं प्रति द्वौ द्रम्मौ स्नपन विलेपन दीप धूपोपभोगार्थं । शासने वर्षं प्रति भाद्रपद मासे चंद्रार्क्क क्षिति कालं यावत् प्रदत्तौ ॥ नड्डूलाई ग्राम । सूजेर । हरिजी कविलाडं । सोनाणं । मोरकरा । हरचंदं माहाड । काणसुवं । देवसूरो । नाडाड मडवड़ो । एवं ग्रामाः एतेषु द्वादश ग्रामेषु सर्व्वदाप्यस्माभिः शासने दत्तौ । एभिर्ग्रामैरधुना संवत्सरं लगित्वा सर्व्वदापि वर्षं प्रति भाद्र पदे दातव्यौ । अत ऊर्द्धं केनापि परिपंथना न कर्त्तव्या । अस्मद्वंशे व्यतिक्रांते योऽन्य कोपि भविष्यति तस्याहं करे लग्नो न लोप्यं मम शासनं । षष्ठि वर्ष सहस्त्राणि स्वर्गो तिष्ठति दायकः । आच्छेत्ता चानुमंता च तान्येव नरके वसेत् ॥ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमि र्तस्य तस्य तदा फलं ॥ स्व हस्तोयं महाराज पुत्र श्री कीर्त्ति पालस्य ॥ नैगमान्वय कायस्थ साढनप्रा शुभं करः दामोदर सुतो लेखि शासनं धर्म्म शासनं ॥ मंगलं महा श्रीः ॥

(S41)

संवत् १२१३ वर्षे मार्गा वदि १० शुक्रे ॥ श्रीमदणहिल्ल पाटके समस्त राजा वली समलंकृत परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर उमापति वर लब्ध प्रसाद प्रौढ प्रताप निज भुज विक्रम रणं गण विनिर्जित शाकंभरी भूपाल श्री कुमार पाल देव कल्याण विजय राज्ये । तत्पाद पद्मोपजीविनि महामात्य श्री महट देव श्री श्री करणादौ सकल मुद्रा व्यापारान्परि पंथयति यथा । अस्मिन् काले प्रवर्त्तमाने पोरिन्य चोहाणान्वये महाराज० श्री योगराज स्तदे तदीय सुत नंजात महामंडलीकः श्री ब्रम्म

राजस्तदस्य सुत संजात ऽनेक गुण गणालंकृत महा मंडलीक० श्री मता प्रताप सिं शासन प्रयच्छति यथा। अत्र नदूल डागिकायां देव श्री महावीर चैत्ये। तथाऽरष्ट-नेमि चैत्ये शील बंदडो ग्रामे श्री अजित स्वामि देव चैत्ये एवं देव त्रयाणां स्वीय धर्म्मा-र्थे वदर्य मंडपिका मध्यात् समस्त महाजन भट्टारक ब्राह्मणादय प्रमुख प्रदत्त त्रिहाइको रूपक १ एकं दिनं प्रति प्रदातव्यामदं। यः कोपि लोपियति सो ब्रह्महत्या गो हत्या सहस्रेण लिप्यते। यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य तदा फलं। बहुभि-र्वसुधा भुक्ता राजभिः। यः कोपि बालयति तस्याहं पाद लग्न स्तिष्टामीति। गौडान्वये कायस्थ पण्डित० महीपालेन शासनमिदं लिखितं।

नाडलाई।

वर्त्तमानमें मारवाड़के देसूरी जिलेके नाडौलके पास एक छोटासा गांव है परन्तु प्राचीन कालमें यह एक बड़ा आबादी नगर था और वही स्थान है कि-

संवत दश दाहोतरे बदिया चोरासी वाद।
खेड नगर थी लाबिया, नारलाई प्रासाद ॥१॥

यहां पर बहुतसे प्राचीन जैन मंदिर वर्त्तमान हैं।

श्री आदिनाथजी का मंदिर।

(842)

संवत् ११८७ फाल्गुन सुदि १४ गुरुवार श्री षंडेरकान्वय देशी चैत्य देव श्री महावीर दत्तः। मोरकरा ग्रामे घाणक तैल बल मध्यात् चतुर्थ भाग चाहुमाण पत्तंरा सुत विंसराकेन कलसो दत्तः॥ रा० वाच्छलय समेत। साखिय भण्डौ नाग सिउ। ऊतिवरा

वीट्ठुरा पोसरि। लष्मणु। वहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजिभिः सागरादिभिः। जस्य जस्य यदा भूमि। तस्य तस्य तदा फलं ॥१॥

(843)

ॐ॥ संवत् ११८९ माघ सुदि पंचम्यां श्री चाहमानान्वय श्री महाराजाधिराज रायपाल। देव तस्य पुत्रो रुद्रपाल अमृत पालौ। ताभ्यां माता श्री राज्ञी मानल देवी तया नदूल डागिकायां॥ सतां परजतीनां राजकुल पल मध्यात् पलिका द्वयं। घाणकं प्रति धर्म्माय प्रदत्त भं० नागसिव प्रमुख समस्त ग्रामीणक। रा० त्तिमटा वि० सिरिया वणिक पोसरि। लक्ष्मण एते साखिं कृत्वा दत्तं। लोपकस्य यद्दु पापं गो हत्या सहस्रेण। ब्रह्म हत्या सतेन च। तेन पापेन लिप्यते सः॥ श्री॥

(844)

ॐ॥ संवत् १२०० जेष्ठ सुदि ५ गुरौ श्री महाराजाधिराज श्री राय पाल देव राज्ये ---हास-- समाए रथयात्रायां आगतेन। रा० राजदेवेन। आत्म। पाइला मध्यात् सर्व्व साउत पुन्न विंसोपको दत्तः॥ आत्मीय घाणक तेल वल मध्यात्। माना निमित्तं पलिका द्वयं। प्ली २ दत्तः॥ महाजन ग्रमीण। जन पद समस्ताय। धर्म्माय निमित्त विंसोपको पलिका द्वयं दत्तं॥ गो हत्याना सहस्त्रेण ब्रह्म हत्या सतेन च। स्त्री हत्या भ्रूण हत्या च जतु पापं तेन पापेन लिप्यते सः॥१॥

(845)

संवत् १२०० कार्त्तिक वदि १ रवौ महाराजाधिराज श्री राय पाल देव राज्ये। श्री नदूल डागिकायां रा० राजदेव ठकुरायां। श्री नदूला इय महाजनेन सर्वैं मिलित्वा श्री महावीर चैत्ये। दानं दत्तं। घृत तैल चीवड़ नाि पित पाइल प्रति। क॰ धान ट्र-

नर्मापि तद्रोणं प्रति मा० ॱ२कपास लोह गुढर षाड हींगु माजीठा तौल्ये घडी प्रति । पु०१
पूगहरी तांक प्रमुख गणितैः । सहस्रं प्रति । पुगु १ एततु महाजनेन चेतरेण धर्म्माय
प्रदत्तं लोपकस्य जतु पापं । गो हत्या सहस्रेण ब्रह्महत्या शतेन च तेन पापेन लिप्यते सः ॥

(846)

ॐ ॥ संवत् १२०२ आसोज बदि ५ शुक्रे । श्री महाराजाधिरान श्री रायपाल देव
राज्ये प्रवर्त्तमाने । श्री नदूल डागि कायां । रा० राजदेव ठकुरेण प्रवर्त्तमानेन । श्री महा०
वीर चैत्ये साधुतपोधन निष्ठार्थे । श्री अभिनव पुरीय वदायर्या । अत्रे षु समस्त वणजार
केषु । देसी मिलित्वा वृषभ भरित । जतु पाइला्ल गमाने । ततु वीसं प्रति । रुआ २
किराड उआ । गाडं प्रति रु० १ वणजारकै धर्म्माय प्रदत्तं ॥ लोपकस्य जतु पापं गो हत्या
सहस्रेण ॥ ब्रह्म हत्या सतेन'। पापेन । लिप्यते सः ।।

(847)

संवत् १४८६ वर्षे अषाढ़ बदि ९ नाडलाई रीमाउहीत को-निसति को तेल सेर० ॥
दीधे छूटि सुपासना श्री संघ मतं दिना १ प्रत देस ।

(848)

१५६८ वीरम ग्राम वास्तव्य श्री संघेन पक्षे

(849)

सं० १५६९ वर्षे । कुतबपुरा पक्षे तपागच्छाधिराज श्री इन्द्र नन्दि सूरि गुरूपदेशात्
मुंजिगपुर श्री संघेन कारिता देव कुलिका चिरनन्दतात् ॥

(850)

सं० १५७१ वप कुतवपुरा तपागच्छाधिाज श्री इन्द्र नन्दि सूरि शिष्य श्री प्रमोद
न्दर सूरराज गुरुपदेशात् चम्पकं दुर्ग्ग श्री संघेन करापिता देव कुलिका चिरं नन्दतात

(851)

सं० १५७१ वर्षे कुतबपुरा पक्षे तपागच्छाधिराज श्री इन्द्र नंदि सूरि शिष्य प्रमोद सुन्दर सूरि गुरुणामुपदेशात् पत्तनोय श्री संघेन कारिता देव कुलिका चिरं जीयात् ॥

(852)

श्री यशोभद्र सूरि गुरुपादुकाभ्यां नमः। संवत् १५९७ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे षष्ठ्यां तिथौ शुक्र वासरे पुनवसु ऋक्ष प्राप्त चंद्र योगे श्री संडेर गच्छे कलिकाल गौतमावतारः समस्त भविक जन मनोंबुज विबोधनैक दिन करः सकल लब्धि विश्रामः युग प्रधानः जितानेक वादीश्वर वृंदः प्रणतानेक नर नायक मुकुट कोटि घृष्ट पादारविंदः श्री सूर्य इव महा प्रसादः चतुः षष्टि सुरेन्द्र संगीयमान साधुवादः। श्री षंडेरकीय गण बुधावतंसः सुभद्रा कुक्षि सरोवर राजहंसः यशोवीर साधु कुलांबर नभो मणिः सकल चारित्रि चक्रवर्ति चक्र चूड़ामणिः भ० प्रभु श्री यशोभद्र सूरयः तत्पट्टे श्री चाहुमान वंश श्रृङ्गारः लब्ध समस्त निरवद्य विद्या जलधि पारः श्री बदरा देवी दत्त गुरु पद प्रसादः स्व विमल कुल प्रबोधनैक प्राप्त परम यशो वादः भ० श्री शालि सूरि स्त० श्री सुमति सूरिः त० श्री शांति सूरिः त० श्री ईश्वर सूरिः। एवं यथा क्रममनेक गुण मणि गण रोहण गिरीणां महा सूरीणां वंशे पुनः श्री शालि सूरिः त० श्री सुमति सूरिः तत्पट्टालंकार हार भ० श्री शांति सूरि वराणां सपरिकराणां विजय राज्ये ॥ अथेह श्री मदेपाट देशे। श्री सूर्य वंशीय महाराजाधिराज श्री शिला दित्य वंशे श्री गुहिदत्त राउल श्री वप्पाक श्री खुमाणादि महाराजान्वये राणा हमीर श्री षेत सिंह श्री लखम सिंह पुत्र श्री मोकल मृगांक वंशोद्योतकार प्रताप मार्त्तंडा- वतारः आ समुद्र मही मंडला खंडलः अतुल महाबल राणा श्री कुम्भकर्ण पुत्र राणा श्री राय मल्ल विजय मान प्राज्य राज्ये तत्पुत्र महाकुमार श्री पृथ्वी राजानुशासनात्। श्री उकेश वंशे राय जडारो गोत्रे राउल श्री लाखण पुत्र मं० दूदवंशे मं० मयूर सुत मं० सादूल स्तत्पुत्राभ्यां मं० सीहा समदाभ्यां सद्बांधव मं० कर्मसीधा राल्हाख्यादि मुख्य कुटुम्ब

युताभ्यां श्री नंदकुलवत्यां पुर्यां सं० ९६४ श्री यशोभद्र सूरि मंत्र शक्ति समानीतायां त० सायर कारित देव कुलिकाद्युद्धारितः सायर नाम श्री जिन वत्यां श्री आदीश्वरस्य स्थापना कारिता कृता श्री शांति सूरि पट्टे देव सुंदर इत्यपर शिष्य नामभिः आ० श्री ईश्वर सूरिभिः। इति लघु प्रशस्तिरियं लि० आचार्य श्री ईश्वर सूरिणा उत्कीर्णा सूत्रधार सोमाकेन शुभं ॥

(853)

संवत् १६७४ वर्षे माघ वदि १ दिने गुरु पुष्य योगे उसवाल ज्ञाती भण्डारी गोत्रे० सायर तुत्र साहल तत पु० समदा लषा धर्मा कर्मा सोहा लखमदा पु० पहराज प्रद मान गम भार्या तत् पु०। भीमा मं पहराज पुत्र कला मं० नगा पुत्र काजा मं० पदमा पुत्र जईचन्द्र मं भीमा पुत्र राजसी मं वाला पुत्र संकर उसबालः जैचन्द्र पुत्र जस चंद जादव। मं० सिवा पुत्र पूंजा जेठा संयुतेन श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छाधिराज भटा० श्री हीर विजय सूरि तत्पटालंकार श्री विजयसेन सूरि ततपटा-लंकार भटारक श्री विजय देव सूरिभिः।

(854)

महाराजाधिराज श्री अभय राज राज्ये संवत् १७२१ वर्षे ज्येष्ट सुदि ३ रवौ श्री नडुलाई नगर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय वृ० सा। जीवा भार्या जसमादे सुत सा। नाथाकेन श्री मुनि सुव्रत विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं च। भट्टारक श्री हीर विजय सूरिभिः।

(855)

संवत् १७३९ वर्षे वैशाख सुदि २ दिने ऊकेश ज्ञात १ वोहरा काग गोत्र साह ठाकुर सी पुत्र लाला हेत सुवर्णमये कलस करापितं श्री आदिनाथजी सेतरभेद पूजा गुहिलेब संप्रति प्रतव (प्रतिष्ठितं) माणिक्य विजै ग्यि० जित विजय शिष्य ॥ कुश विजय उपदेशात् शुभं भूयात्।

(856)

संवत् १६८६ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे शनि पुष्य योगे अष्टमी दिवसे महाराणा श्री जगत सिंह जी विजय राज्ये जहांगीरी महा तपा विरुद धारक भट्टारक श्री विजय देव सूरीश्वरोपदेश कारित प्राक प्रशस्ति पट्टिका ज्ञात राज श्री संप्रति निर्म्मापित श्री जूषल पर्व्वतस्य जीर्ण प्रासादोद्धारेण श्री नडुलाई वास्तव्य समस्त संघेन स्वश्रेयसे श्री श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं च पातशाह श्री अकब्बर शाह प्रदत्त जगद्गुरु विरुदधारक तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री श्री श्री श्री श्री हीर विजय सूरीश्वर पट्ट प्रभाकर भ० श्री विजय सेन सूरीश्वर पट्टालंकार प्रभु श्री विजयदेव सूरिभिः स्व पद प्रतिष्ठिताचार्य श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिवार परिवृत्तैः श्री नडुलाई मंडन श्री जूखल पर्व्वतस्य प्रासाद मूलनायक श्री आदिनाथ विंवं ॥ श्री ॥

श्री नेमिनाथजी का मंदिर।

(857)

ओं नमः सर्व्वज्ञाय ॥ संवत् ११९५ आसउज वदि १५ कुजे ॥ अद्येह श्री नडूलडागिकायां महाराजाधिराज श्री रायपाल देवे। विजयीराज्यं कुर्व्वतस्ये तस्मिन काले श्री मदुर्जित तीर्त्थः श्री नेमिनाथ देवस्य दीप धूप नैवेद्य पुष्प पूजार्थं गुहिलान्वयः। राउत उधरण सूनुना भोक्तारि १ ठ० राजदेवेवन स्व पुण्यार्थं स्वीयादान मध्यात् मार्गे गच्छता नामा गतानां वृषभानां शेकेषु यदा भाव्यं भवति तन्मध्यात् विंशतिमो भागः चंद्रार्कं यावत् देवस्य प्रदत्तः ॥ अस्मद्वंशीयेनान्येन वा केनापि परिपंथना न करणीया ॥ अस्मदत्तं न केनापि लोपनीयं ॥ स्वहस्ते पर हस्ते वा यः कोपिं लोपयिष्यंति। तस्याह करे लग्नो न लोप्य मम शासनमिदं ॥ लि० पांसिलेन ॥ स्व हस्तोयं साभिज्ञान पूर्व्वक राउ० राज देवेन मतु दत्तं ॥ अत्राहं साक्षिण ज्योतिपिक दूदू पान्नुना गूगिना ॥ तथा पला० पाला पृथिंत्रा १ मांगुला ॥ देवता। रापसा ॥ मंगलं महा श्रीः ॥

(858)

ओं ॥ स्वस्ति श्री नृप विक्रम समयातीत सं० १४४३ वर्षे कार्त्तिक वदि १४ शुक्रे श्री नडुलाई नगरे चाहुमानान्वय महाराजाधिराज श्री वणवीर देव सुत राज श्री रणवीर देव विजय राज्ये अत्रस्थ स्वच्छ श्री मद्वृहद्गच्छ नभस्तल दिनकरोपम श्री मानतुंग सूरिवंशोद्भव श्री धर्म्मचन्द्र सूरि पट्ट लक्ष्मी श्रवणो उत्पलाय मानैः श्री विनय चंद्र सूरि भिरल्प गुण माणिक्य रत्नाकारस्य यदुवंश शृंगार हारस्य श्री नेमीश्वरस्य निराकृत जगद विषादः प्रसाद समुद्धधे आचंद्रार्कं नन्दतात् ॥ श्री ॥

कोट सोलंकी।

(859)

ॐ ॥ स्वस्ति श्री नृप विक्रम कालातीत संवत् १३९४ वर्षे चैत्र सुदि १३ शुक्रे श्री आसल पुरे महाराजाधिराज श्री वणवीर देव राज्ये राउत माल्हणान्वये राउत सोम पुत्र राउत वांबी भार्या जाखल देवि पुत्रेण राउत मूल राजेन श्री पार्श्वनाथ देवस्य ध्वजारोपण समये राउत बाला राउत हाथा कुमर लुभा नीवा समक्ष मातृ पित्रोः पुण्यार्थं ढिकुय उवाडी सहितः प्रदत्तः आचंद्रार्क्कं यावदियं व्यवस्था प्रमाण ॥ बहुभिर्व सुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥ शुभं भवतु ॥ श्री ॥

धानेराव।

(860)

संवत् १२१३ भाद्रपद सुदि ४ मंगल दिने श्री दंडनायक बैजल्ल देन राज्ये श्री वंश

गच्छीय राउत महण सिंह भुक्ति वंतंह उवाट मध्यात श्री महावीर देव वर्षं प्रति द्राम २ खाज सूणो दत्ताः जस्य भूमिः तस्य तदांजत्य। सेठ रायपाल सुत राव राजमल्ल महाजन रक्ष पाल विनाणि यस्स दिवहिं।

बेलार।

मारवाड़ के देसूरी जिलेके घानेराव नामक स्थानके समीप यह ग्राम है।

श्री आदिनाथ जी का मंदिर।

(८८१)

ॐ संवत १२३५ वर्षे श्रे० साविग भार्या माल्ही तत्पुत्रा आववीर पदाक आयधराः आववीर पुत्र साल्हण गुण देवादि समन्वित आत्म श्रेयसे लगिकां कारितवान।

(८८२)

ॐ संवत १२३५ वर्षे फाल्गुन वदि ७ गुरौ [illegible] श्री महाराज [illegible] देव कल्याण विजय राज्ये घाघल दे वैस्ये श्री नाणकीय गच्छे श्री शांति सूरि सन्ताने श्रावक। आसीद् धर्कट वंश मुख्य उवसः साहुः पुरा गुरुधीम्न्दूगोत्रस्य त्रिभुवनां ममज्जनि केहि सपार्श्वाभिधः। पुत्रौ तस्य बभूवतुः क्षितितले विख्यात कीर्ति भुवः पूर्णचन्द्र प्रथमो बभूव सगुणी रामाभिधस्त्वापरः। तथान्यः॥ यो सर्वदा पदार्थेन कृत सन्निधानि दयालु र्मुहु रायादेव इति स्थितौ तनमवत पुत्रोस्य पांचाभिधः। तत्पुत्रो यति शेखरैः प्रति दिनं गोवाक नाना स्तुतैः श्रियाचार विशारदो जिन महोद्धारं प्रदर्शी पांचजनि [illegible]

कदाचिदन्यदा चित्ते विचिंत्य चपलं धनं। गोष्ट्याच राम गोसाभ्यां कारितो रंग मंडपः ॥३॥ भद्रं भवतु।

(863)

संवत १२३८ पौष वदि १० वला नागू पुत्र श्रे० उद्धरण भार्यया श्रे० देवणाग पुत्रिकया उत्तम परम श्राविकया स्व श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ देव चैत्य मडपे स्तंभोयं कारितः।

(864)

अ ॥ संवत १२३८ पौष वदि १० श्रे० आंब कुमार पुत्र श्रे० धवल भार्यया वला० नागू पुत्रिकया संतोस परम श्राविकया स्व श्रेयार्थं श्री पा।

(865)

ॐ सं० १२६५ वर्षे थांथां भार्या तिण देवि तत्पुत्रिका पउसिणि पुत्र गोसा भार्या लक्ष्मी श्री पाल्हाया – – – माल्हा – – – – भार्या श्री ति – – – – भार्या – – – न भार्या पूरां श्री गोसाकेन सकल वंधु सहितेन सोहि।

(866)

ॐ गस्छे श्री नाणकाभिख्ये सुधर्म्म सुत वल्हणः। अभुच्चारित्र संयुक्तो वाल भद्रो मुनिः पुरा ॥१॥ तच्छिष्यो हरिचंद्राह्वो मुनिचन्द्र – – परः। तदन्वये धनदे - - पार्श्व दे। घोष सोमकौ ॥ २ ॥ पार्श्व देवः स्वशिष्येन वीर चंद्रेण संयुतः। लगिकां कारयामास गुरु कंद विशुद्धये ॥ ३ ॥

(867)

ओं संवत १२६५ वर्षे धर्कट वंशे भार्या जिन देवि तत्पुत्रा पंचगोसा० सदेव भार्या मति तत्सुत थांथां काल्हा राल्ह घोर सीह पाल्हण प्रमुख गोसा पुत आम्र

वीर आमं जालं कांल्हा पुत्र लक्ष्मीधर महीधर राल्हण पुत्र आखे शूर घोरहसी पुत्र देव जस पाल्हण पुत्र घण चंडा रथ चंडादि स्वकलत्र समन्विताः स्व श्रेयोर्थं स्तंभ लगामिमं कारापयामासूः।

(868)

ओं संवत १२६५ वर्षे उंसभ गोत्रे श्रेष्ठि पार्श्व भार्यां दूल्हेवि तत्पुत्र मगाकेन भार्या राजमति राल्हू तस्याः पुत्राश्चत्वारी लक्ष्मीधर अभय कुमार मेघ कुमार शक्ति कुमार लक्ष्मीधर पुत्र वीर देव अभय दे पुत्र सर्वदेवादिषु कुल कुटुंब सहितेन स्तंभन माकारितेदमिति - - - ।

(869)

ॐ संवत १२६५ वर्षे श्री नाणकीय गच्छे धर्कट गोत्रे आसदेव तत्सुत जागू भार्या-थिर मति तत्सुत गाहड़स्तस्य भार्या सातु तत्पुत्र आजमटादेः समुत्तिंका तूरि काम कारयदात्म श्रेयसे ॥छ॥

फलोदी ।

यह स्थान मारवाड़के मेड़ता नगरके पास है।

बड़े जैन मंदिरके देहलीके पत्थरों पर।

(870)

संवत् १२२१ मार्गसिर सुदि ६ श्री फलवर्द्धिकायां देवाधिदेव श्री पार्श्वनाथ चैत्ये श्री प्राग्वाट वंशीय रोपि मुणि मं० दसाढ़ाभ्यो आत्म श्रेयार्थं श्री चित्रकूटीय सिलफट सहितं चन्द्रको प्रदत्तः शुभं भवतु ॥

(871)

चैत्यो नरवरे येन श्री सल्लक्ष्मट कारिते । मंडपो मंडनं लक्ष्या कारितः संघ भास्वता ॥ १ ॥ अजयमेरु श्री वीर चैत्ये येन विधापिता श्री देवा बालकाः ख्याताश्च-तुर्विंशति शिखराणि ॥२॥ श्रेष्ठी श्री मुनि चंद्राख्यः श्री फलवर्द्धिका पुरे उत्तान पट्ट श्री पार्श्व चैत्येऽचीकरदद्भुतं ॥३॥

कोकिन्द ।

यह प्राचीन स्थान भी मारवाड़के मेड़ता जिलेमें है

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

(872)

ॐ॥ संवत् १२३० आषाढ़ सुदि ९ श्री किष्कंधर दिवा प्रमुख वाला मलण वास ददिवा रावधी विधि चैत्ये मूल नायकः श्री आनन्द सूरि देशनया श्रे ॥१॥

(873)

ॐ॥ संवत १२३० आषाढ़ सुदि ९ किष्कंध विधि चैत्य मूल नायकः श्री आनंद सूरि देशनया श्र० धाघल श्रे० वाला लण दास ददिवा पीवर दिवा प्रमुख श्राक - - ।

(874)

ॐ॥ नमो वीतरागाय ॥ श्री सिद्धिर्भवतु ॥ स्वस्ति श्रियामास्पदमापसिद्धिर्ज-यस्य भवत् प्रसिद्धि । सोऽस्तु श्रिये स्फूर्ज्जदनंत रिद्धिरादीश्वरः शारद भास्व ॥१॥ यमार्हता शैव मताऽवलंबा । हिन्दु प्रकाराय वन प्रकाराः । सर्व्वेऽप्यमी

मोद भृतो भजंते। युगादि देवो दुरितं सहंतु ॥२॥ दूर्व्वा प्रसारः सवट प्रसारः। कच्छ प्रसारो व्रनति प्रसारः। इमे समे कोटिलमेऽपिभागेऽपत्य प्रसारस्य न यांति यस्य ॥३॥ गीर्व्वाण सालो नहि काष्ठ भावात्। तथा पशुत्वान्नहि कामधेनुः। मृदां विकारा-न्नहि काम कुंभश्चिंतामणिर्न्नैव च कर्क्करत्वात् ॥४॥ सूर्या न तापाकुलता करत्वात्। सुधाकरोनैव कलंकवत् त्वात् ॥ सुवर्ण शैलो न कठोर भावात्। नाभ्यंगजातेन तुला-मुपैति ॥५॥ दुग्धो दधौ संस्थित तोय विंदून। पुष्पोच्चयान्नंदन कानन स्थान्। करोत्करान् शारद:चन्द्र सत्कान्। कश्चिन्मिमीतेन गुणान् युगादेः ॥६॥ यस्माद् जगत्यां प्रभवंति विद्याः। सुर्पव्वलोकादिव काम गव्यः। द्रव्योऽपि वांच्छाधिक दान दक्षाः। पुष्णातु पुण्यानि स नाभि सूनुः ॥७॥ यतोंतराया स्त्वरितं प्रणेशु। मृगाधिराजा दिव मार्ग्गः पूगाः। यद्वा मयूरादि वले लिहानाः। स मारु देवो भवताद्व विभूत्यै ॥८॥ राठोड वंश व्रतति प्रताना नीकोपमो नीक निकाय नेता। राजाधिराजो जनि मल्ल देव। स्तिरस्कृतारि प्रति मल्ल देवः ॥ ९ ॥ तस्मौरसस्सम जनिष्ट यलिष्ठ बाहुः प्रत्यर्थिता पनकदर्थन पर्व्व राहुः। श्री मल्लदेव नृप पट्ट सहस्त्र रश्मिः। श्री मानभूदुदय सिंह नृपः सरश्मिः ॥१०॥ कम धज कुल दीपः कांति कुल्या नदीप। स्तनु जित मधु दीपः सौम्यता कौमुदीपः। नृपतिरुदय सिंहा स्व प्रतापास्त सिंहः सितरद मुचुकुंदः सर्व्व नित्या मुकुन्दः ॥११॥ राज्ञां समेषामय मेव वृद्धो। वाच्यस्तद न्येरथ वृद्ध राजः। यस्येति शाहिर्विरुदं समदत्वा। दकव्बरो वर्व्वर वंश हंसः ॥१२॥ तत्पट्ट हेम्नः कप पट्ट शोभा। मवीभरत्संप्रति सूर सिंहः। यो माप पेपं द्विपतः पिपेप। निर्मूल काप कपितार्त्तितांह्रिः ॥१३॥ राज्य श्रियां भाजन मिद्ध धामा। प्रताप मंदी कृत चद्र धामा। संपन्न नागावलि नाव सिंहः पृथ्वी पती राजति सूर सिंहः ॥१४॥ प्रतापतो विक्रमव् द्ष सूर्य। सिंही गतौ व्योम वनं च भीतौ। अन्वयतो नाम जगाम सूर्य। सिंहे तियः सर्व्व जन प्रसिद्धं ॥१५॥ यदीय सेनोच्छलितै रजोभि। र्मलीमसांगो दिनसाधि नाथः। परो दया दस्त मिपेण मन्ये। स्नातुं प्रवेशं कुरुते विनत्रः ॥१६॥ अप्येक मीहेतन

शुद्ध वंशौ। धारै चक्रं तृप्ति युतो विशेषात्। स्वयं हतारातिं वसुन्धरा स्वो परिग्रहात्त द्रुहुता करस्सः ॥१७॥ तथापि राज्ञः परितोष भाजः। स्तुर्वंति विज्ञा विविधैः कवित्वैः। वहंति भक्तिं स्व कुटुंबलोका। अहो यशो भाग्य वशोपलभ्यं ॥१८॥ द्वाभ्यां युग्मं। सुरेष यद्वन्मघवा विभाति। यथैव तेजस्विषु चंड रोचिः। न्यायानुयायि ष्विव राम-चन्द्र। स्तथाधुना हिन्दुषु भूधवोयं ॥१९॥ द्रव्य जिनार्चोचित कुंकमादि दीपार्य मा जाद्यममारि घोषं। आचामलोम्लादि तपो विशेषं विशेषतः कारयते स्वदेशे ॥२०॥ ना पुत्र वित्ताहरणं न चौरी नन्या समोषो न च मद्य पानं। नाखेटको नान्य वशा निषेवे। स्यादि स्थितिः शासति राज्यमस्मिन् ॥२१॥ अभूद्दधानो युवराज मुद्रां तस्मात्कुमारो गर्जासिंह नाम्ना। गत्या गजोऽतीव बलेन सिंहस्ते नैव लेभे गर्जासिंह नाम ॥२२॥ श्री ओसवालान्वय वार्द्धि चन्द्रः। प्रशस्त कार्येषु विमुक्त तंद्रः। त्रिज्ञ प्रगेयो चितवाल गोत्रः पणेष्वपिस्वेष्व चलत्व गोत्रः ॥२३॥ आसीन्निवासो नगरांतरेव। प्रायः प्रभूतैर्द्र-विणैरुपेतः जगाभिधानो जगदीश सेवा। हेवाभिरामो व्यवहारि मुख्यः ॥२४॥ द्वाभ्यां युग्मं। विद्यापुरः सूरि सुवाचकानां। करे पुरे योधपुराभिधाने। दंतं प्रमाणाद्द्वया जगाख्यः सएष तुर्य व्रतमुच्चचार ॥२५॥ तदंगजन्मा जनित प्रमोदः पुण्यात्मनां पुण्य सहाय भावात्। विशिष्ट दानादि गुणैः सनाथो। नाथ्या भिधो नाथ समाप्त मानः ॥२६॥ तस्योज्वलस्फार विशाल शाला। भार्याभवद्गूजर दे सुनाम्ना। रूपेण वर्या गृह भार धुर्या। श्री देव गुर्वोः परिचर्य यार्या ॥२७॥ असूत सा पूर्व्व दिगेव सूर्यं। मुक्ता मणिं वंश विशेष यष्टिः। वज्रांकुरं रोहण भूमि केव। नापाभिधानं सुत राज रत्नं ॥२८॥ गुणैरनेकैः सुकृतै रनेकैः। लेभे प्रसिद्धिं भुवि तेन विष्वक्। तदर्थिनोन्येपि समज्जर्यंतु। गुणान्सपुण्यान्विधुवद्विशुद्धान ॥२९॥ तस्यासीन्नवलादे। वनिता वनितार सार रूप गुणा। शीलालंकृत रम्या गम्या नापाह्वये नैव ॥३०॥ आसाभिधानोह्यमृता-भिधश्व। सुधर्म्म सिंहोप्युदयाभिधोपि। सादूल नामेति च संति पंच। तयोस्तनूजा इव पांडु कुर्व्याः ॥३१॥ आसा भिधानस्य बभूव भार्या सरूप देवोति तयोः सुतौ द्वौ।

तयोरभूदादिम वीर दासो। लघुश्चिरंजीवित जीव राजः ॥३२॥ श्रृंङ्गे तरस्याऽमृत संज्ञितस्य। मृगे चणाऽस्मेलक्ष देभिधाना। सुता बभूतामनयोस्तथा द्वौ मनोहराख्यो पर वर्द्धमानः ॥३३॥ सदा मुदे धारल दे भिधाना। सुधर्म्म सिंहस्य सधर्म्मिणीति। कुटुंबिनी साउछ रंगदेवी। प्रिया बभूवोदय संज्ञितस्य ॥३४॥ इति परिवार युत स्त्वोज्जयंत शत्रुंजये व्यकृत यात्रां। निधि शर नरपति १६५९ संख्ये। वर्षे हर्षेण ना पाख्यः ॥३५॥ अर्बुद गिरि राण पुरे नारदपुर्यां च शिवपुरी देशे। योर्त्रां युग पट् पद पद। कला १६६४ मितेब्दे चकार पुनः ॥३६॥ श्रीविक्रमार्काद्दहतु तर्क पडभू। वर्ष १६६६ गते फाल्गुन शुक्ल पक्षे। तौ दंपती स्वो कुरुतः स्मतुर्य। व्रत तृतीया हनि रूप्य दानैः॥३७॥ दानं च शीलं च तयोपकार। स्तत्रयात्मकोयं शुभ योग आस्ते। नापाभिधान व्यवहारि मुख्ये। यथाहिलोके गुरु पुण्य पूर्णा ॥३८॥ भुजार्जितायाः निज चारु सपदो। न्यायः जिंतायाः फलमिष्टमिच्छता। वांणागपट् शीतगु १६६५ संख्य हायने। विधापित स्तेनहि मूल मंडपः ॥३९॥ चतुष्किके द्वेअपि पार्श्वयो द्वयो। नापा भिधानेन विधापिते इमे। पित्रोर्यशः कीर्त्ति रूपे इव स्वयोः। कर्त्ता द्वयं तोडर सूत्र धारकः ॥४०॥ विविध वादि मतं गज केसरी। कपट पंजर भंग कृते करी। भव पयोधि समुत्तरणे तरी। प्रबल धैर्य हरेर्वसनेदरी ॥४१॥ असम भाग्य पयस्त्वदसागरः। स्व गुण रंजित नायक नागरः। विजय सेन गुरु स्तप गच्छ राड्। विजयते जय तेज उदाहरः ॥४२॥ द्वाभ्यां युग्मं। तत्प [illegible] स्वयो विजयंते विजय सूरीशः। श्री [illegible] अनूचानाः ॥४३॥ तेषां निदेशेन [illegible] जिनालयेोय प्रतिमा वधूवरे। प्रतिष्ठिते वाचक [illegible] नागरैः ॥४४॥ [illegible] प्रभावः श्री विजय कुशल विबुध वरास्तेषां शिष्येणोदय [illegible] रमायि ॥४५॥ श्री सहज सागर [illegible] [illegible] त्कीर्णा वर तोडर सूत्रधारेण ॥४६॥

सेवाड़ी ।

मारवाड़के गोढ़वाड़ इलाकेके वाली जिलेके समीप यह प्राचीन स्थान है ।

श्री महावीर जी का मंदिर ।

(875)

[illegible] ॥ सं० ११६७ चैत्र सु० ६ महाराजाधिराज श्री अश्वराज राज्ये । श्री कटुक [illegible] [illegible] । समी पाटीय चैत्ये जगती श्री धर्म्मनाथ देवस्य नित्य पूजार्थं । [illegible] [illegible] पुत्राणि - - - पौत्रेण उत्तिम राज पुत्रेण उप्पल राकेन । मां गढ आंवल [illegible] [illegible] कुटुंब समं । पद्रांडा ग्रामे तथा मेद्र चा ग्रामे तथा [illegible] [illegible] [illegible] प्रति दत्तः जय हारक: ॥ एक यः कोपि लोपयिष्यति [illegible] [illegible] भारवाः सदा भविष्यंति । इति मत्वा प्रतिपालनीयं । यस्य [illegible] [illegible] । बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः ॥१॥ [illegible]

(876)

[illegible] परलोकारिणी शांतिः । विबुध पति विभुत [illegible] [illegible] जयति ॥१॥ भोगीन्द्र प्रतापाढ्य: श्री मदण हिल भूपति । [illegible] [illegible] मही ॥२॥ तत्पुत्रः चाहमाना नामन्वये नीति [illegible] [illegible] सौर्य समाश्रयः ॥३॥ तत्त नृजनता जातः प्रताप [illegible] [illegible] सूर्य वरः ॥४॥ ततः कटुकराजेति तत्पुत्रो [illegible] [illegible] विनिर्म्मितः ॥५॥ तद्भक्ती पत्तनं [illegible] [illegible] समीपतः ॥६॥ [illegible] विशुद्ध [illegible]

(२२७)

यशोदेवो बलाधिपः। राज्ञां महाजनस्यापि सभायामग्रणी स्थितः ॥७॥ श्री षंडेरक सद्गच्छे बंधूनां सुहृदां सतां। नित्योपकुर्व्वता येन न श्रांतं समचेतसा ॥८॥ तत्सुतो बाहडो जातो नराधिप जन प्रियः। विश्व कर्म्मेव सर्व्वत्र प्रसिद्धो विदुषां मतः ॥९॥ तत्पुत्रः प्रथितो लोके जैन धर्म्म परायणः। उत्पन्नः थल्लको राज्ञः प्रसाद गुण मंदिर ॥ १० ॥ दया दाक्षिण्य गांभार्य बुद्धिचिद्ध्यान संयुतः। श्री रत्नकटुक राजेन यस्य दानं कृतं शुभं ॥ ११ ॥ माद्येत्र्यंबक संप्राप्तौ वितीर्ण्णं प्रति वर्षकं। द्रम्माष्टकं प्रमाणेन थल्लकाय प्रमोदतः ॥१२॥ पूजार्थ्यं शांति नाथस्य यशोदेवस्य खत्तके। प्रवर्द्धयतु चंद्रार्क्कं यावदादत्तमुज्वलं ॥ १३ ॥ पितामहेन तस्येदं समीपाट्यां जिनालये। कारितं शांति नाथस्य विंबं जन मनोहरं ॥१४॥ धर्म्मेण लिप्यते राजा पृथ्वीं भुनक्ति यो यदा। ब्रह्महत्या सहस्रेण पातकेन विलोपयन् ॥१५॥ संवत् ११७२ ॥

(877)

ॐ ॥ संवत् ११९८ असौज यदि १३ रवौ अरिष्ट नेमि पूर्व दिशागां अपवरिका अग्रे भित्ति द्वार पत्रे घर्तुलभाते कर्त्तुं मम च गोष्ठ्या मिलित्वा निषेधः कृतः ॥ लिखित पं० अश्वदेवेन।

(878)

सं० १२४४ आषाढ वदि ९ रवौ श्री संभव देव फागुन सुदि ८ पद्म --- मल -- पधर --- ॥ ---- सुदि ११ जंसो --- हेतर [illegible] देव ॥ --- वदि १५ [illegible] ---- हेतु श्री वहेव ॥ --- कार्त्तिक वदि ४ मातु --- देव पार्श्व देव ॥ --- सुदि ५ रवौ --- प शांदव।

([illegible])

ॐ ॥ सं० १२५१ कार्त्तिक वदि १ रवौ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

निज गुरु श्री शालि भद्र सूरि मूर्त्ति पूजा हेतो श्री सुमति सूरिभिः। प्रदत्तात् वलाः ५ मास पाटकेने चके श्रयनीयाः ॥छ॥

(880)

॥ ॐ ॥ संवत् १२९७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ गुरौ बासहड़ वास्तव्य ऊजाजल गोत्रे श्रेष्ठि चांदा सुत नाना - - - - देव सधीरण सुत आस पाल गुण पाल सेहड़ सुत पूस देव साबूदेव पूसदेव सुत धण देव सहड़ भार्यां शीत पुत्रिका साजणि जाल्ह सती रण भार्या राहीअई - - - - सेहड़ भार्या अड्हव सूमदेव भार्या मदावति सावदेव भार्या प्रह्ल सिरि कुटुंब समुदायेन सेहड़ेन भार्या समन्वितेन देव कुलिका कारापिता ॥ मेद पुत्रिका देह साहुसा उसभ दासेन सुभं भवतु ॥

सांडेराव ।

यह भी मारवाड़के बाली जिलेमें है।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर ।

(881)

श्री षंडेरक चैत्ये पंडित। जिन चन्द्रेण गोष्ठियुतेन धीमता देव नाग गुरो मूर्त्ति कारिता थिरपाल मुक्ति बांछतां सं० ११४९ वैशाख वदि—।

(882)

सं० १२ - - वर्षे फागुण सुदि १४ गुरौ अद्येह श्री षंडेरक निवासी श्रेष्टि गुणपाल । गो - - - ला - - सुखमिणि नामिकाया। श्री महावीर देव चैत्ये चतुष्किका ।

(883)

ॐ॥ संवत १२२१ माघ बदि २ शुक्रे अद्येह श्री केल्हण देव विजय राज्ये। तस्य मातृ राज्ञी श्री आनल्ल देव्या श्री षंडेरकीय मूलनायक श्री महावीर देवाय चैत्र वदि १३ कल्याणिक निमित्तं राजकीय भोग मध्यात्। युगंधर्याः हाएल एकः प्रदत्तः। तथा राष्ट्रकूट पातू केल्हण तद्भ्रातृज उत्तमसीह सूद्रग काल्हण आहड आसल अणतिगादिभिः तला राभाव्ययस ? गटसत्कात्। अस्मिन्नेव कल्याण केद्र १ प्रदत्तः ॥१॥ तथा श्री षंडेरक वास्तव्य रथकार धणपाल सूरपाल जोपाल सिगडा अमियपाल जिसहड-देल्हणादिभिः चैत्र सुदि १३ कल्याणके युगंधर्याः हाएल एक १ प्र – – – –

(884)

सम्वत् १२३६ कार्त्तिक बदि २ बुधे अद्येह श्री नड्ले महाराजाधिराज श्री केल्हण देव कल्याण विजय राज्ये प्रवर्त्तमाने राज्ञी श्री जाल्हण देवि भुक्तो श्री षंडेरक देव श्री पार्श्वनाथ प्रतापतः थांया सुत राल्हाकेन भ्रा भ्रातृ पाल्हा पुत्र सोढा सुभकर रामदेव धरणि यशोहीष वर्द्धमान लक्ष्मीधर सहजिग सहदेव सहियगछा ? रासां धीरण हरिचन्द्र वर देवादिभिः युतेन स – – – परम श्रेयोर्थं विदित निज गृहं प्रदत्तः॥ राल्हाश सत्क मानुषै वसद्भिः वर्षं प्रति द्रा० एला ४ प्रदेया। शेष जनानां वसतां साधुभिः गोष्टिके सारा कार्य्या॥ संवत १२६६ वर्षे ज्येष्ट सुदि १३ शनौ सीयं मातृ धारमति पुनः स्तंभको उधृत। थांया सुत राल्हा पाल्हाभ्यां मातृ पद श्री निमित्त स्तंभको प्रदत्तः।

नाना

मारवाड़के बाली जिलेमें यह ग्राम है।

(885)

संवत १२०२ वैशाख सुदि १२ सोम दिने श्री महेंत सूरिभिः प्रतिष्ठितः समस्तः॥

(886)

संवत १४२९ माह वदि ७ चंद्रे श्री विद्याधर गच्छे मोढ ज्ञा० ठ० रतन ठ० अ ठं० लिहणा पुत्र मोल्द देव श्रेयसे भ्रातृ टाहाकेन श्री पार्श्व पंचतीर्थी का० प्र० श्री उ देव सूरिभि: ।

(887)

सं० १५०५ वर्षे माह वदि ९ शनौ श्री ज्ञावकीय गच्छे महावीर विंवं प्र० श्री शां सूरिभिः - - - - षभ ण जिन - - - भवतं

(888)

सं० १५०६ वर्षे माघ वदि ११ सा० दूदा वीर मं महिया - - - लहराज - - -

(889)

सं १५०६ वर्षे माघ वदि १० गुरौ गोत्र वेलहस ऊ० ज्ञातीय सा० रतन भार्या रतना दे पुत्र दूदा वीरम माह पादे पंलूणा देव राजादि कुटुम्ब युतेन श्रीवीर परिकरः कारित प्रतिष्ठितः श्री शांति सूरिभिः ।

(890)

॥ ॐ ॥ अथ संवत्सरे नृप विक्रमादित समयात संवत १६५९ भाद्र पद मासा शुक्ल पक्षे ७ सातमी तिथौ शनिवारे । श्री वैद्य गोत्रे । श्री सचिया किण्णोत्रजा । मंत्रीश्वर त्रिभुवन तत्पुत्र पूना० तत्पुत्र मुहता चांदा तत्पुत्र मु० षेतसी तत्पुत्र मुहता नीसल १ चाइमल २ वीसन पुत्र मुहता श्री उरजन तत्पुत्र मुहता पताग‍ढ़ सिवाणे साको करी । पिता पुत्र मुहता श्री नाराइण १ सादूल २ सूजा ३ सिंघा ४ सहसा ५ मुहता नारायण नु राणा श्री अमर सिंघ जी मया करेने गांव नाणो दीयो मुहतो नाराइण रहट १ चाइमल देव श्री महावीर नु सतर भेद पूजा सारु केसर दीवेल सारु दीधो

होंदूनां वरोस। उत्थापे तियेनु गाईरो--सु'स। तुरक उत्थापे तियेनुं सुयररी सुंस वले-----को उथाप जो---गांव नाणारो चढ़ियो गांव वीग्रलाणी--वो-सि-ए। इ जाएन-गांव-दम १ चेटियो----तको उथाप जो। वीजोको उथापसी तिणनु गदहड गाव मुहता श्री नारायण भार्या नवरंगदे तत्पुत्र सु० श्री राज-- जणयल--- दा पुत्री जपनी----नाराइण विजी भार्या नवलदे पुत्र जसवंत १ सहितं श्री--- गच्छै भट्टारक श्री सिद्ध सूरि विद्यमाने---।० श्री ----चंद शिष्य चांपा लिपितं। ए---जको---तिणु----।

लालराई।

मारवाड़के वाली जिलेके समीप इस ग्रामके एक प्राचीन खंडहर जैन मंदिरमें यह लेख है।

(४९१)

संवत् १२३३ वैशाख सुदि ३ संनाणक भोक्ता राज पुत्र लाखण पाल राज पुत्र अभय पाल तस्मिन राज्ये वर्त्तमाने चा० भीवड़ा पड़ि देह घती सू० आसधर समस्त सीर सहितैः खाड़ि सीर जव मध्यात् जवा से ४ गूजरी जात्रा निमित्त श्री शांति नाथ देवस्य दत्ता पुण्याय यः कोपि लुप्यते स पापो न छिद्यतेमंगल भवतू॥ तथा भड़िया उल अरहट्टे आसधर सीरोइय समस्त सीरण जवा हरोयु १ गूजर दृयात्रहि वीग्रहस्य पुण्यार्थ॥ १॥

(४९२)

ॐ॥ संवत् १२३३ ज्येष्ठ वदि १३ गुरौ द्येह श्री नड्डूले महाराजाधिराज श्री केल्हण देव राज्ये वर्त्तमानः श्री कीर्त्तिपाल देव पुत्रे सिनाणक भोक्ता राज पुत्र लाषण

पाल्ह राज पुत्र अभय पाल राज्ञी श्री महिबल देवि सहितैः श्री शांतिनाथ देव यात्रा निमित्तं भढिया उव अरघट उरहारि मध्यात् गूजर तृहार १ जवा ग्राम पंच कुल समक्षि एतत् - - - दानं कृतं पुण्याय साक्षि अत्र वास्त - - -द्रुगण - - - सौ० देवलये० समीपाटीय - - - पाजून आम्र - - - समक्ष आदानं - - - - मितस्य २ त - - - हस्या पालकेन लि - - - ११ ।

हठुंदी ।

मारवाड़ के गोड़वाड़ इलाके के बीजापुर के पास यह प्राचीन स्थान है ।

श्री महावीरजी का मंदिर ।

(893)

ॐ ॥ सं० १२९९ वर्षे चैत्र सुदि ११ शुक्रे श्री रत्न प्रभोपाध्याय शिष्यैः श्री पूर्ण चन्द्रोपाध्यायैः रालक द्वय शिखराणि च कारितानि सर्वानि ।

(894)

ॐ सं० १३३५ वर्षे श्राम्वण वदि १ सोमे ऽद्यह समीपाट्टी । मंडपिकायां भां पाहट उभां वां । पथरा महं सजन उ महं० धीणा उधण सीह उ० व० देव सिंह प्रभृति पंच कुलेन श्री राताभिधान श्री महावीर देवस्य नेचाप्रचयं ? वर्ष स्थितिके कृत द्र० २४ चतुर विंशति । द्रम्माः वर्ष वर्ष प्रति समी मंडपिका पंच कुलेन दातव्याः पालनीयश्च बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः यस्य यस्य - - - यदा भूमि तस्य तस्य तदा फलं शुभं भवतु ॥

(895)

सं० १३३६ वर्षे श्रेष्ठिको नाग श्र। श्रे - - अर सोहेन सय पक्षे दत्त द्र० उभयं द्र ३६ समीपाटी मडपिकायां व्याण्टपुय माण पंच कुलेन वर्ष वर्ष प्रति आचंद्रार्क - - यावत् दातव्याः। शुभमस्तु ॥

(896)

ओं नमो वीतरागाय संवत् १३४६ वर्षे श्रावण वदि ३ शुक्र दिने सहेड़ा ग्रामे महादपाल लभारावा कर्म सीहपा - - - -।

माताजीके मंदिरके स्तम्भ पर।

(897)

॥ ॐ ॥ नमो वीत रागाय ॥ संवत् १३०९ वर्षे प्रथम भाद्रवा वदि ९ गुरु दिने [illegible] श्री नडूल मंडले महाराज कुल श्री सम्पंत सिंह देव राज्येश्र तन्नियुक्त [illegible] ॥ श्री [illegible] महं ललनादि पंच कुल प्रच्छति भूमि अक्षराणि [illegible] ॥ [illegible] साधू० हेमाकेन भाद्धि हाथीउड़ी ग्रामें श्री महावीर देव [illegible] प्रति [illegible] - - [illegible] २४ चरवविंसि द्रंमा० प्रदत्ता शुभ भवतु। बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभि सगरादिभि। जस्य जस्य जदा भूमो तस्य तस्य तदा फलं ॥ [illegible] ॥

खण्डहर में मिला हुआ पाषाण पर।

- - - ॥ विरके - पके रक्षा [illegible] [illegible] - - [illegible] जिनाः ॥१॥ ते वः पांतु [illegible]

शेखर नख श्रेणीषु विम्बोदयात्। प्रायैकादशभिर्गुणं दशशती शक्रस्य शुम्भद्दृशांकस्य स्योद्गुण कारको न यदि वा स्वच्छात्मनां सङ्गमः ॥२॥ - - क्त - - नासत्करीलोप शोभितः। सुशेखर - - लौ मूर्द्धि रूढो महीभृतां ॥३॥ अभि चिभ्रद्रुचिं कांतां सावित्रीं चतुराननः हरिवर्म्मा बभूवात्र भूविभुर्भुवनाधिकः ॥४॥ सकल लोक विलोचन पंकज स्फुरदनं बुद बाल दिवाकरः। रिपु बधूवदनेन्दु हृत द्युतिः समुदपादि विदग्ध नृपस्ततः ॥५॥ स्वाचार्यैर्यो रुचिर बचनैर्वासुदेवाभिधाने बोधं नीतो दिनकर करैन्नीर जन्मा करो व। पूर्व्वं जैनं निजमिव यशो कारयद्धस्तिकुण्ड्यां रम्यं हर्म्यं गुरु हिम गिरेः शृङ्ग शृङ्गार हारि ॥६॥ दानेन तुलित बलिना तुलादि दानस्य येन देवाय। भागद्वयं व्यतीर्यत भागश्चाचार्य वर्याय ॥७॥ तस्मादभूच्छुद्ध सत्त्वो मंमटाख्यो महीपतिः। समुद्र विजयी श्लाघ्य तरवारिः सदूर्म्मिकः ॥८॥ तस्माद् समः समजनि समस्त जन जनित लोचनानंदः। धवलो बसुधा व्यापी चंद्रादिव चन्द्रिका निकरः ॥९॥ भंक्त्वाघाटं घटाभिः प्रकटमिव मदं मेदपाठे भटानां जन्ये राजन्य जन्ये जनयति जनताजं रणं मुंज राजे। श्रीमाणे प्रणष्टे हरिण इव भिया गूर्ज्जरेशे विनष्टे तत्सैन्यानां शरण्यो हरिरिव शरणेयः सुराणां बभूव ॥१०॥ श्री मद्दुर्लभ राज भूभुजि भजैर्भंजत्य भंगां भुवं दंडैर्भण्डन शौंड चंड सुभटै स्तस्याभिभूत विभुः। यो दैत्यैरिव तारक प्रभृतिभिः श्री मान्महेंद्रं पुरा सेनानीरिव नीति पौरुष परो नैषीत्परां निर्वृतिं ॥११॥ यं मूलादुद मूलयद्गुरु बलः श्री मूल राजो नृपो दर्प्पांधो धरणो बराह नृपतिं यद्वद्‌द्विपः पादपं। आयातं भुविकां दिशी कमभिको यस्तं शरण्यो दधौ दंष्ट्रायानिव रूढ मूढ महिमा कोलो मही मण्डलं ॥१२॥ इत्थं पृथ्वी भर्तृभिर्नाथ मानैः सा - - - सुस्थितैरास्थितोयः। पाथो नाथो वा विपक्षात्स्वपक्षां रक्षा कांक्षी रक्षणे बद्ध कक्षः ॥१३॥ दिवाकरस्येव करैः कठोरैः करालिता भूर कदम्बकस्य। अशि श्रियं ताप हृतोरुताप यमुन्नतं पादप वज्ज नौघा ॥ १४ ॥ धनुर्द्धर शिरोमणे रमल धर्म्ममभ्यस्यतो जगाम जलधेर्गुणो गुहरमुष्य पारंपरं। समोयुरपि सन्मुखाः सुमुख मार्ग्गणानां गणाः सतां चरितमद्भुतं सकलमेव

डोद्दोत्तरं ॥१५॥ यात्रासु यस्य बयदीर्ण्ण त्रिपुर्व्विशेषात् वल्गत्तुरंग खुरखात मही रजांसि। तेजोभिरूर्जित मनेन विनिर्जित त्वाद्भास्वान्विलज्जि त इवातितरां तिरो- भुव ॥१६॥ न कामनां मनो धीमान् घ – लनां दधौ। अनन्योद्धार्य सत्कार्यं भार धुर्योर्थ- तोपि यः ॥१७॥ यस्तेजोभिरहस्करः करुणया शौद्धोदनिः शुद्धया। भीष्मो वंचन वंचितेन वचसा धर्म्मेण धर्म्मात्मजः। प्राणेन प्रलाय निलो यलभिदो मंत्रेण मंत्री परो रूपेण प्रमदा प्रियेण मदनो दानेन कर्ण्णोभवत् ॥१८॥ सुनय तनयं राज्ये बाल प्रसाद मतिष्ठिप त्परिणतवया निःसंगो यो यभूत सुधीः स्वयं। कृत युग कृतं कृत्वा कृत्यं कृतात्म चमत्कृ- ती रकृत सुकृतीनो कालुष्यं करोति कलिः सतां ॥१९॥ काले कलावपि किलामलमेतदीयं लोका विलोक्य कलनातिगतं गुणौघं। पार्थादि पार्थिव गुणान् गणयन्तु सत्यानेकं व्यधा- द्गुणनिधिं यमितीव वेधाः ॥२०॥ गोचरयंति न वाचो यच्चरितं चंद्र चंद्रिका रुचिरं। वाचस्पते र्व्वचस्वी को वान्यो वर्ण्णयेत्पूर्ण्णं ॥२१॥ राजधानी भुवो भर्त्तु स्तस्यास्ते हस्ति कुण्डिका अलका धनदस्येव धनाढ्य जन सेविता ॥२२॥ नीहार हार हर हास हिमांशु हारि शीत्कार वारि भुवि राज विनिर्ज्झराणां। वास्तव्य भव्य जन चित्त समं समंतात्संताप संपद् पहार परं परेषां ॥२३॥ धौत कल धौत कलशाभिराम रामास्तना इव न यस्यां। सत्य परेप्य पहाराः सदा सदाचार जनतायां ॥२४॥ सनद मदना लीलालापाः प - ना कुलाः कुवलय दृशां संदृश्यंते दृशस्तरलाः परं। मलिनित मुखा यत्रोद्वृत्ताः परं कठिनाः कुचा निविड रचना नीवी बंधाः परं कुटिलाः कचाः ॥२५॥ गाढोत्तुंगानि साद्रं शुचि कुच कलशैः कामिनीनां मनोज्ञै र्व्विस्तीर्ण्णानि प्रकामं सह घन जघनैर्द्देवता मंदिराणि। भ्राजंते दभ्र शुभ्राण्यतिशय सुभगं नेत्र पात्रैः पवित्रैः सत्रं चित्राणि धात्री जन हृत हृदयैर्व्विभ्रमैर्यत्र सत्रं ॥२६॥ मधुरा घन पर्व्वाणो हृद्यरूपा रसाधिकाः। यत्रेक्षु वाटा लोकेभ्यो नाति- कत्वाद्विदेलिमाः ॥२७॥ यस्यां सूरिः सुराणां गुरु रिव गुरुभि र्गौरवाढ्यो गुणौघै र्भू पालानां त्रिलोकी वलय विलसिता नंतरानंत कीर्त्तिः। नाम्ना श्री शांति भद्रो भवदभि भवितु भासमाना समानो कामं कामं समर्था जनित जनमनः संमदा यस्य मूर्त्तिः ॥२८॥ मन्येमुना मुनीन्द्रेण मनोभू रूप निर्जितः। स्वच्छेनेपि न स्वरूपेण समगन्स्तापि लज्जितः ॥२९॥

प्रोद्यत्पद्ममाकरस्य प्रकटित विकटा शेष भावस्य सूरेः सूर्यस्येवामृतांशुं स्फुरित शुभ रुचिं वासुदेवाभिधस्य। अध्यासीनं पदव्यां यम मल विलसज्ज्ञान मालोक्य लोको लोका लोकावलोकं सकलमचकलत्केवल संभवीति ॥३०॥ धर्म्माभ्यास रतस्यास्य संगतो गुण संग्रहः। अभग्न मार्गणेच्छस्य चित्रं निर्व्वाण वांछना ॥ ३१ ॥ कमपि सर्व्वगुणानुगतं जनं विधिरयं विदधाति न दुर्व्विधः। इति कलंक निराकृतये कृती यमकृतेव कृताखिल सद्गुणं ॥३२॥ तदीय वचनान्निजं धन कलत्र पुत्रादिकं विलोक्य सकलं चलं दल मिवा-निलांदोलितं। गरिष्ठ गुण गोष्ठ्यदः समुददी धरद्धीर धीरुददार मति सुंदरं प्रथम तीर्थ कृन्मंदिरं ॥३३॥ रक्तं वा रम्य रामाणां मणि ताराव राजितं। इदं मुख मिवा भाति भाव मान वरालकं ॥३४॥ चतुरस्र पट उजन घाड्ड निकं शुभ्र शुक्ति करोटक युक्त मिदम्। बहु भाजन राजि जिनायतनं प्रविराजति भोजन धाम समं ॥३५॥ विदग्ध नृप कारिते जिन गृहेति जीर्ण्णे पुनः समं कृत समुद्धृताविह भवांबुधिरात्मनः। अतिष्ठिपत सोप्यथ प्रथम तीर्थ नाथा कृतिं स्वकीर्त्तिमिव मूर्त्तितामुपगतां सितांशु द्युतिं ॥३६॥ शांत्याचार्यैं स्त्रि-पंचाशे सहस्रे शरदा मियं। माघ शुक्ल त्रयोदश्यां सुप्रतिष्ठैः प्रतिष्ठिता ॥३७॥ विदग्ध नृपतिः पुरा यद तुलं तुलादेर्द्ददौ सुदान मवदान धारिदम पोपलन्नाद्भुतं। यतो धवल भूपतिर्ज्जिनपतेः स्वयं सात्मजोरघट्टमथ पिप्पलीप पद कूपकं प्रादिशत् ॥३८॥ यावच्छेष शिरस्थ मेरु रजतस्थूणा स्थिताभ्युल्ल सत्पातालातुल मंडपा मल तुलामा लंबते भूतलं। तावत्तार रवाभिराम रमणी गंधर्व्व धीर ध्वनिर्द्धामन्यत्र धिनोतु धार्मिक धियः सद्रूप वेला विधौ ॥३९॥ सालंकारा समधि करसा साधु संधान बंधा श्लाघ्यश्लेषा ललित विल-सत्तद्धिता ख्यात नामा। सद्वृत्ताढ्या रुचिर विरतिर्द्धु यमाधूर्य वर्या सूर्याचार्यैं र्व्यरचि रमणी वाति रम्या प्रशस्तिः ॥४०॥ सम्वत १०५३ माघ शुक्ल १३ रवि दिने पुष्य नक्षत्रे श्री ऋषभ नाथ देवस्य प्रतिष्ठा कृता महा ध्वज श्चारोपितः ॥ मूलनायकः ॥ नाहक जिन्दज सशम्म पूरभद्रः नागपोचिरथ श्रावक गोष्ठिकैर शेष कर्म्म क्षयार्थं संतान भवाब्धि तरणार्थं च न्यायोपार्ज्जित वित्तेन कारितः ॥वृ॥ परवादि दर्प्प हेतु नय सहस्र भंगकाकीर्ण्णं। भव्य जन दुरित शमनं जिनेंद्र वर शासनं ॥१॥ आसीद्धी धन संमतः शुभगुणो भास्वत्प्रतापोज्ज्वलो विस्पष्ट प्रतिभः

प्रभाव कलितो भूपोत्तमांगार्च्चितः। योषित्पीन पयोधरांतर सुखाभिष्वङ्ग सन्लालितो यः श्री मान्हरि धर्म्म उत्तम मणिः सद्वंश हारे गुरौ ॥२॥ तस्माद्बभूव भुवि भूरि गुणोपपेतो भूप प्रभूत मुकुटार्च्चित पाद पीठः। श्री राष्ट्रकूट कुल कानन कल्प वृक्षः श्री मान्विदग्ध नृपतिः प्रकट प्रतापः ॥३॥ तस्माद्भूप गुणान्वित तमा कीर्त्तेः परं भाजनं संभूतः सुतनुः सुतोति मतिमान् श्री मंमटो विश्रुतः। येनास्मिन्निज राज वंश गगने चंद्रायितं चारुणा तेनेदं पितु शासनं समधिकं कृत्वा पुनः पाल्यते ॥४॥ श्री बलभद्राचार्यं विदग्ध नृप पूजितं समभ्यर्च्य। आचंद्रार्क्कं यावद्दत्तं भवते मया प्रपाल्यते सर्वम् ॥५॥ श्री हस्ति कुंडिकायां चैत्य गृहं जन मनोहरं भक्त्या। श्री मद्बलभद्र गुरोर्येद्विहितं श्री विदग्धेन ॥६॥ तस्मि-ल्लोकान्समाहूय नाना देश समागतान। आचंद्रार्क्कं स्थितिं यावच्छासनं दत्त मक्षयं ॥७॥ रूपक एको देयो वहतामिह विंशतेः प्रवहणानां। धर्म्म – – – – क्रय विक्रयेच तथा ॥८॥ संभृत गंत्र्या देयस्तथा वहंत्याश्च रूपकः श्रेष्ठः। घाणे घटे च कर्षो देयः सर्वेण परिपा-ट्या ॥९॥ श्री भट्टलोक दत्ता पत्राणां चोल्लिका त्रयोदशिका। पेल्लक पेल्लक मेतद्द्यूत करैः शासने देयं ॥१०॥ देयं पलाश पाटक मर्यादावर्त्तिक – – – प्रस्थर घट्टं धान्या-ढकं तु गोधूम यव पूर्णं ॥११॥ पेड्डा च पंच पलिका धर्म्मस्य विंशोपक स्तथा भारे। शासन मेतत्पूर्व्वं विदग्धेन राजेन संदत्तं ॥१२॥ कर्प्पासकांस्य कुंकुम पुर मांजिष्ठादि सर्व्व भांडस्य। दश दश पलानि भारे देयानि विक – – – ॥१३॥ आदानादे तस्माद्भाग द्वय मर्हतः कृतं गुरुणा। शेषस्तृतीय भागो विद्या धनमात्मनो विहित ॥१४॥ राज्ञा तत्पुत्र पौत्रैश्च गोष्ठ्या पुरजनेन च। गुरुदेव धनं रक्ष्यं नोपेक्ष्यं हितमीप्सुभिः ॥१५॥ दत्ते दाने फलं दानात्पालिते पालनात्फलं। भक्षिते पेक्षिते पापं गुरु देव धनेध्रुवं ॥१६॥ गोधूम मुद्ग यव लवण रालकादेस्तु मेयजा तस्य। द्रोणम् प्रति माणकमेक मत्र सर्वेण दातव्यं ॥१७॥ बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः। यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥१८॥ राम गिरि नंद कलिते विक्रम काले गते तु शुचिमासे। श्री मद्बलभद्र गुरोर्व्विदग्ध राजेन दत्त मिदं ॥१९॥ नवसु शतेषु गतेषु तु षण्णवती समधि केषु माघस्य कृष्णैकादश्यामिह समर्थितं मंमट नृपेण ॥२०॥ पाषाण मध्यस्थ मूनि भानु भवनं [illegible]

भारती भास्वद्भानि भुजङ्ग राज भवनं भ्राजद् भवांभोदयः। तिष्ठन्त्यत्र सुरासुरेंद्र महितं जैनं च सच्छासनं श्री मत्केशव सूरि सन्तति कृते तावत्प्रभूयादिदम् ॥२१॥ इदम् चाक्षय धर्म्म साधनम् शासनम् श्री विदग्ध राजेन दत्तं ॥ सम्वत ९७३ श्री मंमट राजेन समर्थितम् सम्वत् ९९६ ॥ सूत्रधारोद्भव शत योगेश्वरेण उत्कीर्ण्णे यम् प्रशस्तिरिति।

जालोर।

मारवाड़का यह भी बहुत प्राचीन स्थान है। इसका प्राचीन नाम जावालीपूर था।

तोपखाना।

(899)

---।----त्रैलक्य लक्ष्मी विपुल कुलगृहं धर्मवृक्षालवालं। श्री मन्ना भेय नाथ क्रम कमल युगं मंगलं व स्तनोतु। मन्ये मंगल्य माला प्रणत भव भृतां सिद्धि सौध प्रवेशे यस्य स्कंध प्रदेशे विलसति गल श्यामला कुंतलाली ॥१॥ श्री चाहुमान कुलांवर मृगांक श्री महाराज अणहिला न्वयोवद्भव श्री महाराज आल्हण सुत---- यावली दुर्लंलित दलित रिपुवल श्री महाराजकीर्तिपाल हेत्र हृदयानंदिनंदन महाराज श्री समर सिंह देव कल्याण विजय राज्ये तत पाद पद्मोपजीविनि निज प्रौढि मातिरेक- तिरस्कृत सकल पीलवाहिका मंडल तस्कर व्यतिकरे। राज्यचिंतके जोजल राजपुत्रे इत्येवं काले प्रवर्त्तमाने। रिपुकुलकमलेंदुः पुण्यलावण्यपोत्रं नय विनय निधानं धाम सौंदर्य लक्ष्म्याः। धर्राण तरुण नारी लोचनानंदकारी जयति—समर सिंह क्ष्मा पतिः सिंह वृत्तिः ॥ २ तथा ॥ औत्पत्तिकी प्रमुख बुद्धि चतुष्टयेन निर्णीत भुप भवनोचित कार्य वृत्तिः। यन्नातुलः समभवत् किल जो जलाह्वो -----खंडित दुरत विपक्ष लक्षः ॥ ३ श्री चंद्रगच्छ मुख मंडन सुविहित यतितिलक सुगुरु श्री श्री चन्द्रसूरि चरण नलिन युगल दुर्ललित राजहंस श्री पूर्ण्ण भद्र सूरि चरण कमल परि चरण चतुर मधु- करेण समस्त गोष्ठिक समुदाय समन्वितेन श्री श्रीमाल वंश विभूषण श्रेष्टि यशोदेव सुतेन सदाज्ञाकारि निज-तृयशोराज जगधर विधीयमान निखिल मनोरथेन श्रेष्टि यशोवीर

परम श्रावकेण संवत् १२३९ वैशाख सुदि ५ गुरौ सकल त्रिलोकी तलाभोग भ्रमेण परिश्रांत कमला विलासिनी विश्राम विलास संदिरं अयं मंडपो निर्मापितः ॥ तथा हि ॥ नाना देश समागतैर्नवनवैः स्त्री पुंसवर्गैर्मुहु र्यस्यै -- --पाव लोकन परैर्नो तृप्तिरासाद्यते । स्मारं स्मारमघो यदीय रचना वैचित्र्य विस्फूर्जितं तैः स्वस्थान गतैरपि प्रतिदिनं सोत्कं- ठमावर्ण्यते ॥ ४ ॥ विश्वंभरावर वधू तिलकं किमेतल्लीलारविंदमथ किं दुहितुः पयोधेः । दत्तं सुरै रमृत कुंड मिदं किमत्र यस्यावलोकनविधौ विविधा विकल्पाः ॥ ५ ॥ गर्त्तापूरेण पातालं --- ण महीतलं । तुंगत्वेन नभो येन व्यानशे भुवन त्रयं ॥ ६ ॥ किं च ॥ स्फूर्ज- द्व्योमसरः समीनमकरं कन्यालिकुंभाकुलं मेषाढ्य सकुलीरसिंह मिथुनं प्रोद्यद्वृषालं- कृतं । ताराकैरवमिंदुधाम सलिलं सद्राजहंसास्पदं यावत्तावदिहादिनाथ भवने नंद्यादसौ मंडपः ॥ ७ ॥ कृतिरियं श्री पूर्ण्ण भद्र सूरीणां ॥ भद्रमस्तु श्री संघाय ॥

(९९)

ओं ॥ संवत् १२२१ श्री जावालिपुरीय कांचनगिरि गढ़स्योपरि प्रभु श्री हेम सूरि प्रबो- धित गूर्जर धराधीश्वर परमार्हत चौलुक्य ॥ महाराजाधिराज श्री कुमार पाल देव कारिते श्री पार्श्वनाथ सत्कमूल विंब सहित श्री कुवर विहाराभिधाने जैन चैत्ये । सद्विधि प्रव- र्त्तनाय बृहद्गच्छीय वादींद्र देवाचार्याणां पक्षे आचंद्रार्कं समर्प्पिते ॥ सं० १२४२ वर्षे एतद्देशाधिप चाहमान कुलतिलक महाराज श्री समर सिंह देवादेशेन भां० पासू पुत्र भां० यशोवीरेण समुद्धृते । श्री मद्राजकुलादेशेन श्री देवा चार्य शिष्यैः श्री पूर्ण्ण देवाचार्यैः । सं० १२५६ वर्षे ज्येष्ठ सु० ११ श्री पार्श्वनाथ देवे तोरणादीनां प्रतिष्ठा कार्ये कृते । मूल शिखरे च कनकमय ध्वजा दंडस्य ध्वजा रोपण प्रतिष्ठायां कृतायां ॥ सं० १२६८ वर्षे दीपोत्सव दिने अभिनव निष्पंन्नप्रेक्षा मध्य मंडपे श्री पूर्ण्णदेव सूरि शिष्यैः श्री रामचं- द्राचार्यैः सुवर्ण्णमय कलसारोपण प्रतिष्ठा कृता ॥ शुभं भवतु ॥ छ ॥

(900)

संवत् १२९४ वर्षे श्री मालीय श्रे० वीसल सुत नाग देवस्तत्पुत्रो देल्हा सलक्षण झांपाख्याः झांवा पुत्रो बीजाकस्तेन देवड़ सहितेन पितृश्चां श्रेयोर्थं श्री जावालिपुरीय श्री महावीर जिन चैत्ये करोदि कारिताः ॥ शुभं भवतु ॥

(901)

संवत् १३२० वर्षे माघ सुदि १ सोमे श्री नाणकीय गच्छ प्रतिबद्ध जिनालये महाराज श्री चंदन विहारे श्री क्षीं'ब रायेश्वर स्थान पतिना भट्टारक रावल लक्ष्मीधरेण देव श्री महावीरस्य आसोज मासे अष्टाहिका पदे द्रम्माणां १०० शतमेकं प्रदत्तं ॥ तद्व्याज मध्यात् मठ पतिना गोष्ठिकैश्च द्रम्म १० दशकं वेषनीयं पूजा विधाने देव श्री महावीरस्य ॥

(902)

ओं संवत् १३२३ वर्षे माग सुदि ५ बुधे महाराज श्री चाचिग देव कल्याण विजय राज्ये सन्मुद्रालंकारिणि महामात्यः श्री जक्षदेवे ॥ श्री नाणकीय गच्छ प्रतिबद्ध महाराज श्री चंदन विहारे विजयिनि श्री मद्धनेश्वर सूरौ तैलं गृह गोत्रोद्भवेन महं नरपतिना स्वयं कारित जिन युगल पूजा निमित्तं मठ पति गोष्ठिक समक्षं श्री महावीर देव भांडागारे द्रम्माणां शतार्द्धं प्रदत्तं ॥ तद्व्याजोद्भवेन द्रम्मार्द्धेन नेचकं मासं प्रति करणीयं ॥ शुभं भवतु ॥

(903)

ओं ॥ संवत् १३५३ वर्षे वैशाख वदि ५ सोमे श्री सुवर्ण्ण गिरौ अद्येह महाराज कुल श्री सामंतसिंह कल्याण विजय राज्ये तत्पादपद्मोपजीविनि ॥ राज श्री कान्हडदेव राज्य धुरामुद्वहमाने इहैव वास्तव्य संघपति गुणधर ठकुर आंबड पुत्र ठकुर जस पुत्र सोनी महणसीह भार्या माल्हणि पुत्र सोनी रतनसिंह णाखी माल्हण गजसीह तिहुणा पुत्र सोनी नरपति जयता विजयपाल नरपति भार्या नायकदेवि पुत्र लखमीधर भुवण

पाल सुहड़पाल द्वितीय भार्या जाल्हण देवि इत्यादि कुटंब सहितेन भार्या नायक देवि श्रेयोर्थं देव श्री पार्श्वनाथ चैत्ये पंचमी बलि निमित्त निश्रा निक्षेप हट्टमेकं नरपतिना दत्तं तत भाटकेन देव श्री पार्श्वनाथ गोष्ठिकैः प्रति वर्षः आचंद्रार्कं पंचमी वलिः कार्या ॥ शुभं भवतु ॥ छ ॥

महावीरजी का मन्दिर ।

(८०५)

संवत् १६८१ वर्षे प्रथम चैत्र वाद ५ गुरौ अद्येह श्री राठोड़ वंशे श्री सूरि सिंह पट्ट श्री महाराजे श्री गजसिंह जी विजयि राज्ये······मुहणोत्र गोत्रे वृद्ध उसवाळ ज्ञातीय सा० जेसा भार्या जयवंत दे पुत्र सा० जयराज भार्या मनोरथदे पुत्र सा० सादा सुभा सामल सुरताण प्रमुख परिवार पुण्यार्थं श्री स्वर्ण गिरि गढ़ादुर्गो परिस्थित श्री मत कुमार विहारे श्री मती महावीर चैत्ये सा० जैसा भार्या जयवंतदे पुत्र सा० जयमल जी वृद्ध भार्या सरूपदे पुत्र सा० नइणसी सुन्दरदास आस करण लघु भार्या सोहागदे पुत्र सा० जगमालादि – – पुत्र पौत्रादि श्रेयसे सा० जयमल जी नाम्ना श्री महावीर बिंबं प्रतिष्ठा महोत्सव पूर्वकं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री तपा गच्छ पक्षे सुविहिताचारकारक शिथिलाचार वारक साधु क्रियोद्धार कारक श्री ६ आणंद विमल सूरि पट्ट प्रभाकर श्री विजय दान सूरि पट्ट शृङ्गार हार महा म्लेच्छाधिपति पातशाह श्री अकबर प्रतिबोधक तद्दत्त जगद्गुरू विरुद धारक श्री शत्रुंजयादि तीर्थ जीजीयादि कर मोचक प्रवमान अमारि प्रवर्त्तक भट्टारक श्री ६ हीर विजय सूरि पट्ट मुकुटायमान भ० श्री ६ विजय सेन सूरि पट्टे संप्रति विजयमान राज्य सुविहित शिरः शेखरायमाण भट्टारक श्री ६ विजय देव सूरीश्वराणामादेशेन महोपाध्याय श्री विद्यासागर गणि शिष्य पण्डित श्री सहज सागर गणि शिष्य पं० जय सागर गणिना श्रेयसे कारकस्य ॥

(905)

संवत् १६८३ आषाढ़ वदि गुरौ श्रवण नक्षत्रे श्री जालोर नगरे स्वर्ण गिरि दुर्गे महाराजाधिराज महाराजा श्री गजसिंह जी विजय राज्ये महुणोत गोत्र दीपक मं अचला पुत्र मं जेसा भार्या जेवंत दे पु० मं श्री जयल्ला नाम्ना भा० सरूपदे द्वितीय सुहागदे पुत्र नयणसी सुंदरदास आसकरण नरसिंहदास प्रमुख कुटुंब युतेन स्व श्रेयसे श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गच्छ नायक भट्टारक श्री हीर विजय सूरि पट्टालंकार भट्टारक श्री विजय सेन - - - ।

(906)

संवत् १६८३ वर्षे अषाढ़ वदि ४ गुरौ सूत्रधार ऊद्धारण तत्पुत्र तोडरा इसर टाहा। दूहा हांराकेन कारापितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छ भ० श्री विजय देव सूरिभिः ॥

(907)

संवत् १६८३ वर्षे अषाढ़ वदि ४ गुरौ। महणोत्र गोत्र। म० जमल भार्या सरूपदे समर्पित। श्री सुपार्श्व बिंबं। प्रतिष्ठितं तपागच्छे भ० - - ।

(908)

संवत् १६८३ वर्षे श्री अजित बिंब प्र० त० भ० श्री विजय देव सूरिभिः ॥

(909)

संवत् १६८४ वर्षे माघ सुदि १० सोमे श्री मेड़ता नगर वास्तव्य उकेश ज्ञातीय प्रामेचा गोत्र तिलक सं हर्ष लघु भार्या मनरंगदे सुत संघपति सामीदासकेन श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गच्छे श्री तपा गच्छाधिराज भट्टारक श्री विजय देव सूरिभिः ॥ आचार्य श्री विजयसिंह सूरि प्रमुख परिवार परिकरितैः ॥ श्रीरस्तु ॥

(910)

संवत् १६८३ वर्षे आ० व० गुरौ अ० लठांक श्री माण विम्र आ० विजयदेव सूरिभिः ।

(911)

चौमुखजी का मन्दिर ।

संवत् १६८१ वर्षे प्रथमा चैत्र वदि ५ गुरौ श्री श्री मुहणोत्र । गोत्र सा० जेसा भार्या जसमादे पुत्र सा० जयमाल भार्या सोहागदेवी श्री आदिनाथ बिंवं कारित प्रतिष्ठा महोत्सव पूर्वकं प्रतिष्ठितं च श्री तपा गच्छे श्री ६ विजय देव सूरीणा मादेशेन जय सागर गणिना ।

हरजी

यह मारवाड़के जालोर के पास गांव है ।

(912)

संवत् १२३१ मार्ग सुदि ८ भ० शांति शिष्येण नेमिचंद्रेण आत्म श्रेयार्थं प्रदत्तः ॥

(913)

संवत् १५१७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३-वा० श्री मुनिशेषर शिष्य दया रत्न श्री वीरस्य तकया केकृत ॥

(914)

संवत् १५४७ वर्षे फागुण सुदि ११ दिने रा० श्री विलास म० सोम रात्रे श्राः – –

(915)

श्री शीले सार्थो मलियंस्यातः स्पृष्टा वीर देशिते । महिमा कीर्त्ति लेखा स्या । तस्य देवेषु दुर्ल्लभा ॥

(916)

-- श्री पज्जु वधू असोचय -- वहुया भज्जा सुहंकर वणिस्स । सो भन सरावियोए धम्मत्थम कारि लग एसा ॥ १ ॥

(917)

---- चंदण वाल नासा --- षा मति सिरी सा -- षी -- लगा कारिता

जूना ।

यह मारवाड़का वाडमेर इलाके में गांव है ।

(918)

ओं ॥ संवत् १३५२ वैशाख सुदि ४ श्री वाहड मेरौ महाराज कुल श्री सामंत सिंह देव कल्याण विजय राज्ये तन्नियुक्त श्री २ करणे मं० वीरासेल वेलाउल भां० मिगल प्रभृतयो धर्माक्षराणि प्रयच्छन्ति यथा । श्री आदिनाथ मध्ये संतिष्ठमान श्री विघ्न मर्दन क्षेत्रपाल श्री चउंडराज देवयोः उभय मार्गीय समायात सार्थ उष्ट्र १० वृष २० उभयादीप उर्द्धं सार्थं प्रति द्वयोर्द्वयोः पाइला । पल्ले भीम प्रिय दर्शाविंशोपक अर्द्धार्द्धेन ग्रहीतव्याः । ओसो लागो महाजनेन मानितः ॥ यथोक्तं बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥ १ ॥ छ ॥

जूना बेडा (मारवाड)

(919)

ॐ ॥ संवत् ११४४ माघ सु० ११ श्रं पतेरं प्रदेव्यास्तु सूनुना जेज्जकेन स्वयं प्रपूर्ण वज्र मानाद्यै र्मिलित्वा सर्व बांधवैः ॥ १ ॥ खन्नके पूर्ण भद्रस्य वीरनाथस्य मंदिरे कारिता वीर नाथस्य श्रेयसे प्रतिमानघा ॥ २ ॥ सूरे प्रद्योतनार्यस्य ऐन्द्र देवेन सूरिणा भूषिते सांप्रतं गच्छे निःशेष नय संजुते ॥ ३ ॥

(920)

संवत् १६४४ वर्षे फागुण दि १३ उकेश ज्ञातीय चापणे गोत्रे संघवी हीलु भार्या दीहम दे पुत्र सं० गोपा भार्या गेलमदे पुत्र रूपा चंदा श्री रादुलिया भार्या मन भगोदे पुत्र भोजा भा० ना - - - - श्री पार्श्वनाथ बिंब कारित तपा गच्छ भट्टारक श्री श्री हीर विज - - - ।

(921)

संवत् १३४७ वर्षे वैशाख सुदि १५ रवौ श्री उकेश गोत्रे श्री [illegible] श्रे० वेल्हू भा० देमवत्तत्पुत्र श्रे० [illegible] सहितेन [illegible] पार्श्वनाथ [illegible] प्र० श्री देव गुप्त सूरिभिः ॥

([illegible])

संवत् १५०७ वर्षे माहि सुदि [illegible] [illegible] पु० डूगर सहितेन स्व पुण्यार्थे श्री [illegible] कीर्त्ति सूरि शि० [illegible] ।

(923)

सं० १६३० वर्षि वैशाख वदि ८ दिने श्री वहड़ा ग्रामे उसवाल सुते गोत्र सोलाकी वाघणे सागासाहा श्री दाभा० खेमलदे पुत्र राजा भार्या सेवादे पुत्र माना कमरसी श्री कुंथुनाथ विंवं श्री हीर

(924)

सं० १५३० वर्षे सा० व० ६ प्राग्वाट ज्ञाति व्य० चाहड भार्या राणी पु० व्य० वेला प्रमुख कुटुम्ब युतेन स्व श्रेयसे श्री संभवनाथ विंवं का० प्र० तपा श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः चुंपरा ग्रामे

(925)

सं० १६३० वर्षे वैशाख वदि ८ दिने श्री वहड़ा ग्राम उसवाल ज्ञातीय गोत्र तिलहरा सा० सूदा भार्या सीहलादे पुत्र नासण वीदा नासण भार्या न काग देवीदा भार्या कनकादे सुत वला श्री आदिनाथ विंवं कारापित श्री हीर विजय सूरिभिः प्रतिष्ठितः॥

(926)

सं० १५१५ वर्षे माघ शु० १५ उकेश लोढ़ा गोत्र सा० झांझू भा० कपूरी सुत सा० धीरपालेन भा० गांगी पुत्र पनर्वल कर्मसी भ्रातृ दिल्हादि युतेन श्री संभवनाथ विंवं कारित प्रतिष्ठितं तपा श्री रत्न शेखर सूरिभिः॥

(927)

सं० १६२३ वर्षे वैशाख मासे शुक्रवारे १० तिथौ इडर नगर वास्तव्य उसवाल ज्ञातीय। मं० श्री। लुञा सुत मं० जसा मं श्री रामा महा श्राधेन भार्या रला। दम० कडूआ

म० सिंघराज प्रमुख सकल कुटुंब युतेन श्री शांतिनाथ विंबं कारितं। श्री श्रीतपागच्छ युगप्रधान विजय दान सूरि पट्टे श्री हीर विजय सूरिभि प्रतिष्ठितं। वैशाख सुदि दशमी दिन ॥

(928)

संवत् १६३१ वर्षे माघ सु० ९ उप० ज्ञाती गादहीया गोत्रे सा० कोहा भा० रतनादे पु० आका भा० यस्मीदे पु० हराजावड़ मेरुादि साहि तिथी सति मतं श्री वास पूज्य विंबं कारि० श्री वपु श्री कुकुदाचार्य संताने प्र० देव गुप्त सूरिभिः ॥ श्री ॥

(929)

सं० १४२२ श्री सर प्रभु सूरि उपदेशेन प्रतिष्ठितं।

(930)

संवत् १६४४ वर्षे फागुण वदि १५ उपकेश ज्ञातीय बाहड़ा गोत्रे - - - - संभवनाथ - - - - लघ गछ लघ श्री श्री हीर विजर सूरि।

नगर गांव (मारवाड)

(931)

संवत् १५१६ वर्षे पौसप वदि ११ दिने गुरुवारे श्री राठ्उड राज्ये श्री सोभ्र धंम पुत्र श्री श्री वयं रसलल नरेस्वरेण यांधव सामंत सल्हा पुत्र इरुव मुख सपरिवारेण तेज याहं भरतार भाटी महिप पुण्यार्थं गोयिंदराजेन श्री श्री महावीर चैत्ये वा० मोदराज गणि उपदेशेन पटहो बांधव मं० धारा पुत्र धायल नंदाही पुत्र नाल्हा मं० आणा मं० दे० ऊट प्रमुख श्री संघ समु मत्तं पटहो वायमानो चिरं जयात: शुभं भवतु नारदेन लषतं ॥

सांचोर (मारवाड)

(932)

स्वस्ति श्री संवत् १२२५ वर्षे वैशाख वदि १३ दिने श्री सत्य पुर महा स्थाने राज श्री भीमदेव कल्याण विजय राज्ये उपकेश ज्ञातीय भंडारी भंजग सिंह पुत्र भंडारी पाल्हा सुत छोघाकेन वृद्ध भ्रातृ भं० साम वधू घासकितेन श्री महावीर चैत्ये आत्म श्रेयसे चतुष्किका उद्धारः कारतः ॥

रत्नपुर ।

मारवाड़के जसवंत पुरा इलाके में यह स्थान भी बहुत प्राचीन है ।

(933)

ॐ संवत् १२३८ पोष वदि १० वला० नागू पुत्र श्रे० उद्धरण भार्यया श्रे० देवणाग पुत्रि-कया उत्तम परम श्राविकया स्व श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ देव चैत्य मंडपे स्तंभोयं कारितः ॥

(934)

ॐ ॥ संवत् १२३८ पोष वदि १० श्रे० आंब कुमार पुत्र श्रे० घवल भार्यया वला० नागू पुत्रिकया संतोष परम श्राविकया स्व श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ देव चैत्य मंडपे स्तंभोयं कारितः ॥

(935)

ॐ ॥ संवत १३३३ वर्षे माघ सुदि १ प्रतिपदायां महामण्डलेश्वर राज श्री चाचिग देव कल्याण विजय राज्ये तन्नियुक्त महामात्य श्री जारवा प्रभृति पंच कुल प्रतिपत्तौ रत्न पुरे देव श्री पार्श्वनाथाय पोष कल्याणिक यात्रा निमित्तं मह माधव

सुत महं मदन सुत महं धीणा । श्री कुंअरसिंह सुत महं ऊदल प्रभृति पंच कुलेन श्री पार्श्वनाथः देव प्रतिवद्ध श्री चैत्र गच्छीय श्रीदेवचंद्र सूरि संताने श्री अमरचंद्र सूरि शिष्य श्री अजित देव सूरीणा मुपदेशेन हट्ट द्वय भूमिः प्रदत्ता आ चंद्रार्कं नंदतु ॥ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमि स्तस्य तस्य तदा फलं ।

(936)

संवत् १३४८ वर्षे चैत्र सुदि १५ गुरावद्येह रत्न पुरे महाराज कुल श्री सांवत सिंह। कल्याण विजइ राज्ये तन्नियुक्त महं० कटुआ प्रभृति पंच कुल प्रतिपत्तौ श्री पार्श्वनाथ प्रतिवद्ध महा महणा श्रे० सांता मह० विजयपाल गो० लषण प्रभृति समस्त गोष्ठिकानां विदितं अक्षयराषि प्रयच्छंति यथा रत्नपुर वास्तव्य गूर्जर न्यातीय श्रे० राजा सुत वादा गांगा सुत मंडलिक मदन प्रवृति कानां देव श्री पार्श्वनाथ प्रति वद्ध तोडक प्रवेश द्वार दक्षिण हस्त प्रथम हट्टात् द्वितीय हट्ट श्रे० गांगा श्रेयोर्थं वादा सत्क देव कुलिका विंव पूजापनार्थं श्री पार्श्वनाथ देवेन गोष्ठिकैः विदित्तं हट्ट समर्प्पितं। अस्य हट्ट निकट प्रतिदेव श्री पार्श्वनाथस्य श्री वाघकेन वीसल प्रीयथाय एक विंशत्यधिक शत मेकं प्रदत्तं । हट्ट मिदं चतुर्भि गोष्ठिकैः संमिलतैः भूत्वा भाहक संस्था करणीया स्वात्मीय परिणा श्रेष्ठि वादा सुतक सांघ विनैः भाहके हट्ट कस्यापि नार्पणीयं। तथा सत्क उतपत्ति व्यय कर्ण वाणगोष्ठिकानु विना एकाकिनैः न कर्त्तव्या । उतपत्ति मध्यातु देव कुलिकाया विम्बानां नेचकप देवी० द्र २। ३ वर्षे प्रतिदातव्या उतपत्ति मध्यात् हट्टे पतित दुसित पद्दे कमठाय कारापनीया । यच्च भाहक स्वक द्रव्यं वर्द्धति तत् पाप कल्याणक दिने देव कुलिकाया विंव भोग करणीय । उरितं द्रव्यं श्री पार्श्वनाथ सत्क नालि कायां यत्रं । न्यां खेपनीयं निक्षेप उधार गोष्ठिकैः करणीय । अत्र मतानि महा महणा मतं श्रेष्ठि सोता मतं धराणे गामी वा हस्तेन महं विजय पाल मत । गोष्ठिक लषणा मतं ॥ स

बिलाड़ा (मारवाड)

(937)

सं० १८०३ वर्षे शाके १६६८ प्रवर्त्तमाने मगशिर सुदि २ दिने सोम वारे महाराज राज राजेश्वर महाराजा जी श्री अभयसिंह जी कुंवर श्री रामसिंह जी विजय राज्ये वृहत खरतर श्री आचार्य गच्छे। भट्टारक श्री जिन कीर्त्ति सूरि जी वर्त्तमाने सति। श्री बिलाड़ा नगरे कटारीया कलावत साह श्री तुंता जी पुत्र गिरधरदासजीकेन जिनालय करापितः स्थानको द्यमः उपाध्यायजी श्री करम चंद हरष चन्दाभ्यां कृतः कदाग्रह श्रावकाणामपि विशेषोपदेशो दत्तस्ते नार्य श्री सुमतिनाथ जी देव को जामः – – – – द्रुपर भीषन कमाभ्यां कृतः उपाध्याय श्री करमचंद गणि पं० हरषचंद गणि पं० प्रमापसी गणि प्रमुख सपरिकरेन विव–श्री भवतु।

बोईया (मारवाड)

(938)

सम्वत् १२५० आषाढ़ वदि १२ रवो मुडपद्र वास्तव्य श्रावक सामण भार्या जिसवी सुत रोहड रामदेव प्रायदेव कुटुंब सहितेन राम्यदेवेन स्तंभ लता प्रदत्ता द्रा० २०।

(939)

ओं॰ संवत् १२५० आसाढ़ वदि १२ रवो वहुविध वास्तव्य व० रोहिल सुत धांधल [illegible] सुत [illegible] भार्यां मातृ पितृमति श्रेयार्थे स्तंभ लता – – – – द्रां० २० प्रदत्ता।

कोटार (गोड़वाड़)

(940)

संवत् १३३५ वर्षे श्रावण वदि १ सोमेऽद्येह समाण ... सउ [illegible] ... या प्रा० इनउ .... पचरा महं रुज्जन ठ० मह भा .. ठ घणसीह ठ देवसीह प्रभृति पञ्चकुलेन श्रीधात [illegible] भिधान श्रीमहावीर देवस्य ने च के - - - वर्ष स्थितके कृत द्र २४ चतुर्विंशति द्रम्माः वर्षं वर्षं प्रति - मी मंडपिका पंच कुलेन दातव्याः ॥ पालनीया [illegible] ॥ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥ शुभं भवतु ।

(941)

सं० १३३६ वर्षे श्रेष्ठि फो सीहन चयपने द्रम्म [illegible] - [illegible] - प - १ [illegible] - या रवस्ति यमाण पञ्च कुलेन वर्षं वर्षं प्रति - - - [illegible] ॥

किराड़ ।

मारवाड़ के मालानी परगने में यह स्थान प्राचीन है। [illegible] स्थान का नाम किराट कूप था और [illegible] स्थान में जैन धर्मने दीक्षित होने के पूर्व [illegible] था। काल के चक्र से इस समय उन [illegible] भी नष्ट हो गये हैं।

[illegible]

ॐ नमः [illegible] देव देवाय [illegible] ॥ [illegible]

विधु (भस्म) विभूषणस्य। गर्व्वः स कोपि हृदि यस्य पदं करोति गौरी जितं च चिर-वल्कल वर्षं दर्शात् ॥२॥ वशिष्ठ - - - - - - - भूषिते र्व्वूद भूधरे। सुरभ्याः परमाराणां वंशो - - - नर्ल कुंडतः ॥३॥ तत्रानेक मही पाल - - - - - सिंधु धिराजो महाराज — — — रणे समभून्मरु मंडले ॥४॥ निरर्गाल मिलद्वैरि - - - - - प्रतापो ज्वलदूषलः ॥५॥ शंभुवद् भूरि भूमीशाभ्यर्च्चनीयो भ - - - सूः ॥६॥ खड्ग रणत्कार रावणो लवण वैरिहं भवः ॥ - - - - ॥७॥ सिंधु राज धरा धार धरणी धर धाम वान ॥ मा - - ॥८॥ जो भवत्त स्मात् सुर राजो हराज्ञया देव राजेश्वर- — — — ॥९॥ — — — मपहाय मही मिमां। मन्ये कल्प द्रुमः प्रायाद दृश्यक — — — ॥१०॥ — — दारणात्। श्री मद्दुर्लभ राजोपि राजेंद्रो रंजितो — — — ॥११॥ — — — धंधुक - सः। येन दुर्व्वार वीर्येण भूषितं मरु मंडलं ॥ १२ ॥ धर्म्म करो वभू - - - - - कृष्ण राजो महा शब्द विभूषितः ॥ १३ ॥ तत्पुत्रः सोछट्ट राजाख्यः स्य - - - स्व - - - - कल्पद्रुमो भवत् ॥ १४ ॥ तस्मादुदय राजाख्यो महाराज- - - मंडलीक पदाधिकः ॥ १५ ॥ प्राचोड़ गौड़ कर्णाट मालवोत्तर पश्चिमं। - - कृ - शजं ॥ १६ ॥ प्राश्च सिंधु राज भूपालात्पितृ पुत्र क्रमात्पुनः। तस्मादुदय राजश्च पुत्रः सोमेश्वरः सुतः ॥ १७ ॥ उत्कीर्ण मपि यो राज्य मुद्दध्रे भुज वीर्यतः। जयसिंह महिपालात् - - - यद्व - ॥ १८ ॥ - - अतश्च नव गत वर्षे ११९६ १२०० विक्रम भूपतेः प्रसादा ज्जयसिंहस्य सिद्धराजस्य भू भुजः ॥ १९ ॥ श्री सोमेश्वर राजेन सिंधु राजपुरोद्भवं। भूपो निर्व्याज शौर्येण राज्य मेतत्समुद्धृतं ॥ २० ॥ पुनर्द्वादश संख्येषु पंचाधिक शते १२०५ प्चलं। कुमार पाल भूपालात् सम्प्रतिष्ठ मिदं कृतं ॥ २१ ॥

..८ कूप मात्मीयं शिव कूप समन्वितं। निजेन क्षत्र धर्म्मेण पालयामास यश्विरं॥२२॥ ..१ दशाधिके चास्मिन शत द्वादशकेऽश्विने। प्रतिपद्गुरु संयोगे सार्धयामे गते नात् ॥ २३ ॥ दंडं सप्तदश शता न्यश्वानां नृप जज्जकात्। सह पंच नखांश्चैवमय-..भिरस्टभिः ॥ २४ ॥ तणु कोद नवसरा दुर्गौ सोमेश्वरो ग्रहीत्। उच्चांगवरहास्यां चक्रे चैवात्म चादमो ॥ २५ ॥ वहुशः सेवकी कृत्य चौलुक्य जगती पतेः। पुनः

स्थापयामास तेषु देशेषु जज्जकं ॥ २६ ॥ प्रशस्ति मकरो देतां नरसिंहो नृपाज्ञया । नकी प्रय (णे] देवः सूत्र धारोस्तु जशोघरः ॥ २७ ॥ विक्रमे संवत् १२१८ अश्विन दि १ गुरौ ॥ मंगलं महा श्रीः ॥

सूंधा पहाड़ी ।

मारवाड़के जसवंतपुरा के पास उत्तरकी तर्फ पहाड़ीके ढलावमें सूंधा माता नामक चामुंडाके मंदिरमें लगे हुए दो पत्थरों पर यह लेख खुदे हुए हैं ।

(९४[illegible])

ओं ॥ श्वेतांभोजातपत्रं किमु गिरि दुहितुः [illegible] ॥ महिम मुख महाषिद्ध देवी गणस्य । [illegible] ॥ १ ॥ [illegible] स्तब्ध मुरवै शंभोर्भालस्थलेंदुः सुकलि [illegible] । [illegible] र्गानिरनुपमानंद संदोह मूला [illegible] णयोदय सुफलिनी पार्वती प्रेम [illegible] नानां ॥ २ ॥ विकट मुकुट [illegible] । स्वनणुरणित लीला [illegible] ॥ ३ ॥ श्री मद्वत्समहर्षि हर्ष नयनो [illegible] स्कार लिरम्युतिः । [illegible] समुद्र सोदर यशो राशि प्रकाशी [illegible] मायां पनमस्थान [illegible] राजा [illegible] [illegible] र जलधि [illegible] मंधोरणी: [illegible]

॥ ६ ॥ तस्माद्धिमाद्रि भवनाथ यशो पहारी श्रीशोभितो जनि नृपो स्य तनूद्भवोथ । गांभीर्यधैर्य सदन बाल राज देवो यो मुञ्जराज बल भंगमचीकरत्तं ॥७॥ साम्राज्याशा करेणु रिपु नृपति गज स्तोम माक्रम्य जह्रे यत्खड्गो गंध हस्ती समर रस भरे विंध्य शैलाय माने । मुक्ता शुक्तींदु कांतोज्ज्वल रुचिषु लसत्कीर्त्ति रेवातटेषु प्रौढानंदोपचारो स्वप पुलकततिः पुष्कराणां छलेन ॥ ८ ॥ तस्पितृव्य जतयाथ बांधवः श्री महांदुर जनिष्ट भूपतिः । यत्कृपाण लतिकामुपेयुषां छायया विरहितं मुखं द्विषां ॥ ९ ॥ जज्ञे कांतस्तदनु च भुवस्तत्तनुजो श्ववपालः कालः क्रूरे द्विषि सुचरिते पूर्ण चंद्रायमानः । यः संलग्नो न खलु तमसा नैव दोषाकरात्मा तेजो भक्तः क्वचिदपि न यः किंच मित्रोदयेषु ॥ १० ॥ केयूराग्र निविष्ट रत्न निकर प्रोद्यत्प्रभाडंबर व्यक्तं संगर रंग मंडपतले यं वैरिलक्ष्मीः श्रिता । वीरेषु प्रसृतेषु तेषु रजसा नीतेषु दुर्ल्लक्ष्यतां लब्धो पायबलापि निर्म्मल गुणैर्वश्या प्रशस्या कृतिः ॥ ११ ॥ पुत्रस्तस्याहिल इति नृपस्तन्मयूख च्छलेन स्रष्टा यस्य व्यधित यशसां तेजसां तोलनां नु । गंगा तोले शशि तपनयो दंभतश्चारु चेले मध्यस्थायि ध्रुवमिष लसत् कंटके कौतुकेन ॥ १२ ॥ गुर्जराधिपति भीम भूभुजः सैन्य पूर मजयद्रणेषु यः । शंभुवत् त्रिपुर संभवं बलं वाडवानल इवांबुधे र्जलं ॥ १३ ॥ सैन्या क्रांता खिल वसुमती मंडलस्तस्पितृव्यः श्रीमान् राजा भवदथ जितारातिमल्लो ण्हिल्लः । भीम क्षोणी पति गज घटा येन भग्ना रणाग्रे ह्यद्यापि भोनिधि रघु कृते वहे पंक्तिः खलानां ॥ १४ ॥ अंभोजानि मुखान्यहो मृग दृशां चंद्रो दयानां मुदो लक्ष्मीर्यत्र नरोत्तमानुसरण व्यापार पारंगमा । पानानि प्रसभं शुभानि शिखरि श्रेणीव गुप्यद्गुरुस्तोमो यस्य नरेश्वरस्य तुलनां सेनांबु राशेर्दधौ ॥ १५ ॥ उर्व्वीरुड् विटपावलंब सुगृही हर्म्येषु दत्वा दृशं ध्यातात्यंत मनोहराकृति निज प्रासाद वातायनः । भूस्फोटानि वनांतरेषु विततान्या लोक्य हाहेति वाक् सस्मारा तपवारणानि शतशो यद्वैरि राज व्रज — ॥ १६ ॥ दृष्टः कैर्नं चतुर्भुजः स समरे शाकंभरीं यो बलाजग्राहानुजघान मालव पतेर्भोजस्य साढाह्वयं । दंडाधीशम पार सैन्य विभवं तीव्रं तुरुष्कं च यः साक्षाद्विष्णुर साधनीय यशसा शृंगारिता येन भूः ॥ १७ ॥ जज्ञे भूभृत्तदनु तनयस्तस्य बाल प्रसादो भीमक्ष्मा-

मृत्वारण युगली मर्द्दन व्याजतो यः। कुर्वन्पीडा मति बलतया मोचयामास कारागा-राद्भूमी पति मपि तथा कृष्णदेवा भिधानं ॥ १८ ॥ श्रीकर्यो जलद भ्रमं दधुरहो सैन्येस्य से-वारसा यातर्तुप्रतिमे समुज्ज्वल पटा वासा मराल श्रियं। कंपं वायु वशेन केतु निवहाः शस्यानुकारं च ते सङ्गीतानि च कोकिलारव तुलां चित्ते तु तापं द्विषः ॥ १९ ॥ श्रीमां-स्तस्याजनि नर पति र्बांधवो जिंदुराजो यः संडेरेऽर्क इव तिमिर वैरि वृंदं बिभेद। यस्य ज्योतिः प्रकरमभितो विद्विषः कौशिकाभा द्रष्टुं शक्ता न हि गिरि गुहा मध्य-मध्या श्रितास्तत् ॥ २० ॥ गच्छतीनां रिपु मृगदृशां भूपणानां प्रपाते बाष्पासार्द्रै-र्घनतति तुलां बिभ्रतीनामरण्ये। दूर्वा भ्रांतिं मरकत मणि श्रेणयो यत्प्रयाणे तांबूलीय भ्रममिव चिरं चक्रिरे पद्म रागाः ॥ २१ ॥ पृथ्वीं पालयितुं पवित्र मतिमान् यः कर्पु का-णां करं मुंचन् प्राप यशांसि कुंद धवला न्यानंद हृद्याननः। पृथ्वी पाल इति ध्रुवं क्षिति पति स्तस्यांग जन्माभवत्प्रत्येक्षोरु निधिः स गूर्जर पतेः कर्णस्य सैन्या पहः ॥ २२ ॥ यत्सेना किल कामधेनु सदृशी कीर्त्तिं स्रवंती पयः स्वच्छंदं समरांगणेपि भुवने शत्रू-स्तृणी कुर्वती। धर्मं वत्समिव स्वकीय मनघं दृष्टिं नयंती मुदा [illegible] भूमी-भीष्टं समातन्वती ॥ २३ ॥ श्री योजको भूपतिरस्य सूनु [illegible] प्रबल प्रतापः। श्वेतात पत्रेण विराजमानः श्रवत्याणहिल्लाटव पुरेपि रेमे ॥ २४ ॥ [illegible] केलि विपिनं क्रीडाचले दीर्घिकां पल्यंका [illegible] मुदां [illegible]। [illegible]-रि क्षितिपाल बाल ललनाः शैले वने निर्झरे स्थूल [illegible] प्रि-श्रियां ॥ २५ ॥ श्री आशा राज नामा समजनि [illegible] मा-लवानां भुवि यदसि कृतं वीक्ष्य सिद्धाधिराजः। [illegible] यस्य गुप्यद्गुरु स्य तं हतुं नैव शक्तः [illegible] ॥ २६ ॥ [illegible] गिरि शिरः स्थ किं सहस्रांशु बिंबं [illegible] सुभग साया उद्गता [illegible] रुचि शरीरः शैलसाराभिराम [illegible] सुताया मंदिरे [illegible]

तड़ाग-कानन-हरप्रासाद-वापी-प्रपा-कूपादीनि विनिर्म्ममे द्विज जनानंदी क्षमा मण्डले धर्म्मस्थान शतानि यः किल बुध श्रेणीषु कल्पद्रुमः कस्तेस्यंदु तुषार शैल धवलं स्तोत् यशः कोविदः ॥ २९ ॥ श्वेतान्येव यशांसि तुंगतुरग स्तोमः सितः सुभ्रुवां चंचन्मौक्तिक भूषणानि धवलान्युच्चैः समग्राण्यपि। प्रेमालाप भवं स्मितं च विशदं शुभ्राणि वल्लोकशां वृंदानीति नृपस्य यस्य पृतना कैलास-लक्ष्मीं श्रिता ॥ ३० ॥ प्रशस्ति रिय बृहद्गच्छीय-श्री जयमंगला चार्य-कृतिः ॥ भिषग्वि जयपाल-पुत्र-नाम्व सिंहेन लिखिता सूत्र जिसपाल-पुत्र-जिसरविणोत्कीर्ण्णा ॥

(944)

ॐ ॥ जटा मूले गंगा प्रबल लहरी पूरकुहना समुन्मील च्छत्र प्रकर इव नम्रेषु नृपतां। प्रदातुं श्री शंभुः सकल भुवनाधीश्वर तया सया वा देयाद्वः शुभ मिह सुगंधाद्रि मुकुटः ॥ ३१ ॥ आशा राज क्षितिप तनयः श्री मदाल्हादनाह्वो जज्ञे भूभृद्भुवन विदित श्चाहमानस्य वंशे। श्रीनड्डूले शिव भवन कृद्धर्म्म सर्वस्व वेत्ता यस्सा हाय्यं प्रति पद महो गूर्ज्जरेश श्चकांक्ष ॥ ३२ ॥ चंचत्केतक चम्पक प्रविलसत्ताली तमाला गुरु स्फूर्ज्ज च्चन्दन नालिकेर कदली द्राक्षाम्र कर्म्म गिरौ। सौराष्ट्रे कुटिलोग्र कण्टक भिदात्युद्दाम कीर्त्तिस्तदा यस्या भूदभिमान भासुर तया सेनाचराणां रवः ॥ ३३ ॥ श्री मांस्तस्यांगज इह नृपः केल्हणो दक्षिणा शाधीशोदच्चद्धिलिम नृपते मान हृत्सैन्य सिंधुः। निर्भि- द्योच्चैः प्रबल कलितं य स्तुरुष्कं व्यधत्त श्री सोमेशास्पद मुकुट वत्तोरणं कांचनस्य ॥३४॥ भ्रातास्य प्रबल प्रताप निलयः श्री कीर्त्तिपालो भवद्भूनाथः प्रति पक्ष पार्थिव चमूदा- वाहो पमः। यस्खड्गां वुनिधौ हतारि करिणां कुंभस्थलीभ्यः क्षरन्मुक्तानां निकरो ललितं धत्ते सम धारा श्रयः ॥३५॥ यो दुर्दांत किरात कूट नृपतिं भित्वा शरैरासल तस्मि न्कांसहृदे तुरुष्क निकरं जित्वा रण प्रांगणे। श्री जावालि पुरे स्थितिं व्यरचयल्ल- ट्टदुल राज्येश्वर श्चिंता रत्न निभः समग्र विदुषां निःसीम सैन्याधिपः ॥ ३६ ॥ श्री

समर सिंह देवस्तत्तनयः क्षोणि मण्डलाधिपतिः। इन्द्र इव विबुध हृदयानन्दी पुरु-षोत्तमो हरिवत् ॥ ३७ ॥ प्राकारः कनका चले विरचितो येनेह पुण्यात्मना [illegible] मनोज्ञ कोष्ठक ततिर्विद्याधरी शीर्षवान्। किं शेषः फण वृंदमेदुर तनुर्वक्र स्थले [illegible] भुजो हारः किं भ्रमण भ्रमादुडु गणः किं वेष [illegible] लियति ॥ ३८ ॥ कमल वनमिवेदं [illegible] दंभान्निखिल विपुल देश श्री समा कर्षणाय। लिखित विशद [illegible] वीर क्षितिपति श्रिफला जिरतोम सख्या निमित्तं ॥ ३९ ॥ तोलयामास [illegible] स्मानं सोमपर्वणि। आराम रम्य समरपुरं यः [illegible] ॥ ४० ॥ [illegible] भूपति पुत्रो जावालि पुरवरे चक्रे। श्री [illegible] देवो [illegible] ॥ ४१ ॥ श्री समरसिंह देवस्य नंदनः प्रबल शौर्य [illegible] [illegible] दुपमानः ॥ ४२ ॥ श्री नड्डूल-श्री जावालि पुर-[illegible] [illegible] खेड—रामसैन्य श्री माल-रत्नपुर-[illegible] ॥ ४३ ॥ शेषः स्तोतुमिव प्ररूढ रसना [illegible] कल्लोल माला मिषात्। [illegible] विश्व श्री हृदयस्य हारलतिकां [illegible] यस्यां गजं प्रसूते स्म। श्री [illegible] दानरुरुष्काधिपमदद्दलतो [illegible] राजांतको यः। प्रोट्टामन्याय [illegible] [illegible] पुरि शिव सदन [illegible] [illegible] निष्काहः [illegible] [illegible] साक्षादिवेह [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

यत्वं प्रणयिनि जने देव एवैष तस्मात् ॥ ४९ ॥ स्फूर्जद्वीरम गूर्जरेश दलनो यः शात्र [illegible] द्विपंग्रंचत्पातुक पातनैकरसिकः संगस्य रंगा यहः । उन्माद्यन्नहरा चल स्य कुलिश कार स्त्रिलोकी तल भ्राम्यत्कीर्त्तिर शेष वैरि दहनोदग्र प्रतापोल्बणः ॥ ५० ॥ श्री [illegible] द्रिज जानुवादिक कर त्यागो तथा विग्रहादित्य स्यापि च राम सैन्य नगरे नित्यार्च्च- नार्थं प्रदः । प्रोत्तुंगेप्य पराजितेश भवने सौवर्ण-कुंभध्वजारोपी रूपयज मेखला [illegible] देवस्य यः ॥ ५१ ॥ चक्रे श्री अप राजितेश भवने शाला तपा- [illegible] कैलास प्रतिमास्त्रिलोक कमलालंकार रत्नोच्चयः । येन क्षोणि पुरंदरेण [illegible] भाग्यं वा निज मेव पर्वत तुलां नीतं समंतादपि ॥ ५२ ॥ [illegible] दधीचि स्तथा हृद्यः कल्पतरुः प्रकाम मधुरा- [illegible] । श्री [illegible] देव दान मुदिता स्तन्नाम गृह्णंति यत्तत्कीर्ति- [illegible] ॥ ५३ ॥ स्फूर्ज्ज न्निर्झर झांकृतेन सुभगं तत्केल [illegible] कदली वृंदेन घत्तोऽत्र यः । आम्राणां विपिनं च देव [illegible] क्वचितं जम्बू वने नाचितं ॥ ५४ ॥ [illegible] द्विनांनालक निकर सन्नाह सुभगः । [illegible] पीठ रतिरस वशात्तेन ददृशे ॥ ५५ ॥ [illegible] देवतां चामुंडा मघटेश्व [illegible] विदि [illegible] । [illegible] मंदिरे मंडपं क्रीड [illegible] ॥ ५६ ॥ सम्वत् १३१८ त्रयोदश शते [illegible] । [illegible] प्रतिष्ठा मंडपे द्विजैः ॥ ५७ ॥ [illegible] । [illegible] वा [illegible] चंडिका [illegible] मूर्त्तिः । [illegible]

[illegible] राज्यं भजतु [illegible] द्विजेभ्यः ॥ ५८ ॥

[illegible] रामचन्द्रः । [illegible]

[illegible] ॥ ५९ ॥ [illegible]-विजय पाल-पुत्रेण नाम्य [illegible]

[illegible] ॥

घटियाला।

यह स्थान मारवाड़ के राजधानी जोधपुर के पश्चिम उत्तर की ओरमें अवस्थित है और इसी गांवके पास यह शिला लेख मिला था इसकी भाषा प्राकृत है और मारवाड़ के सब लेखों से प्राचीन है।

यह लेख जोधपुर के प्रसिद्ध ऐतिहासिक मुंशी देवीप्रसादजी ने अपने मारवाड़ के प्राचीन लेख नामक पुस्तक में संस्कृत अनुवाद के साथ छपवाया था वही यहां पर प्रकाशित किया जाता है।

(945)

घटियाला।

ओं सग्गापवग्गमग्गं पढमं सयलाण कारणं देवं। [illegible] णमह जिणणाहं ॥ १ ॥ रहुतिलओ पडिहारो आसी [illegible] हार वन्सो समुणई एत्थ सम्पत्तो ॥ २ ॥ विप्पो सिरि हरिअन्दो [illegible] भद्दा। अस्स सुओ उप्पणो वीरो सिरि रज्जिलो एत्थ [illegible] ॥ ४ ॥ ओ सिरि णहड़ोत्ति एअस्स। अस्सवि तणओ [illegible] अस्सवि चन्दुअ णामा उप्पणो सिलुओ विए [illegible] त्ति सिरि झिल्लुओ जाइ ॥ ५ ॥ सिरि झिल्लुअस्स [illegible] अस्सवि कक्कुअ णामो दुल्लह देवीए [illegible] भणिअं पलोइअं सोम्मं। [illegible] ण हसियण कयं ण पलोइअं [illegible] कज्जं परिहीणं ॥८॥ सुत्थादुत्थावि [illegible] पारिआ जिणवणिय मण्डले [illegible] मंडेण। णक्क [illegible] जणं रज्जिऊण [illegible]

घनरिद्धि समिद्धाणं म्मि पउराणं णिअकरस्स अब्भहिअं। लक्खं सयब्भु सरिसं सणांव तह जेण दिट्ठाईं ॥ १२ ॥ णवजोव्वणरूअपसाहिएण सिंगार गुणग रूक्केण। जणवयाणज्ज मलज्जं जेण णेह संचरिअं ॥ १३ ॥ बालाण गुरू तरुणाण तह सही गय वयाण तण ओव्व। इय सुचरिएहि णिच्चं जेण जणो पालिओ सव्वो ॥ १४ ॥ जेण णमन्तेणवया सम्माणं गुण थुई कुणं तेण। जम्पन्तेण य ललिअं दिण्णं पणईण धणणिवहं ॥ १५ ॥ मरु माडवल्ल तमणी परिअंका अज्जगुज्जरित्तासु। जणिओजेण जणाणं सच्चरिअ गुणेहि अणुराओ ॥ १६ ॥ गहिऊण गोहणाईं गिरिम्मि जाला उलाओ पल्लिओ। जणिआओ जेण विसमे वडणाणय मण्डले पयडं ॥ १७ ॥ णीलुप्पल दल गन्धारम्मा मायं दमहु अविंदेहि। वरइक्खुपण्ण छण्णा एसा भूमी कया जेण ॥ १८ ॥ वरिस सएसु अणवसु अट्ठारस समग्गलेसु चेतम्मि। णक्खत्ते विहु हत्थे बहवारे धवल बीआये ॥ १९ ॥ सिरि ककुएण हट्टं महाजण विप्पपय इयणि बहुलं। रोहिन्स कुअ गामे णिवेसिअं किशि विद्धिए ॥ २० ॥ मद्दोअरम्मि एक्को बीओ रोहिन्स कुअगामंम्मि। जेण जसस्स व पुजांए एएथम्भा स मुद्धाविआ ॥ २१ ॥ तेण सिरि ककुएणं जिणस्स देवस्स दुरिअ णिद्दलणं। कारविअ अचल मिमं भवणं भत्तीए सुहजणयं ॥ २२ ॥ अप्पिअमेएं भवणं सिद्धस्स धणेसरस्स गच्छम्मि। तह सन्त जम्ब अम्बय वणि भाउड पमुह गोट्ठीए ॥ २३ ॥ श्लाघ्ये जन्म कुले कलंक रहितं रूप नवं यौवनं। सौभाग्यं गुण भावन शुचि मनः क्षांति यशो नम्रता ॥ २४ ॥

संस्कृत अनुवाद।

स्वर्गापवर्ग मार्गं प्रथमं सकलानां कारणं देवं। निःशेष दुरित दलनं परम गुरुं नमत जिन नाथम् ॥ १ ॥ रघु तिलकः प्रतिहार आसीत श्री लक्ष्मण इति रामस्य। तेन प्रतिहार वंशः समुन्नतिमत्र समायातः ॥ २ ॥ विप्रः श्री हरिचंद्रः भार्या आसीत इति क्षत्रिया भद्रा। ताभ्यां सुतः उत्पन्नः वीरः श्री रज्जिलोऽत्र ॥ ३ ॥ अस्यापि नर भट नामा जातः श्री नाग भट इति सुतः। अस्यापि तनयस्तातः तस्यापि यशो वर्द्धनो जातः ॥ ४ ॥ अस्यापि

चंदुक नामा उत्पन्नः सिल्लुकोपि एतस्य। झोट इति तस्य तनयः अस्यापि श्री भिल्लुको जातः ॥ ५ ॥ श्री भिल्लुकस्य तनयः श्री कक्कः गुरु गुणैः गर्वितः। अस्यापि कक्कुक नामा दुर्लभ देव्यामुत्पन्नः ॥ ६ ॥ ईषद्विकाशं हसितं मधुर भणितं प्रलोकितं सौम्यं। नमनं यस्य न दीनं रासः स्थेयः स्थिरा मैत्री ॥ ७ ॥ नो जल्पितं न हसितं न कृतं न प्रलोकितं न संस्मृतम्। न स्थितं न परिभ्रातं येन जने कार्य परिहीनं ॥ ८ ॥ सुस्था दुःस्था द्विपदा अधमा तथा उत्तमा अपि सौख्येन। जनन्येव येन धृता नित्यं निज मण्डले सर्वे ॥ ९ ॥ उपरोध राग मत्सर लोभैरपि न्याय वर्जितं येन न कृतो द्वयोर्विशेषः व्यवहारे कदापि मनागपि ॥ १० ॥ द्विजवर दत्तानुज्ञं येन जन रंक्तवा सकलमपि। निर्मत्सरेण जनितं दुष्टा-नामपि दण्डनिष्ठपनम् ॥ ११ ॥ धन ऋद्ध समृद्धानामपि पौराणां निज करस्याभ्यर्थितम। लक्षं शतं च सदृशत्वेन तथा येन दृष्टानि ॥ १२ ॥ नव यौवन रूप प्रसाधितेन शृङ्गार गुणज्ञ कक्ककेण जनवचनीयमलज्जं येन जने नेह संचरितम् ॥ १३ ॥ बालानां गुरुस्तरुणानां तथा सखा गत वयसां तनय इव। प्रिय सुचरितैर्नित्यं येन जनः पालितः सर्वः ॥ १४ ॥ येन नमता सदा सन्मानं गुणस्तुतिं कुर्वता। जलरता च ललितं दत्तं प्रणयिभ्यो धन-निवहः ॥ १५ ॥ मरुमाडवल्लस्त्र मणी परि अंका अज्जगुर्जरेषु। जनितो येन जनानां सच्चरित गुणैरनुरागः ॥ १६ ॥ गृहीत्वा गोधनानि गिरौ जाला कुलाः पल्लयः। जनिता येन विषमे वटनाण कमण्डले प्रकटम ॥ १७ ॥ नीलोत्पल दलगन्धा रम्यमाकन्द मधुप वृन्दैः। वेरक्षु पर्णच्छन्ना एषा भूमिः कृतायेन ॥ १८ ॥ वर्ष शतेषु च नवसु अष्टादश सम ग्रलेषु चैत्रे नक्षत्रे विधु भस्थे बुधवारे धवलि द्वितीयायाम् ॥ १९ ॥ श्री कक्ककेन हट्टं महाजनं विप्र प्रकृति वणिज बहुलम्। रोहिन्स कूप ग्रामे निवेशितं कीर्त्ति वृद्धै ॥ २० ॥ मण्डोवरे एको द्वितीयो रोहिन्स कूप ग्रामे। येन यशस इव पुञ्जावेतौ स्तंभौ समुत्तब्धौ ॥ २१ ॥ तेन श्री कक्कुकेन जिनस्य देवस्य दुरित निर्दलनम्। कारितमचलमिदं भवनं भक्त्या शुभ जनकम् ॥ २२ ॥ अपितमेतद्भवनं सिद्धस्य धनेश्वरस्य गच्छे। सह शांत जम्बु आम्बक वनि भाटक प्रमुख गोष्टये ॥ २३ ॥ श्लाघ्य जन्म कुले कलंक रहितं रूपं नवं यौवनं। सौभाग्यं गुण भावनं शुचिमनः क्षान्तिर्यशो नम्रता ॥ २४ ॥

पिंडवाड़ा ।

सिरोही राज्यका यह स्थान भी प्राचीन है। यहां रेलवे स्टेशन है और सिरोही जाने वाले लोग यहां उतर कर जाते हैं।

(946)

ओं ॥ संवत १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुक्रे श्री सिरोही नगरे रायि दूर्जण सालजी श्री विजय राज्य प्राग वंशे साह गोयंद भार्या थनी पुत्र केल्हा भार्या चापलदे गुसदे पुत्र जीवा जिणदास केल्ला पीडरवाड़ा ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी कारापितं श्री तपा गच्छे श्री कमल कलस सूरि तत्पट्टे श्री विजय दान सूरि। साः जीवा श्रेयोर्थं सा० जीवा दिने ४० अणसण सीधा संवत् १६०२ का० फागुण वदि ८ दिने अणसण सीधा शुभं भवतु कल्या० ॥

(947)

ओं ॥ संवत् १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुक्रे श्री सीरोही नगरे। राथि श्री दुर्जण साल जी विजय राज्य प्राग वंशे कोठारी छाछो भार्या हासिलदे पुत्र कोठारो श्री पाल भार्या पेतलदे तस्य पुत्र कोठारी तेजपाल राज पाल रतन सी राम दास ----- बाई लाछल दे श्रेयोर्थं पींडरवाडा ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी कारापितं। श्री तपा गच्छे श्री हेम विमल सूरि तत्पट्टे श्री आणंद विमल सूरि तत्पट्टे श्री विजय दान सूरि। शुभं भवतु कल्याणमस्तु श्रा० बा० लाछलदे श्रे०।

(948)

सं० १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुक्रे श्री सिरोही नगरे राथि श्री दूर्जण साल जी विजय राज्ये प्राग वंशे कोठारी छाछा भार्या हासल दे पुत्र कोठारी श्री पाल भार्या पेतलदे।

लाछलदे ससारदे पुत्र कोठारी तेज पाल राजपाल रतन सी रामदास शहंस कर्ण पीडरवा ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी करापित कोठारी तेजपाल श्रेयोर्थे श्री तपा गच्छे श्री हेम विमल सूरि तत्पट्टे श्री आंणद विमल सूरि तत्पट्टे श्री विजय दान सू० शुभं भवतु कल्याणमस्तु ॥

(९४९)

ओं ॥ संवत् १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुक्रे श्री सिरोही नगरे राय श्री दूर्जण सालजी विजय राज्ये प्राग वंशे सा थाथा भार्या गांगादे पुत्र सा – मा भार्या कसमीरदे पुत्री रत्नी पींडर वाडा ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी करापितं थाई गांगादे श्रेयोर्थं श्री तपा गच्छ श्री कमल कलश सूरि सुभं भवतु कल्याणमस्तु ॥

(९५०)

ओं ॥ संवत् १६१२ वर्षे फागुण वदि ११ शुक्रे श्री सिरोही नगरे माहाराज श्री उद० सिंघ जी विजय राज्ये प्राग वंशे कोठारी छाछा भार्या हंसलदे पुत्र कोठारी श्री पाल भार्या लाछलदे पुत्र रामदास करण सी सहस करण – – – पींडर वाडा ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी करापितं श्री तपा गच्छे श्री हेम विमल सूरि तत्पट्टे आणंद विमल सूरि – – – –

(९५१)

ओंनमः श्री वर्द्धमानाय ॥ प्राग्वाट वंशे व्यवहारि माणा सूनुः प्रसूनोज्वल कीर्ति कारिः । श्री पुण्य पुण्या जनि पूर्व सिंह स्तस्य प्रिया जाल्हण देवि नाम्नी ॥ १ ॥ भद्रा भद्रारत रोरु – – – – कलापः सिंह फुर पाङः । जाता धर्म मांडिकन्दो प्रभुक्ता तस्या भवत्कामल देवि नाम्नी ॥ २ ॥ तदर्थी २ बान्धानुनैः सुहिमौ सिंह सिंधौ गमौ लाभ ।

सनयौ विनयौ खिती क्षणौ विजयते तनयौ तयोरिमौ ॥ १ ॥ तत्राद्यः सज्जन श्रेणी रत्नं रत्नाभिधो घनं। धनाणव्य जन भूतु – राज मान्यो धियां निधिः ॥ ४ ॥ द्वितीय सुद्वितीयेंदु कांति कांच गुणोच्चयः। घरणः शरणं श्रीणां प्रवीणः पुण्य कर्मणि ॥ ५ ॥ रत्ना देवी धारल देव्यौ जात्यौ तयोरनुक्रमतः । समभूता मति निर्मल शीलालंकार धारिण्यौ ॥ ६ ॥ तस्य सुता ५—तेजा षासल बास जाल्हणेनाख्याः। शांत स्वभाव कलिता गुण तरु मलयाः कला निलयाः ॥ ७ ॥ इतश्च। श्री प्राग्वाटाभिध जाति शृंग शृंगार शेखरः। पुरा भून्महुणा नामा व्यवहारी बरस्थितिः ॥ ८ ॥ तस्य जोला भिधः सूनु स्तत्पुत्रो भावठोऽभवत्ः ॥ ९ ॥ तदीय पुत्रः सुगुणैः पवित्रः स्वाजन्य वित्तः सुनया सुवित्तः। लींबाभिधानः सुकृति प्रधानः सत्कार्य धुर्यो व्यवहार वर्यः ॥ १० ॥ नयणा देवी नाम सुदेवी विख्यात संज्ञिक तस्या दयिते द्वयवो पेते शीलाद्युद्यम गुण कलिते ॥ ११ ॥ नयणा देवी तनुजो मनुजो चित चारु लक्ष्मणो पेतः। अमरो स्मरो गुरु जन जन — जनन्यादि पद कमले ॥ १२ ॥ भीम कांत गुण ख्याते प्रजा पालन लालसे। हाजाभिधे धरा धीशे प्राज्य राज्यं – रीक — ॥ १३ ॥ आस्यामुभाभ्यां धनि पूर पाल लींबाभिधाभ्यां सदुपासकाभ्यां। ग्रामेऽग्रिमे पींडर वाडकाख्ये प्रसाद - - - विरुद धारि सारः ॥ १४ ॥ विक्रमाद्बाण तर्क्काब्धि भूमिते वत्सरे तथा। फाल्गुनाख्ये शुभे मासे शुक्लायां प्रतिपत्तिथौ ॥ १५ ॥ कल्याण वृद्धय भ्युदयेक दायकः, श्री वर्द्धमान श्चरमो जिनेश्वरः। श्री मत्तपः संयम धारि सूरिभिः प्रतिष्ठितः स्पष्ट महा महादीह ॥ १६ ॥ आरवींदु समयादनया श्री वर्द्धमान जिन नायक मूर्त्या । राजमानमभिनंदतु विश्वानंद दायक मिदंवर चैत्यं ॥ १७ ॥ श्लो० ॥

(952)

राज श्री अमर सिंह जी लपावता देहनारा देहथी आरोहणो – कमनइ कायोछइ। आजक – वान देरा माहि घोलसइ तिनइ गधछ्इ ढ – गाल छइ संवतु १७२३ वर्षे मगसिर सुदि – ॥

वीरवाडा (सिरोही)

महावीर स्वामी का मंदिर ।

(953)

सं० १४१० वर्षे श्रे० महणा भा० कपूर दे० पु० जगमालेन भा० सुतलदे पु० कडूया देल्हा समं वीरवाडा ग्राम श्री महावीर चैत्योद्धारः कारितः कच्छोलीवाल गच्छे भ० श्री नरचंद्र सूरि पट्टे श्री रत्नप्रभ सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्टितः । मंगल ॥ प्राग्वाट ज्ञातीयः ॥

वसंत गढ़ (सिरोही)

(किले के अन्दर जैन मंदिर के मूर्त्ति पर ।

(आसन के दोनो तरफ पीठ पर)

(954)

सं० १५०७ वर्षे माघ सुदि ११ वुधे राणा श्री कुंभ कर्ण राज्ये वसंत पुर [illegible] [illegible] कारको प्राग्वाट व्य० झगड़ा भा० मेघादे पुत्र व्य० कंटनेन भा० माणिक दे पुत्र [illegible] पौत्र जोणादि युतेन प्राग्वाट व्य० धणसी भा० ढीची पुत्र व्य० [illegible] भा० [illegible] पुत्र जावडेन भोजादि युतेन मूल नायक श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री सोम सुन्दर सूरि तत्पट्टालंकरणं श्री मुनि सुन्दर सूरि श्री जय चन्द्र सूरि पट्ट प्रतिष्ठित गच्छाधिराज श्री रत्न शेखर सूरि गुरुभिः ।

पालडी (सिरोही)

([illegible])

सं० १२४९ वर्षे माघ सुदि १० गुरौ [illegible] [illegible] महाराजाधिराज श्री [illegible] देव राज्ये तत्पुत्र राज श्री [illegible] [illegible] [illegible] ... [illegible] प्रतिष्ठित महा

श्रीत्मय वाल्हण प्रभृति पंच कुलेन महं सूम देव सुत राजदेवेन देव श्री महावीर प्रदत्त द्र० १ पाट्टह्यली मध्यात् । बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभि सागरादिभि यस्य यस्य यदा दत्तं तस्य तस्य तदा फलं ॥

कालाजर (नवाना के निकट)

(956)

सं० १३०० वरषे जेठ सुदि १० सोमे अद्येह चंद्रावत्यां महाराजाधिराज श्री आल्हण सिंह देव कल्याण विजय राज्ये तन्नियुक्त मुद्रायां महं श्री षेता प्रभृति पंच कुलं शासन मभि लिख्यते-यथा महं श्री षेताकेन - - - नान कलागर ग्रामे - - - - - - श्री पार्श्व नाथ देवस्य लो - - - - रहिता - - - एवं ॥ आचंद्रार्क - - - यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥ साखि राउल० त्रा अलिणव ब्राद उव - ब्रजव - सोहण - - - वणादे सणा - - - - - - - - कल्हा ।

कामद्रा (सिरोही)

(957)

ओं । श्री भिल्लमाल निर्यातः प्राग्वाटः वणिजांवरः श्री पतिरिव लक्ष्मी युग्गो ल (क्ष्मी) – राज पूजितः ॥ आकरो गुण रत्नानां वंधु पद्म दिवाकरः ज्जुजकस्तस्य पुत्र स्यात् नम्मराम्मै ततो परो ॥ जज्जु सुत गुणाद्ये धामनेन प्रसाद्भुयम् । दृष्ट्वा चक्रे गृह जैनं मुक्तये विश्व मनोहरम् ॥ सम्वत् १०९१ – – – – सपुने - ।

उथमा (सिरोही)

(959)

संवत् १२५१ आषाढ़ वदि ५ गुरौ श्री नाणकीय गच्छे उथण सदधिष्ठाने । श्रीपार्श्व-नाथ चैत्ये ॥ धनेश्वर पुत्रेण देव धरेण धीमता । सयुक्तेन यशोभद्र आल्हा पाल्हा

सहोदरैः। यसो भटस्य पुत्रेण। साईं यरा घरेण भा पुत्र पौत्रादि युक्तेन धर्म्म हेतु मह मंना ॥ भगनी धारमत्याख्या। भुतश्चैव यशो भटः। कारितं श्रेयसे ताभ्यां। रम्येदस्तुंग मंडप ॥ छ ॥

बघीणा (सिरोही)

(९५९)

संवत् १३५९ वर्षे वैशाख शुदि १० शनि दिने न - - - ल देशे वाघ सीण ग्रामे महाराजा श्री सामंतसिंह देव कल्याण विजय राज्ये एवं काले वर्त्तमाने सोलं० पाभट पु० रजरसोलं० गागदेव पु० आंगद मंडलिक सोल० सी माल पु० कुंताधारा सो० माला पु० मोहण त्रिभुवण पद्दा सोहरपाल सो० धूमण पटे पायत् वणिग् सीहा सर्व सोलंकी समुदायेन वाघसीण ग्रामीय अर - - हट अरहट प्रति गोधूम से० ४ ढींवड़ा प्रति गोधूम सेई २ तथा धूलिया ग्रामे सो० नयण सीह पु० जयत माल सो० मंडलिक अरहट प्रति गोधूम सेई ४ ढींवड़ा प्रति गोधूम सेई २ सेतिका २ श्री शांतिनाथ देवस्य यात्रा महोत्सव निमित्तं दत्ता ॥ एतत् आदानं सोलंकी समुदायः दातव्यं पालनीयं च। आचंद्रार्कं॥ यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥ मंगलं भवतु ॥

लाज-नीतोड़ा (सिरोही)

(९६०)

संवत् १२ वर्षे ४४ माह सु० ६ श्रे० जेतू आसल प्रति पत्नेमधिक कुअर सीह पतिना। पाऊ स्तु।

(९६१)

मन्दिर घर उपम विचेन करावी।

नोदिया (सिरोही)

(962)

संवत् ११३० वैसाष सुदि १३ नंदियक चैत्य साले वापी निम्मापिता सिव गणैः।

(963)

ॐ॥ सतिणि सील वंता च। सद्भाव भक्ति संयुता॥
जिन गृहे सैल स्तंभा द्वौ। मंडप मूले थापिताः॥ १ ॥

श्री महावीर स्वामि जी के मन्दिर के स्तंभ पर।

(964)

श्रीं॥ संवत् १२०१ भादवा सुदि १० सोम दिने निधा भार्या वरा पुत्र मोतिणिया स्तंभ का० २

(965)

श्री विजयते॥ संवत् १२९८ वर्षे पोस सुदि ३ राठउड पून सीह सुत रा० कमण योथैं पुत्र भीमेण स्तंभो कारितः॥ श्री ---- सूरि श्री --।

कोटरा (सिरोही)

(969)

॥ पूर्वं डीडिला ग्राम मल नायकः श्री महावीरः संवत् १२०८ वर्षे पिप्पल गच्छीय वजय सिंह सूरिभिः प्रतिष्ठितः पश्चात वीर पल्या प्रा० साह सहदेव कारिते प्रसादे र्ये श्री वीर प्रभ सूरिभिः स्थापितः। संवत् १९६५ वर्षे।

वरमांण (सिरोही)

(967)

सं० १३५१ वर्षे माघ वदि १ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० साजण भा० राल्हू पु० पून सीह भा० २ पद्मल जालू पुत्र पदमेन भा० मोहिणि पुत्र विजय सीह सहितेन जिन युगल युग्मं कारितं ॥ छ ॥

(968)

ओं० संवत १४४६ वर्षे वैशाख वदि ११ बुधे ब्रह्माणीय गच्छे भट्टारक श्री मदन प्रभ सूरि पट्टे श्री नंदिश्वर सूरि पट्टे श्री विजय सेन सूरि पट्टे श्री रत्नाकर सूरि पट्टे श्री हेम तिलक सूरिभिः पूर्वं गुरु श्रेयोर्थं रंग मंडपः कारापितः ॥

लोटाना (सिरोही)

(969)

संवत १३०८ वर्षे उदे सीह सुत पदम सीह ।

माकरोरा [सिरोही]

(970)

श्री सुविधि जिन प्रासादात् माकोरा मध्ये। संवत् [illegible] वर्षे कनक कमला गच्छे भट्टारिक श्री मत् रत्नसूरि प० कनक विजय गणि वेठाला ६ [illegible] धामाम रहा। मंगला

मोटा सा० घना मु० दसरथ जीवा सा० अमरा सा० कोठारी करमसी सा० केसर सा० जगन्नाथ सा० लषमा सा० राजा लाधा संषा तेजाः जीवाः पीथाः जगा अमरा रण छोड़ देवा देवा भगवान रामजी राज जोगा कल्याणः सुजाणः जोगाः रामजी आसा बाई चांपी बाई जगी समस्त श्राविक श्रावि-काइ सेवा भगति भली रीति कीधी संघस्य कल्याणाय भवतु ।

धवली [सिरोही]

(971)

॥ सं० । १९६१ वैशाख शुक्ल ५ बुध वासरे श्री महावीर प्रसाद जीर्णोद्धार श्री संघेन प्राग्वाट ज्ञातीय सा० । खुबचंद मोती सा । लुंबा उमा सा । तलका वाला प्रमुख कारापितम् तस्यो परी ध्वज दंड गच्छ नायक श्री कमल कलसा गच्छेश भट्टा० । श्री विजय महेंद्र सूरिस्वरभिः प्रतिष्ठितम् गं० । पं० डुंगर विजय वां० । नथु प्रमुख, इति ज्ञेयम् । शुभं

सीवेरा [सिरोही]

(972)

संवत् १६६५ वर्षे पंडित श्री माहा शिष्य जय कुशल जस कुसल कातिक चौमासु कीधु ठाणाः २ सीवेरा ग्रामे ।

जीरावल पार्श्वनाथ [सिरोही]

(973)

संवत् १४८३ वर्षे प्रथम वैशाख सुदि १३ गुरौ श्री अंचल गच्छे श्री मेरु तुङ्ग सूरीणां पट्टोद्धरण श्री जय कीर्त्ति सूरीश्वर सुगुरूपदेशेन पत्तन वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय मीठ

डोया सा० संग्राम सुत सा० सलषण सुत सा० तेजा भार्या तेजल दे तयोः पुत्रा सा० डोडा सा० पीमा सा० मूरा सा० काला सा० गांगा सा० डीडा सुत सा० नाग राज सा० काला सुत सा० पासा सा० जीव राज सा० जिणदास सा० तेजा द्वितीय भ्राता सा० नर सिंह भार्या कउतिग दे तयोः पुत्री सा० पास दत्त सा० देव दत्त श्री जीराउला पार्श्वनाथ स्य चैत्ये देहरी १ कारापिता श्री देव गुरु प्रसादात् प्रवर्द्धमान भद्रं मांगलिकं भूयात् ॥

(974)

ओं ॥ सं० १४८३ वर्षे भाद्रवा वदि ७ गुरु कृष्ण पक्षे श्री तपा गच्छ नायक श्री श्री देव सुंदर सूरि पदे श्री सोम सुंदर सूरि श्री मुनि सुंदर सूरि श्री जय चंद्र सूरि श्री भुवन सुंदर सूरि उपदेशेन श्री कल वर्गा नगरे कोठारी याहउ सामत सं नाने को नरपति भा० देमाई पुत्र सं० उकदे पासदे पूनसी मना श्री उसवाल ज्ञातीय कटारीया गोत्र श्री जीराउला भुवने देव कुलिका कारापिता ॥ शुभं भवतु ॥ श्री पार्श्वनाथ प्रसादात् ॥ ओं कटारिया गोत्र वरं महीयं नात्तु पिता मे जननी देमाई । श्री सोम सुंदर गुरुर्गुरय भदेयाः श्री छाजल मंडन मात्र श्राद्धं ॥ १ ॥

(975)

ओं ॥ सं० १४८३ वर्षे भाद्र वदि ७ गुरु दिने कृष्ण पक्षे श्री तपा गच्छ नायक श्री देव सुंदर सूरि पट्टे श्री सोम सुंदर सूरि श्री मुनि सुंदर सूरि श्री जयचंद्र सूरि श्री भुवन सुंदर सूरि श्री उपदेशेन श्री कलवर्गा नगरे श्री उसवाल ज्ञातीय सा० धणसी समाने सा० जयता भा० वा० तिलक सुत सं० समरसी सं० मोपसी श्री जीराउला भुवने देवकुलिका कारापिता । शुभं भवतु । श्रीपार्श्वनाथ प्रसादात् ।

(976)

ओं ॥ सं० १४८३ वर्षे भाद्रवा वदि ७ गुरु दिने कृष्ण पक्षे श्री तपा गच्छ नायक श्री देव सुंदर सूरि पट्टे श्री सोम सुंदर सूरि श्री मुनि सुंदर सूरि श्री जयचंद्र सूरि श्री भुवन

सुंदर सूरि उपदेशेन श्री कलबर्गा नगरे ओसवाल ज्ञातीय म० मलुसी संताने सं० रतन भार्या बा० बीढ सुत सं० आमसी श्री जीराउल भुवने देवकुलिका कारापिता। शुभं भवतु श्री पार्श्वनाथ प्रसादात ॥ छ ॥ सा० आमसी पुत्र गुणराज सहस राज।

(977)

स्वस्ति श्री संवत् १४८१ वर्षे वैशाख सुदि ३ वृहत्तपा पक्षे भट्टा० श्री रत्नाकर सूरीणामनुक्रमेण श्री अभयसिंह सूरीणा पट्टे श्री जय तिलक सूरीश्वर पट्टावतंस भट्टा० श्री रत्न सिंह सूरीणामुपदेशेन श्री वीसल नगर वास्तव्य प्राग्वाटान्वय मंडन श्रे० षेत सीह नंदन श्रे० देवल सीह पुत्र श्रे० षोषा तस्य भार्या सं० प्रणउ देव्ये तयोः सुता सं० साडा सं० दादा सं० मूदा सं० दूघाभिधै रेतेः कारि।

(978)

स्वस्ति संवत १५०८ वर्षे आषाढ़ सुदि १२ शनै सू० झाला सुहडा नरसी भीमा मांडण सांडा गोपा मेरा मोकल पांचा सूरा नित्य प्रणम्य अष्टांग सकुटुंब।

(979)

ओं ॥ सं० १८५१ वर्षे आसाढ़ सुदि १५ दिने श्री जीरावल पार्श्वनाथजीरो जीर्णोद्धार कारापितः सकल भट्टारक पुरंदर भट्टारक जी श्री श्री श्री श्री श्री १०८ – श्वर राज्येन जीर्णोद्धार करापितं हजार ३०१११ रुपीया षरचीवी माल लीधो श्री जीरावल वास्तव्य मु०। षजा। को। दला। सा० कला। सा० रसा। सा० सघा। सा० जोयन सा० भणला। सा० वारम। सा० रामल। – – – यकी काम कारापितः। जोसी दुरगा। भात राजा जात्रा सफलः ॥

श्री अंजारा पार्श्वनाथ ।

(९३०)

स्वति श्री संवत् १६५२ वर्षे कार्त्तिक वदि ५ वुधे येषां जगद्गुरुणां संवेग वैराग्य सौभाग्यादि गुणगण श्रवणात् चमत्कृतैर्महाराजाधिराज पाति शाहि श्री अकबराभिधानैः गुर्जरदेशात दिल्ली मंडलेश बहुमानमाकार्य धर्मोपदेश कर्णन पूर्वकं पुस्तक कोश समर्पणं डाबराभिधान महासरो मत्स्यवध निवारणं प्रति वर्ष षड्मासिकामारि प्रवर्त्तनं सर्वदा श्री शत्रुंज तीर्थे मुंडकाभिधान कर निवर्तनं जीजियाभिधान करकर्त्तनं निज सकल देश दानमृत्त स्वमोचनं सदैव वंदय रुण निवारणं चित्रशादि धर्म कृतानि प्रवर्त्तं तेषां श्री शत्रुंजये सकल देश संघयुत कृत यात्राणां भाद्रपद शुक्लैकादशी दिने जात निर्वाणां शरीर संस्कार स्थानासन्न फलित-सहकारणां श्री हिर विजय सूरिश्वराणां प्रति दिनं दिव्य नाद्यनाद श्रवण दीप दर्शनादिके जोय प्रभायाः स्तूप सहिताः पादुकाः कारिताः पं० मेघेन भार्या लाडकी प्रमुख कुटुंब युतेन प्रतिष्ठिताश्च तपागच्छाधिराजैः भट्टारक श्री विजयसेन सूरिभिः श्री श्री विमल हर्ष गणि श्री श्री कल्याण विजयगणि श्री श्री सोम विजय गणिभिः प्रणता भव्य जनैः पुज्यमानाश्चिरं नन्दतु ॥ लिखिता प्रशस्तिः पद्माणंदगणिना श्री उन्नत नगरे शुभं भवतु ॥

श्री कापड़ा पार्श्वनाथ ।

(९३१)

संवत् १६७८ वर्षे वैशाखवदि १५ तिथौ सोमवारे स्थाने महाराजाधिराज महाराजश्री गजसिंह विजय राज्ये ऊकेश रायलाखण संताने भांडागारिक गोत्रे अमरा पुत्र भाना केन भार्या भगतादेः पुत्र रत्न नारायण नरसिंह सोढा पौत्र ताराचंद खंगार-नेमि दासादि

परिवार सहितेन श्री श्रीकर्पटहेटके स्वयंभु पार्श्वनाथ चैत्ये श्री पार्श्वनाथ ……… ……… ……… ……… ……… ……… ………सिंह सूरि पट्टालंकार श्री जिन चंद्र सूरिभिः सुप्रसन्नो भवतु।

अलवर।

अलवर राज्यकी राजधानी यह छोटा और सुन्दर शहर है।

(982)

सं० १२५५ माघ सुदि ६ - - - -।

(983)

सं० १२९४ वै० व० ५ गुरौ श्री - - - वंशे पिता मही प्याऊपिउ पितृ सोला श्रेयोर्थं पुत्र नाग दिन् - न भा० जागत्र मातृ एतेन सहितेन श्री पार्श्वनाथो विवं कारितः। प्रतिष्ठित श्री पार्श्वनदेव सूरिभिः।

(984)

सं० १३०२ वर्षे माघ सुदि - - सोमे देवानं हित गच्छे श्र० १ माला भार्या सिंगारदेवी पुण्यार्थं सुत हरिपालादिभिः श्री शांतिनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठि० श्री सिंहदत्त सूरिभिः।

(985)

स० १३२१ वैशाख सुदि ३ धरुपति कुलेन साणे छोता - - - - -

(986)

सं० १३७८ जेष्ट वदि ५ गुरु श्री उपकेश गच्छे लिङ्ग -। गोत्रे - - - सा० खिम धर सिर पाल भार्या पुत्र कील्हा मुणि चंद्र लाहड वाहडादि सहिताभ्यां कुटुम्ब श्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंब का० प्रति० श्री कक्क सूरिभिः।

(987)

सं० १४८० वर्षे फागुण सुदि १० – – उ० छत्रवाल गोत्रे सा० तिहुणा पु० सोना भा० सोनादे - - - - - - - शांति नाथ विंबं - - - - - - -

(988)

सं० १४९९ वर्षे मागसिर सुदि ५ काकरिया गोत्र सा० सधारण तत्पुत्र सा० सांगा श्री आदिनाथ बिंबं करापितं श्री नयचन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं।

(989)

सं० १५०१ पोष वदि ६ बुधे श्री हुंबड ज्ञातीय परज गोत्रे ठ० कहुआ भा० कामल दे सुत ठकुर पीमा भा० रूपिणी – – सुसीया पीमा सुत देवसी करमा देवसी भा० चमकू सुत लखमा धरमा धना वना देवी। करमा भा० गांगी लखमा भार्या भोली एवं समस्त परिवार सहितेन ठ० देव सिंघेन श्री संभव नाथ विंबं कारापित स्य पुण्यार्थं प्र० श्री सर्व सूरिभिः।

(990)

सं० १५०१ वर्षे माघ वदि ६ उपकेश ज्ञातौ लोढ़ा गोत्रे सा० भार्या पूना पु० हांसा- केन निज पूर्वजा पेमधर मोहा प्रीत्यर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं श्री रुद्रपल्लीय गच्छे भ० श्री देव सुंदर सूरि पदे प्र० श्री सोम सुंदर सूरिभिः।

(991)

सं० १५१२ वर्षे फागुण सुदि १२ बुधे उ० ज्ञा० खटूयड़ गोत्रे सा० पाल्हा भार्या पाल्हीदे पुत्र सं० साद्य सायर सोढारय आत्मश्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री मलधार गच्छे गुण सुन्दर सूरिभिः।

(992)

सं० १५१९ वर्षे अषाढ़ वदि ९ शनौ भरतपुर ज्ञा० डीघोडीया - - - सा जगसी सा० हर श्री पु० स० हापा स० घर्मा हापा घर्मा भा० खेहा पु० माहवा भा० गागी पु० नाथ षांदा युतेन श्री शांतिनाथ विंबं का० प्र० श्री चैत्र गच्छे भ० श्री गुणाकर सूरिभिः।

(993)

सं० १५२६ वर्षे जेठ वदि १३ मंगल वारे उपकेश जातीय नाहर गोत्रे षेता पु० रुल्हा भार्या रजलदे खुकांषर अमरा - - - - श्री शांतिनाथ विंबं कारित प्र० श्री घर्मघोष गच्छे श्री महेंद्र सूरिभिः।

(994)

सं० १५२६ वर्षे वैशाख वदि ५ दिने उप० ज्ञा० वालत्य गोत्रे सा० - - दे पु० राउल पु० सुर जल सींहा - - - मातृ पितृ पुन्यार्थं आत्म श्रेयसे श्री वास पूज्य विंबं करापितं प्र० उप० गच्छे ककु० संताने प्र० श्री कक्क सूरिभिः।

(995)

सं० १५२७ वर्षे पोष वदि ४ गुरौ श्री माल ज्ञातीय श्रेष्ठि जोगा भार्या रनू सुत हेमा हरजाभ्यां पितृ मातृ निमित्तं आत्म श्रेयोर्थं श्री अजितनाथ विंबं का० प्र० श्री महूकर गच्छे श्री धन प्रभ सूरिभिः। मेलिपुर नगरे।

(996)

सं० १५२८ वर्षे अषाढ़ सुदि २ सोमे श्री उकेश वंशे संखवाल गोत्रे सा० मेढ़ा पुत्र सा० हेफकिन भ्रातृ उधरण चेला पु० पोमादि सहितेन श्री शांतिनाथ विंबं का० प्र० श्री खरतर श्री जिन चंद्र सूरिभिः।

(997)

संवत् १५५८ वर्षे --सु० ११ गुरौ उपकेश ज्ञातीय श्री रांका गोत्र साण तध सुत साठ्यू-इडेन महराज महिय -- युतेन आत्म श्रेयसे श्री मुनि सुव्रत स्वामि विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीमदूकेश गच्छे श्री ककुदाचार्य संताने श्री कक्कसूरि पट्टे श्री देव गुप्त सूरिभिः।

(998)

सं० १५६१ वर्षे पोस वदि ५ सोमे ओश वंशे लोढ़ा गोत्रे तउघरी छाधा भार्या मेल्हाणि सु० प्रेम पाल -- सुश्रावकेण - तेजपाल श्रेयोर्थं श्री अञ्चल गच्छे श्री नाय सागर सूरिणामुपदेशेन श्री आदि नाथ विंवं का० प्र० श्री र --

(999)

सं० १६६१ वै० सु० ज० प्र० सघटी ---।

(1000)

सं० १९३१ मोघ शुक्ल पक्षे द्वा० तिथौ १२ बुधे श्री ऋषभ जिन विंबं कारित अलवर नगर वास्तव्य श्री संघेग मलधार पुनमियां विजय गच्छे सार्वभौम भट्टारक श्री जिन चंद सागर सूरि पट्टालंकार सोभित श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं मधुबन मध्ये।

पटना म्युझ्यम।

([illegible])

संवत् १८७४ शाके १७३९ प्रवर्तमाने शुभ ज्येष्ठमासे कृष्ण पक्षे पंचम्यां तिथौ सोमदिने श्री व्यवहार गिरि शिखरे श्री शांतिजिन चरण प्रतिष्ठितं भट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिभिः॥

(634)

संवत् १९११ वर्षे शाके १७७१ शुचि ॥ ० दिने श्री शांतिजिन पादन्यासः । प्रतिष्ठित: खरतर गच्छ भट्टारक श्री महेन्द्र सूरिभिः सेठ श्री उदयचंद भार्या पास कुमारजी ॥

उपसंहार ।

सर्व शक्तिमान परमात्माके कृपासे यह "जैन लेख संग्रह" एक सहस्र लेख सहित वर्षत्रयमें समाप्त हुआ । इस संग्रह के लेखोंके गुण दोष विचारकी आवश्यकता नहीं है । जैनियोंकी प्राचीन कीर्त्ति संरक्षण ही मुख्य उद्देश्य है । मुद्राकरके दोष से, संशोधन-कर्त्ताके प्रमाद इत्यादि कारणोंसे छपाई में बहुत अशुद्धियां रह गई हैं । प्रर्थना है कि विद्वज्जन अपराध क्षमा करें और सुधार कर पढ़ें । और पाठक जनोंसे निवेदन है कि बहुत सी अशुद्धियां मूल में ही विद्यमान है, जिसको सुधारा नहीं गया है । पाठकोंके सुगमताके लिये ज्ञाति, गोत्र, गच्छ, आचार्योंकी अकारादिक्रमसे तालिका भी दी गई है । जिन सज्जनोंने "संग्रहमें" मदद दी है उन सभीका मै कृतज्ञ हूं । यदि यह संग्रह जैन भाई आदरसे ग्रहण कर मुझे अनुगृहीत करें तो इसका दूसरा भाग शीघ्र प्रकाशित करने का उत्साह बढ़ेगा । अलमिति विस्तरेण ।

कलकत्ता
ई० सं० १९१८

संग्रह कर्त्ता

श्रावकों की ज्ञाति–गोत्रादि की सूची।

ज्ञाति-गोत्र — लेखांक

संवत्	नाम	लेखांक
१४६७	देवगुप्त सू०	२३८
१४९९	कक्क सू०	२१६।४७१
१५११	,,	१२
१५१२	,,	४०१।६२३
१५१५	,,	५३४
१५१९	,,	५५८
१५२४	,,	५०।२२६
१५२५	सिद्ध सू०	५१
१५२६	कक्क सू०	६६४
१५२८	देवगुप्त सू०	६२५
१५४६	,,	३०
१५४९	,,	६७६
१५५६	,,	७१०
१५५८	,,	६६७
१५५९	,,	५६६
१५५९	कक्क सू०	६७२
१५६२	देवगुप्त सू०	१२८।४६७
१५६३	,,	२०
१५७९	सिद्ध सू०	७४
१५८५	,,	१५६
१६३४	देवगुप्त सू०	६२८
१६५९	सिद्ध सू०	८९०
१५०१	कुंकुम सू०	७३०

विवंदणीक गच्छ ।

(उपकेश)

संवत्	नाम	लेखांक
१५२७	मर्च सू०	१८
१५६६	कक्क सू०	६६७

संवत्	नाम	लेखांक
१५८३	देवगुप्त सू०	६६८
१६०२	कक्क सू०	७१७

उत्वराध गच्छ।

संवत्	नाम	लेखांक
१६८०	सू० ताराचन्द्र	१६७

[क] छोलीवाल गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५५४	विजयराज सू०	५६४

कडुआमति गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१६८३	... ...	८०१

कमलकलसा गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१७९०	रत्न सू० कमलविजय गणि	६७७
१९९१	विजयमहेंद्र सू० डुंमरविजय गणि	६७१

कृष्णार्षि गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३७९	प्रसन्नचंद्र सू०	४२६
१५०३	जयशेखर सू०	५८६
१५०६	नयचंद्र सू०	६८।७६९

कोरंट गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३४०	नन्नसू० सं० कक्कसू० पट्टे सर्वदेव सू०	११५
१४९२	सार्वदेव सू०	७६६
१५०६	,,	४१७
१५५२	... ...	३७
१५७६	कक्क सू०	६०२

संवत्	नाम	लेखांक
	खरतर गच्छ।	
१४१२	जिनचंद्र सू० हरिप्रभगणि मोदमूर्त्तिगणि हर्षमूर्त्तिगणि	२३६
१४३८	जिनराज सू०	२११
१४४१	,,	६१५
१४५६	,,	५८३
१४६६	जिनवर्द्धन सू०	२ २
१४७६	जिनभद्र सू०	४६५
१४८४	,,	११६
१४८५	,,	२७५
१४८७	,,	८
१५०३	,,	६२०
१५०४	,,	६२१
१५०७	,,	२१४।४७२।७६७
१५०६	,,	५०६।७२२।७२२
१५११	,,	१२१
१५१२	,,	४७८
१५१५	,,	६२६।७५६
,,	जिनचन्द्र सू०	४७
१५१७	,,	५५६
१५१६	,,	१०३,१८६।६१५,२१७।४६६
१५२८	,,	२१८। ६१०
१५२६	,,	७८
१५३२	,,	१०७
१५३४	,,	४८०
१५३५	,,	[illegible]

संवत्	नाम	लेखांक
१५३६	,,	२०।४८८
,,	जिनसमुद्र सू०	६१७
१५३७	,,	७२५
१५४८	,,	२२०
१५५१	,,	४१
१५५३	,,	४६३
१५५८	जिनहंस सू०	१०
१५६०	,,	४४७
१५६३	,,	२८६
१५६५	,,	१८०
१५६८	,,	४६६।७६३
१५७६	,,	४२
१५७६	,,	[illegible]
१६५६	जिनचन्द्र सू०	७८०
१६५७	,,	४२
१६६१	,,	[illegible]
१६६६	,,	[illegible]
१६६८	,,	[illegible]
१६६६	,,	[illegible]
१६७६	[illegible]	[illegible]
१६८०	[illegible]	[illegible]
१६८६	,,	
	[illegible]	[illegible]
१६८८	,,	[illegible]
१६६०	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]	[illegible]

संवत्	नाम	लेखांक
१८२१	जिनलाभ सू०	६००
१८४४	जिनचन्द्र सू०	
	वा० अमृतधर्म	४५
	वा० क्षमाकल्याण	
१८४८	जिनचन्द्र सू०	६२७।६३३
१८४६	,,	३५८
१८५६	,,	१३८।१४४
१८५१	जिनहर्ष सू०	३३८
१८६१	,,	६३
१८७१	,,	८७।५२७
१८७४	,,	२६१।२६२।५२५
१८८५	,,	१६६
१८७७	,,	२२४।३२९।३४०
१९००	जिनसौभाग्य सू०	१२।३०६
१९०३	,,	
	पं० हीराचंद	६६६
१९०४	जिनसौभाग्य सू०	५६६
१९०७	,,	१४७
१९१०	,,	३४७
१९५७	जिनकीर्त्ति सू०	३८५
१५०४	वा० शुभशीलगणि	१७१।२२३।
		२५६।२७०
१६११	धर्मसुन्दरगणि	७७०
१८५७	उ० हीरधर्मगणि	४२५
१५१५	जिनसुन्दर सू०	४८०
१५१६	,,	४८२
१५१६	जिनहर्ष सू०	४८।१६१।
		२१६।२८१।५१८

संवत्	नाम	लेखांक
१५२७	,,	१९७२
१५२८	,,	६६२
१५३१	,,	२८४
१५११	,,	१५४
१५२४	उ० कमलसंयम	२५७
१५२७	,,	२५८
१५६२	जिनतिलक सू० पट्टे	
	जिनराज सू०	४१४
	श्रीभिः	
१५६६	जिनचंद्र सू०	२६०।५२४
१५६७	,,	५६७
१५७१	जिनरत्न सू०	१६२
१६६६	आचार्य्य सिंह सू०	७२२
१६८६	रत्नतिलक सू०	१६६।२७२
	वा० लब्धिसेन गणि	
१७०७	कल्याणकीर्त्ति	२४५
१७८०	जिनरंग सू०	२०५
१७६७	,,	२०२
,,	वा० भुवनचंद्र	२०३
१८०३	जिनकीर्त्ति सू०	६३७
	फरमचन्द	
	हरखचन्द	
	प्रतापसी	
१८२१	महेंद्रसागर सू०	६७
१८४६	रूपविजय	२०६
१८७६	उ० रत्नसुन्दरगणि	६८
१८७७	कीर्त्युदयगणि	५८०

संवत्	नाम	लेखांक
[illegible]	[illegible] सू० [illegible] / [illegible] सू०	२४३
[illegible]	[illegible] सू० / [illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू० / [illegible] शिष्य / [illegible]	२४२।२४३ / २६३-२६७
[illegible]	[illegible] सू०	२४४ २६८।६३४
[illegible]	,,	३६६
	सु० [illegible]	६४६
[illegible]	[illegible] सू०	५२८
[illegible]	जिनरत्न सू०	५२९
	चन्द्र गच्छ ।	
१२३६	पूर्णभद्र सू०	८६६
	चंद्रप्रभाचार्य गच्छ ।	
११२०	... ...	४५६
	चित्रवाल गच्छ ।	
१५०६	मुनितिलक सू०	२१३
१५०८	,,	२११
१५१३	दोणाकर सू०	१०१
१५२९	सोमकीर्त्ति सू०	४३२
१५४८	सोमदेव सू०	६७५
१६८६	रत्नचंद्र सू० / वा० तिलकचंद्र सू०	८३०
	चैत्र गच्छ ।	
१३३३	अजितदेव सू०	६३५
१५१८	गुणाकर सू०	९९२

संवत्	नाम	लेखांक
१४०३	[illegible]गच्छ उदयचन्द्र सू०	३६६
१४३०	नागरचंद्र सू०	५९२
	तपा गच्छ ।	
१४८०	सोमसुंदर सू०	१३१
१४८५	,,	८३६
१४८६	,,	४६६
१४१६	,,	७००
१४११	,,	५५३।७७२
१४८९	रत्नसिंह सू०	६७७
१४११	,,	६६
१४८२	भुवनसुंदर सू०	६७४-६७६
१४८५	हेमहंस सू०	५४८
१४९०	,,	३३
१५०१	,,	६२२
१५०१	मुनिसुन्दर सू०	७०४
१५०३	जयचन्द्र सू०	६४७।६६८
१५०४	,,	६२१
१५०७	उदयनंदि सू०	४७५
,,	रत्नशेखर सू०	४७६
१५१०	,,	४१२।७७५
१५१२	,,	४०५
१५१३	,,	८१८
१५१४	,,	२७१।७४२
१५१५	,,	४०।५७३।६२६
१५१६	,,	३९२
१५१३	रत्नसिंह सू०	३४

संवत्	नाम	लेखांक
१५१२	विजयतिलक सू० पट्टे विजयधर्म सू०	७९७
१५१७	लक्ष्मीसागर सू०	२८०।४८३
१५१८	,,	३।६३५
[illegible]	,,	४४४।५३५
[illegible]	,,	५८६
[illegible]	,,	१४
[illegible]	,,	१०५।१०६।२८३।५६०
[illegible]	,,	४८४।६२४
[illegible]	,,	३९८।७३६
[illegible]	,,	६६३
[illegible]	,,	७०।४८५।६२४
[illegible]	,,	७७७
[illegible]	,,	५८।३६६
[illegible]	,,	३६।५३
[illegible]	,,	५७७
[illegible]	,,	७३।४४६
[illegible]	,,	४८६
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	६६०
[illegible]	,,	४४३
[illegible]	[illegible] सू०	४४४
[illegible]	[illegible] सू०	७३६
[illegible]	[illegible] सू०	७३८
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	६५३
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]

संवत्	नाम	लेखांक
१५३६	,,	४२०
१५४६	,,	७११
१५५१	,,	७१७
१५४५	सोमरत्न सू०	४१०
१५५०	,,	४२१
१५५२	सोमसुन्दर सू० इन्द्रनन्दि सू० कमलकलश सू०	७७१
१५५३	हेमविमल सू० कमलकलश सू०	१५
[illegible]	कमलकलश सू०	६४१
१५५६	हेमविमल सू०	५८०
१५६४	,,	१२
१५६६	,,	२०१
[illegible]	,,	६४६
[illegible]	,, पं० अनंतहंसगणि	६६१
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	६२८
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
,,	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	[illegible] सू०	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]

संवत्	नाम	लेखांक
	त्रिभविया गच्छ।	
१४२०	धर्मदेव सू० सं०	
	धर्मरत्न सू०	४२७
	देवानंदित गच्छ।	
१३८३	सिंहदत्त सू०	६८४
	धर्मघोष गच्छ।	
१४०६	सागरचन्द्र सू०	४८६
१४५८	मलयचन्द्र सू०	६०७
१४५६	,,	४१०
१४८२	पद्मशेखर सू०	४२८।४६६
१४९२	,,	५५२
,,	महेंद्र सू०	५०८
१५०३	विजयनरेंद्र सू०	५८७
१५०५	साधुरत्न सू०	१७
१५१७	,,	५
१५१९	पद्मसिंह सू०	४९४
१५२६	महेंद्र सू०	९६३
१५२८	पद्मानन्द सू०	७७६
१५३३	,,	७२९
१५५१	पुण्यवर्द्धन सू०	४६२
१५५८	,,	११०
१५५२	,,	६०२
१५५६	नंदिवर्द्धन सू०	५६५
१५७०	उदयप्रभ सू०	३८
१५८३	नयचंद्र सू०	२६
	नागेंद्र गच्छ।	
१०८८	... ...	५१२
१५९६	रत्नप्रभ सू०	६०८

संवत्	नाम	लेखांक
१४८३	सिंहदत्त सू०	५२१
१५१५	विनयप्रभ सू०	४८१
१५१७	गुणदेव सू०	५१०
१५२०	सोमरत्न सू०	८१६
१५७२	गुणवर्द्धन सू०	६००
	नाणकीय गच्छ।	
१२३५	शांति सू०	८९२
१३२३	धनेश्वर सू०	६०२
—	वीरचन्द्र सू०	८६६
	नाणवाल गच्छ।	
१५३६	धनेश्वर सू०	१०९
	निगमा विभावक गच्छ।	
१५५६	इन्द्रनंदि सू०	४०४
	पल्लिवाल गच्छ।	
१५०८	... ...	५७७
१५१३	यश सू०	५३३
१५२८	नन्न सू०	५३४
१५५८	उजोयण सू०	६३७
१६६८	... ...	७२४
१६७८	... .	७२६
	पवीर्य गच्छ।	
१५०७	यशोदेव सू०	४१२
	पार्श्वनाथ गच्छ।	
१३८१	... ...	२१६
१८०१	... ...	८२
१८३०	जिनहर्ष सू०	१०४
,,	भानुचन्द्र सू०	६०

संवत्	नाम	लेखांक
	महुकर गच्छ ।	
१५२७	धनप्रभ सू०	६६५
	यशसूरि गच्छ ।	
१२४२	... ...	५३०
	रुद्रपल्लीय गच्छ ।	
१४५४	देवसुन्दर सू०	४६१
१५०१	सोमसुन्दर सू०	६६०
१५१६	,,	१२२
१५२५	,,	७३४
१५३२	गुणसुन्दर सू०	५७६
१५६६	उ० गुणप्रभ	५०१
१६८५	भावतिलक सू०	४६९
	लुंपक गच्छ ।	
१६२५	उ० सागरचंद्र गणि	१४९।१५०
१६३१	अजयराज सू०	१८४।२०७
१६५५	,,	२३५
१६३३	अमृतचंद्र सू०	१६८।१६९
	विजय गच्छ ।	
१७१८	सुमतिसागर सू०	७३८
१६३१	शांतिसागर सू०	१६७।३४६ ३५१।३५४।३५६।३६०।३६२ ३६४।३६६।३६८।३७०।३७२ ३७६।३७८।३८०।३८२।१०००
	विद्याधर गच्छ ।	
१४२६	उदयदेव सू०	८८६
१५३४	हेमप्रभ सू०	७६८

संवत्	नाम	लेखांक
	विधिपक्ष गच्छ ।	
१५०५	जयकेशर सू०	६५६
	वृद्धपोसल गच्छ ।	
१८८१	आनंदसोम सू०	६८५
	वृहद् गच्छ ।	
१२१५	पं० पद्मचन्द्र गणि	८३३।८३४
१२६०	शांतिप्रभ सू०	७०२
१३१६	जयमङ्गल सू०	६४३।६४४
१४३३	विनयचंद्र सू०	८५८
१४३८२	अमरप्रभ सू०	३६
१४८६	प्रभ सू०	२७४
१४६३	हेमचन्द्र सू०	६१९
१५०८	महेंद्र सू०	६८१
१५११	रत्नाकर सू०	२३
१५१९	महेन्द्र सू०	५५६
	सरवाल गच्छ ।	
११९०	... ...	१
	संडेरक गच्छ ।	
१२,८	... ...	८३९
१३५०	सुमति सूरि	५१६
१३७६	,,	४१५
१४५०	शांति सू०	७५७
१४६६	सुमति सू०	७५८
१४७२	शांति सू०	४६४
१४८३	,,	४६८
१४८६	,,	५४६

संवत्	नाम	नं०	संवत्	नाम	नं०
१४३१	[illegible] सू०	६१	१५३१	श्री सू०	६३२
१४८०	विद्यासागर सू०	५०१	१५३०	साधुरत्न सू०	७४४
१४८१	श्रीसुन्दर सू०	५०६	१५३७	श्री सू०	५६३
१४८१	रत्नशेखर सू०	५२७	१५४०	भ० हेमचन्द्र सू०	४६७
१४८५	सुमतिसागर सू०		१५५८	श्री सू०	१३७
	सोमचन्द्र सू०	४६७	१५६२	साधुसुन्दर सू०	४७८
१४८६	हेमहंस सू०	६५८	१५६३	श्री सू०	२०
१४८६	[illegible] सू०	१६१	१५८०	सुमतिचन्द्र सू०	३४७
१४८६	रत्नप्रभ सू०	४७७	१५८६	[illegible] सू०	४०७
१४९०	हेमहंस सू०	४२९	१६०५	जिनचन्द्र सू०	५१२
१४९८	नयचन्द्र सू०	६८८	१६१०	नेमचन्द्र सू०	१६
१५०१	श्री सू०	५८५	१६५०	कनकविजय सू०	१८१
१५०७	श्री सू०	५३२	१७००	शुभकीर्ति	२७
१५०३	नयचन्द्र सू०	६७	१७०२	जिनचन्द्र सू०	१६८
१५१३	श्री सू०	३८३	१७१०	विजयानन्द सू०	७५
१५१४	सर्वानन्द सू०	१८२	१७२१	भ० हीरविजय सू०	८५४
१५१४	रत्नशेखर सू०	६४	१७५६	कुशलविजय	८५५
१५१६	वा० मोदराज गणि	६३१	१७७१	विजयमुक्ति सू०	३६३
१५१७	दयारत्न	६१३	१७८०	कर्पूर विजय ग०	८१
१५१८	पद्मानन्द सू०	१७५	१८४१	श्रीसुन्दर सू०	६१२
१५१९	उदयवल्लभ सू०	६६१	१८४८	अमृतधर्म	२४६
१५२०	भ० विजयकीर्त्ति सू०	७४६	१८४८	अमृतधर्म वाचनाचार्य	३०५
१५२१	सुविहित सू०	५७४	१८८३	विजयजिनेन्द्र सू०	७६६
१५२६	साधुसुन्दर सू०	१२५	१८८७	वा० चारित्रनंदि गणि	३४१
१५२७	श्री सू०	१५२	१८८८	जिनचन्द्र सू०	३४२
१५२९	भावदेव सू०	५६१	१८८९	वा० चारित्रनन्दन ग०	४३५
			,,	,,	४३६

संवत्	नाम	लेखांक
,,	जिनमहेंद्र सू०	४४०
१९१०	,,	१६३।१६६
१९२०	अमृतचन्द्र सू०	५७
,,	वा० सदालाभ	४४
१९२४	सागरचन्द्र ग०	१७६
,,	उ० सदालाभ ग०	१७७
१९३०	सागरचन्द्र ग०	१७४
१९३५	मुनिपयजय	१८२।१८३
१९३६	जिनमुक्ति सू० / लालचंद गणि	२३२
१९५६	जिनचन्द्र सू०	१६२

मूलसंघ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१२३६	गुणभद्र सू०	३८८
१२८६	जिनचंद्र देव भ०	३२२
१५०२	देवकीर्ति	२९६
१५०४	जिनचन्द्र सू०	४६२
१५२५	विद्यानन्द	२८६
,,	भ० ज्ञानभूषण	४८७
,,	,,	५९२
१५३८	... ...	६५३
,,	... ...	२८८
१५४८	भ० जिनचन्द्र देव	३२७
१५४६	भ० जिनचन्द्र देव	६१
१५५६	... ...	[illegible]
१६२७	सुमतिकीर्ति सू०	[illegible]
१६८२	भ० [illegible] / [illegible]कीर्ति उ०	[illegible]

मूलसंघ [सरस्वती गच्छ]

संवत्	नाम	लेखांक
१५२३	भ० विद्यानन्दि	६८०
१५२४	भ० विमलकीर्ति	५८०
१५२५	विमलेन्द्रकीर्ति	६१६
१६०४	भ० देवेन्द्रकीर्ति	३२५
१६०८	भ० शुभचन्द्र	५०२
१६३८	भ० मेरुकीर्ति	७०१
१६६०	विद्दकीर्ति	४०१
१६६६	... ...	१०८
१७००	... ...	५००
१७११	... ...	६४८
१७४६	... ...	६४८
१९५०	कनककीर्ति	२३४

मूलसंघ-नन्दिसंघ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४८८	भ० सकलकीर्ति	४०१

मूलसंघ-काष्ठासंघ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५३४	त्रिभुवनकीर्ति	[illegible]

काष्ठासंघ ।

संवत्	नाम	लेखांक
[illegible]	...	[illegible]

काष्ठासंघ [माथुर गच्छ]

संवत्	नाम	लेखांक
१५३२	[illegible]	[illegible]
१८८१	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]